श्री विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला १४४

सुलभ-ज्यौतिष-ज्ञान

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

मू० १२-००

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

१३०

॥ श्रीः ॥

सुलभ-ज्यौतिष-ज्ञान

लेखक

श्री पं० वासुदेव सदाशिव खानखोजे

सम्पादक

श्री पं० रामनाथ शास्त्री

ज्यौतिषाचार्य, ज्यौतिषरत्नाकर,

सं० प्राध्यापक : श्रीरामानुज संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९६६

THE
VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA GRANTHAMALA
130
*****

SULABHA-JYŌTIṢA-JÑĀNA

(The Easily Available Knowledge of Astrology)

By
PT. VĀSUDEVA SADĀŚIVA KHĀNKHOJE

Edited by
PT. RĀMANĀTHA ŚĀSTRĪ
Jyotiṣācārya, Jyotiṣaratnākara
Hon. Professor, Sri Ramanuja Sanskrit College,
Varanasi.

THE
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI-1
1969

प्रातःस्मरणीय पूज्य पिताजी

श्री सदाशिव बलवन्तराव खानखोजे

के

पावन स्मृति में

सादर समर्पित
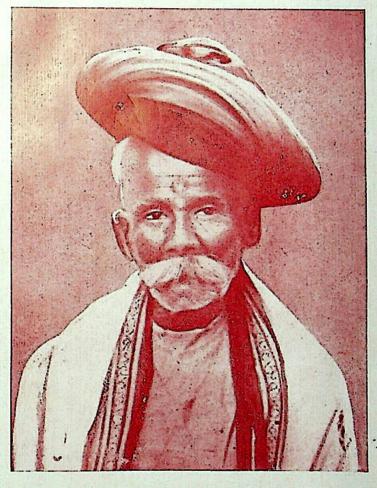
स्व० पं० श्री सदाशिव बलवन्तराव खानखोजे

जन्म शके १७७०] [निधन शके १८५२

सम्पादकीय प्राक्कथन

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥
यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥

वेदाङ्गशास्त्रों में ज्यौतिषशास्त्र को चिरकाल से शिरोमणि स्थान प्राप्त है । इस शास्त्र को "कालविधानशास्त्र" भी कहते हैं और इसे सम्यग् जानने वाले व्यक्ति को पूज्य कहा गया है :—

"कालोऽयं भगवान् विष्णुरनन्तः परमेश्वरः ।
तद्वेत्ता पूज्यते सद्भिः पूज्यः कोऽन्यतमो मतः" ॥

ऐसे कालविधानवेत्ता विद्वान् सांवत्सरिक से, राष्ट्रनायक पुरुषों को लोक-कल्याण की इच्छा से सलाह लेते रहना चाहिये । इस बात की चेतावनी आज से लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व श्रीवराहमिहिराचार्य ने दी है :—

"वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः ।
अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गतिकोविदम् ॥
तस्माद्राज्ञाभिगन्तव्यो विद्वान् सांवत्सरोऽग्रणीः ।
जयं यशः श्रियं भोगान् श्रेयश्च समभीप्सता ॥"

अर्थात् वनवासी, ममताविहीन और परिग्रह का त्याग करने वाले महान् पुरुष भी ग्रहनक्षत्रादि की गति जानने वाले पण्डितों से सब बातें पूछा करते हैं । अतः जय, यश, श्री, भोग और मङ्गल की कामना वाले राजा को उत्कृष्ट दैवज्ञ विद्वान् के पास जाकर सब जानना चाहिये ।

पाश्चात्य देश के विद्वान् एलेन लियो ने "Astrology for all" पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा है कि "अवज्ञा की दृष्टि को छोड़कर, परिश्रम से यदि इस विज्ञान की सत्यता को खोजा जाय तो हमारे पूर्वज ऋषियों के उच्चकोटि के विचार और अनुभव सत्य प्रमाणित होंगे ।" परन्तु खेद है कि वर्तमान भारत के अधिकांश राष्ट्रनायकों का ध्यान इस शास्त्र के गूढ़ानुसन्धान करने वाले विद्वानों को प्रोत्साहन देने की ओर बिलकुल नहीं है, फलतः स्वतन्त्र भारत में भी फलित ज्यौतिष शास्त्र के अङ्गों का परम्परागत गूढ ज्ञान दिनप्रति ह्रासोन्मुख होता जा रहा है । वस्तुतः यह शास्त्र चिरकालीन गुरुपरम्परागत अनुभव

के कारण ही लोक-कल्याणकारी है। इसके तज्ज्ञ लोगों की खोज तो लगन के साथ करनी चाहिये। फलित ज्यौतिष के अन्तर्गत सामुद्रिक, स्वर, रमल, मुहूर्त, जातक, ताजिक, शकुन, वृष्टि-विज्ञान, स्वप्न, तेजी-मन्दी, आकाश-विज्ञान, प्रश्न-विचार, पशु-विज्ञान, रत्न-परीक्षा, निधि-ज्ञान, भूमि-परीक्षा इत्यादि विविध अङ्गों में से किसी भी अङ्ग में जो भी निष्णात व्यक्ति सम्प्रति प्राप्त हों उनके द्वारा तत्तदङ्गों के ज्ञान का लाभ यथाकथमपि जिज्ञासु शिष्यों को सरलता से प्राप्त हो, इसके लिए प्रयत्न होना चाहिए। सचाई के साथ यदि ऐसा प्रयत्न शीघ्र नहीं किया गया तो जो कुछ भी बचा-खुचा ज्ञान है वह पोथी में ही रह जायगा। मैंने इस सम्बन्ध में कुछ कार्य करने का यावच्छक्य प्रयास किया परन्तु उत्साहपूर्ण सहयोग के अभाव से सफल नहीं हो सका। अस्तु, यह सब ज्ञान पूर्वाचार्यों ने संस्कृत वाङ्मय में लिखा है जिसे समझने के लिए व्याकरण, साहित्य, न्याय के ज्ञान की आवश्यकता है। कहीं-कहीं सांकेतिक शब्दों का भी प्रयोग गूढ़ स्थलों पर किया गया है जिसके लिए प्राचीन टीका-ग्रंथों की सहायता और गुरु-परम्परागत ज्ञान की भी आवश्यता रहती है। इतना परिश्रम करके ज्ञान प्राप्त करने का जिन्हें समय नहीं है उनके लाभार्थ प्रान्तीय भाषाओं में पुस्तकों के लिखने की प्रथा कुछ समय से चल पड़ी है। परन्तु इस प्रथा को चालू करने वाले लोगों को सावधानी रखनी चाहिए कि शास्त्र का आधार कहीं छूटने न पावे। इसी लिए कहा है :—

> "प्रायश्चित्तं चिकित्सां च ज्यौतिषं धर्मनिर्णयम्।
> विना शास्त्रेण यो ब्रूयात् तमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥
> अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते।
> स पङ्क्तिदूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः॥"

अर्थात् पापों का प्रायश्चित्त, चिकित्सा, ज्यौतिष, धर्म का निर्णय विना शास्त्र का आधार लिए जो बतलाता है उसे ब्रह्मघाती कहा गया है। जो व्यक्ति शास्त्र-ज्ञान के विना दैवज्ञ बन जाता है वह पापी, पंक्तिदूषक, नक्षत्र-सूची है।

प्रस्तुत पुस्तक राष्ट्र-भाषाविद् जनसाधारण के लिए ज्यौतिषज्ञान द्वारा लाभ उठाने के लिए लिखी गई है। लेखक ने अनेक ग्रन्थों में से विषयों का सङ्कलन किया है तथा कुछ बातें अपने अनुभव के आधार पर भी लिखी है। लेखक के अतिवृद्ध और अस्वस्थ रहने के कारण विश्वविख्यात सुप्रतिष्ठित प्रकाशन-संस्थान "चौखम्बा संस्कृत सीरीज" के उत्साही सञ्चालकों ने इस पुस्तक के सम्पादन का कार्य मुझे दिया। मैंने यथामति त्रुटियों का संशोधन और परिशिष्ट भाग का स्वयं सङ्कलन करके, सम्पादन कार्य किया है। लेखक ने पाश्चात्य विद्वानों

द्वारा आविष्कृत हर्षल और नेपच्यून ग्रहों के स्थितिवशात् शुभाशुभ फल का विवेचन पुस्तक में किया है जिनका उल्लेख दृक्सिद्ध-पञ्चाङ्गों में मिलेगा किन्तु प्राचीन पद्धति से बने पञ्चाङ्गों में खोजने से नहीं मिलेगा।

पुस्तक के परिशिष्ट में जिन विशिष्ट पुरुषों की कुण्डलियों का संग्रह किया गया है उनका जन्मेष्टकाल भी शोध करके लिखा गया है। सम्राट् अकबर बादशाह की कुण्डली के साथ दुर्लभ स्पष्ट ग्रह, लग्नस्पष्ट आदि भी दिये गये हैं जिससे अनुसन्धित्सु विद्वानों को विशेष सहायता मिलेगी। हिन्दी साहित्य के नवरत्नों में से देदीप्यमान रत्न भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी की जन्म-कुण्डली जिसका लेखन दैवज्ञशिरोमणि म० म० पं० सुधाकरजी द्विवेदी के हाथों से हुआ है, परिशिष्ट में उद्धृत की गई है। सूर्य-चन्द्रादि नवग्रह, मेषवृषादि द्वादश राशियाँ तथा अश्विन्यादि नक्षत्रों के प्राचीन चित्रों की प्रतिलिपि का संग्रह करके इस पुस्तक को मैंने सुसज्जित किया है और अन्त में नवग्रहों के अरिष्टहर प्रामाणिक यन्त्र तथा "नवग्रहमङ्गलम्" शीर्षक से सूर्य चन्द्रादि सभी ग्रहों के सुन्दर मङ्गलाचरण भी दिये हैं जिनके विधिवत् प्रयोग से ग्रहों की कृपा-दृष्टि प्रयोगकर्त्ता पर बनी रहेगी। शास्त्र में ग्रहों के सामर्थ्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि :—

"ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति, ग्रहा राज्यं हरन्ति च।
ग्रहैस्तु व्यापितं सर्वं, जगदेतच्चराचरम् ॥"।

विद्वानों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक में जो भी उन्हें संशोधनीय पदार्थ दृष्टिगोचर हों उन्हें सूचित करने की कृपा करें जिससे अग्रिम संस्करण में उसे परिमार्जित किया जा सके।

इति शुभम्।

अनन्तचतुर्दशी,
के० ३७/७१ गोपाल-
मन्दिर के पीछे, वाराणसी.

विदुषामनुचरः
श्री रामनाथशास्त्री

भूमिका

सर्वसाधारण को सृष्टि के अनेक चमत्कार का संपूर्णज्ञान प्राप्त होकर उनकी जिज्ञासा पूरी हो सके, इस हेतु हमारे देश के अलौकिक बुद्धिमान, महान तपस्वी व त्रिकालदर्शी महर्षियों ने अपने तपोवल के आधार पर जनता के लाभार्थ जो अनेक शास्त्र निर्माण किये, उनमें ज्योतिषशास्त्र का स्थान सर्वश्रेष्ठ व प्रथम है क्योंकि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति, प्रगति व लयादि कालाधीन है और उस काल का संपूर्ण वर्णन तथा शुभाशुभ परिणाम आकाशस्थ ग्रहों के उदय, अस्त, युति, प्रतियुति, गति व स्थिति पर निर्भर है। इन्हीं ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर जगत के मानव-प्राणी का सुख-दुःख हानि-लाभ, जीवन-मरण पूर्णरूप से अवलंबित है। अतः ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान मानव प्राणी के लिये अधिक महत्वपूर्ण है।

भारतवर्ष में इस त्रिकालदर्शी शास्त्र का जन्म हजारों वर्ष पूर्व मानव-प्राणी के कल्याण के लिए अर्थात् अज्ञानी को ज्ञानी, प्रारब्धवादी को प्रयत्नवादी, नास्तिक को आस्तिक, दुखियों को सुखी, मूढ़ों के मन का अंधकार नष्ट कर उनके हृदय में कर्त्तव्य कर्म की ज्योति प्रदीप्त करने तथा पतितों का उद्धार कर उनके मन में राष्ट्रधर्म की भावना उत्पन्न करने के लिये हुआ है। इसके ज्ञान से प्रत्येक व्यक्ति, कुटुम्ब व समाज तथा अन्त में देश को लाभ होना निश्चित है। देश के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रविद्या, राष्ट्रधर्म, राष्ट्रसंस्कृति व राष्ट्राभिमान जागृत हुए विना किसी भी संपूर्ण राष्ट्र का उत्थान होना सम्भव नहीं है। अतः यह त्रिकालदर्शी शास्त्र केवल इस शास्त्र के जिज्ञासुओं के लिये ही नहीं, अपितु समस्त सुशिक्षित सज्जन व देश के भावी पीढ़ी या नेता के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आकाशस्थ ग्रहों की स्थिति व गति का समस्त ज्ञान गणित शास्त्र के आधार पर अवलंबित है और गणित शास्त्र के आधार पर ही ज्योतिष शास्त्र का फलित या भविष्य-कथन निर्भर है। ऐसा होते हुये किसी समंजस मनुष्य के लिये इस शास्त्र का पूर्ण ज्ञान हुए बिना अपना अविश्वास प्रगट करना कहाँ तक उचित होगा इसका विचार विज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

ज्योतिषशास्त्र की महत्ता, उपयोगिता तथा अद्भुत चमत्कार से जगत परिचित है। यह शास्त्र सर्वोपयोगी होने के कारण अनादि काल से विरोधियों के आघातों से टक्कर लेते हुये अपनी प्रगति करते आ रहा है। इस शास्त्र का ज्ञान सर्वप्रथम हमारे देशवासियों को हुआ। तत्पश्चात इङ्गलैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस आदि पाश्चात्य देश के धुरंधर विद्वान, संशोधक, दूरदर्शी यंत्रनिर्माण कर्तृत्वज्ञों ने अनेक यंत्रों

की सहायता द्वारा वर्षों के निरंतर अथक प्रयत्न से यह सिद्ध किया कि भारतवर्ष का यह प्राचीन ज्योतिषशास्त्र अक्षरशः सत्य है। पाश्चात्य देशों में ज्योतिष विषय पर नित्य नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। अमेरिका में आज पचास हजार से अधिक ज्योतिषज्ञ उपस्थित हैं। यही इस शास्त्र की प्रगति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिषशास्त्र का फलित विभाग आपत्ति रूपी समुद्र को पार करने वाली नौका, प्रवास समय में उचित सलाह देनेवाला सच्चा मित्र व धन अर्जित करते समय योग्य मार्ग-दर्शक मंत्री कहलाता है। प्रारब्ध और प्रयत्न का सुन्दर मिलाप तथा परिश्रम व धन के बल पर यश प्राप्त करने का अनुकूल समय भविष्य में मिलना कब सम्भव है इसका ज्ञान इसी शास्त्र के आधार पर मानव प्राणी को मिलता है। अतः यह शास्त्र प्रारब्धवादी लोगों की अपेक्षा प्रयत्नवादी लोगों के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध हो चुका है। विज्ञ पाठकगण यदि इस शास्त्र का मर्म, रहस्य, अमूल्य उपयोग व प्रारब्ध प्रयत्न के परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध से पूर्णतया परिचित होने का प्रयत्न करेंगे तो यह उन्हें प्रयत्न में यश प्राप्तकर अपना जीवन सुख से व्यतीत करने के लिये अत्यन्त सहायक होगा। हमारी अल्पबुद्धि के अनुसार ज्योतिषशास्त्र एक दूरबीन यंत्र है, जिसके सहारे किसी भी विज्ञ मनुष्य को भविष्य में आने वाली शुभाशुभ घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करना सहज संभव है। शास्त्रों में यही एक ऐसा शास्त्र है जो सुख के समय दूरबीन यंत्र का कार्य और दुःख के समय प्रकाश देने का कार्य करने के लिये समर्थ है क्योंकि सुख-दुःख के समय मनुष्य को यह एक ही शास्त्र अपना चमत्कार दिखाते हुए भावी संकटों के प्रति जागरूक कराता है। यही मुख्य कारण है कि यह शास्त्र जगत में आज तक अपना महत्व, प्रभुत्व और अस्तित्व कायम रखते हुये प्रगति करते आ रहा है। मनुष्य एक आशावादी प्राणी है और आशा के बल पर ही वह अनेक संकटों का सामना करते हुये जीवित रहता है। मानव-जीवन की श्रेष्ठता, वर्तमान आयुष्य क्रमण करने से नहीं बल्कि संकटों पर विजय प्राप्तकर भविष्य में आयु सुख से क्रमण करने में सिद्ध हो चुकी है। प्राचीन ग्रन्थों में ऐसे कई उदाहरण हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस विद्या का ज्ञान कितना पोषक व तारक है परन्तु उनका सविस्तर वर्णन यहाँ करना अशक्य है। तथापि उदाहरण के रूप में एक दो प्रसंगों का यहाँ लिखना अप्रासंगिक न होगा। जैसे—

भारत की प्रसिद्ध कन्या सती सावित्री को विवाह होने के पूर्व ही यह ज्ञात हो गया कि उसका भावी पति अल्पायु है। यह ज्ञात होते ही सावित्री ने शिवाराधना आरम्भ की और उसी के बल पर अपने पति को मृत्यु के मुख से मुक्त कर दीर्घायु बना लिया।

दूसरी सती सीमंतिनी के जन्म समय उसके पिता (राजा) ने ज्योतिषियों को उसकी जन्म कुण्डली का फल वर्णन के लिये कहा किन्तु यथार्थ भविष्य वर्णन में कई ज्योतिषियों को संकोच हुआ। अन्त में एक ज्योतिषी ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि "इस लड़की को तेरहवें वर्ष की आयु में वैधव्य प्राप्त होगा।"

यह सुनकर सीमंतिनी ने शिवाराधना आरम्भ की। विवाह होने के पश्चात् उसकी आयु के तेरहवें वर्ष दैवसंयोग से उसका पति कालिंदी नदी में बह गया और उस समय उसका पता न लग सका। सीमंतिनी ने बड़े धैर्य से अपनी आराधना जारी रखी, अन्त में तीन वर्ष के पश्चात् उसका पति प्रवाह से बच कर एकाएक सीमंतिनी के समक्ष प्रगट हो गया।

भारतवर्ष की इन सतियों को यदि भविष्य का ज्ञान न होता और वे उसे घटाने या हटाने के लिये उचित उपाय न करतीं तो क्या इन संकटों पर वे विजय प्राप्त कर सकती थीं ? भविष्य के ज्ञान से मनुष्य के हृदय में बुद्धि, शक्ति व धैर्य का संचार होता है और वह संकटों का सामना धैर्यपूर्वक करता है, यह इन उदाहरणों से स्पष्ट सिद्ध होता है।

ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के बिना आयुष्य क्रमण करना, घोर अन्धकार में आयुष्य क्रमण करना है। आकाशस्थ ग्रहों की उच्च, मध्यम व नीच ये तीन अवस्थायें प्रत्येक मनुष्य के जन्म समय रहा करती हैं और जन्मकालीन ग्रहों के अवस्थानुसार वे सत्व, रज, तम, इन तीन गुणों से प्रभावित हो तज्ज्ञ, सूज्ञ व अज्ञ, कहलाती हैं। प्रत्येक मनुष्य इनके प्रभाव से जन्म से मरण तक कालरूपी गाड़ी के पहले, दूसरे व तीसरे दर्जे में बैठकर सुख-दुःख पाता हुआ प्रवास करता है किन्तु बुद्धि व प्रयत्न के बल से वह अपना जीवन वर्तमान या भविष्य समय में किस तरह सुखी बना सकता है, इसका ज्ञान ज्योतिषशास्त्र के आधार पर ही उसे प्राप्त होता है और वह वर्तमान संकटों को घटा या हटा सकता है।

इस जगत में ईश्वर सर्वज्ञ व मनुष्य अल्पज्ञ प्राणी है। इसलिये हमारे समान अल्पबुद्धि वाले मनुष्य को ज्योतिषशास्त्र जैसे अत्यन्त क्लिष्ट विषय पर कोई नई बात लिखना सर्वथा अशक्य है क्योंकि इस सम्बन्ध में ऋग्वेद संहिता में लिखा है— 'धाता यथापूर्वमकल्पयत्' अर्थात् साक्षात् विधाता ने जैसी सृष्टि पहले थी वैसी ही पुनः निर्माण की। हमारे समान अल्पज्ञ मनुष्य के लिये ज्योतिषशास्त्र जैसे समुद्र के समान अगाध गहरा, अपार और त्रिकालदर्शी शास्त्र के अनेक अंगों का पूर्ण रूप से विवरण करना और उसकी अनमोल उपयोगिता से सूज्ञ पाठकों को परिचय करा देना असंभव है तथापि हमने यथाशक्ति इस अल्पकाय ग्रन्थ में अपने अनुभव तथा अनेक आधारभूत प्राचीन ग्रन्थों का निष्कर्ष लेकर पुस्तक को सरल हिन्दी भाषा में लिखने का प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थ के प्रस्तुत द्वितीय संस्करण के संशोधन-परिवर्धन में वाराणसी के सुप्रसिद्ध ज्यौतिषाचार्य ज्योतिषरत्नाकर श्री पं० रामनाथशास्त्री ने जो मनोयोगपूर्वक सहायता पहुँचायी है, उसके लिये हम उनके हृदय से आभारी हैं। फिर भी सम्भव है इस शास्त्र के तज्ज्ञों की दृष्टि से इस ग्रन्थ में कई त्रुटियाँ रह गयी हों, उसे विद्वज्जन व क्षमाशील पाठकगण क्षमा करेंगे।

यह ग्रन्थ प्रकाशित होते ही श्रीमान् डाक्टर रामकुमार वर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०, मुख्याधिकारी, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद युनिवर्सिटी व मंत्री परीक्षा विभाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग तथा पण्डित सिद्धनाथ शुक्ल ज्योतिषालंकार, मंत्री ज्योतिर्विद् मण्डल, खण्डवा, सी० पी० तथा सदस्य हि० सा० स० प्रयाग से समादृत होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पाठ्य-क्रम में "मध्यमा परीक्षा" के लिये निर्धारित किया गया है, अतः उन्हें हार्दिक धन्यवाद देना हमारा कर्त्तव्य है।

देश के सुप्रसिद्ध नेता, प्रतिष्ठित ज्योतिषाचार्य, धुरंधर विद्वज्जन एवं हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू समाचार पत्र-पत्रिकाओं के विद्वान सम्पादक महाशयों ने इस ग्रन्थ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है, जिनका प्र० संस्करण में नामोल्लेखपूर्वक आभार प्रदर्शन किया जा चुका है। प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकार से उदाराश्रय मिलने के कारण हमने चौबीस वर्ष के पश्चात् इस संशोधित परिवर्धित आवृत्ति का लिखना आरम्भ किया व इसे पूर्ण किया। इस परम उपकार व उदाराश्रय के लिये हम प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकार के आजन्म ऋणी रहेंगे। साथ ही हमारे परमप्रिय मित्र स्वर्गीय श्रीमान् दयाभाई खुशाल भाई पटेल, प्रमुख व्यापारी विलासपुर व श्रीमान् महोदय डाक्टर वी० एस० चौहान एक्टिंग डाइरेक्टर ज्यूलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, कलकत्ता ने क्रमशः हमें ३०१ व २०१ रुपया से आर्थिक सहायता प्रदान कर उपकृत किया और हमारा उत्साह बढ़ाया इसलिये इन महानुभावों को तथा वाराणसी के विश्वविख्यात चौखम्बा संस्कृत संस्थान के अधिकारिवर्गों को, जिन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ इस सुसंस्कृत संस्करण को प्रकाशित किया है—हार्दिक धन्यवाद देना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है।

अन्त में जिस परम कृपालु परमेश्वर के कृपा-प्रसाद से हमें इन चार अक्षरों का ज्ञान प्राप्त हुआ व जिनके शुभाशीर्वाद से यह अल्प लोकसेवा करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ उनको तथा स्वर्गीय माता-पिता के चरणकमलों पर अपना मस्तक अनन्य भाव व श्रद्धापूर्वक रख साष्टांग नमस्कार करते हुये अपना वक्तव्य हम समाप्त करते हैं।

जन्माष्टमी
वि० सं० २०२६

विद्वज्जन-कृपाभिलाषी—
वा० स० खानखोजे

प्रस्तावना

जगत के प्रसिद्ध इतिहास संशोधकों ने एक स्वर से यह घोषित किया है कि भारतीय आर्यों का वेदग्रन्थ जगत के सर्वग्रन्थों में आद्य ग्रन्थ है। इस सर्वमान्य व सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ में जगत के सव शास्त्रों का अर्थात् १—ज्योतिषशास्त्र २—गणितशास्त्र ३—धर्मशास्त्र ४—मंत्रशास्त्र ५—शब्दशास्त्र ६—तत्त्वज्ञानशास्त्र ७—वैद्यकशास्त्र ८—संगीतशास्त्र ९—धनुर्वेदशास्त्र १०—शिल्पकलाशास्त्र इत्यादि का संपूर्ण विवरण संस्कृत भाषा में बीज रूप में किया गया है। अतः जगत के सब शास्त्रों की उत्पत्ति का केन्द्र वेद ग्रन्थ ही है; यह स्पष्टरूप से सिद्ध हो चुका है। वेद शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ जानना या ज्ञान है। ज्योतिष शास्त्र द्वारा जीवात्मा के ज्ञान के साथ ही परमात्मा का ज्ञान भी सहज प्राप्त हो सकता है। इसीलिये इसे वेद के चक्षु कहते हैं। इस अप्रतिम व परम पवित्र ग्रन्थ में प्रत्येक शास्त्र का संपूर्ण वर्णन किये जाने के कारण परमपूज्य व त्रिकालज्ञ महर्षि वशिष्ठ, लोमश, नारद आदि ने संस्कृत भाषा में वशिष्ठ संहिता, लोमश संहिता, नारद संहिता आदि अनेकानेक स्वतंत्र ज्योतिष ग्रन्थ निर्माण कर प्रत्येक घटी-पल नक्षत्र आदि पर जन्म लेने वाले मानव प्राणी की कुण्डलियों का फलित वर्णन किया, जिसे जगत के अनेक धुरंधर विद्वानों ने मान्य किया व जिसका प्रत्यक्ष अनुभव जगत के तज्ज्ञ व अज्ञ लोगों को आज तक प्रतिदिन मिल रहा है। इन महान तपस्वी महर्षियों को कोटिशः धन्यवाद है कि जिन्होंने अपने तपोबल व आत्मबल को जगत कल्याण के लिये समर्पण कर इन आद्य ग्रन्थों द्वारा मानव प्राणी को त्रिकालज्ञान की दिव्य दृष्टि दी, अन्यथा भविष्य के ज्ञान के सिवाय मानव जीवन की प्रगति असम्भव हो गयी होती। वेद के सम्बन्ध से कैलासवासी बालगंगाधर तिलक ने अपने (ओरायन व आर्कटिक होम् आफ दी वेदाज) ग्रन्थ में यह सिद्ध कर दिखाया है कि खिस्ती शक के लगभग ४५०० वर्ष पूर्व वेद का अन्तिम भाग लिखा गया है जिसे यूरोप खण्ड के प्रचण्ड विद्वानों ने पूर्ण रूप से मान्य किया है। इसके अतिरिक्त मनु जैसे स्मृतिकार ने ३००० वर्ष पूर्व हिन्दू समाज के लिये उपयोगी मनुस्मृति ग्रन्थ का निर्माण किया जो इस समाज की कठिन से कठिन समस्याओं का निर्णय करने के लिये देश के सर्व न्यायालयों में अभी भी सर्वश्रेष्ठ व आधारभूत ग्रन्थ माना जा रहा है। शिल्पकला शास्त्र में भी इस देश के लोग इतने निपुण थे कि प्राचीन यवन लोगों ने इनकी स्तुति मुक्तकण्ठ से की है। यूनानियों ने इस देश की इमारतों की नकल अपने कलाकारों द्वारा ले जाकर वैसी ही इमारतें अपने देश ग्रीस में बनवाई, ऐसा डाक्टर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर का मत है।

ज्योतिषशास्त्र को वेद ग्रन्थ का मुख्य अंग होने के कारण वेदांग भी कहते हैं। त्रिकालज्ञ महर्षियों ने जिसे अपने सामर्थ्य व योगबल के आधार पर आकाशस्थ ग्रहों के मानवीय प्राणी पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का चिकित्सक-बुद्धि व अनुभव के पश्चात् सिद्धान्त निर्माण किया उसे ही फलितशास्त्र कहते हैं। वशिष्ठ, पराशर, व्यास, मरीचि, गर्ग, अत्रि, सूर्य, पितामह, जैमिनि, भारद्वाज आदि जैसे महान तपस्वी महर्षियों ने अपने-अपने ग्रन्थ द्वारा तथा रावण जैसे महान बलाढ्य व तपस्वी राक्षस राजा ने स्वकृत रावणसंहिता द्वारा ज्योतिषशास्त्र को अधिक उज्वलित किया, यह सर्वश्रुत है।

ज्योतिषशास्त्र के मुख्य दो अंग हैं, एक गणित एस्ट्रानामी दूसरा फलित एस्ट्रालाजी। इनके सिद्धान्त, संहिता और फलित शास्त्र के अन्तर्गत जातक विभाग का अन्तर्भाव किया गया है। उपर्युक्त महर्षियों ने अपने तपोबल व योगबल द्वारा हजारों वर्ष पूर्व गणित शास्त्र के आधार पर ग्रहों के गुण, धर्म, रूप, रंग, स्वभाव आदि का जगत के चराचर वस्तु व प्राणियों पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का वर्णन फलित शास्त्र में विस्तारपूर्वक किया है। सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि भारतवर्ष के जिन महर्षियों ने केवल अपने योग व तपोबल के आधार पर आकाशस्थ ग्रहों के स्थिति, गति, भ्रमण, बलाबल व रूप-रंग का पृथ्वी पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का परिचय हजारों वर्ष पूर्व बिना यंत्रों की सहायता से जगत के मानव प्राणियों को दिया था, उसे आज पाश्चात्य देशों के संशोधकों व शास्त्रज्ञों ने अनेक प्रकार के यंत्र, सामग्री के आधार पर सैकड़ों वर्ष के निरंतर परिश्रम से सिद्ध कर दिखाया है। जगत के अनेक विद्वानों को इन तपस्वी महर्षियों की प्रचंड शक्ति, बुद्धि, दिव्य दृष्टि व त्रिकालज्ञ होने का पूर्ण परिचय वेदांग ज्योतिष तथा सूर्य सिद्धान्त आदि शास्त्रों में दिये हुए वर्णन द्वारा मिल चुका है। अत: जगत के लोग हमारे महर्षियों के ऋणी हैं। भारतीय ज्योतिष शास्त्र का आधार दूरबीन यन्त्र नहीं किन्तु हमारे महर्षियों का तपोबल व दिव्य दृष्टि है—यह स्पष्ट सिद्ध होता है।

खेद है कि जिस आर्यावर्त के अलौकिक विद्वान ज्योतिषाचार्य व ज्योतिष-रत्न वराहमिहिर, आर्यभट्ट, केशव दैवज्ञ, गणेश दैवज्ञ, सत्याचार्य, मय, ब्रह्मगुप्त, जीव शर्मा, विष्णुदत्त, कल्याण वर्मा, माणिक्य आदि ग्रन्थकारों ने अपने-अपने अनेक ग्रन्थों में ज्योतिषशास्त्र जैसे नित्योपयोगी शास्त्र पर जगत के कल्याणार्थ सूक्ष्म विवेचन कर जगत के लोगों को फलित शास्त्र का अनुभव सिद्ध कर दिखाया है, आज उसी देश के आधुनिक विद्वानों का इस सर्वश्रेष्ठ शास्त्र के प्रति उदासीनता दिखाना मानो अपने उन तपस्वी महर्षियों के प्रति अपने ज्ञानशून्यत्व का साक्ष्य देना है। किं बहुना, गणित शास्त्र के आधार पर पंचांगों में दिये हुये ग्रहों के उदय व अस्त तथा राश्यंतर व सूर्य-चन्द्र-ग्रहण

के शुभाशुभ परिणामों का प्रत्यक्ष अनुभव प्रति दिन व प्रति वर्ष मिलते हुए फलित शास्त्र के प्रति अपना अविश्वास व्यक्त करना जगत को अपनी अज्ञानता का परिचय देना है।

ज्योतिषशास्त्र का प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास

जगत के प्राचीन राष्ट्रों में जिन्हें ज्योतिषशास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ, वे केवल दो राष्ट्र हैं—एक भारत, दूसरा ग्रीक। ईस्वी सन् के हजारों वर्ष पूर्व भारतवर्ष में ज्योतिषशास्त्र का वटवृक्ष इतना ऊँचा था कि इसकी घनी छाया में दुःख के तीक्ष्ण बाणों से त्रसित हुए अन्य देश के लोग विश्रांति पाया करते थे। इस देश के अनेक महर्षियों तथा आर्यभट्ट, लल्ल आदि अप्रतिम विद्वानों ने इस शास्त्र पर अनेक ग्रन्थ निर्माण किये। वराहमिहिर नामक एक धुरंधर विद्वान ने अपनी सूर्योपासना के बल पर बृहज्जातक, बृहत्-संहिता, लघुजातक आदि अनेक ज्योतिष ग्रन्थ निर्माण किये। इनका जन्म उज्जैन के अन्तर्गत कापित्थक नाम के ग्राम में हुआ था। बृहज्जातक ग्रन्थ सूत्र मय होने के कारण इसकी टीका लिखने की इच्छा कई विद्वानों को हुई, किन्तु इस अभाव की पूर्ति सर्वप्रथम देवग्राम राजधानी के राजा कल्याण वर्मा ने की। यह महाभारत के भीष्माचार्य के गोत्र व्याघ्रपद गोत्र का था। इसने पूर्व आचार्यों के अनेक ग्रन्थों का सार संग्रह कर सारावली नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। पश्चात् ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान क्रमशः एशिया खण्ड के भारतीय आर्य, पारसीक, खाल्डिया, चीन व ईजिप्ट देश के लोगों को हुआ।

ईस्वी सन् १४९ से १८६० तक पाश्चात्य देश के अनेक संशोधक विद्वान व ज्योतिषज्ञों ने अनेक यन्त्रों द्वारा आकाशस्थ ग्रहों की स्थिति व गति के विषय में अनेक ग्रन्थ लिखे व उन्होंने पाश्चात्य ज्योतिष पद्धति (वेस्टर्न एस्ट्रालाजी) का निर्माण किया जो उसी प्राचीन वटवृक्ष की एक शाखा है जो जमीन में पुनः प्रवेश हो एक स्वतन्त्र वृक्ष के रूप में प्रगट हुआ। इसका इतिहास संक्षेप में नीचे लिखे अनुसार है—

१—ईस्वी सन् के कुछ वर्ष पूर्व ग्रीक में पिथ्यागोरस नाम के एक ज्योतिषज्ञ का जन्म हुआ और ईस्वी सन् १४९ के लगभग हिपाईस नाम के दूसरे ज्योतिषी का जन्म हुआ। वहाँ उन्हें ग्रीक ज्योतिष पद्धति के उत्पादन के लिये बहुमान प्राप्त हुआ क्योंकि उन्होंने सूर्य-चन्द्र की गति पर एक ग्रन्थ निर्माण किया।

२—ईस्वी सन् १५० में टालमी नाम के ग्रीक राजा गणितज्ञ व ज्योतिषज्ञ ने टाइट्राबिब्लास नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया और उन्होंने अलेकझड्रिया में वेधशाला स्थापित की तथा ग्रहों के परिक्रमा, काल, अयन, गति, ग्रहण आदि पर सिन्टाक्स नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया जो आलमाजेस्ट नाम से प्रसिद्ध है। यह अन्तिम ग्रन्थ अरब और पाश्चात्य देश के लोगों में १४०० वर्ष तक ईश्वर प्रणीत ग्रन्थ माना जाता था।

३—ईस्वी सन् ७०० के लगभग मुसलमानों ने अलेकझेंड्रिया के प्रख्यात वाचनालय को जलाकर बगदाद में विद्यापीठ की स्थापना की।

४—ईस्वी सन् ७३३ में खलीफा के दरबार में एक हिन्दू ज्योतिषी था।

५—ईस्वी सन् ८०० में मुसलमानों ने हिन्दुओं के ज्योतिषशास्त्र में प्रसिद्ध अंकगणित, बीजगणित ग्रन्थों का भाषान्तर अरबी भाषा में किया।

६—ईस्वी सन् ८२७ में मुसलमानों ने टालमी के आलमाजेस्ट ग्रन्थ का भाषान्तर अरबी भाषा में प्रकाशित किया।

७—ईस्वी सन् ९०० में फ्रान्स देश के लोगों ने मुसलमानों से ज्योतिष विद्या का अध्ययन किया। पाश्चात्य यूरोप के लोगों ने ईस्वी सन् १३०० में आलमाजेस्ट के अरबी भाषान्तर ग्रन्थ का अनुवाद लेटिन भाषा में किया व इसी समय कास्टिल के राजा आलफज ने ज्योतिषशास्त्र पर एक नवीन ग्रन्थ का निर्माण किया।

८—तैमूरलंग का नाती उल्लूबेग (संस्कृत—मनाह्र) ने समरकन्द में एक उत्कृष्ट वेधशाला स्थापित की व टालमी के अपूर्ण नक्षत्र स्थिति पत्रक को अपने गणित द्वारा ईस्वी सन् १४३७ में पूर्ण कर एक नवीन तारा स्थिति पत्रक ग्रन्थ प्रकाशित किया।

विश्व रचना पद्धति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाश्चात्य देश के ज्योतिषी टालमी, पिथ्यागोरस, न्यूटन ने घोर प्रयत्न किया परन्तु उन्हें पूर्ण यश नहीं मिला।

९—एशिया खण्ड के कोपर्निकस नाम के ज्योतिषी को ईस्वी सन् १५०७ में विश्वरचनापद्धति के सच्चे स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हुआ व दीर्घकाल के प्रयत्न व शोध से गणित वेध की सहायता का पूर्ण अनुभव मिलने पर उसने ईस्वी सन् १५४३ में इस विषय पर एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जिसकी छपी हुई एक प्रति उसे मृत्यु के कुछ घण्टे आगे देखने को मिली व तदनन्तर उसका प्राणोत्क्रमण हुआ। मरणोन्मुख होते हुये उसने विश्वरचनापद्धति का सच्चा ज्ञान ही जगत के कल्याणार्थ ग्रन्थ द्वारा प्रकाशित करके लोगों को दिया जिसका सच्चा आनन्द लेखकगण को ही हो सकता है।

१०—ईस्वी सन् १५७७ में डेनमार्क के राजा ने टायकोब्राहे ज्योतिषी के इच्छानुसार एक वेधशाला स्थापित की जिसने नक्षत्र पर से फल निकाला कि फिनलैण्ड के उत्तर भाग में एक राजा का जन्म होगा जो जर्मनी का नाश करेगा। इसी फलित के अनुसार गुस्टाव्हस आडल्फस का जन्म फिनलैण्ड में हुआ। उसने जर्मनी पर विजय प्राप्त की। यह घटना इतिहासप्रसिद्ध है। पाश्चात्य टायकोब्राहे का देहावसान ईस्वी सन् १८३२ में हुआ। (ब्रिटिश इन्सायक्लोपीडिया)।

११—ईस्वी सन् १६०० में ग्रहों की गति व स्थिति जानने के लिये दूरबीन यंत्र का प्रथम उपयोग करने का बहुमान हालैण्ड के ज्योतिषी गेलोलियो को मिला। इस

यंत्र की सहायता से ढाई लाख मील दूर की वस्तु ४० मील दूर के सिरे पर दिखायी देने लगी ।

१२—ईस्वी सन् १६१९ में बलेपर जैसे विद्वान संशोधक व ज्योतिषज्ञ ने प्रत्येक-ग्रह सूर्य की परिक्रमा किस मार्ग, गति व कितने अन्तर से करते हैं इस पर एक ग्रन्थ लिखा जिससे वेध की सूक्ष्म कल्पना लोगों को दूरवीन द्वारा होने लगी ।

१३—ईस्वी सन् १६६७ में न्यूटन जैसे अलौकिक विद्वान संशोधक ने प्रिंसिपिया नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जिसमें द्रव्य और जड़ पदार्थ के प्रत्येक परमाणु में आकर्षण शक्ति है और वे परस्पर को आकर्षित करते हैं, यह सिद्ध कर दिखाया व इसी नियम के अनुसार प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा सदैव करते हैं ।

१४—ईस्वी सन् १८३० में प्रकाश लेखन कला यंत्र अर्थात् सूर्यचन्द्रादि का चित्र उतारने का दूरबीन यंत्र निर्माण किया गया।

१५—ईस्वी सन् १८६० में वर्ण लेखक दूरबीन यंत्र निर्माण हुआ जिससे ग्रहों के रूप, रंग आदि का सच्चा चित्र लिया जाता है।

इस तरह सहस्राधिक वर्ष के घोर प्रयत्न द्वारा पाश्चात्य ज्योतिषियों व संशोधकों ने ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर अपने गणित द्वारा पाश्चात्य ज्योतिष पद्धति को जन्म दिया । फलित ज्योतिष विषय पर पाश्चात्य देश के तज्ञों की इतनी अधिक श्रद्धा हो गयी कि—

१—इंगलैण्ड में इस विषय पर चर्चा करने के हेतु एक ऐसी संस्था संघटित हुई जिसमें पुस्तक, भाषण, व्याख्यान द्वारा लोक समुदाय को शास्त्र शुद्ध ज्ञान दिया जाता है।

२—अमेरिका में इस विषय पर खास कालेजों की स्थापना की गयी है जिनमें योग्य विद्यार्थियों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर पदवी प्रदान की जाती है।

परन्तु खेद से कहना पड़ता है कि संप्रति देश के पूर्ण स्वतंत्र होने पर भी हमारे देश में इस शास्त्र का ज्ञान विद्यार्थियों को नहीं दिया जाता, क्योंकि देश के कर्णधार इस शास्त्र के प्रति उदासीन दिखाई देते हैं। अतः हमारा उनसे यह नम्र निवेदन है कि इस त्रिकालदर्शी व नित्योपयोगी विद्या का प्रचार विद्यालयों द्वारा भरसक करने का प्रयत्न शीघ्र ही करें जिससे हमारे देश के लोगों के मन में धर्म और स्वदेशाभिमान की प्रबल भावना उत्पन्न हो, देश की स्वतंत्रता सदैव के लिये कायम रख सकें, यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

हर्शल नेपच्यून दो नये ग्रहों के शोध का इतिहास

विलियम हर्शल नाम के एक प्रख्यात दूरबीन निर्माता, संशोधक व ज्योतिषज्ञ को इंग्लैंड के राजा जार्ज दी थर्ड से आश्रय पाने के कारण आकाश में कितने तारे हैं इसका

शोध करते हुए २३-३-१७८७ को १० बजे रात्रि में मिथुन राशि में एक अत्यन्त बड़ा तारा दिखाई पड़ा। जिस दूरबीन से उसने देखा था उससे दो हजार गुने अधिक प्रभावशाली दूरबीन से पुनः निरीक्षण करने पर उसे ज्ञात हुआ कि यह धूमकेतु है। उसी दिन से उसकी गति व स्थिति के शोध में संलग्न होने पर उसे यह ज्ञात हुआ कि यह कोई ग्रह है। राजा जार्ज दी थर्ड के उदाराश्रय से विलियम हर्शल ने इस तारे का शोध किया। अतः उसके मन में इस तारे का नाम जार्ज रखने का था, परन्तु अन्य देशों के संशोधकों व ज्योतिषज्ञों के आग्रह के कारण उस ग्रह का नाम संशोधक के नाम पर हर्शल रक्खा गया।

ग्रीक देश के पुराणों में ज्यूपीटर (गुरु) की कक्षा से सैटर्न (शनि) की कक्षा ऊपर होने से शनि को गुरु का पिता मानते हैं और यह नया ग्रह शनि की कक्षा के ऊपर होने के कारण इसे शनि का पिता और गुरु का पितामह मानते हैं किन्तु उनके देवताओं में यूरेनस सबसे वृद्ध है अतः पाश्चात्य देश के संशोधक व ज्योतिषज्ञों के मतानुसार हर्शल का नाम यूरेनस रक्खा गया। परन्तु इस नवीन ग्रह की गति व स्थिति का मेल वेध से न मिलने के कारण विलियम हर्शल की जिज्ञासा ई० सन् १७८९ तक बढ़ती गयी व अन्त में उसने फ्रान्स देश के बार्वड नामक संशोधक व ज्योतिषज्ञ को गुरु व शनि ग्रह की गति व स्थिति के कोष्टक के साथ हर्शल ग्रह का कोष्टक तैयार करने के लिये कहा और उसने ईस्वी सन् १८२० में तैयार करना आरम्भ किया। सन् १८२० में बीस विकला का अन्तर सन् १८४० में नब्वे विकला का अन्तर व सन् १८४४ में दो कला का अन्तर आने के कारण उसके मन में यह शंका हुई कि इस ग्रह पर अन्य किसी ग्रह की आकर्षण शक्ति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। अतः सारे पाश्चात्य ज्योतिषज्ञ व संशोधकों की जिज्ञासा बढ़ती गयी व उन्होंने अक्टूबर १८४५ में इङ्गलैण्ड के एक तरुण गणितज्ञ के द्वारा ग्रीनिच के मुख्याधिकारी प्रोफेसर ऐरी को सूचना दी कि हर्शल को उपाधि करने वाला एक ग्रह सूर्य के किसी अन्तर पर होना प्रतीत होता है। यह वार्ता फ्रान्स के प्रसिद्ध संशोधक व ज्योतिषज्ञ लव्हलीयर को मालूम होते ही उसने इस ग्रह का ग्रहमान प्रसिद्ध कर वेधशाला के अधिकारी को इस ग्रह का वेध लेने के लिये लिखा व पश्चात् बर्लिन के संशोधक डाक्टर वाल को लिखा कि आप २३-९-४६ के दिन कुम्भ राशि के २६ वें अंश पर वेध कर देखिये। तदनुसार डाक्टर वाल ने वेधकर देखा तो निश्चित स्थान पर उसे एक ग्रह दिखाई पड़ा। यह देखकर पाश्चात्य देश के सारे संशोधक व ज्योतिषज्ञों को इतना आनन्द हुआ जैसे नेत्रहीन व्यक्ति को नेत्र प्राप्ति से होता है। तत्पश्चात् पूर्ण रीति से सन्तोष होने पर उसने इस ग्रह का नाम सर्वानुमति से नेपच्यून रक्खा क्योंकि ग्रीक पुराण में जल के देवता का नाम नेपच्यून पाया जाता है। इस तरह हर्शल का शोध तारीख २३-३-१७८७ और नेपच्यून का शोध तारीख २३-९-४६ को अर्थात् सतत ६० वर्ष के प्रयत्न के पश्चात् विलियम हर्शल ने किया। जिसे पाश्चात्य देश के संशोधकों व ज्योतिषज्ञों ने सानन्द मान्यता दी।

तत्पश्चात् हमारे देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ज्योतिषज्ञ जनार्दन बालाजी मोडक ने यूरेनस व नेपच्यून का नाम प्रजापति व वरुण रक्खा क्योंकि हमारे देश में भी जल के देवता को वरुण कहते हैं और प्रजापति सबका पितामह है। यह नामकरण हमारे देश के ज्योतिषज्ञों को मान्य हुआ क्योंकि हमारे पुराणों में इन ग्रहों के गुण-धर्म पूर्ण रूप से मिलते जुलते हैं यह एक बड़ा आश्चर्य व चमत्कारी संयोग है। इन ग्रहों का सविस्तर वर्णन अन्य ग्रहों के वर्णन के अन्तर्गत पुस्तक में दिया गया है।

इसी तरह यूरोप, अमेरिका व एशिया खण्ड के नीचे लिखे हुये धुरंधर संशोधक तत्त्ववेत्ता व ज्योतिषज्ञों ने सूर्यादि ग्रहों के भ्रमण, गति, मार्ग, आकार, क्षेत्रफल, रूप, रंग, गुणधर्म, अन्तर, आकर्षण, शक्ति आदि का अनेक यंत्रों द्वारा अपूर्व व अचूक शोध किया। जैसे पिथ्यागोरस, हिपार्कस, टालमी, ग्रीक, कोपनिकस (प्रशिया), टायको ब्राहे, केपर डेनमार्क, गैलिलिया हालैण्ड, लार्डरास आयरलैण्ड, सोलानरन्यूको अमेरिका, न्यूटन, हर्शल, जान आदम, लव्हलीयर, प्राक्टर इंग्लैण्ड, बोवर्ड, लालेडी, लायलास, लाकलियर फ्रान्स, झडकाल पीयर्स, एलिन लियो यूरोप आक्सफोर्ड (कास्टिल), हर हैस जर्मनी, उल्लूवेग समरकन्द और इन विद्वानों ने ज्योतिष शास्त्र पर अपनी-अपनी मातृ-भाषा में अनेक ग्रन्थ लिख कर अपने देशवासियों को इस शास्त्र में इतना निपुण बनाया कि उक्त देशवासी इस शास्त्र का सच्चा मर्म, रहस्य व उपयोग जानने का दावा करने लगे। इन धुरंधर विद्वानों ने अपना आयुष्य, बुद्धि व धन खर्च कर जगत को इस शास्त्र की सत्यता का परिचय दिया। पाश्चात्य देश के ज्योतिषज्ञ व संशोधकों ने इस शास्त्र का प्रसार अपने-अपने देश में अधिक प्रमाण में किया जिससे कि इन देशों के साधारणतः मध्यम वर्ग के लोग ही नहीं किन्तु उच्चकोटि के लोग जैसे—पाँचवें चार्ल्स, पहला फ्रांसिस नेपोलियन, अष्टम एडवर्ड (ड्यूक आफ विंडसर), हिटलर, गोरिंग, रिवेनट्राप, व जर्मनी, मिकेडो, जापान आदि देश के श्रेष्ठ लोग ज्योतिषियों के भविष्य कथन से इतने मुग्ध हो गये कि वे महानुभाव इस शास्त्र पर अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करने लगे और संकट समय आते ही इस त्रिकालदर्शी विद्या से लाभ उठाना आरम्भ किया।

ज्योतिषशास्त्र के फलादेशानुसार सूर्य और चन्द्र के शुभाशुभ परिणामों का प्रत्यक्ष अनुभव जगत के मानव प्राणी को जिस तरह नित्य मिलता है उसी तरह पृथ्वी के प्राणियों पर अन्य ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव का मिलना भी स्वाभाविक है किन्तु विश्वरचना पद्धति के ज्ञान के बिना यह साधारण मनुष्य के ध्यान में आना कठिन है। अतः प्रथम सृष्टि की उत्पत्ति और विश्वरचनापद्धति के विषय में यहाँ संक्षेप में लिखना हम आवश्यक समझते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति

भूस्तर शास्त्र के अनुसार इस सृष्टि की उत्पत्ति ईस्वी सन् के १९५८८३१०० वर्ष पूर्व हुई। इसके १७०६४००० वर्ष पूर्व काष्ठ, पाषाण, जलचर, थलचर, जीवजन्तु

आदि का निर्माण हुआ। तारे, ग्रह, नक्षत्र व सूर्यमाला इन्हें स्वयं गति उत्पन्न हुई। मत्स्य, कूर्म इत्यादि जलचर प्राणी व नृसिंह, वराह इत्यादि वनचर प्राणियों को जन्म मिला। पश्चात् मानव प्राणी की उत्पत्ति हुई। अन्य प्राणी की अपेक्षा मनुष्य को वाचा-विचार ये दो बातें ईश्वर ने अधिक दीं। साथ ही दश कर्मेन्द्रियों व दश ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मनुष्य में क्रमशः प्रगति होती गयी। प्रथम मनुष्य को दिन-रात होते हुए देख आश्चर्य होने लगा, परन्तु विचार करने से उसे यह ज्ञात हुआ कि ग्रह और तारों के उदय अस्त होने पर ही यह निर्भर है। पश्चात् ग्रीष्म, वर्षा, शरद ऋतु का विचार कर दिवस, मास, एक वर्ष का कोष्टक तैयार किया। सूर्य के चारों ओर शुक्रादि ग्रहों के नित्य भ्रमण करने के कारण उसे सूर्यमाला का ज्ञान हुआ। तारों पर से नक्षत्रादि स्वरूप की उत्पत्ति की गयी। उनके गुण, धर्म की कल्पना का निर्माण हुआ। सूर्य की गति से ऋतु निर्माण हुये और ऋतु पर वनस्पति, फल-फूल, धान्य, शीत, उष्ण आदि अवलम्बित हैं; यह सिद्ध किया गया। समुद्र की बढ़ती-घटती ग्रहों के वृद्धि-क्षय पर निर्भर है और मानसिक रोगों का कम या अधिक होना पूर्णिमा व अमावस्या के रोज प्रबल रूप से दिखाई पड़ने लगा। इन कारणों से ग्रहों का परिणाम पृथ्वी पर रहनेवाले प्राणिमात्र पर पड़ता है, यह सिद्ध किया गया। ग्रहों के गुणधर्म स्वभावानुसार वे अपने मार्ग से क्रमण कर युति योग के कारण उनके गुणधर्म में जो फेर बदल पड़ता है उसका ज्ञान मनुष्य को हुआ। राशि और नक्षत्र के गुणधर्म का अनुभव मनुष्य को मिलने के कारण फलित शास्त्र की मर्यादा निश्चित करने के हेतु ग्रहों के चक्रांश निश्चित किये गये। इस तरह मनुष्य का ज्ञान पृथ्वी की वस्तुओं के साथ ही साथ आकाशस्थ ग्रहों का ज्ञान भी बढ़ता गया और आज भी नये ग्रह प्रकाश, गति, हवा का वातावरण, ग्रहों के उपग्रह व ग्रहों पर रहने वाले जीवजन्तु का शोध चालू है। आगे चलकर मनुष्य और देवता इन दोनों में भेदभाव मिट कर मनुष्य ही देव है यह क्रम सिद्ध होगा, ऐसा प्रतीत होगा।

विश्वरचना-पद्धति

जगत के अनेक संशोधकों ने हजारों वर्ष के अविश्रांत परिश्रम से यह सिद्ध कर दिखाया कि पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, आदि ग्रहों के विश्व में एक कुटुम्ब है। इस कुटुम्ब का मुख्य कर्ता सूर्य है और चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, प्रजापति व वरुण इस कुटुम्ब के सदस्य हैं। सूर्य में उत्पादक, संरक्षक, नाशक व आकर्षण शक्ति भी विद्यमान है और उसमें प्रकाश, उष्णता व वर्षा अनेक शक्ति भी केन्द्रित है। सूर्य अपनी शक्ति अपने कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य को योग्य प्रमाण से नित्य प्रदान करता है। वैदिक धर्म की दृष्टि से सूर्य ईश्वर की साक्षात् विभूति है। इस जगत में सूर्य भगवान की आराधना करने वाले अनेक राष्ट्र हैं। शास्त्रीय शोध जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे इसका प्रभाव प्रतिदिन अधिक अंश में दिखायी दे रहा है क्योंकि संशोधकों को इसकी जगह प्रत्यक्ष परमेश्वर के विभूतिमत्व का प्रत्यय अधिक दिखने लगा। सूर्य ग्रह

आकर्षण शक्ति का केन्द्र स्थान है और यही शक्ति पृथ्वी और अन्य ग्रहों में होने के कारण पारस्परिक आकर्षण से पृथ्वी के साथ प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा नित्य किया करता है। यह ज्ञान साधारण मनुष्य को होना कठिन है, परन्तु न्यूटन जैसे अलौकिक विद्वान् संशोधक ने ईस्वी सन् १६२७ में यह सिद्ध कर दिखाया कि पृथ्वी के प्रत्येक परमाणु में आर्कषण शक्ति विद्यमान है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि पृथ्वी के समान सूर्य की नित्य परिक्रमा करने वाले अन्य ग्रहों में भी आकर्षण शक्ति है। पृथ्वी के क्षेत्रफल व आकार से ग्रहों के क्षेत्रफल व आकार अधिक होने के कारण उसमें अधिक आकर्षण शक्ति है—यह स्पष्ट सिद्ध होता है। पृथ्वी और ग्रहों की इस तरह एक-जातीयता तथा आकर्षण शक्ति का परस्पर सम्बन्ध होने के कारण यदि इनकी क्रिया व प्रतिक्रिया का परस्पर प्रभाव मानव प्राणी पर आजन्म पड़ता हो तो कोई आश्चर्य नहीं। तात्पर्य यह है कि आकाशस्थ ग्रहों में पृथ्वी के समस्त चराचर वस्तु व प्राणियों पर अपनी शुभाशुभ शक्ति का प्रभाव दिखाने की क्षमता है और वे इस जगत में अपनी शुभाशुभ स्थिति व गति के अनुसार सुख-दुःख की लहरें नित्य उत्पन्न कर मनुष्य को कभी सुख व कभी दुःख भोगने का प्रसंग उपस्थित करते हैं, यह स्पष्ट सिद्ध होता है। सारांश यह है कि प्राचीन महर्षियों व अर्वाचीन संशोधकों द्वारा निर्मित सिद्धान्तों पर किसी भी समंजस मनुष्य का अविश्वास व्यक्त करना, उनके प्रति जगत को अपनी अज्ञानता व्यक्त करना है—ऐसा खेद से कहना पड़ता है।

प्राचीन महर्षियों व अर्वाचीन विद्वानों ने अपने वर्षों के परिश्रम से यह सिद्ध कर दिखाया है कि आकाशस्थ ग्रहों के रूप, रंग, गुणधर्म, स्वभाव व लक्षण आदि का प्रभाव एक दूसरे से भिन्न है। प्रत्येक ग्रह अपने गुणधर्म के अनुसार माता के गर्भ में शिशुपिण्ड पर अपना प्रभाव प्रथम मास से दिखाते हैं। जैसे—

प्रथम मास में	शुक्र का प्रभाव	पंचम मास में	चन्द्र का प्रभाव
द्वितीय मास में	मंगल का प्रभाव	षष्ठ मास में	शनि का प्रभाव
तृतीय मास में	गुरु का प्रभाव	सप्तम मास में	बुध का प्रभाव
चतुर्थ मास में	सूर्य का प्रभाव	अष्टम मास में	लग्नेश और नवम

मास में पुनः चन्द्र का प्रभाव पड़ने पर बालक का जन्म होता है जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य में भिन्न-भिन्न रूप, रंग, गुण, धर्म, स्वभाव दिखाई देते हैं। यहाँ पर यह सोचना अत्यन्त आवश्यक है कि जिन ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का प्रभाव माता के गर्भ में शिशुपिण्ड पर पड़कर वृद्धिगत होता है, उन्हीं ग्रहों का प्रभाव जन्म होने पर बालक पर नहीं पड़ता, ऐसा कहना कहाँ तक सयुक्तिक होगा, इसका विचार सुज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं, हमारे लिखने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही ईश्वर सर्व-व्यापी है यह सभी को मान्य है और उसकी लीला, महिमा और विचित्रता का उदाहरण इस जगत में अनेक प्रसंग पर सप्रमाण दिखाई देता है। उसे देख मनुष्य

चकित और मुग्ध हो उस जगन्नायक के अस्तित्व पर अपनी श्रद्धा व पूर्ण विश्वास प्रगट करता है। परन्तु हमारे मत से सबसे आश्चर्यजनक घटना और ईश्वर की ईश्वरता, व्यापकता व समर्थता का जीता-जागता उदाहरण और प्रत्यक्ष प्रमाण माता के गर्भ का शिशुपिण्ड है क्योंकि गर्भ में पिण्ड का भरण-पोषण, उत्पादन और बहिर्गमन आदि का विचार मानवी शक्ति के बाहर है चाहे वह कितना बुद्धिमान क्यों न हो। वस्तुतः माता का गर्भस्थान एक अत्यन्त संकीर्ण जगह है। इस स्थान में पिण्ड का निवास पोषण के लिये नाभि-कमल द्वारा माता के भोजन-रस का ग्रहण करना, शरीर को वाह्य आघातों से रक्षा करने के हेतु उस पर कई तहों का जमाव रहना, पिण्ड का वृद्धिगत होना, आदि अद्वितीय वातें एक चमत्कार हैं जो कि मनुष्य की विचार शक्ति के वाहर है। सचमुच ईश्वर के सिवाय अन्य कोई शक्ति नहीं जो इस नाजुक प्रसंग पर रक्षक का कार्य कर सके। कई लोग इसे प्रकृति या निसर्ग कहकर टालने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु विचार करने से यह ज्ञात होगा कि प्रकृति जड़ है जब तक उसे कोई चेतन शक्ति राह दिखाने के लिये समर्थ न हो तबतक वह क्या कर सकती है? साथ ही माता-पिता के गुण व शारीरिक चिह्न भी अनेक बार शिशु के शरीर में जो दिखाई देते हैं क्या उससे यह सिद्ध नहीं होता कि ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है और उसका वरद हस्त मानव प्राणी पर प्रत्येक क्षण रहता है। उसके बिना इस संसार में मानव-जन्म असम्भव हो गया होता अतः उस करुणामय दया-सागर भगवान का नित्य स्मरण करना और उस पर ही पूर्ण भरोसा करना यह प्रत्येक मनुष्य का परम पवित्र धर्म और कर्त्तव्य है—ऐसा हमारा व्यक्तिगत मत है।

फलित शास्त्र की श्रेष्ठता

इस शास्त्र की श्रेष्ठता, उपयोगिता, व विशेषता के सम्बन्ध में कल्याण वर्मा जैसे विद्वान व सुप्रसिद्ध ज्योतिषज्ञ ने अपने सारावली ग्रन्थ में कहा है—

'अर्थार्जिने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रासमये मंत्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥'

अर्थात् मनुष्य को द्रव्य संपादन करने में सहायक, आपत्तिरूपी समुद्र पार करने की नौका और यात्रा (प्रवास) आरम्भ करने के पूर्व योग्य सलाह देनेवाला मंत्री जातक शास्त्र के अतिरिक्त इस जगत में दूसरा कोई शास्त्र नहीं है।

फलित शास्त्र संकट-काल का सच्चा मित्र और नेक सलाह देनेवाला मंत्री है, इस पर जो कई आधुनिक पण्डितों का आक्षेप है उसपर सर्वप्रथम विचार करना आवश्यक है। उनका मुख्य आक्षेप यह है कि मान लो कि फलित शास्त्र सत्य है तो इसका अर्थ यह

होता है कि ईश्वर ने मनुष्य का जन्म होने के पूर्व उसके आयुष्य का कार्यक्रम निश्चित कर दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि वह परतन्त्र प्राणी है और उसे प्रयत्न करने की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु व्यवहार में नित्य यह दिखता है कि प्रयत्न के बल मनुष्य अनेक कठिन कार्य को साध्य कर लेता है। इससे यह सिद्ध होता है कि वह स्वतन्त्र प्राणी है। इसके पीछे ज्योतिष शास्त्र का भूत लगाना उसकी दिशाभूल करना है। क्षण भर के लिये मान लिया जाय कि मनुष्य स्वतंत्र प्राणी है तो क्या इसका अर्थ यह होता है कि वह सर्वत्र ही स्वतंत्र है। विचार करने से ज्ञात होगा कि मनुष्य परतंत्रता का दिव्य स्वरूप है। वह शरीर से रोगों का शिकार है और मन से वह सदा परिवर्तनशील प्राणी होने के कारण चिंता से सदा व्यग्र रहता है। फलतः वह शरीर और मन दोनों से एक दम पराधीन है। मनुष्य एक चैतन्य शक्ति का अधिष्ठान है, इसमें शक नहीं, किन्तु उसे यह खबर नहीं रहती कि उसके भीतर चैतन्य शक्ति की चिनगारी है। वह अवश्य जलायी जाती है परन्तु हवा के प्रवाह में दीपक जिस तरह बुझ जाता है उसी तरह उसका चित्त उस भव्य मन्दिर से तुरन्त दूर हो जाता है और वह संसार के चक्र में ऐसा फंस जाता है कि उसे स्वयं समझ में नहीं आता है। मनुष्य सर्वत्रैव स्वतन्त्र है ऐसा कहना केवल मिथ्या प्रलाप करना, भ्रम में गोता लगाना और ईश्वर के सामर्थ्य के प्रति अपनी अज्ञानता प्रकट करना है, ऐसा हमारा मत है क्योंकि मनुष्य यदि पूर्णरूपेण स्वतन्त्र होता तो अनेक विद्वान व वीरों को 'हानि-लाभ और यश-अपयश, ये सब विधि के हाथ' (मनसा चिंतितं कार्यं दैवमन्यत्र चिंतयेत्) (मैन इज ए स्लेव आफ सरकमस्टेन्सेज़) ऐसा कहने का दुर्धर प्रसंग उन वीरों पर क्यों कर आता ?

वास्तव में मनुष्य योनि, यह कर्म और भोग योनि है अतः वह कर्म करने के लिये कुछ अंश से स्वतंत्र है इसमें सन्देह नहीं, परन्तु वह पूर्वजन्म का फल भोगने के लिये पूर्ण परतंत्र है यह निर्विवाद है। ईश्वर ने मनुष्य को शुभाशुभ कर्मों के फल का ज्ञान अवश्य दिया है जिसके कारण वह स्वतन्त्र कहलाता है परन्तु कई परि-स्थितियों व प्रसंगों का विचार करने से यह नहीं कहा जा सकता कि वह पूर्ण स्वतंत्र प्राणी है। जैसे—

१—किसी कुटुम्ब का कर्ता पुरुष अपनी जवाबदारी पूर्ण करने के पूर्व अपने आश्रितों को रुलाकर इहलोक की यात्रा समाप्त करता है। क्या यह उसके स्वतन्त्रता का लक्षण कहा जा सकता है ?

२—मनुष्य संतति, संपत्ति और शारीरिक सुख प्राप्त करने के लिये भरसक प्रयत्न करने पर भी वह कार्य में निष्फल हो अपना आयुष्य कष्ट से व्यतीत करता है क्या यह उसके स्वतंत्र होने का द्योतक है ?

३—स्वतंत्र और परतंत्र देश के दो व्यक्तियों की आकाशस्थ ग्रहस्थिति एक होते भी देश, काल, परिस्थिति के कारण जब उन्हें भिन्न तरह का फल मिलता है तो क्या यह उनके स्वतंत्रता का परिणाम है ?

ऊपर लिखे हुये उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि इस जगत में प्रत्येक मनुष्य जन्म से मरण तक आकाशस्थ ग्रहस्थिति और सांसारिक परिस्थिति का गुलाम है, अर्थात् स्वतंत्र होने का दावा करते हुए भी वह पूर्णतया परतंत्र है, जैसे राजा स्वतन्त्र होते हुए भी परतंत्र कहलाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आठवें राजा एडवर्ड हैं। वैसे मनुष्य कितना भी पराक्रमी हो पर अपयश मिलते ही वह परतंत्र कहलाता है। पश्चात् यश-अपयश, हानि-लाभ जानने के लिये ज्योतिष के फलित शास्त्र का आश्रय लेता है। इसके अतिरिक्त वह तन, मन, धन, स्त्री, संतति और परिस्थिति के बन्धनों में इस तरह ग्रसित रहता है कि वह अपने को पूर्ण स्वतन्त्र कहलाने का साहस नहीं कर सकता। इसका नित्य अनुभव होते हुये यदि मनुष्य अपने को पूर्ण स्वतंत्र कहलाने का दावा करे तो वह वृथा है ऐसा कहना पड़ता है। परन्तु जो मनुष्य लोभ, मोह, मद, मत्सर के परे हो, जिसे पूर्वजन्म के भले-बुरे कर्मों के फल से हर्ष-विषाद न होता हो, वर्तमान आयुष्य में फल की आशा न करते कर्म करता हो, विषयादि इन्द्रिय जिसके वश हो, जिसे जन्म-मरण का रहस्य पूर्ण ज्ञात हो, सुख-दुःख की यातना न होती हो, जिसने सांसारिक दुःख-सुख पर विजय प्राप्त किया हो और जिसका ईश्वर पर पूर्ण भरोसा हो वह मनुष्य अपने को स्वतन्त्र कहलाने का दावा कर सकता है। अन्यथा शेष लोग केवल वाचा से स्वतंत्र हैं परन्तु कृति से परतंत्र हैं, यह लिखने की आवश्यकता नहीं। इस जगत् में मनुष्य जब अपने स्वतः जन्म-मरण, सुख-दुःख, यशोपयश, हानि-लाभ, आदि जानने के लिये असमर्थ है तो वह स्वतंत्र है यह कैसे कह सकते हैं ? इस सम्बन्ध में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेर्जुनतिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।। गी० अ० १८ श्लोक ६१

अर्थात् हे अर्जुन जिस तरह जादूगर सूत्र से बंधे हुये काष्ठ के पुतली को नचाता है उसी तरह ईश्वर समस्त भूतों के हृदय में स्थित होकर कर्म-यन्त्र द्वारा उसे भ्रमाता है।

इससे सूज्ञ पाठकगण स्वयमेव निर्णय करें कि यथार्थ में मनुष्य स्वतंत्र या परतंत्र प्राणी है।

ईश्वरी योजना व मानवी जन्म का ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्ध

मनुष्य को जन्म देते समय ईश्वर की एक अद्भुत योजना दिखाई देती है कि वह पिछले जन्म के कर्मों का ज्ञान उसे न देते हुए जन्म देता है। परन्तु ज्योतिषशास्त्र के

ज्ञान तथा जन्म-समय के ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति पर से उसे पूर्वजन्म में किये हुए कर्मों का ज्ञान आवश्यक हो सकता है। जगत में ऐसे कई उदाहरण हैं कि सम्पन्न सांसारिक परिस्थिति में जन्म पाने वाले मनुष्य को आकाशस्थ विपन्न ग्रह स्थिति के कारण दुःख और विपन्न सांसारिक परिस्थिति में जन्म पाने वाले मनुष्य को आकाशस्थ सम्पन्न ग्रह स्थिति के कारण सुख मिलता है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि सांसारिक परिस्थिति से आकाशस्थ ग्रह स्थिति अधिक शक्तिमान् व प्रभावशाली है और यही ईश्वरी योजना अत्यन्त विश्वसनीय और सत्य है चाहे मनुष्य का जन्म राजकुल या दरिद्र कुल में क्यों न हुआ हो किन्तु जन्म समय के आकाशस्थ ग्रहानुसार उसे सुख-दुख प्राप्त होना निर्विवाद है। इसके अतिरिक्त इन आकाशस्थ ग्रह स्थिति से प्रत्येक समंजस मनुष्य को यह बोध लेना चाहिए कि :—

यदि जन्मसमय में सांसारिक परिस्थिति सम्पन्न हो किन्तु आकाशस्थ ग्रह स्थिति विपन्न हो तो उसे समझना चाहिए कि पूर्वजन्म के शुभ कर्मों के फल समाप्त होने पर आ गये हैं व आगे कष्ट मिलना सम्भव है। अतः उसे चाहिये कि वर्तमान जन्म में अधिक शुभ व पुण्य कर्म करे जिससे उसे अगले जन्म में आकाशस्थ उच्च ग्रह स्थिति प्राप्त हो और :—

१—यदि जन्मसमय सांसारिक परिस्थिति विपन्न हो किन्तु आकाशस्थ ग्रहस्थिति सम्पन्न हो तो उसे यह समझ लेना चाहिये कि पूर्वजन्मकृत पाप-कर्मों के फल भोगने के लिये उसका जन्म हुआ है। अतः वर्तमान जन्म में इस प्रकार के शुभ कर्म करे कि उसे अगले जन्म में सांसारिक और आकाशस्थ दोनों परिस्थिति उच्च प्राप्त हो सके।

अर्थात् पूर्वजन्म संचित कर्मानुसार मनुष्य को यह जन्म प्राप्त हुआ व उसे सहर्ष भोगना चाहिये। इसे ही उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर की विचित्र लीला या योजना कहते हैं। इस योजना का ज्ञान किसी भी मनुष्य को ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्राप्त करने के पश्चात् उसे चाहिये कि वह अपने सत्कर्मों से अशुभ कर्मों के संचित को मिटाने व घटाने के प्रयत्न में संलग्न हो कर प्रयत्न करे। क्या इन उद्देश्यों से यह सिद्ध नहीं होता कि ज्योतिषशास्त्र का जन्म मानव प्राणी के उत्थान के लिये ही हुआ है परन्तु यह ज्ञान प्राप्त करना अथवा न करना यह उसके स्वाधीन है क्योंकि वह कुछ अंश से स्वतंत्र प्राणी कहलाता है। ज्योतिषशास्त्र के द्वारा यदि मनुष्य को अपने पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान इस जन्म में हो तथा उसे घटाने या हटाने के लिये शास्त्रीय उपायों को कार्यरूप में लाकर अशुभ फल को घटा सके तो उसे इस शास्त्र से सच्चा लाभ हुआ ऐसा कहना चाहिये। सारांश इस शास्त्र का जन्म केवल धनलाभ और सुख कब प्राप्त होगा केवल यह जानने के लिये ही नहीं किन्तु समय आने के पूर्व दुःख का प्रतिकार धैर्यपूर्वक करने के लिये हुआ है। इस संसार में सुख के अपेक्षा दुःख की मात्रा

अधिक होने के कारण क्योंकि नौ ग्रहों में चार शुभ और पाँच अशुभ हैं, प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि दुःख का ज्ञान प्राप्त कर उसके प्रतिकार करने में संलग्न हो जावे। फलित जातक शास्त्र का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सुविचारी व उद्योगशील बनाने का है। इस शास्त्र के ज्ञान के आधार पर मनुष्य सुख व शान्ति प्राप्त कर अपना अगला जन्म भी अधिक उज्वल कर सकता है—यह स्पष्ट है।

ज्योतिष शास्त्र से श्रेष्ठ लाभ

ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान से मनुष्य को श्रेष्ठ लाभ यह है कि उसे पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान, वर्तमान जन्म में शुभकर्म करने की आवश्यकता, मानवी जन्म का उद्देश्य, ईश्वरी व मानवी शक्ति में अन्तर, कर्म और भोग की मर्यादा, प्रारब्ध और प्रयत्न की सीमा व दोनों का परस्पर सम्बन्ध, अनुकूल व प्रतिकूल समय का ज्ञान व संकट समय मन में धैर्य रख उस पर विजय प्राप्त करने की शक्ति का ज्ञान प्राप्त होता है। इसे प्राप्त करने के पश्चात् मन में सन्तोष, सन्तोष से चिन्ता का नाश, चिन्ता-नाश से धर्म की प्राप्ति, धर्म से धैर्य व शक्ति की प्राप्ति और शक्ति से ईश्वर के प्रति भक्ति व विश्वास क्रमशः प्राप्त होते हुये व संसारिक आपत्तियों को सहर्ष प्रतिकार कर अपनी जीवनरूपी नौका को आगे बढ़ाते हुए इस भवसागर को सुख से पार करता है। यह अप्रतिम लाभ होते हुये आधुनिक पण्डितों का यदि यह आक्षेप हो कि ईश्वर निर्मित घटनाओं का होना निश्चित है तो उसे जानने से क्या लाभ है? इस प्रश्न का उत्तर शांत चित्त से विचार करने से यह ज्ञात होगा कि मनुष्य को भविष्य में होने वाले अशुभ घटनाओं का ज्ञान उसे पूर्व ही में प्राप्त हो जावे तो क्या उसे अपने आयुष्य का कार्यक्रम समयानुसार निश्चित करने की सहायता न मिलेगी व आने वाले अशुभ प्रसंगों से वह सावधान व सतर्क न होगा? इस ज्ञान से भरसक प्रयत्न करने पर भी यदि उसे उसके प्रयत्न में अपयश भी मिला तो क्या उसे सन्तोष व समाधान न होगा? इसके अतिरिक्त कई सज्जनों का इस शास्त्र के प्रति यह आक्षेप है कि ज्योतिष शास्त्र यह प्रारब्धवादियों के लिये निर्माण हुआ है न कि प्रयत्नवादियों के लिये। तथापि इस शास्त्र पर विश्वास न करने वाले प्रयत्नवादी लोग जब अपयश व आपत्ति के चक्र में पड़ते हैं तब वे अपना भविष्य इसी शास्त्र के आधार पर जानने के अभिलाषा से ज्योतिषज्ञ की याचना करते हुए दिखाई देते हैं। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि प्रयत्न में यश मिलने पर वह अपने को प्रयत्नवादी और अपयश मिलने पर प्रारब्धवादी कहलाने की चेष्टा किया करता है। यथार्थ में मनुष्य न तो प्रयत्नवादी है और न प्रारब्धवादी। किन्तु वह परिस्थिति का सर्वस्व गुलाम है चाहे वह राजा हो या रंक हो और अंतःकरण में ईश्वरवादी है यह भी ध्रुव सत्य है। ऐसा होते हुये भी यदि मनुष्य इस शास्त्र के प्रति अपना अविश्वास व्यक्त करता हो तो खेद से यह कहना पड़ता है कि वह अपने अज्ञान का परिचय जगत को दे रहा है।

शरीर और कर्मव्याधि

शारीरिक व्याधि की चिकित्सा के लिये जैसे प्रवीण चिकित्सक की आवश्यकता होती है वैसे कर्मव्याधि की चिकित्सा के लिये प्रवीण ज्योतिषी की आवश्यकता होती है। परन्तु इस संसार में वैद्यकशास्त्र प्रवीण वैद्य और ईश्वर निर्मित अनेक अचूक वनस्पति उपलब्ध होते हुये भी कई लोग मृत्यु के मुख में रोज पड़ते दिखाई देते हैं। क्या इससे यह कहा जा सकता है वैद्यकशास्त्र, वैद्य और वनस्पति सच नहीं हैं ? इसी तरह इस संसार में ज्योतिषशास्त्र, ज्योतिषज्ञ और ईश्वर निर्मित अनेक अचूक वनस्पतियाँ और भूगर्भ के अन्दर प्रभावशाली रत्नों का भण्डार रहते हुए भी कई लोग दुःख भोगते दिखाई देते हैं। इससे यह कहना पड़ता है कि जगत में प्रवीण वैद्य व ज्योतिषज्ञ होते हुए भी समय पर प्रवीण वैद्य या ज्योतिषी का उसे मिलना और उनके सम्पर्क में आकर लाभ मिलना यह प्रत्येक मनुष्य के बुद्धि, योग, आर्थिक परिस्थिति और पूर्वजन्म के शुभकर्मों पर अवलंबित है। जैसे प्रवीण वैद्य नाड़ी-परीक्षा द्वारा रोग का निदान कर सकता है उसी तरह प्रवीण ज्योतिषी जन्मकुण्डली को देखते ही कर्मव्याधि का निदान कर सकता है। परन्तु जिस तरह शरीर व्याधि वाले लोग विना योग्य वैद्य और औषधि विधिपूर्वक सेवन किये रोग से मुक्त नहीं हो सकते उसी तरह प्रवीण ज्योतिषी के शास्त्रोक्त मन्त्र, तंत्र, जप किये विना कर्म व्याधि वाले लोग इस व्याधि से मुक्त नहीं हो सकते। अतः मनुष्य को चाहिये कि इस शास्त्र के ज्ञान के विना अविश्वास व्यक्त न करे किन्तु इन उपायों को कार्यरूप में लाकर अनुभव के पश्चात् ही अपना मत व्यक्त करे।

काल (समय) की महिमा

इस विषय पर लिखने के पूर्व प्रथम यह जानना आवश्यक है कि काल (समय) किसे कहते हैं। पंचाग में दिये हुए तिथि, वार, नक्षत्र, अयन व वर्ष के परस्पर क्रिया व प्रतिक्रिया के समन्वय को काल कहते हैं। ईश्वर में स्वयं तीन गुणों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अर्थात् उत्पादक, संरक्षक और संहारक और इसी कारण ईश्वर निर्मित संसार के प्राणियों पर यदि तीन गुणों का प्रभाव अधिक प्रमाण पर दिखाई देता हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इसीलिये जगत में रहने वाले मनुष्य त्रिगुणात्मक कहलाते हैं। ईश्वर सह प्रत्येक वस्तु में तीन गुणों का वर्णन नीचे लिखे अनुसार है। जैसेः—

ईश्वर	ब्रह्मा उत्पादक	विष्णु संरक्षक	महेश संहारक
काल	भूत	वर्तमान	भविष्य
लोक	स्वर्ग	मृत्यु	पाताल
शरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण
आयु	कुमार	युवा	वृद्ध
गुण	सत्व	रज	तमः

कर्म	काया	वाचा	मनसा
व्याधि	शरीर	मन	आत्मा
रोग	वात	पित्त	कफ
अवस्था	जागृत	स्वप्न	सुषुप्ति

काल की लीला बड़ी विचित्र है। उसकी सत्ता, महिमा, अनंत, अगाध, अगम्य और अपरम्पार है व उसका वर्णन किसी भी अल्पज्ञ के लिये करना कठिन ही है तथापि पाठकों के लाभार्थ दो शब्दों में यहां लिखना आवश्यक प्रतीत होता है।

काल सदृश महान शक्ति का प्रभाव मानव प्राणी पर पड़ते ही एक क्षण में सुख के शिखर पर बैठा हुआ मनुष्य यदि दुःख के सागर में डूबते हुये दिखाई देता हो तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि काल भले-बुरे जीवन का निर्माता व सत्य-असत्य, लोक-परलोक आदि का अधिपति कहलाता है। काल को दैव भी कहते हैं। इस अन्धकार सृष्टि में काल के ज्ञान की दिव्य दृष्टि जिन महर्षियों ने देने के हेतु कष्ट किया वे यथार्थ में धन्य हैं क्योंकि वे इसकी महिमा का ज्ञान पूर्णतया प्राप्त कर मनुष्य जाति के कल्याणार्थ ही उसे छोड़ गये। काल की विचित्र लीला को देखते ही मनुष्य विचारशून्य व चकित हो जाता है। इस लिये काल मनुष्याधीन नहीं किन्तु मनुष्य कालाधीन है। अतः उसे "कालाय तस्मै नमः" कहते हुये नित्य नमस्कार करना पड़ता है व साथ ही साथ इस काल के निर्माता उस परमेश्वर के प्रति मनुष्य का मन आकर्षित हो उसकी लीला जानने के लिये वह उत्सुक हो जाता है। मनुष्य, कुटुम्ब, समाज या राष्ट्र कितना भी प्रचण्ड शक्तिशाली, पराक्रमी, धैर्यवान्, गुणवान व धनवान क्यों न हो किन्तु कालचक्र में पड़कर उसके सारे प्रयत्न निष्फल हो वह दीन व हीन दीखने लगता है। अर्थात् अनुकूल समय आते ही उसका यत्किंचित् प्रयत्न पर्वत समान ऊँचा फल देने को समर्थ होता है और प्रतिकूल समय आने पर घोर व अविश्राम प्रयत्न राई समान किंचित फल पाता है, यह सर्वविदित है। नैपोलियन जैसे महान वीर योद्धा, पराक्रमी, विद्वान व ज्योतिषज्ञ ने कहा है—'एविलिटी इज आफ वेरी लिटिल केस विदाउट एपारच्यूनिटी' अर्थात अवसर के सिवाय बुद्धि व शक्ति का विकास होना व उसका प्रभाव दूसरों को दिखाना केवल असम्भव है। इस सम्बन्ध में महान तपस्वी व त्रिकालज्ञ महर्षियों ने भी कहा है कि:—

नाभिजात्यं न वै शीलं न बलं न च नैपुणम्।
मानोत्कर्षाय पर्याप्तं कालश्च ह्यनिरोधकः॥

अर्थात् कुलीनता, शील, बल, विद्वत्ता यह सब मनुष्यके कार्यसाधन के लिये शक्तिवान नहीं होते क्योंकि काल एक क्षण में कुछ का कुछ करने के लिये सामर्थ्यवान है। उसकी रेखा मिटाना असम्भव है। ऐसा होते हुए भी काल के ज्ञाता दैवज्ञगण जगत के क्रिया-कलाप को नियंत्रित या प्रेरित करने वाले ग्रहों के गति के ज्ञान पर भूत, वर्तमान

व भविष्य में आने वाले भले बुरे घटनाओं को जान सकते हैं परन्तु प्रपंच में निरंतर रत रहने वाले पुरुषों को दैवज्ञ कहना एक भारी विडंबना है ऐसा कहना पड़ता है। ज्योतिर्विद् के लिये अध्यात्म साधन करना परम आवश्यक है। जो दैवज्ञ इस दिशा में जितना अधिक अग्रसर हो वह उतना ही अधिक स्पष्टरूप से अचूक फलित वर्णन करने का अधिकारी हो सकता है परन्तु केवल दैवज्ञ नाम धारण करने वालों को ज्योतिर्विद् का यश मिलना अत्यन्त दुर्लभ है।

ज्योतिर्विज्ञान का विद्यार्थी यदि शक्ति उपासक हो, ब्रह्मकर्म व तांत्रिक विद्या में निपुण हो तो वही इसके फलाफल के ज्ञान का अधिकारी कहलाया जा सकता है। तांत्रिक विद्या में परा और अपरा के एकीकरण की चेष्टा की जाती है इसलिये साधक को कालाधीन रहते हुये सावधान रहना पड़ता है। ज्योतिर्विज्ञान के विज्ञान शब्द का अर्थ निर्मल, सूक्ष्म, निर्विकल्प और अव्यय है। जो ज्ञान है वही विज्ञान है और अन्य ज्ञान अज्ञान है। परन्तु शास्त्रजन्य ज्ञान को ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। इसके विषय में ऋग्वेदीय चरणव्यूह के परिशिष्ट में महर्षि शौनक ने लिखा है: (चतुर्लक्षंतु ज्योतिषम्) अर्थात् मूल ज्योतिष विज्ञान चार लाख श्लोकों में लिखा गया है। नारद संहिता, काश्यप संहिता व पाराशर संहिता में ज्योतिर्विज्ञान के प्रवर्तकों के जो नाम लिखे हैं उनमें मुख्य १८ हैं। जैसे १—ब्रह्मा, २—सूर्य, ३—वशिष्ठ, ४—अत्रि, ५—मनु, ६—सोम, ७—लोमश, ८—मरीचि. ९—अंगिरा, १०—व्यास, ११—नारद, १२—शौनक, १३—भृगु, १४—च्यवन, १५—यवन, १६—गर्ग, १७—काश्यप, १८—पाराशर।

यद्यपि चतुर्लक्षात्मक इस ज्योतिर्विज्ञान के गणित में अनेक विषयों का समावेश किया गया है तथापि इसके मुख्य दो भाग हैं। एक गणित व दूसरा फलित। इन दोनों भागों का अस्तित्व वैदिक काल से आज तक अविच्छिन्न रूप से मिलता है। गणित यदि वचन है तो फलित अर्थ है। उसी तरह फलित रहित गणित भी व्यर्थ सिद्ध हो जाता है। गणित व फलित की इसी प्रकार की घनिष्टता होने पर भी फलित भाग गणित के आधीन है। गणित स्वतंत्र और फलित परतंत्र है—यह सिद्ध होता है। काल की महिमा इतनी अगाध व विचित्र है कि मनुष्य की विचारशक्ति के बाहर है। किसने सोचा था कि इस देश में विदेशियों के राज्यकाल में अन्न प्रति रुपये २० सेर के भाव से बिकता था किन्तु देश के स्वतंत्र होने पर अपने ही राज्यकर्ता के राज्य में दो रूपया प्रति सेर जनता को मिलेगा व साधारण कोटि के मनुष्य को यह मिलना भी दुष्प्राय हो जाता है। इसे ही काल की महिमा कहते हैं। सुज्ञ पाठकगण इस लीला को स्वयं सोच सकते हैं कि प्रतिकूल समय आने पर काल का महत्व कितना प्रबल होता है।

सारांश जगत में अनुकूल व प्रतिकूल समय जानने का एकमेव साधन ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान है। अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह इस शास्त्र का ज्ञान यथाशक्ति

प्राप्त करे; किन्तु बिना ज्ञान प्राप्त किये इस त्रिकालदर्शी शास्त्र के प्रति अपना अविश्वास व्यक्त करना कहाँ तक सयुक्तिक है इसका विचार पाठकगण स्वयं करें। इस शास्त्र का मर्म, रहस्य व उपयोग जानने के पश्चात् सूज्ञ पाठकगण इस त्रिकालदर्शी विद्या से लाभ उठा कर अपना सांसारिक जीवन सुख और शांतिपूर्वक क्रमण करें यही हमारी हार्दिक इच्छा है और हम एतदर्थ उस जगन्नायक से नित्य प्रार्थना करते हैं।

ऋषिपञ्चमी
काशी, सं० २०२६

विद्वज्जनकृपाभिलाषी—
वासुदेव सदाशिव खानखोजे

विषय-सूची

॥ श्रीः ॥

सुलभ ज्योतिष ज्ञान

स्तुति

प्रणम्य पार्वतीपुत्रं भारतीं भास्करं भवम्।
वैकुण्ठवासिनं विष्णु सानन्दं सकलान् सुरान् ॥
ज्यौतिषव्यवहारार्थं ग्रन्थान् संशोध्य यत्नतः।
क्रियते वालवोधाय गोविन्देन यथामति ॥

अर्थ—आरम्भमें गणपति, सरस्वती, सूर्य, शंकर, विष्णु आदि सर्व देवताओंको सहर्ष नमस्कार कर अपने अल्प बुद्धि अनुसार अनेक ग्रन्थों के आधार पर यह सुलभ-ज्योतिप ज्ञान नामक ग्रन्थ ज्योतिष शास्त्र से जो सज्जन अपरिचित हैं उनके लिये लिखा है।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥

अर्थ—सूर्योदय होते ही जिस तरह अंधकार का नाश होता है उसी तरह जिसके चरण कमलोंका स्मरण करते ही विघ्नों का नाश होता है, उस सिंधुरवदन गणपति देव को नमस्कार है।

वेद का जन्म यज्ञ करने के लिये हुआ है और यह यज्ञ कर्म काल पर अवलंबित है। यह कालज्ञान ज्योतिषशास्त्र से ही होने के कारण इसे वेदांगत्व प्राप्त हुआ है।

ज्योतिष शास्त्र की उत्पत्ति

वेद के छः अंग हैं जैसे शिक्षा, कल्प (सूत्र), व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। ज्योति शब्द की उत्पत्ति ज्योतिः इस संस्कृत शब्द से हुई है। ज्योति शब्द का अर्थ तेज, प्रकाश और इस पर से ही ज्योति शब्द प्रचार में आया है, दीपक समान पदार्थ अर्थात् आकाश के तेजोगोल सूर्यचन्द्र आदि तेजःपुंज तारों के प्रभाव संवंधी विपय को ज्योतिष कहते हैं। शास्त्र शब्द का अर्थ अनुशासन-शिक्षा देना या नियम है। अतः ज्योतिष संबंधी शिक्षा या नियम को ज्योतिषशास्त्र कहते हैं।

शिक्षा, कल्प (सूत्र), व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष यह वेद के छः अंग है इसी लिए वेदको षडंग वेद कहते हैं। इन छः अंगों में से ज्योतिष भी एक अंग है तथापि अन्य शास्त्रों से ज्योतिषशास्त्रका महत्व सबसे श्रेष्ठ माना गया है कारण नीचे लिखे हुए श्लोक से सिद्ध हो चुका है।

ज्योतिष शास्त्र का महत्व व स्थान

ऋग्वेद के ज्योतिष खंड ७ वें में नीचे लिखा हुआ एक श्लोक है :—

विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
सफलं ज्यौतिषं शास्त्रं चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।।
यथा शिखामयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्धनि स्थितम् ।।

ज्योतिषशास्त्रके अतिरिक्त दूसरे शास्त्रों में वादविवाद के सिवाय कोई फल मिलना संभव नहीं किन्तु ज्योतिष ही एक ऐसा शास्त्र है जो पूर्ण सफल है और जिसका साक्ष्य सूर्य चन्द्र स्वयं दे रहे हैं। जिस तरह मयूर के मस्तक पर शिखा और नाग सर्प के मस्तक पर मणि विराजमान रहता है, उसी तरह वेदांग शास्त्रों के मस्तक पर ज्योतिष शास्त्र विराजमान है। ज्योतिष शास्त्र में कालगणना का वर्णन किया है। अत: प्रथम यह जानना आवश्यक है कि कालगणना किसे कहते हैं ।।

काल गणना

कालगणना के अन्तर्गत कल्प, मन्वंतर, युग व संवत्सर आदि का वर्णन है। ज्योतिष शास्त्र में भूत एवं वर्तमान व भविष्य काल के संवत्सरों का वर्णन किया गया है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव जगत के लोगों को मिल चुका है और आज मिल रहा है तथा प्रत्यक्ष प्रमाण से आगे लोगों को मिलेगा इसमें सन्देह नहीं। यही इस शास्त्र की विशेषता है जिसे जानकर जगत् के लोग आश्चर्य से चकित हो जाते हैं। अनादि काल पूर्व युग व संवत्सर के नाम व समय वर्णित किये जाने और उसका प्रत्यक्ष अनुभव वर्तमान काल में जगतके लोगों को मिलने से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि भारतीय ज्योतिष शास्त्र सर्वश्रेष्ठ व सत्य है जिसे पाश्चात्य देश के अनेक धुरंधर विद्वान, संशोधक, व ज्योतिषज्ञों ने सैकड़ो वर्ष पूर्व मान्य किया है। काल के अनेक फेरों को युग कहते हैं। युग चार हैं और उनके नाम, वर्षसंख्या नीचे लिखे अनुसार हैं :—

१—सतयुग १७२८००० वर्ष ।
२—त्रेतायुग १२९६००० वर्ष ।
३—द्वापरयुग ८६४००० वर्ष ।
४—कलियुग ४३२००० वर्ष ।

४३,२०,००० वर्ष ।

इस तरह चार युगों का एक महायुग और एक हजार महायुगों का एक कल्प होता है। इस कल्प में २७ महायुग समाप्त होकर २८वाँ महायुग आज चालू है व इसी

कारण पूजन के संकल्प करते समय सर्वप्रथम "अष्टाविंशतितमे कलियुगे" ब्राह्मणों के मुख से यह उद्‌गार निकलते हैं। तीन युग समाप्त हो वर्तमान समय कलियुग चालू है और इस युग में से आज तक (वि० संवत् २०२५ तक) ५०६९ वर्ष समाप्त हो शेष ४२६९३१ वर्ष समाप्त होना बाकी है।

युगादि तिथि

कार्तिके शुक्लनवमी चादिः कृतयुगस्य सा।
त्रेतादिर्माधवे शुक्ला तृतीया पुण्यसंमिता॥
कृष्णा पञ्चदशी माघे द्वापरादिरुदीरिता।
कल्पादिः स्यात्कृष्णपक्षे नभस्ये च त्रयोदशी॥
(नारदः)

अर्थ—कार्तिक शुक्ल नवमी को कृतयुग का आरम्भ हुआ।
वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग का आरम्भ हुआ।
माघ कृष्ण अमावास्या को द्वापर युग का आरम्भ हुआ।
भाद्र कृष्ण त्रयोदशी को कलियुग का आरम्भ हुआ।

इस युगादि आरंभ की तिथि में तीर्थस्थान, जप, दान, होम, पितृश्राद्ध इत्यादि किये जायँ तो अनंत पुण्यफल की प्राप्ति मनुष्य को निश्चित है। इसी तरह मन्वादि तिथि का महत्व समझना चाहिये और ये मन्वन्तर की तिथियाँ नीचे लिखे अनुसार हैं। जैसे:—

आश्विन शुक्ल नवमी, कार्तिक शुक्ल द्वादशी व पौर्णिमा, चैत्र शुक्ल तृतीया व पौर्णिमा व भाद्रपद शुक्ल तृतीया, श्रावण कृष्ण अष्टमी व अमावास्या, पौष शुक्ल एकादशी, आषाढ़ शुक्ल दशमी व पौर्णिमा, माघ शुक्ल सप्तमी, फाल्गुन व ज्येष्ठ शुक्ल पौर्णिमा ये सब मन्वन्तर की तिथियाँ हैं॥

ज्योतिष शास्त्र के भाग व विभाग

आकाशस्थ ग्रहों की विशेष गति व स्थिति से भौतिक सृष्टि पर पड़ने वाले परिणामों का विवेचन करना यही इस शास्त्रका मुख्य विषय व उद्देश्य है। ज्योतिष शास्त्रके मुख्य दो भाग हैं, एक ग्रहज्योतिष और दूसरा फलित ज्योतिष। इन दो भागों का वर्णन तीन विभागों में किया गया है। जैसे सिद्धान्त, संहिता और जातक। प्रथम भाग ग्रहज्योतिष अथवा गणितज्योतिष में सिद्धान्त और संहिता इन दो विभागों का संपूर्ण वर्णन किया गया है और दूसरे भाग फलित ज्योतिष में जातक विभाग का वर्णन किया गया है। नारद संहिता में लिखा हुआ है कि :—

सिद्धांत-संहिता-होरारूपं स्कंधत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमनुत्तमम्॥

अर्थ—वेदों के निर्मल नेत्र ऐसा यह ज्योतिषशास्त्र सिद्धान्त, संहिता और होरा इन तीन विभागों से युक्त है। इनसे किन-किन बातों का विचार किया जाता है यह जानना आवश्यक है, जैसे :—

सिद्धान्त—ग्रहों का भ्रमण मार्ग, स्पष्ट गति व स्थिति, अयन, योग, ग्रहण व आकाश में कौन सा ग्रह किस समय किस गति से भ्रमण करता हुआ किस स्थान में है। यह इस विभाग में गणित के आधार पर मालूम किया जाता है और इसीलिये सिद्धान्त विभाग को गणित भी कहते हैं।

संहिता—ग्रहस्थिति परिणाम भिन्न समय पर भिन्न देशों पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का वर्णन जैसे पर्जन्य, दुष्काल, रोग, भूकंप, युद्ध, राज्यक्रान्ति आदि इस विभाग में किया गया है।

जातक—मनुष्य के जन्म समय वर्ष, अयन, ऋतु, मास, ग्रह, राशि आदि के आधार पर मनुष्य के आयुष्य में सुख, दुख, प्रकृति व प्रवृत्ति रूप रंग जो प्राप्त होता है उसका वर्णन इस विभाग में किया गया है। फलित ज्योतिष भाग का वंशवृक्ष नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—
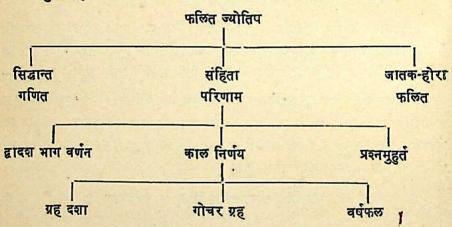
फलित ज्योतिष शास्त्र या भविष्य कथन

ज्योतिष का यह फलित कर्णपिशाच या जादू विद्या नहीं है जिसके आधार पर भविष्य में होने वाले शुभाशुभ घटनाओं का कथन सहज ही किया जा सके किन्तु यह गणित के आधार पर पूर्व ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् फलित वर्तना संभव है। आयुष्य में होने वाले शुभाशुभ घटनाओं द्वारा मनुष्य को किस हद तक सुख या दुख मिलना शक्य है और यह कब मिलना सम्भव है इसका वर्णन फलित ज्योतिष ज्ञान से किया जाता है तथा यह ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान द्वारा मालूम किया जाता है। इस जन्म में पूर्व जन्म के कर्मों का भाग जिसे प्रारब्ध कहते हैं वही मनुष्य के लिये

परिस्थिति निर्माण कर उसे इस जगत में सुख या दुःख का भागीदार बनाता है और यही ज्ञान फलित ज्योतिष शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। इस शास्त्र के ज्ञान द्वारा शुभ या अशुभ समय, यश या अपयश, हानि या लाभ का ज्ञान प्राप्त करने में मनुष्य को किसी भी प्रकार से हानि होना सम्भव नहीं किन्तु लाभ होना ही सम्भव है क्योंकि ज्यौतिषशास्त्र एक सूचनात्मक शास्त्र है यह धुरंधर व तपस्वी महर्षियों ने भी स्वीकार किया है। जैसे प्लेग की सूचना घर में चूहोंके मरने से, वर्षा की सूचना ठण्डे वायु के प्रवाह से मनुष्य को जिस तरह मिलती है उसी तरह मनुष्य के प्रयत्न में ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान बाधा नहीं ला सकता किन्तु उसे अधिक प्रमाण पर प्रयत्नशील बनाने में व यश प्राप्त करने के लिये लाभ ही मिलना सम्भव है यह स्पष्ट है।

यह शास्त्र प्रयत्न के विरुद्ध है ऐसी झूठी कल्पना मन में लाकर प्रयत्न न करना और केवल प्रारब्ध पर निर्भर हो स्वस्थ बैठना यह किसी भी विचारवान मनुष्य को शोभा नहीं देता किन्तु कार्य में यश प्राप्त करने के लिये कौन सा समय अनुकूल है और विपरीत ग्रहों से मिलने वाले अपयश को दूर करना किस तरह संभव है यह ज्ञान मनुष्य को इस शास्त्र से प्राप्त होता है, यही इस शास्त्र का मूल उद्देश्य है। ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान बुरे परिणामों को टाल न सके किन्तु उसकी तीव्रता को घटाने के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो चुका है यह निर्विवाद है। परमेश्वर की आराधना करने से अशुभ प्रसंगों का नाश होता है यह हिन्दू धर्मशास्त्र का सिद्धान्त है व यह सर्वश्रुत है। एक अंग्रेज कवि टेनिसन ने भी कहा है कि—

"More things are overought by prayers than the world ever dreams of."

अर्थात् स्वप्न में न आनेवाली कल्पना भी ईश्वर कृपा से व प्रार्थना से मनुष्य के अनुभव में आ चुकी है। जगत में सुख व दुःख यह मनुष्य के मन पर अवलंबित है क्योंकि कहा है कि—"मन एव मनुष्याणां कारणं सुखदुःखयोः।" कर्म विपाक का धैर्य से सामना करना यह मनुष्य की प्रगति का मुख्य लक्षण है। इस शास्त्र के ज्ञान से यही विशेष लाभ है। इसलिये इस शास्त्र का अनेक दृष्टि से महत्व माना गगा है यह पाठकों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

ज्योतिषशास्त्र का तीसरा विभाग जातक अर्थात् फलित ज्योतिष या भविष्य कथन इतना चित्ताकर्षक, चमत्कार युक्त व आश्चर्यजनक है कि चाहे मनुष्य प्रारब्ध-वादी या प्रयत्नवादी हो, आशावादी या निराशावादी, आस्तिक हो या नास्तिक, राजा हो या रंक किन्तु उसे अपने प्रारब्ध की विचित्र लीला जानने की प्रबल इच्छा व अभिलाषा होना अत्यन्त स्वाभाविक है। भविष्य में होने वाली प्रारब्ध की लीला जानने का एकमेव साधन गणित के आधार पर वर्णित किया हुआ फलित ज्योतिषशास्त्र

ही है। मनुष्य के जीवन में एक ऐसा समय आता है कि उसे इस शास्त्र या शास्त्रज्ञ का आश्रय लेना पड़ता है। गणित शास्त्र पर यदि मनुष्य को सूर्य या चन्द्रग्रहण का अनुभव निश्चित समय पर आज तक मिलता आ रहा है तो उसी गणित के आधार पर शुभाशुभ ग्रहों का शुभ या अशुभ परिणाम मिलना संभव नहीं है, ऐसा कहना कहाँ तक उचित है इसका विचार सूज्ञ पाठक गण स्वयं कर सकते है।

ऐसा होते हुए सामान्य लोगोंका ध्यान सिद्धान्त और संहिता विभाग के प्रति जितना उदासीन दिखाई पड़ता है उससे कई गुना अधिक जातक (फलित) विभाग के प्रति अधिक उत्सुक दिखाई पड़ता है। यह स्पष्ट है क्योंकि मानवी जीवन में होने वाले सुख दुःख का ज्ञान इसी विभाग के सहायता से ही होना सम्भव है। यथार्थ में सिद्धान्त और संहिता विभाग पर ही गणित जातक विभाग का फलित निर्भर है। गणितज्ञों द्वारा दोनों विभाग सिद्धान्त और संहिता का वर्णन वार्षिक पंचागों में नित्य किया जाता है, परन्तु इस अमूल्य ग्रन्थ में किया हुआ वर्णन यदि सामान्य लोगों के ध्यान में न आता हो तो इसका दोष शास्त्र पर नहीं किन्तु उन पर ही है यह मान्य करना होगा। इस अल्प किन्तु अमूल्य ग्रंथ में धर्म जिज्ञासा या व्यवहार आदि का वर्णन व ग्रहों के भ्रमण आदि का ज्ञानवर्णित किया जाता है। अतः प्रत्येक समंजस व सांसारिक मनुष्य को इसका ज्ञान होना कितना आवश्यक है इसका विचार सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं किन्तु अन्धों को दीपक से लाभ होना अशक्य है।

अशिक्षित लोगों में भी कई लोगों में हम्डन सरीखे देशभक्त व वक्ता तथा क्राम्वेल समान महारथी होनेकी योग्यता होते हुये वे न हो सके इसका मुख्य कारण उनका दैव, भाग्य, तकदीर व नसीब है जो उनके प्रयत्न को बाधा उत्पन्न कर उन्हें अपयशी बनाता है। पूर्व जन्म कर्म के संचय में से इस जन्म में भोगने के लिये मनुष्य जो प्रारब्ध के रूप में अपने साथ लाता है उसे ही प्रारब्ध, दैव, भाग्य कहते हैं जो मनुष्य की कल्पना व प्रयत्न शक्ति को मर्यादित कर उनके प्रयत्न व विचार को आकुंचित कर उन्हें अपयश का भागीदार बनाता है। अर्थात् मनुष्य के पूर्ण स्वतंत्र कहलाते हुये भी उसकी स्वतन्त्रता के मर्यादित होने और उसके हताश होने का प्रसग आता है व उसे इस शास्त्र के ज्ञान व अनुभव के पश्चात् मालूम हुआ करता है।

भविष्य शब्द में इतनी अमोघ शक्ति व अद्भुत जादू विद्यमान है कि भविष्य में अच्छा समय आने की आशा पर ही मरणोन्मुख मनुष्य भी जीवित रहने की अभिलाषा प्रगट करता है। इसके विपरीत भविष्य में आने वाले घोर अन्धकार की निराशा से ऐश्वर्य के शिखर पर रहने वाला मनुष्य भी प्राण की बाजी लगा उसे त्यागता है। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि भविष्य की महिमा बड़ी विचित्र व अवर्णनीय है। किन्तु इसका सच्चा रहस्य, महत्व ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के बिना ज्ञात होना संभव

नहीं। अतः इस त्रिकालदर्शी विद्या से परिचित होना प्रत्येक संसारिक मनुष्य के ऐहिक व पारमार्थिक सुख व उत्थान के लिये ही हुआ है परन्तु विना ज्ञान के शास्त्र के प्रति अविश्वास या अंधविश्वास व्यक्त करना उचित नहीं दिखता। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि इस शास्त्र का रहस्य व उपयोग देश के नवयुवकों को ज्ञात होवे, वे संकट के समय धैर्य से उस पर विजय प्राप्त कर अपने पुरुषार्थ का परिचय जगत को देते हुए समाज व देश की उन्नति करें।

फलित और गणित शास्त्र

फलित शास्त्र का भविष्य कथन यह सर्वस्व गणित शास्त्र पर निर्भर है। परन्तु भविष्य कथन यह कठिन होने के कारण इसे अवगत करने के लिए शास्त्र का पूर्ण ज्ञान आचार, बुद्धि तथा अनुभव की अत्यन्त आवश्यकता है। तथापि प्रयत्न के बल यदि मनुष्य अशक्य को शक्य कर सकता है तो प्रयत्न करने पर इसे अवगत करने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती, यह कह सकते हैं। भविष्य कथन यह पंचमहाभूतों के शुभाशुभ स्थिति पर तथा समय (काल) पर अवलंवित है। जगत के समस्त चराचर वस्तु व प्राणियों पर अपना पूर्ण अधिकार रख आकाशस्थ ग्रहों की सहायता से उन पर अपना पूर्ण प्रभाव दिखाने वाला काल (समय) अनुकूल है या प्रतिकूल यह जानने का एक मात्र साधन गणित शास्त्र के आधार पर निश्चित किये गये सिद्धान्त और उन सिद्धान्तों पर आकाशस्थ ग्रहों की गति व स्थिति के शुभाशुभ निर्णय को फलित शास्त्र कहते हैं। इस देश के महत्वाकांक्षी नवयुवक इस ऋषि-प्रणीत कालविज्ञान या ज्योति-विज्ञान का नित्य उपयोग जानने व व्यवहार में लाने के प्रयत्न में यदि दत्तचित हो जाँय तो मानवी प्राणी का परम कल्याण होगा, ऐसा हमारा मत है।।

मानवी जीवन के सुख-दुख का यथार्थ ज्ञान इस शास्त्र से ही हो सकता है। इस शास्त्र की विशेषता यह है कि वह मनुष्य को साहसी, दूरदर्शी और सामर्थ्यवान बनाता है। जगत के अनेक संशोधक व गणितज्ञों ने अपने घोर परिश्रम द्वारा ग्रहों के शुभाशुभ काल व उसके परिणामों का वर्णन जनता के लाभार्थ अनेक ग्रन्थों में किया है परन्तु ज्योतिष जिज्ञासुओं का ध्यान गणित शास्त्र की अपेक्षा फलित शास्त्र के प्रति अधिक आकर्षित होता हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। यथार्थ में विचार करने से सूज्ञ पाठकों को यह ज्ञात होगा कि गणित शास्त्र की अपेक्षा फलित शास्त्र अत्यन्त क्लिष्ट है क्यों कि भविष्य कथन करने के प्रथम जन्मग्रह, गोचर, इन दोनों के स्थान माहात्म्य, दृष्टियोग, शुभाशुभ स्थिति, महादशा, अन्तर्दशा, विदशा आदि पर निर्भर है। नवग्रहों में से पाँच ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहु, केतु अशुभ हैं और चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र चार ग्रह ही शुभ हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस जगत में सुख की अपेक्षा दुःख की मात्रा अधिक है क्योंकि इन चार शुभ ग्रहों में से केवल गुरु ही अकेला पुरुष ग्रह है। चन्द्र, शुक्र स्त्री ग्रह व बुध नपुंसक ग्रह है। शुक्र और

बुध सूर्य के समीप होने के कारण भ्रमणगति में सूर्य से युक्त हो अस्तनिर्बली होकर शुभ फल देने के लिये असमर्थ हो जाते है। ऐसी स्थिति आकाशस्थ ग्रहों की होने के कारण मनुष्य को सुखप्राप्ति के लिये सदा प्रयत्न करते हुये देखना और अपना भविष्य जानने के लिये सदा अभिलाषा करना इसमें कोई आश्चर्य नहीं। फलित शास्त्र अत्यन्त कठिन है और इसे कठिन रखने में ईश्वर का यही हेतु है कि मनुष्य सदा प्रयत्नशील बना रहे ॥

पंचांग

काल के मुख्य पांच अंग तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण का सम्पूर्ण वर्णन जिस ग्रन्थ में प्रतिवर्ष रहता है उसे पंचांग कहते हैं। पंचांग में ग्रहों का राश्यंतर, चन्द्र-सूर्यग्रहण, ग्रहों का उदय, अस्त, वक्री, मार्गी, आदि प्रत्यक्ष अनुभव मनुष्य को प्रतिदिन मिलने के कारण प्रत्येक हिन्दूधर्माभिमानी सज्जन का इस शुद्ध गणित ग्रन्थ पर श्रद्धा होना अत्यन्त स्वाभाविक है। इस वार्षिक ग्रन्थ में नक्षत्र, राशि, राशिस्वामी, वर्ण, वश्य, योनि, गण, नाडी, चरण, राशि घातक चक्र आदि का वर्णन दिया रहता है जिसे अवकहड़ा चक्र कहते हैं व इसका उपयोग विवाह निश्चित करने के लिये अधिकतर किया जाता है॥

प्रत्येक सनातन वैदिक धर्माभिमानी मनुष्य को चाहे धर्मजिज्ञासु वा व्यवहार किसी भी दृष्टि से क्यों न हो पंचांग का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इस वार्षिक ग्रन्थ में दिये हुए काल निर्णय पर संसारिक मनुष्य के मंगलकार्य, व्रत, उपवास, धार्मिक कृत्य आदि सर्वस्व निर्भर रहते हैं। साथ ही इसमें ग्रहों की गति, युति, स्थिति, आदि का वर्णन व उनके शुभाशुभ परिणामों का ज्ञान व भविष्य जानने का साधन केवल पंचांग द्वारा किया जा सकता है। अतः ज्योतिषज्ञों को यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो चुका है। वेदांग ज्योतिष के अनुसार इस ग्रन्थ के संबन्ध में नीचे लिखा हुआ श्लोक है :—

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥

अर्थ—वेद यह यज्ञ के लिये प्रवृत्त हुआ और यज्ञ वह काल अवलंबी है। अतः काल विज्ञानशास्त्र का शुद्ध काल दर्शक ग्रन्थ पंचांग का ज्ञान शान्ति और सुख प्राप्त करने के लिये, गृहस्थ जीवन सुख से क्रमण करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को होना अत्यन्त आवश्यक है। वेद काल से आज तक धर्म कृत्य करने की वंश परंपरा प्रथा इसी एक ग्रन्थ के आधार पर कायम है।

ऊपर लिखे हुए कारण से इस अल्प किन्तु अमूल्य वार्षिक ग्रन्थ के सम्बन्ध में यहाँ संक्षिप्त में वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक है। ग्रन्थ के कोष्टक में संकष्ट चतुर्थी,

एकादशी, शिवरात्री, सूर्य का राशि प्रवेश, ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश, अयन, ऋतु, गुरु पुष्यामृत व अमृतसिद्ध योग, भद्रा, वर्षानक्षत्र आदि का वर्णन सम्पूर्णरूप से किया जाता है। इस सर्वांग सुन्दर व उपयुक्त ग्रन्थ में अनेक उपर्युक्त बातों का वर्णन सम्पूर्ण रूप से किये जाने के कारण इसका ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना अत्यन्त आवश्यक है। इस ग्रन्थ के संबन्ध से ज्योतिषाचार्यों ने कहा है कि :—

चतुरंगवलो राजा जगतीं वशमानयेत्।
अहं पंचांगवलवानाकाशं वशमानये ॥

अर्थ—हाथी, घोड़े, सैन्य आदि के वल से राजा केवल पृथ्वी को जीतकर अपने वश कर सकता है, परन्तु मैं केवल पंचाग के वल से आकाश को भी अपने वश कर सकता हूँ। तात्पर्य राजा केवल पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर सकता है परन्तु ज्योतिषज्ञ पंचांग वल पर राजा, पृथ्वी और आकाश इन तीनों को अपने वश करता है। इसी कारण यदि ज्योतिषज्ञ आज भी लोकादर को प्राप्त होते हों तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

पाश्चात्य देश के अप्रतिम व धुरंधर गणितज्ञों ने यह मान्य किया है कि हिन्दू लोग गणित की दशमान-पद्धति, संलब्धि, पूर्णांक और सूक्ष्मांक आदि गणितांक के जन्मदाता हैं। हिन्दू ज्योतिष शास्त्रज्ञों ने मान्य ई० सन् ३ हजार वर्ष पूर्व किया हुआ वेध तथा काल गणना आज जो अवशेष है उसे पाश्चात्य देशके कोलब्रुक, क्यासिनी, वेली प्लेफ़ेयर जैसे प्रचण्ड ज्योतिषज्ञों ने मान्य किया है। पंचांग में कई कोष्टक तिथि से लेकर पारसी, मुसलमान अंग्रेजी आदि दिये गये हैं जिसका उपयोग इस शास्त्र में ही करते हैं। इसमें दी हुई कुण्डलियाँ प्रायः पौर्णिमा, व अमावस्या के दिन की हैं। साथ ही ग्रहों का स्पष्टीकरण भी किया है जैसे—रवि, १ राशि ७ अंश १५ कला २३ विकला यह लिखा हो तो समझना चाहिये कि सूर्य वृषभ राशि में स्थित है व इसी तरह इतर ग्रहों का जाना जा सकता है।

कोई भी धार्मिक कृत्य आरंभ करने के पूर्व हिन्दूधर्म पद्धति के अनुसार संकल्प करने का विधान है और इस संकल्प में कल्प से लेकर संवत्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार नक्षत्रादि का उच्चारण प्रत्येक पण्डित किया करते हैं। इस प्राचीन प्रथा से यह सिद्ध होता है कि हिन्दुओं को अनादि काल से काल (समय) ग्रह, नक्षत्रादि का पूर्ण ज्ञान है अन्यथा यह प्रथा प्रचार में कभी न आ सकती। पंचांग में संवत्, शके, ईस्वी सन् आदि का जो वर्णन है उसके सम्वन्ध में वर्णन करना आवश्यक है।

शक (वर्ष) कर्ता

भारतवर्ष के महान तपस्वी महर्षियों ने अपनी दिव्य दृष्टि, आत्मवल, तपोवल के आधार पर प्राचीन शास्त्रों में यह घोषित किया है कि कलियुग में छ शककर्ता निर्माण होंगे। उनमें से तीन शक कर्ता निर्माण हो चुके और तीन शककर्ताओं का निर्माण होना

बाकी है। लाखों वर्ष पूर्व भविष्य में जन्म लेने वाले शक कर्ताओं का नामस्थान व अवधि का वर्णन करना और उनकी यह भविष्यवाणी अक्षरशः सिद्ध होना यह कितने आश्चर्य की बात है इसका विचार विद्वज्जन व सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं। परन्तु हमारी समझ में साधारण कोटि के मनुष्य के लिए यह भविष्यवाणी का सत्य सिद्ध होना और इस पर विचार करना केवल असम्भव है। भूतकाल के शककर्ताओं के नामादि से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि उन महर्षियों में प्रचण्ड ईश्वर-शक्ति थी जिसके बल पर वे इस तरह कथन कर सके जिसका प्रत्यक्ष अनुभव जगत के लोगों को मिल रहा है व भविष्य में भी मिलेगा इसमें सन्देह नहीं। इन छः शककर्तो के नामादि नीचे लिखे अनुसार हैं जैसे--

इन्द्रप्रस्थ दिल्ली में युधिष्ठिर शक	३०४४ वर्ष
उज्जैन में विक्रमादित्य संवत्	१३५ ,,
पैठण में शालिवाहन शक	१८००० ,,
वैतरणी के तीर विजयाभिनन्दन शक	१०००० ,,
बंगाल के धारा तीर्थ में नागार्जुन शक	४००००० ,,
कर्णाटक में करवीर कल्की शक	८२१ ,,

कलियुग के कुल वर्ष ४,३२,०००

शक शब्द का अर्थ व्यवहार में काल' वर्ष माना गया है। हिन्दुस्तान में युधिष्ठिर शक समाप्त होने के पश्चात् उत्तर भाग उज्जैन में विक्रमादित्य सम्राट के नाम से जो शक (वर्ष) आरम्भ हुआ उसे संवत् कहते हैं। संवत् यह संवत्सर शब्द का अपभ्रंश है। सम+वसति+ऋतव : अर्थात् अच्छे ऋतु जिसमें हैं उस काल गणना के प्रमाण को संवत्सर कहते हैं। संवत् का वर्षारम्भ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से होता है और देश के व्यापारी वर्गका वर्षारंभ भी इसी तिथि से आरंभ होता है।।

नर्मदा तट के उत्तर भाग में विक्रम संवत् का प्रचार अधिक है किन्तु दक्षिण भाग के व्यापारी वर्ग भी व्यवहार में संवत् शब्द का उपयोग आज भी कर रहे हैं। अपने नाम का वर्ष प्रचार में लाने की शास्त्रीय विधि अत्यन्त कठिन है परन्तु धन्य है उन राजाओं को कि जिन्होंने इस कठिन शास्त्रीय विधि का पालन अक्षरशः कर अपना नाम जगत में अमर कर लिया। जिस सम्राट या राजा को अपने नाम का संवत् प्रचार में लाना हो उसे चाहिये कि राज्य में जो लोग ऋणी हो उन सबों का ऋण अपने धन से चुका दे। सम्राट महाराजा विक्रमादित्य ने देश के सम्पूर्ण ऋणियों का ऋण स्वयं देकर अपने नाम का संवत् प्रचार में लाया और वे अमर हो गये। विक्रमवर्ष की संख्या पूर्ण होने पर भी भारत वर्ष में आज विक्रम काल की गणना चालू है।।

संवत्सर के नाम

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार ६० वर्ष को एक मण्डल कहते हैं और साठ वर्ष समाप्त होने पर दूसरे मण्डल का (वर्ष) आरम्भ इन्हीं नामों से पुनः होता है—इनके नाम का क्रम नीचे लिखे अनुसार हैं। जैसे :—

प्रभव	चित्रभानु	हेमलंब	परिधावी
विभव	सुभानु	विलंब	प्रमादी
शुक्ल	तारण	विकारी	आनन्द
प्रमोद	पार्थिव	शार्वरी	राक्षस
प्रजापति	व्यय	प्लव	नल
अंगिरा	सर्वजित्	शुभकृत्	पिंगल
श्रीमुख	सर्वधारी	शोभन	कालयुक्त
भाव	विरोधी	क्रोधी	सिद्धार्थ
युवा	विकृति	विश्वावसु	रौद्र
धाता	खर	पराभव	दुर्मति
ईश्वर	नन्दन	प्लवंग	दुंदुभि
बहुधान्य	विजय	कीलक	रुधिरोद्गारी
प्रमाथी	जय	सौम्य	रक्ताक्षी
विक्रम	मन्मथ	साधारण	क्रोधन
वृष	दुर्मुख	विरोधकृत्	क्षय

संवत्सरों के फल

प्रभव नाम संवत्सर—इस संवत्सर में जन्म पाने वाले पुरुष बहुत आयु, पुत्र, संतति, श्रेष्ठ मति, पूर्णभोग वाला व अनेक वस्तुओं का संग्रही होता है।

विभव नाम संवत्सर—रूपवान्, बली, चतुर, कारीगर, सुशील, विद्यावाला व अपने कुल में राजा समान श्रेष्ठ होता है।

शुक्ल नाम संवत्सर—प्रसन्न मुख, उदारचित्त, श्रेष्ठ स्त्री व पुत्र युक्त विनय युक्त ऐश्वर्यवान् व उत्तम विद्या व भाग्यवाला होता है।

प्रमोद नाम संवत्सर—सदाआनन्दी, कांतिवान्, सत्यवक्ता, दक्ष, गुणवान्, धूर्त्त, दूसरों का कार्य करने वाला तथा अभिमानी, दयावान्, सुन्दरशील, कुलको अनुकूल व देव ब्राह्मण की भक्ति विनयपूर्वक करने वाला होता है।

प्रजापति नाम संवत्सर—दानी, अभिमानी, दयावान्, सुन्दरशील, कुल को अनुकूल व देव ब्राह्मण की भक्ति विनयपूर्वक करनेवाला होता है।

अंगिरा नाम संवत्सर—प्रसन्न मुख, सुखी, अभिमानी, प्रियभाषी, पुत्रों से युक्त, गुप्त बुद्धि व भोगी व दीर्घायु होता है।

श्रीमुख नाम संवत्सर—प्रतापी, शास्त्रों का ज्ञाता, धनवान, उत्तम बुद्धि, उदार चित्त, कीर्तियुक्त व लोगों का प्यारा होता है।

भाव नाम संवत्सर—यशस्वी, प्रसन्न चित्त, गुणी, दानी, नम्र स्वभाव, हर्षयुक्त व लोगों को मान्य होता है।

युवा नाम संवत्सर—गुणवान, नम्र स्वभाव, शांत रूप, पुष्ट शरीर, हर्षित चित्त, प्रसन्न वृत्ति व बहुत काल तक जीनेवाला होता है।

धाता नाम संवत्सर—सुशील स्वभाव, सुन्दर शरीर, गुरुभक्त, शिल्पशास्त्र-निपुण, गुणी व लोगों से गौरव पानेवाला होता है।

ईश्वर नाम संवत्सर—सदा प्रसन्न चित्त, गुणवान, प्रतापी, चतुर, शीघ्र कोपी, कलाओं में कुशल व शीलवान् होता है।

बहुधान्य नाम संवत्सर—शास्त्रों का ज्ञाता, राजसभा में मानप्राप्त, दानी, अभिमानी, व्यापार में निपुण, अनेक प्रकार से धनधान्य कमानेवाला होता है।

प्रमाथी नाम संवत्सर—शास्त्र ज्ञान में निपुण, महाराजा का मन्त्री, हाथी-घोड़ा, रथ, छत्र से युक्त, बहुश्रुत व शत्रु का नाश करनेवाला होता है।

विक्रम नाम संवत्सर—शूरवीर, प्रतापी, उदारचित्त, पराक्रमी, शत्रु का नाश व उग्र कर्म करनेवाला होता है।

वृष नाम संवत्सर—वृथा प्रलाप, दूसरों की निन्दा, दुष्ट संगति, बहुत स्त्रियों का पति, मलीन, आलसी स्वभाव का होता है।

चित्रभानु नाम संवत्सर—सुन्दर स्वभाव, नाना प्रकार के रंगीन वस्त्र व फूलों का सुगन्ध लेनेवाला व कलाओं में निपुण होता है।

सुभानु नाम संवत्सर—सरल स्वभाव, सुन्दर कांति, विनययुक्त, प्रसन्न-मूर्ति, ऐश्वर्यवान् व शत्रु को जीतनेवाला होता है।

तारण नाम संवत्सर—चपल, शूर, धूर्त, निष्ठुर, कारीगर, नीच कर्म करनेवाला, उद्यम से भोग भोगनेवाला व द्रव्यवान होता है।

पार्थिव नाम संवत्सर—शास्त्र निपुण, धम व कर्म में तत्पर, कारीगर, सदा विलास भोगनेवाला होता है।

व्यय नाम संवत्सर—व्यसनी, विषयी, भय रहित, चंचल चित्त-वृत्ति, बहुत खर्चीला व सुख का भोक्ता होता है।

सर्वजित नाम संवत्सर—राजा से प्रतिष्ठा, पवित्र, स्थूल देही, भूमि का स्वामी, शत्रुओं को जीतने में सदा तत्पर होता है।

सर्वधारी नाम संवत्सर—सुन्दर स्वरूप, बहुत सेवक व अनेक भोगों से युक्त, मधुर-भोजनप्रिय, गंभीर, धीरज गुणवाला होता है।

विरोधी नाम संवत्सर—महान धूर्त, लोगों से सदा वैर करने वाला, कुटुम्बियों से कम सुख पाने वाला, देशाटन करने वाला व वक्ता होता है।

विकृति नाम संवत्सर—दुष्ट स्वभावी, अहंकारी, दुर्बुद्धि सहित, अनेकों शत्रुवाला व निर्धनी होता है।

खर नाम संवत्सर—कठोरमन, मलिन वेष, ऊँचे स्वर से वृथा बकवाद, क्लेश, लज्जाहीन, कामातुर होता है।

नन्दन नाम संवत्सर—घर, कुँआ, तालाब, वावली वनाने वाला, पवित्र मन स्त्री व पुत्र सुख युक्त सदैव अन्नदान करने वाला होता है।

विजय नाम संवत्सर—बड़ा वक्ता, दाता, दयावान्, सुन्दर स्वभाव, संग्राम में धीरज रखने वाला व शत्रुओं का नाश करने वाला व राजमान्य होता है।

जय नाम संवत्सर—शास्त्र में वड़ा निपुण व पंडितों पर वाद-विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, दाता, शत्रुओं का अहंकार तोड़ने वाला, विजय का अभिलाषी, तेजस्वी, विजय में अनुराग वाला होता है।

मन्मथ नाम संवत्सर—स्त्रियों से हास्य विलास, मधुर वचन, सुन्दर गीत, नाच-तमाशा की प्रीति वाला, सम्पूर्ण आभूषण से युक्त, कलाओं का ज्ञाता व अनेक सुख भोगनेवाला होता है।

दुर्मुख नाम संवत्सर—नास्तिक, पराक्रमी, क्रूर, लोभी, टेढ़े मुख व वकवादी, वहुत दुष्ट व चेष्टा करनेवाला होता है।

हेमलम्ब नाम संवत्सर—धान्य, वस्त्र, सुवर्ण, रत्नयुक्त, स्त्री-पुत्र से सुखी, वाहन-युक्त, अनेक पदार्थों का संग्रह करनेवाला होता है।

विलम्ब नाम संवत्सर—धूर्त, अति लोभी, हीनबली, आलसी, केवल दैव पर भरोसा करनेवाला, प्रारब्ध को दोष देनेवाला, कफ प्रकृति का होता है।

विकारी नाम संवत्सर—चंचल बुद्धि, धूर्त, वाचाल, हठी स्वभाव, अनेक वस्तुओं को भलीभाँति संग्रह करनेवाला होता है।

शार्वरी नाम संवत्सर—प्रसन्न वदन, मित्रों से द्रोह, अनेक विद्या में प्रीति रखने वाला व व्यापार में निपुण होता है।

प्लव नाम संवत्सर—हमेशा राजदरबार में आदर पानेवाला, उदार चित्त, धन-वान, सुन्दर बुद्धि, चंचल स्वभाव का कामी होता है।

शुभकृत् नाम संवत्सर—विद्या, विनय, अगणित पुण्य से युक्त, उत्तम पुत्र व धन युक्त, सुन्दर भाग्य, सम्पूर्ण सुख भोगनेवाला होता है।

शोभन नाम संवत्सर—सत्कर्मा, उत्तम गुण, दयावान, विनय, सुन्दर कांति, उच्च शरीर व नेत्रवाला व सब काम में प्रवीण होता है।

क्रोधी नाम संवत्सर—क्रूर स्वभाव व दृष्टि, महाअभिमानी, दूसरों के कार्य में विघ्न लाने वाला और गुस्सा करने वाला, स्त्रियों से अधिक प्रीति करने वाला होता है।

विश्वावसु नाम संवत्सर—उत्तम स्त्री व पुत्रवाला, सदाचार-रत, धीर-चित्त, मिष्टान्नभोजी, धर्म में प्रीति रखनेवाला व उदार चित्त का होता है।

पराभव नाम संवत्सर—सदा धन-धान्य रहित, शठ, अति कठोर-दिल व वचन का होता है।

प्लवंग नाम संवत्सर—सदाचार विचार रहित, अत्यन्त चञ्चल वृत्ति, अच्छे काम में चित्त न लगानेवाला, शठ, दुबला शरीर का होता है।

कीलक नाम संवत्सर—सामान्य रूपवाला, मधुर भाषी, दयालु, बली, शत्रुओं का नाश करनेवाला, जल का अधिक अभिलाषी व संग्रही होता है।

सौम्य नाम संवत्सर—सत्गुणी, देव व अतिथि का पूजक, पवित्र मन, दुर्बल अंग, महान् पण्डित, धनवान, सब प्रकार के सुख भोगनेवाला होता है।

साधारण नाम संवत्तर—लिखने में वहुत चतुर, विचारवान्, चलने-फिरने में अधिक मन लगानेवाला, क्रोधी स्वभाव का होता है।

विरोधकृत् नाम संवत्सर—महादेवजी की आराधना करनेवाला, लोगों से विरोध, क्रोधी, पिता की आज्ञा को न माननेवाला होता है।

परिधावी नाम संवत्सर—विद्वान्, सुशील, कलाकुशल, उत्तम बुद्धि, राजदरवार में मान पानेवाला और व्यापार में महान प्रतिष्ठा पानेवाला होता है।

प्रमादी नाम संवत्सर—दुष्ट स्वभाव, कलह-प्रिय, अभिमानी, लोभी, दरिद्री, कम बुद्धिवाला. निंदित, उन्मत्त किन्तु अपने कुटुम्ब में प्रेम रखनेवाला होता है।

आनन्द नाम संवत्सर—पण्डित, कृतज्ञ, महान चतुर, वहुत स्त्रियोंवाला, पुत्रों के आनन्द में सदा मग्न रहनेवाला, नम्र स्वभाव, बड़ा दाता होता है।

राक्षस नाम संवत्सर—क्रूर स्वभाव, कुकर्मी, कलहप्रिय, दयारहित, साहसी, धर्म विचारों का त्याग करनेवाला होता है।

नल नाम संवत्सर—श्रेष्ठ बुद्धिवाला, व्यापार में चतुर, खेती से धनधान्य उपार्जन करनेवाला, सुशील, चंचल स्वभाव, कम द्रव्यवाला, बहुत लोगों का पालन करनेवाला होता है।

पिंगल नाम संवत्सर—पीले नेत्र वाला, निंदित कर्म करनेवाला, तेजहीन, कभी धनवान, कभी निर्धनी, दानी, शठ, अतिकठोर वचन बोलने वाला होता है।

कालयुक्त नाम संवत्सर—दुष्टमतिवाला, बहुत वाचाल, अनाचार करनेवाला, सबका प्यारा, दुर्बल अङ्ग वाला, भाग्यहीन, लड़ाई करते समय वह काल ही माना जानेवाला होता है।

सिद्धार्थ नाम संवत्सर—सबसे प्रसन्न रहनेवाला, आनन्दी व विलासयुक्त, उदार-चित्त, संग्राम में विजय पानेवाला, सुन्दर रूपवाला, राजमन्त्री, अनेकों से पूजित, धनवान् और सामर्थ्यवान् होता है।

रौद्र नाम संवत्सर—महान धूर्त, भयंकर कलह करनेवाला, सदा अपयश पाने वाला, तीक्ष्ण स्वभाव व पशुओं का पालक होता है।

दुर्मति नाम संवत्सर—वचनों का पालन करनेवाला, प्रसन्नतारहित, महाअभि-मानी, बड़ा कामी, पाप कर्मों में सदा प्रवृत्त होनेवाला व दुष्ट बुद्धि का होता है।

दुन्दुभी नाम संवत्सर—सदा राजदरवार में आदर व बड़ाई पानेवाला, नाच-तमाशा में वहुत प्रीति रखनेवाला, हाथी, घोड़ा, सुवर्ण, रत्न व जमीन आदि से सदा युक्त रहता है।

रूधिरोद्गारी नाम संवत्सर—कामला आदि रोग से युक्त, दुर्बल शरीर, लालनेत्र, अति क्रोधी, हाथ-पैर में काले नखवाला, शस्त्र लगने से दुखी होता है।

रक्ताक्ष नाम संवत्सर—उत्तम आचार व धर्म से युक्त, दूसरों की वड़ाई कदापि न सहनेवाला और नेत्ररोगी होता है।

क्रोधन नाम संवत्सर—पराये काम में विघ्न करनेवाला, भयंकर तमोगुणी और दूसरों की वृद्धि को सहन करनेवाला होता है।

क्षय नाम संवत्सर—उपार्जन किये धन को निरन्तर व्यय करनेवाला, दूसरों की निरन्तर सेवा करनेवाला, निष्ठुर चित्त व वृत्तिवाला, सत्कर्म में मन वहुत कम लगाने वाला होता है।

भारतवर्ष में सैकड़ों वर्ष पूर्व मुसलमान, अंग्रेज, पारसी आदि अन्य धर्मानुयायियों का आगमन होने ओर उनसे घनिष्ठ सम्वन्ध होने के कारण इस देश के हिन्दू पंचांग कर्ताओं ने अपने-अपने पंचांगों में इन धर्मियों के वर्षों का उल्लेख करना आरम्भ किया। अत: उनके वर्षारम्भ के सम्वन्ध में यहाँ लिखना हम आवश्यक समझते हैं—

युधिष्ठिर शक समाप्त होने के पश्चात विक्रम संवत २०२४ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ।
विक्रम संवत् ५७ पश्चात् ईस्वी सन् आरम्भ हुआ २०२४–५७=१९६७ ई०
ईस्वी सन् के ७८ वर्ष के पश्चात् शालिवान शके आरम्भ हुआ
१९६७–७८=१८८९ शके

शालिवाहन शके ५०३ वर्ष के पश्चात् हिजरी सन् आरम्भ हुआ
१८८९–५०३=१३८६ हि० सन्

हिजरी सन् के १२ वर्ष के पश्चात् फसली सन् आरम्भ हुआ।
१३८६–१२=१३७४ फ० सन्

फसली सन् के ३७ वर्ष के पश्चात् अथवा ईसवी सन् ६३० वर्ष के पश्चात् पारसी सन् आरम्भ हुआ।
१३७४–३७=१३३७ पा० सन्
अथवा १९६७ ई०—६३०=१३३७ पा० सन्

बंगाली सन्—यह सन् बंगाल में प्रचलित है। इसका वर्ष सौर है। इसका आरंभ मेष संक्रान्ति से होता है। ईसवी सन् के ५९४ वर्ष के पश्चात् बंगाली सन् का प्रारंभ हुआ। १९६७—५९४=१३७३ वं० सन्

अंग्रेजी ईस्वी सन् वर्ष

विक्रम संवत् के ५७ वर्ष पश्चात् ईस्वी सन् का जन्म हुआ। हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य के प्रभाव से इस देश में अधिकांश सुशिक्षित सज्जन हिन्दी मास व तिथि की अपेक्षा अंग्रेजी मास व तारीख स्मरण करते देखकर पंचांग कर्ताओं ने अपने-अपने पंचागों में अंग्रेजी वर्ष, महीना व तारीख लिखना आरम्भ किया। ईस्वी शब्द (एस) शब्द का अपभ्रंश है। यह वर्ष येसूखिस्त के जन्म से ही माना जाता है क्योंकि अंग्रेज लोग इसे अपना भगवान् समझते हैं।

ईस्वी सन् ३६५ दिन का होता है। प्रत्येक मास कितने दिन के होते हैं यह नीचे लिखे अनुसार है।

जैसे—

जनवरी	३१ दिन	जुलाई	३१ दिन
फरवरी	२८ दिन	अगस्त	३१ दिन
मार्च	३१ दिन	सितम्बर	३० दिन
अप्रैल	३० दिन	अक्टूबर	३१ दिन
मई	३१ दिन	नवम्बर	३० दिन
जून	३० दिन	दिसम्बर	३१ दिन

जिस वर्ष सन् की संख्या में ४ का पूरा भाग लग जाय उस वर्ष फरवरी के २९ दिन रहते हैं और उस वर्ष को लीप-इयर कहते हैं।

शालिवाहन शके

ईस्वी सन् के ७८ वर्ष पश्चात् या विक्रम संवत् के १३५ वर्ष पश्चात् गोदावरी के तट पर पैठण क्षेत्र में शालिवाहन नाम का राजा हुआ जिसके नाम से यह शक संवत (वर्ष) ऊपर दिये हुए समय प्रचार में आया। शके का वर्षारम्भ चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से होता है। नर्मदा नदी के दक्षिण भाग अर्थात् महाराष्ट्र प्रान्त में यह वर्ष अधिक प्रचलित है। इन वर्षों का कोई नाम नहीं रखा गया किन्तु संवत्सर के नाम से ही इनका नाम जानने की रीति नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

शके १८८९+१२=१९०१÷६०=शेष ४१। इस अंक के सामने संवत्सर चक्र में जो नाम लिखा हो वही शके वर्ष का नाम प्लवंगनाम संवत्सर समझा जाता है।

फसली सन्

फसली शब्द की उत्पत्ति फसल शब्द से हुई है। इसका अर्थ फसल वोना और खेतों से फसल काटना है। इस सन् का आरम्भ ७ जून से होता है। हिन्दुस्तान के दक्षिण भाग में शाहजहां नाम के वादशाह ने ईस्वी सन् १६३६ में इस वर्ष का आरम्भ किया; परन्तु अकवर वादशाह ने इसका आरम्भ ८० वर्ष पूर्व उत्तर हिन्दुस्तान में कर, प्रचार में लाया था। इसे फारसी सन् कहते हैं। फारसी और पारसी सन् भिन्न-भिन्न हैं। किन्तु इन दोनों वर्षों के महीनों के नाम एक ही हैं। कुछ वर्ष पूर्व माजी निजाम सरकार ने पुराने फसली सन् में फेर-वदल कर सन् का आरम्भ आजूर मास से किया। इस सन् के मासों के नाम नीचे लिखे अनुसार हैं। जैसे—

आजूर	३० दिन	दय	२८ दिन	वहमन	३० दिन
ईस्पिदाद	३० दिन	फरवर्दी	३१ दिन	आर्दिवेहस्त	३१ दिन
खुर्दाद	३१ दिन	तीर	३१ दिन	अमरदाद	३१ दिन
शहरेवाद	३१ दिन	मेहेर	३० दिन	आवान	३० दिन

इस तरह वारह मास में ३६५ दिनों का एक वर्ष होता है।

हिजरी सन्

हिजरी शब्द की उत्पत्ति हिजरत शब्द से हुई है। हिजरत शब्द का अर्थ भाग जाना है। १५-७-६२२ ई० सन् में मोहम्मद पैगम्वर मक्के से मदीने को भाग गये। उसी दिन से इस सन् का नाम हिजरी सन् पड़ा। इस वर्ष का आरम्भ मुहर्रम की पहली तारीख से होता है। अमावस्या के वाद जिस रात को प्रथम दिन चन्द्र-दर्शन होता है वही दिन मास का प्रथम दिन माना जाता है। चन्द्रदर्शन का आरम्भ होते ही मास का आरम्भ होने के कारण मुसलमानी दिन का आरम्भ सूर्यास्त से माना जाता है। इसमें वारह चान्द्र मास का एक वर्ष नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

मोहर्रम सफ्फर रविलावल रविलाखर जमादिलावल
जमादिलाखर रज्जब सावान रमजान सव्वाल
जिल्काद जिल्हेज। कभी महीना २९ दिन का और कभी ३० दिन का होता है।

पारसी सन्

पारसी लोगों में राजा का राज्याभिषेक होते ही उसके नाम पर नया वर्ष का नाम रक्खा जाता है। एजदी दर्द वादशाह का राज्याभिषेक तारीख १६-६-६३२ ई० सन् को हुआ और उसका वारिस न होने के कारण यह सन् उसी के नाम से प्रचलित रहा। इसीलिये पारसी सन् को एजदी दर्द कहते हैं। यह वर्ष ईस्वी सन् ६३० वर्ष पश्चात् प्रचार में आया। यह सन् परशिया (ईरान) में आरम्भ होने के चालीस-पचास वर्ष पश्चात् पारसी लोग इस देश में पधारे हैं। इन्हें यहाँ आये लगभग

१३५८ वर्ष हुए। पारसी वर्ष ३६० दिन का होता है। सौर वर्ष से इस वर्ष का मेल मिलाने के हेतु शेष पांच दिनों को गाथागंवर कहते हैं जिसे अत्यन्त पवित्र व महत्वपूर्ण मानते हैं। इस तरह ३६५ दिन का वर्ष होता है। बारह मास का नाम नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

१. फर्वर्दीन, २. अर्दीविहस्त, ३. खोर्दाद, ४. तीर, ५. अमरदाद, ६. शहरेवर, ७. मेहर, ८. अवान, ९. आजूर, १०. दय, ११. वहमन, १२. अस्पंदार्मद।

अरबी सन्

इस वर्ष को सुरूसन् या शोहुरसन् कहते हैं। इस सन् का आरम्भ ईस्वी सन् के ५९९ वर्ष में हुआ।

सौर और चांद्र वर्ष

पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा करने के लिए ३६५ दिन, १५ घण्टे और ११ मिनट का जो समय लगता है उसे सौर वर्ष कहते हैं और चन्द्रमा को पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए ३५४ दिन का जो समय लगता है उसे चांद्र वर्ष कहते हैं। इन दोनों वर्षों में जो अन्तर आता है उसका मेल मिलाने के हेतु गणितज्ञों ने प्रत्येक दो वर्ष आठ मास सोलह दिन पश्चात् मलमास के नाम से एक अधिक मास मानना आरम्भ किया। यही अधिक मास के जन्म का मुख्य कारण है।

अयन

हिन्दू धर्म में दो अयन होते हैं—। १. उत्तरायन और २. दक्षिणायन। सूर्य को मकर राशि से मिथुन राशि तक भ्रमण करने के लिए जो समय लगता है या सूर्य उत्तर दिशा से उदित हुआ दिखाई देता है तो उसे उत्तरायन कहते हैं। उत्तरायन प्रायः १३ या १४ जनवरी से आरम्भ होकर यह भ्रमण १५ जुलाई को समाप्त होता है। सूर्य को कर्क राशि से धन राशि तक भ्रमण करने के लिए जो समय लगता है या सूर्य दक्षिण दिशा से प्रयात हुआ दिखाई देता है उसे दक्षिणायन कहते हैं। दक्षिणायन १६ जुलाई से आरम्भ होकर १२ जनवरी को समाप्त होता है। उत्तरायन में प्रायः सभी शुभ कार्यों का करना जैसे—देवालयों में देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा, नये मकान में प्रवेश, विवाह, व्रतवंध, मन्त्र, तन्त्र सीखना हिन्दू जाति में शुभ समझा गया है। इन कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्य दक्षिणायन में किये जाते हैं। दक्षिणायन में मार्गशीर्ष मास में विवाह करना शुभ माना गया है। सूर्य और चन्द्रमा उत्तरायन में बलवान होने के कारण मनुष्य का जन्म यदि इस अयन में हो तो उसे श्रेष्ठ फल मिलता है और सूर्य तथा चन्द्रमा दक्षिणायन में निर्बली होने के कारण उसे अनिष्ट फल मिलता है। उत्तरायन को देवताओं का दिन और दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहते हैं।

अयन फल

उत्तरायन सूर्य में जन्म पानेवाला मनुष्य सदा प्रसन्न चित्त, स्त्री-पुत्रादि आदि से अति सन्तोष व सुख पानेवाला, बहुत आयुष्यवाला, श्रेष्ठ आचार-विचारवाला, उदार व धीरजवाला होता है।

दक्षिणायन सूर्य में जन्म पानेवाला मनुष्य खेती करनेवाला, पशुओं का पालन करने वाला, निष्ठुर मनवाला और किसी की बात न सहन करनेवाला होता है।

संक्रान्ति

सूर्य प्रत्येक राशि में एक मास रहने के पश्चात् जब वह दूसरे राशि में प्रवेश करता है, उसे संक्रान्ति कहते हैं। पंचांगों में सूर्य शब्द का बोध 'अर्क' शब्द से होता है। जैसे मेषेऽर्कः वृषभेऽर्कः, मिथुनेऽर्कः। अतः पंचांग के कोष्ट में यह शब्द जिस तिथि के समक्ष हो उसी दिन सूर्य का प्रवेश उस राशि में हुआ यह समझना चाहिये।

ऋतु और ऋतु काल

ऋतु का सम्बन्ध सूर्य की गति से है। सूर्य क्रांतिवृत्त में जैसा घूमता है वैसा ही ऋतुयें बदल पड़ती हैं। ऋतु छ हैं और प्रत्येक ऋतु दो मास के होते हैं। जैसे—

चैत्र-वैसाख	वसन्त ऋतु	ज्येष्ठ-आसाढ़	ग्रीष्म ऋतु
श्रावण-भाद्रपद	वर्षाऋतु	आश्विन-कार्तिक	शरद ऋतु
मार्गशीर्ष-पौष	हेमन्त ऋतु	माघ-फाल्गुन	शिशिर ऋतु

क्रान्ति का अर्थ जाना और वृत्त का अर्थ वर्तुल होता है। सूर्य और चन्द्रमा आकाश में जिस नियम से वर्तुल मार्ग से घूमते दिखाई देते हैं उसे क्रान्ति वृत्त कहते हैं। वास्तविक में सूर्य घूमता नहीं किन्तु पृथ्वी सूर्य के चारों ओर वर्तुल मार्ग से घूमती है। इसी से हमें भ्रम होता है कि सूर्य ही घूमता है। सूर्य के किस राशि में आने पर कौन-सा ऋतु होता है, इसका ज्ञान नीचे लिखे कोष्टक से सहज ही ध्यान में आ सकता है। जैसे—

राशि	ऋतु	अंग्रेजी मास	अंग्रेजी ऋतु
मीन-मेष	वसंत	फरवरी-मार्च	ग्रीष्म
वृषभ-मिथुन	ग्रीष्म	अप्रैल-मई	
कर्क-सिंह	वर्षा	जून-जुलाई	वर्षा
कन्या-तुला	शरद	अगस्त-सितम्बर	
वृश्चिक-धन	हेमन्त	अक्टूबर-नवम्बर	शीत
मकर-कुम्भ	शिशिर	दिसम्बर-जनवरी	

ऋतु फल

वसन्त ऋतु—इस ऋतु में जन्म पानेवाला मनुष्य सुन्दर रूपवाला, बुद्धिमान, प्रतापी, गणित, विद्या व संगीतशास्त्र में प्रवीण, शास्त्रों का जाननेवाला, प्रसन्नचित्त व निर्मल वस्त्र धारण करनेवाला होता है।

ग्रीष्म ऋतु—विद्या, धन-धान्ययुक्त, ऐश्वर्यवान्, वक्ता, भोगी, जल-विहार करनेवाला होता है।

वर्षा ऋतु—बुद्धिमान, प्रतापी, संग्राम में धीर, घोड़े की सवारी में प्रीति रखनेवाला, सुन्दर रूपवाला, कफ व वात प्रकृतिवाला व स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करनेवाला और प्रसन्नचित्त होता है।

शरद ऋतु—वात प्रकृति, अभिमानी, धनी, पवित्र देही, रण में प्रसन्नचित्त, उत्तम वाहनवाला व क्रोधरहित होता है।

हेमन्त ऋतु—श्रेष्ठ गुण सम्पन्न, उत्तम कर्म, धर्म में प्रीति, चतुर, उदार, राजमन्त्री, सदा नम्र व मनस्वी स्वभाव का होता है।

शिशिर ऋतु—मिष्ठान्न भोजन प्रिय, क्रोधी, स्त्री-पुत्र से सुखी, अधिक बलवान और वेष में प्रीति करनेवाला होता है।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए जिस वर्तुल मार्ग से वह घूमती है उस वर्तुल में जो बारह तारक पुञ्ज अर्थात् बड़े स्टेशन हैं उनको राशि कहते हैं और २७ तारकपुञ्ज अर्थात् छोटे स्टेशनों को नक्षत्र कहते हैं। हिन्दू मास में दो प्रकार के मास होते हैं।—१. चान्द्र मास और २. सौर मास। इसे जानने की पद्धति भिन्न-भिन्न है। जैसे चन्द्रमा की गति से गिने जानेवाले मास को चान्द्रमास कहते हैं। पूर्णिमा से पूर्णिमा के ३० दिन या एक महीना को पूर्णिमान्त मास कहते हैं और अमावास्या से अमावास्या तक के ३० दिन या मास को अमांत मास कहते हैं। चान्द्र मास २९॥ तिथि के होते हैं और बारह चान्द्र मास या एक चांद्र वर्ष में ३५४ दिन होते हैं। इसका आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है।

धर्मशास्त्र के अनुसार व्रत, हवन, विवाह आदि चान्द्र मास में किये जाने की पद्धति अनादि काल से प्रचलित है। परन्तु नर्मदा नदी के उत्तर प्रदेशों में पूर्णिमा से पूर्णिमा तक मास गिने जाते हैं। महाराष्ट्र प्रदेश में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अमावास्या तक के तीस दिन को एक मास गिनने की पद्धति है। इसी कारण व्यवहार में हिन्दी और महाराष्ट्रीय में १५ दिन का अन्तर रहता है। सूर्य की गति से गिने जानेवाले मास को सौर मास कहते हैं। बारह सौर मास के दिन एक समान नहीं होते, वे ३० दिन और कभी ३१ दिन के होते हैं। बारह सौर मास का एक सौर वर्ष—३६५ दिन, १५ घटी व ३७ पल के होते हैं। उत्तरप्रदेश में कृष्ण पक्ष के प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष के

पूर्णिमा तक के काल को चांद्र-मास कहते हैं। हिन्दू मासों का नाम नक्षत्रों के नाम पर रक्खा गया है। यह नीचे लिखे हुए कोष्टक से पाठकों के ध्यान में सहज ही आ सकता है। जैसे—

नक्षत्र	हिन्दू मास	अंग्रेजी मास	मुसलमानी मास
चित्रा	चैत्र	अप्रैल	रविलाखर
विशाखा	वैशाख	मई	जमादिलावल
ज्येष्ठा	ज्येष्ठ	जून	जमादिलावर
पूर्वाषाढ़ा	आषाढ़	जुलाई	रज्जब
श्रवण	श्रावण	अगस्त	सावान
पूर्वाभाद्रपदा	भाद्रपद	सितम्वर	रमजान
अश्विनी	आश्विन	अक्टूबर	सव्वाल
कृत्तिका	कार्तिक	नवम्वर	जिल्काद
मृगशिरा	मार्गशीर्ष	दिसम्वर	जिल्हेज
पुष्य	पौष	जनवरी	मोहर्रम
मघा	माघ	फरवरी	सफर
पूर्वाफाल्गुनी	फाल्गुन	मार्च	रविलावल

चैत्र मास में जन्म पानेवाला मनुष्य सत्कर्मा, विद्या-विनययुक्त, भोगी, मिष्ठान्न भोजनवाला, मित्र, सज्जनों का प्यारा, आम सलाह देनेवाला राजमन्त्री होता है।

वैशाख मास में जन्म पानेवाला बलवान, देव-ब्राह्मण-भक्त, दीर्घायु, बन्धुजन सुख युक्त और बहुत जल पीनेवाला होता है।

ज्येष्ठ मास में जन्म पानेवाला मनुष्य क्षमायुक्त, चंचल प्रवृत्ति, विदेशगमनप्रिय, विचित्र बुद्धि, तीक्ष्ण स्वभाव, विलम्ब से कार्य करनेवाला और श्रेष्ठ होता है।

आषाढ़मास में जन्म पानेवाला मनुष्य बहुखर्ची, बहुभाषी, हास्य विलासी, साहसी, गुरुभक्त, मन्दाग्नि रोगयुक्त, सुकर्मा और महान अभिमानी होता है।

श्रावण मास में जन्म पानेवाला मनुष्य पुत्र, पौत्र, मित्र सुखयुक्त, पितृभक्त, आज्ञाकारी, लोगों में प्रसिद्ध वक्ता, गुणवान्, कफ प्रकृति का होता है।

भाद्रपद मास में जन्म पानेवाला मनुष्य दुर्बल देह, दाता, धनवान, स्त्री-पुत्र सुख-भोक्ता, दुःख-सुख में समान वृत्ति रखनेवाला, स्वजनों में श्रेष्ठ कहलाता है।

आश्विन मास में जन्म पानेवाला मनुष्य विद्वान, धनी, राजाओं का मित्र, सेवक-युक्त, पराये गुण का ज्ञानी, बहुत पुत्र-सम्पदावाला, धनधान्य, ऐश्वर्य भोगनेवाला होता है।

कार्तिक मास में जन्म पानेवाला मनुष्य सुकर्मा, धनवान, कामी, क्रय-विक्रय कार्य में प्रवीण, बहुत प्रीति करनेवाला और श्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है।

मार्गशीर्ष मास में जन्म पानेवाला मनुष्य सुशील, श्रेष्ठ तीर्थयात्रा करनेवाला, सम्पूर्ण कला में निपुण, हास्य-विलासयुक्त, परोपकारी, साधु-सन्तों के मार्ग से चलनेवाला होता है।

पौष में जन्म पानेवाला मनुष्य परोपकारी, पितृधनहीन, कष्टार्जित धन का व्यय करनेवाला, शास्त्रोक्त यत्न से कार्य सिद्ध करनेवाला शास्त्री और दुर्बल देहवाला होता है।

माघ मास में जन्म लेनेवाला मनुष्य योगाभ्यासी, तान्त्रिक आचार्य, बुद्धि-बल से शत्रु का नाश करनेवाला निष्पापी होता है।

फाल्गुन मास में जन्म लेनेवाला मनुष्य परोपकारी, चतुर, दयावान्, कोमल शरीर व हास्य क्रीड़ा प्रवीण, शक्तिवाला और वृथा बकवाद करनेवाला होता है।

मलमास में जन्म पानेवाला मनुष्य अपना ही कल्याण चाहनेवाला, परोपकारी, सबका प्यारा, आरोग्य शरीर, तीर्थयात्रा प्रिय, विषय-वासना से विरक्त और सुन्दर चरित्रवाला होता है।

अंग्रेजी मास और उनके नाम की उत्पत्ति का कारण

अंग्रेजी वर्ष में भी बारह मास होते हैं। उनके नाम नीचे लिखे हुए क्रम से हैं। जैसे—जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर।

पाश्चात्य देश में इटली देश है और उसकी राजधानी रोम है। रोम शहर को जिस पुरुष ने स्थापित किया उसका नाम रोम्युलस था। इस शहर में ज्युलियस सीझर नाम का एक प्रसिद्ध योद्धा हो गया। वह केवल योद्धा ही नहीं अपितु अप्रतिम विद्वान, लेखक, गणितज्ञ, कायदेका पण्डित, पंचांगकर्ता तथा राजकार्य में एक श्रेष्ठ पुरुष माना गया है। रोमन लोगों के युद्ध-देवता का नाम मार्स (मङ्गल) है। अतः इसे सब देवताओं में श्रेष्ठ समझते हैं। इस शहर में मार्स देवता के कई सुन्दर देवालय भी हैं। वहाँ के योद्धागणों द्वारा लड़ाई में जाने के पूर्व मार्स देवता को अर्पण किये हुए दो वत्तक पिंजरे में ले जाने की प्रथा थी। उद्देश्य यह रहा करता था कि वत्तकों ने दिये हुए दाने यदि खा लिये तो वे समझते थे कि देवता प्रसन्न हैं और लड़ाई में विजय अवश्य मिलेगी; किन्तु वत्तकों ने दाने यदि न खायें तो उनकी पराजय होगी।

ऊपर लिखे हुए कारण से सर्वप्रथम अंग्रेजी मास का पहला मास मार्स (मार्च) से आरम्भ हुआ और कई वर्षों तक यह क्रम प्रचार में था परन्तु महापुरुष ज्युलियस सीझर ने इस क्रम को बदलने का निर्णय किया। अपने पंचांग में प्रथम मास जनवरी से आरम्भ किया जिसे यूरोप के सब राष्ट्रों ने मान्यता दी। यह प्रथा आज तक प्रचलित है। अंग्रेजी मास के नामकरण के अन्तर्गत रोमन देवताओं का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह प्रत्येक मास के नामकरण से सहज सिद्ध होता है। जैसे—

Janues (January) जनवरी—हिन्दू जाति में गणेश पूजा जिस तरह सर्वप्रथम शुभ और आवश्यक समझते हैं उसी तरह रोम के लोग इटली देश में Jenus देवता को सर्वश्रेष्ठ और शुभ समझते हैं। इस देवता के दो मुख हैं—एक आगे और एक पीछे; जिसके कारण वह दो दिशा पिछले व अगले को पूर्ण रूप से देखता है। इसी देवता की दृष्टि के आधार पर इस मास को प्रथम मास नाम पाने का मान प्राप्त हुआ और जेनस शब्द के आधार पर जनेवरी नाम रक्खा गया जिससे मनुष्य को पिछले व अगले मास और वर्ष का स्मरण नित्य बना रहे।

Februa (February) फेब्रुअरी—रोमन लोगों में शुचिर्भूत होने के लिए फेब्रुआ नाम की एक श्रेष्ठ विधि है। अतः इस नाम के आधार पर द्वितीय मास के नाम को फेब्रुअरी नाम प्राप्त हुआ। प्रत्येक चौथे वर्ष इस मास के तीस दिन निश्चित किये गये थे। परन्तु इटली के बादशाह आगस्टस ने यह क्रम बदलकर २८ दिन का और हर चौथे वर्ष का मास २९ दिन का निश्चित किया जो कि आज तक प्रचार में है।

Mars (March) मार्च—रोम्युलस जिसने रोम शहर स्थापित किया उसके पिता का नाम मार्स था। इसी कारण से इस मास को वर्ष के प्रथम मास गिने जाने का बहुमान प्राप्त हुआ था और यह कई वर्षों तक वर्ष का प्रथम मास माना जाता था। रोमन लोगों का युद्ध-देवता मार्स (मंगल) होने के कारण इसे प्रथम मास का स्थान मिलने के पश्चात् वीर, योद्धा और धुरन्धर विद्वान पंचांगकर्ता ज्यूलिअस सीझर ने अपने पंचांग में जनवरी मास को प्रथम मास निश्चित करने के कारण इसे तीसरे मास का स्थान प्राप्त हुआ।

Aperaira (April) अप्रैल—यह एक लैटिन शब्द है। इस शब्द का अर्थ खोलना है। निसर्ग देवता अपने ठण्ड काल की निद्रा से जाग्रत हो इस महीने में वृक्षों को नये पत्ते प्रदान करता है। इसी कारण इस मास के नाम की उत्पत्ति हुई। अंग्रेजों के राज्य में इसे खर्चिक वर्ष का प्रथम मास (Financial year) का स्थान प्राप्त हुआ। यह प्रथा आज तक कायम है। परन्तु जिन लोगों को कोई उद्योग और धन्धा नहीं रहता वे लोग दूसरों की चेष्टा विफल करने में अपना समय व्यतीत करते थे। इसीलिए इस मास के प्रथम दिन को 'आल फुलिस डे' सर्वमूर्खों का दिन समझने लगे जो प्रथा आज तक चालू है।

Maia (May) मई—पाश्चात्य देशों के धर्मग्रन्थों में अटलास नामक राक्षस का वर्णन है। यह राक्षस पृथ्वी को अपने बाहुबल से बाहुबल पर तौला करता था। यह पाश्चात्य देश के लोगों का विश्वास है कि इस राक्षस के Maia नाम की एक ही लड़की थी। Maia यह लैटिन शब्द है ज़िसका अर्थ बढ़ना है। इस मास में पृथ्वी पर सब चीजें विपुल प्रमाण में मिलती हैं। इस लड़की के स्मरणार्थ इस मास

का नाम मई रखा गया और प्रथम दिन को उत्सव के रूप में मानते हैं। इस दिन गाँव के सब लड़के और लड़कियाँ एक हो नाचते हुए गाते हैं। किसी सुन्दर लड़की को फूलों के पोशाक से सजाकर नाचते-गाते उसे मे क्वीन मई रानी कहते हैं और यह प्रथा शहरों की अपेक्षा खेड़ों और गाँवों में अधिक प्रमाण में दिखाई देती है और आज भी प्रचलित है।

Juno (June) जून—जूनो रोमन देवता का नाम है और इसी कारण Junius (ज्यूनिअस) यह नाम वहाँ के श्रेष्ठ कुल के लोगों के सम्मानार्थ रखने की प्रथा थी। इसी देवता के नाम से इस मास के नाम की उत्पत्ति हुई यह स्पष्ट है।

Julius (July) जुलाई–इस मास को रोमन लोग क्विण्टीलस (quintilus) याने पाँचवाँ कहते हैं जबकि वर्ष का आरम्भ मार्च महीने से हुआ करता था। ज्युलियस सीझर का जन्म इसी मास की पन्द्रह तारीख को ईसा मसीह के २०० वर्ष पूर्व हुआ। इस वीर के स्मरणार्थ इस मास का नाम जुलाई रक्खा गया।

Octovius (August) आगस्ट—रोम के शहर में आक्टोवियस नाम का एक राजा हो गया जिसके राज्य में जनता को हर प्रकार का सुख मिला करता था। इसी कारण आगस्ट दी महान् की संज्ञा उसे दी गयी। इस राजा के राज्य में कई महत्वपूर्ण घटनायें हुई जिनका स्मरण रोम के लोग आज भी करते हैं। इसी कारण इस मास का नाम आगस्ट रक्खा गया।

Septem (September) सेप्टेम्बर—सेप्टेम यह लैटिन शब्द है जिसका अर्थ सातवाँ है। वर्ष का आरम्भ जब मार्च महीने से हुआ करता था तब यह मास सातवाँ था परन्तु ज्यूलियस सीझर के जनवरी को वर्ष का प्रथम मास का स्थान देने के कारण इसका क्रम नवाँ हुआ। ऊपर लिखे हुए कारण से इस मास के नाम की उत्पत्ति हुई।

Octo (October) अक्टूबर—यह लैटिन शब्द है जिसका अर्थ आठ है। परन्तु ऊपर लिखे हुए कारण से इसका क्रम आज दसवाँ हो गया। किन्तु इस मास की उत्पत्ति इसी कारण हुई।

Novem(November) नवम्बर—नोवेम यह लैटिन शब्द है। तारीख ५-११-१६५ को इंग्लैंड में कहते हैं कि इस दिन गायफाक्स ने पार्लमेंट हाउस उड़ाने का प्रयत्न किया था। वहाँ के लोग इस मास को रक्तमास कहते हैं क्योंकि वहाँ के लोग इसी मास में अपने खाने के लिए पशुओं का संहार किया करते थे। इसी कारण इस मास का नाम नावेम्बर रक्खा गया।

Decem (December) दिसम्बर—यह लैटिन शब्द है, इसका अर्थ दसवाँ है। किन्तु ज्यूलियस सीझर के कारण इसका क्रम बदलकर बारहवाँ मास हुआ। इस

मास की २५ तारीख को ईसा मसीह का जन्म हुआ। इसी कारण ईसाई लोग इस मास की २५ तारीख को बड़ा दिन आजतक कहते और मानते आ रहे हैं। इस मास के नाम की उत्पत्ति का कारण स्पष्ट है।

पक्ष

प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं। प्रथम शुक्ल पक्ष और दूसरा कृष्ण पक्ष। प्रत्येक पक्ष १५ दिन का होता है। प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के १५ दिन को शुक्ल पक्ष और प्रतिपदा से अमावास्या तक के १५ दिन को कृष्ण पक्ष कहते हैं।

पक्ष फल

जन्म समय शुक्ल पक्ष हो तो वह मनुष्य चञ्चल, बहुत सुशील, स्त्री-पुत्रयुक्त सुन्दर व कोमल शरीर, बहुत काल जीवन धारण करनेवाला और सदैव परम आनन्द से समय बितानेवाला होता है।

यदि कृष्ण पक्ष हो तो निर्बल देहवाला, प्रतापयुक्त, चञ्चल स्वभाववाला, शोर मचानेवाला, कुल के विरुद्ध चलनेवाला और अत्यन्त कामी होता है।

वार

हिन्दू वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, वार, तिथि और नक्षत्रादि का सम्बन्ध सूर्य की गति के आधार पर गणित द्वारा निश्चित किया गया है। अतः सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक के समय को वार कहते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य नवग्रहों में सबसे शक्तिमान व प्रभावशाली ग्रह होने के कारण यह नवग्रहों की ग्रहमाला का मुख्य कर्ता माना गया है। इसी कारण हिन्दुओं का दिनारम्भ सूर्योदय से मान्य किया गया। किन्तु मुसलमान धर्मपद्धति के अनुसार दिन का आरम्भ सूर्यास्त से माना जाता है क्योंकि चन्द्र उदय से उनका धर्मकृत्य आरम्भ होता है। अंग्रेजी पद्धति के अनुसार दूसरा दिन मध्यान्ह रात्रि १२ बजे के पश्चात् आरम्भ होता है और दूसरा दिन उसी समय रात्रि को समाप्त होता है।

जन्मवार फल

रविवार—इस रोज जन्म पानेवाला मनुष्य शूरवीर, रक्त-श्यामवर्ण, पित्त प्रकोप-युक्त, थोड़े बाल, रण में विजयी, उत्साह से काल बितानेवाला और बहुत प्रतापी होता है।

चन्द्रवार—पण्डित, शान्त स्वभाव, प्रिय वचनवाला, विधि-विधान जाननेवाला,

सदैव राजा के समीप रहकर निर्वाह करनेवाला और सुख-दुःख में समान स्वभाववाला होता है।

मंगलवार—रणप्रिय, टेढ़े वचनवाला, युद्ध में प्रवल, राजमन्त्री, खेती से निर्वाह करने वाला, वलवान व तीक्ष्ण स्वभावका होता है।

बुधवार—सुन्दर रूपवाला, मधुरभाषी, धनवान, कला-कौशल में प्रवीण, वाणिज्य कर्म में अति निपुण, पंडित व गुणों का जानने वाला होता है।

वृहस्पतिवार—सर्वगुण सम्पन्न, विद्वान, धनवान, रूपवान, राजद्वार से प्राप्त कामनावाला और मनुष्यों को प्यारा होता है।

शुक्रवार—श्यामवर्ण, घुंघर केशवाला, प्रसन्न मुख, बुद्धिमान, सफेद वस्त्र धारण करने में प्रीतिवाला व श्रेष्ठ मार्ग से चलनेवाला होता है।

शनिवार—जल्द वृद्धावस्था प्राप्त होनेवाला, दुर्बल शरीर, तमोगुणी और क्रूर स्वभाव का होता है।

वार के नाम की उत्पत्ति

उदयादुदयं वारः अर्थात् सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक जो काल-क्रमण होता है उसे वार कहते हैं। वार के नाम की उत्पत्ति आकाशस्थ ग्रहों के नाम पर हुई, यह सर्वश्रुत है।

इससे यह सिद्ध होता है कि वार की उत्पत्ति हजारों वर्ष पूर्व से हुई व जगत के इतिहासज्ञ, संशोधक, गणितज्ञ और ज्योतिषज्ञों ने यह मान्य किया है। आकाशस्थ ग्रहों का ज्ञान दुनिया के प्राचीन राष्ट्रों में सर्वप्रथम भारतीय आर्यों को ही था, यह इतिहासज्ञों ने सिद्ध कर दिखाया है। वार के नाम व उनका क्रम संसार के सभी राष्ट्रों ने मान्य किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वार के नाम व क्रम निश्चित करते समय सारे संसार में हिन्दू धर्म का प्राबल्य था।

हमारे देश में वार के नाम का उपयोग लगभग तीन हजार वर्ष से पंचांग में लिखा जा रहा है और योग का उल्लेख शके १३८९ वर्ष में प्रचार में आया। पंचांग के पाँच अंग अर्थात्—तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण यथार्थ में सूर्य और चन्द्रमा इन दो ग्रहों की भ्रमण स्थिति पर तैयार किये जाते हैं। सूर्य के आगे चन्द्रमा को बारह अंश जाने के लिये जो समय लगता है उसको तिथि, सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक जो समय लगता है उसे वार, नक्षत्र चक्र के १३ अंश २० कला का अन्तर भ्रमण करने के लिये चन्द्रमा को जो समय लगता है उसे नक्षत्र और चन्द्र व सूर्य इनके परिभ्रमण कला का ८०० कला का जोड़ होने के लिए जो समय लगता है उसे योग, सूर्य के आगे चन्द्र को छ अंश, आधी तिथि जाने के लिए जो समय लगता है उसे करण कहते हैं। इस प्रकार पंचांग में ऊपर लिखे हुए पाँच अंगों का

वर्णन ही प्राचीन समय में किया जाता था। परन्तु आगे क्रमशः हमारे देश में मुसलमान, पारसी, फसली, अंग्रेजी आदि त्योहारों की काल-गणना का उपयोग प्रचार में आना आरम्भ हुआ अतः इनके विषय में भी पंचांगों में लिखा जाना शुरू हुआ।

वार के क्रम सम्बन्ध में सूर्य सिद्धान्त में लिखा है कि मन्दादूध :क्रमेण स्युश्चतुर्था दिवसाधिपाः अर्थात् सबसे उच्चस्थ शनि से चौथी कक्षा सूर्य की है इसलिए प्रथम दिन का नाम रविवार पड़ा। बाद रवि से चौथी कक्षा चन्द्र की है। अतः दूसरे दिन का नाम चन्द्र या सोमवार पड़ा। पश्चात् चन्द्रमा से ऊपर की चौथी कक्षा मंगल की है, इसलिये तीसरे वार का नाम मंगलवार पड़ा। इसी तरह अन्य वारों का नाम पड़ा है। वार के नाम सात हैं और इनका क्रम नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार है।

इसके सिवाय अन्य नाम भी हैं, जैसे—रविवार, आदित्य या भानु, सोमवार, इंदु या चन्द्र, मंगलवार या भौम, बुधवार या सौम्य, वृहस्पतिवार या गुरुवार, शुक्रवार या भृगु, शनिवार या मन्द।

इन वारों में सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार ये चार वार शुभ हैं और रविवार, मंगलवार और शनिवार ये तीन वार अशुभ माने गये हैं। परन्तु इनका दोष रात्रि समय में नहीं माना जाता तथापि मंगल व शनिवार इष्ट व शुभ कार्य के लिए वर्ज्य करना चाहिये। सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को एक दिन (वार) समझना शास्त्र शुद्ध है इसमें सन्देह नहीं। गणित के आधार से यह सिद्ध हो चुका है कि मकर संक्रान्ति बहुधा प्रतिवर्ष १३ से १४ जनवरी तक और (आर्द्रा) वर्षा—नक्षत्र बहुधा २२ जून से आरम्भ होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं का पंचांग शास्त्र शुद्ध आधारयुक्त व उपयुक्त है।

एशिया खण्ड के तुर्कस्थान में तेग्रीस नदी के किनारे मोसल नाम का एक शहर है। इस शहर के समीप पृथ्वी के गर्भ में निनेव्ह नाम का एक शहर मिला। इस शहर के सार्वजनिक पुस्तकालय में ज्योतिषशास्त्र पर ६० भाग का एक ग्रंथ प्राप्त हुआ जिसका नाम वेल ने किया हुआ वेध है। इस ग्रंथ के अवलोकन से यह सिद्ध होता है कि वारों का नाम और क्रम ईस्वी सन् के २५०० वर्ष पूर्व ही से प्रचार में आया। साथ ही तेग्रीस व युक्राटिस इन दो नदियों के उद्गम स्थान के नजदीक बाबिलोनिया नाम का प्रान्त था। यह शहर युक्राटीस नदी के किनारे बसा था। वहाँ के एक देवल का मनोरा १८०० फुट ऊँचा था जिसमें एक वेधशाला थी। यहाँ के धर्म गुरु खाल्डियन लोग थे। बाबिलोनिया निनेव्ह और असुर पृथ्वी के गर्भ में विलीन हो गये किन्तु संशोधकों ने उनका नाम पुनः इतिहास में कायम कर दिया।

तिथि विचार

चन्द्र और सूर्य यह दोनों ग्रह प्रत्येक महीने में अमावस्या के रोज एक ही राशि में स्थित रहते हैं। अमा शब्द का अर्थ स्थान और वस शब्द का अर्थ रहना है। इसीलिये इस तिथि को अमावस या अमावास्या कहते हैं क्योंकि सूर्य और चन्द्रमा यह दोनों ग्रह इस तिथि को एक ही स्थान में एकत्र रहते हैं। चन्द्र की गति सूर्य की अपेक्षा शीघ्र होने के कारण चन्द्र हमेशा सूर्य के आगे भ्रमण करता है। चन्द्र को सूर्य के आगे १२ अंश जाने के लिए जो समय लगता है उसे तिथि कहते हैं। अमावस के पश्चात् जब चन्द्रमा का अंश सूर्य के आगे जाता है तब प्रतिपदा का आरम्भ होता है। इस तरह ३० दिन में चन्द्रमा ३६० अंश का भ्रमण पूरा करता है। प्रत्येक महीने में शुक्ल और कृष्ण पक्ष में १५ तिथियों के अनुसार ३० तिथि होते हैं। जैसे—

१. प्रतिपदा, २. द्वितीया, ३. तृतीया, ४. चतुर्थी, ५. पंचमी, ६. षष्ठी, ७. सप्तमी, ८. अष्टमी, ९. नवमी, १०. दशमी, ११. एकादशी, १२. द्वादशी, १३. त्रयोदशी, १४. चतुर्दशी और १५. पूर्णिमा।

शुक्ल और कृष्ण पक्ष में तिथियों के नाम एक समान हैं किन्तु कृष्ण पक्ष में १५वीं तिथि का बोध ३० अंक से किया जाता है। महीने में तीस दिन होते हैं और हिन्दू मास के अन्तिम दिनों का बोध यदि ३० अंक से किया जाता हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

शास्त्रकारों ने इन ३० तिथियों का प्रभाव नीचे लिखा है। जैसे—

शुक्ल पक्ष—प्रतिपदा से पंचमी तक कनिष्ठ समझा गया है।
षष्ठी से दशमी तक मध्यम समझा गया है।
एकादशी से पूर्णिमा तक उत्तम समझा गया है।

कृष्ण पक्ष—प्रतिपदा से पंचमी तक उत्तम समझा गया है।
षष्ठी से दशमी तक मध्यम समझा गया है।
एकादशी से अमावस तक कनिष्ठ समझा गया है।

इसके सिवाय दोनों पक्ष में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियाँ सब कार्य के लिए शुभ और ४, ६, ८, ९, १२, ३० यह तिथियाँ अशुभ मानी गयी हैं। अतः शुभ कार्य आरम्भ करने के लिए इन्हें त्याज्य करना उचित है। चन्द्र और सूर्य जिस तिथि को आमने-सामने रहते हैं, उसे पूर्णिमा कहते हैं।

तिथि के स्वामी

प्रतिपदा	अग्नि	चतुर्थी	गणेश	सप्तमी	सूर्य
द्वितीया	ब्रह्म	पंचमी	सर्प	अष्टमी	शिव

तृतीया	गौरी	षष्ठी	कार्तिकेय	नवमी	दुर्गा
दशमी	यम	एकादशी	विश्वेदेव	द्वादशी	विष्णु
त्रयोदशी	मदन	चतुर्दशी	शिव	पौर्णिमा	चन्द्र
अमावस्या	पितर				

किसी भी शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष की पहली पाँच तिथि १ से ५ तक अनिष्ट परन्तु कृष्ण पक्ष में १ से ५ तिथि उत्तम, ६ से १० तक मध्यम और कृष्ण पक्ष में भी ६ से १० तिथि मध्यम, ११ से १५ तक उत्तम परन्तु कृष्णपक्ष में ११ से ३० अनिष्ट मानी गयी हैं। साथ ही रविवार व मंगलवार को १-६-११ तिथि, सोमवार व शुक्रवार को २-७-१२ तिथि, बुधवार को ३-८-१३ तिथि, गुरुवार को ४, ९, १४ तिथि व शनिवार को ५, १०, १५ तिथियाँ अशुभ मानी गयी हैं।

प्रत्येक तिथि का फलित

जन्म-तिथि

मनुष्य का जन्म यदि प्रतिपदा को हो तो वह बहुजन कुटुम्बवाला, विद्या से युक्त, विवेकी, सुवर्ण-रत्नादि से युक्त, सुन्दर वेषवाला, मनोहर कांतिशील, राजा से आदर रहित धन पानेवाला होगा।

द्वितीया तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य दानी, दयावान, गुणी, उत्तम सम्पदा, कीर्तिवाला, सदैव आचार-विचार से चलनेवाला और प्रसन्न मूर्तिवाला होगा।

तृतीया तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य उत्तम विद्या युक्त, बलवान शरीर, देश पर्यटन में प्रेमी, चतुर, राजकुल से धन पानेवाला, हास्य-विलासयुक्त और अभिमानी होगा।

चतुर्थी तिथि में सदा ऋणी, द्यूतप्रिय, साहसी, कृपण, चंचल चित्त व वाद-विवाद करनेवाला होगा।

पंचमी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य सुन्दर शरीर, स्त्री-पुत्र-मित्रयुक्त, वक्ता, दाता, दयावान व राज्यमान्य होगा।

षष्ठी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य सत्यवादी, धनपुत्र-सम्पदायुक्त, तेजस्वी, चतुर, कीर्तिवान, श्रेष्ठ पुरुष व प्राणयुक्त अंगवाला होगा।

सप्तमी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य ज्ञानवान, गुणवान, विशाल नेत्र, देव व ब्राह्मण भक्त, पराया धन, शत्रुओं का नाश व कन्या-संततिवाला होगा।

अष्टमी तिथि में जन्म लेनेवाला मनुष्य चंचल स्वभाव, स्त्रियों का प्रेमी, नाना-प्रकार की सम्पदा, पुत्र सुख, राजा से प्रतिष्ठापूर्वक विद्याधिकार पानेवाला होगा।

नवमी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य कठोरवचनी, बन्धुओं से दूर, पण्डितों का विरोधी, सदाचाररहित व निरादर पानेवाला होगा।

दशमी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य उदार चित्त, विजयी, शास्त्र में निपुण, धार्मिक, ऐश्वर्यवान व अत्यन्त कामी होगा।

एकादशी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य देव-ब्राह्मण भक्त, व्रत-दान का प्रेमी, निर्मल अन्तःकरण, उत्तम कर्म करनेवाला होगा।

द्वादशी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य व्यवहार चतुर, जल का प्रेमी, हास्य विलासयुक्त, पुत्र-पौत्रादि युक्त, अन्नदानी और राजाओं से धन प्राप्त करनेवाला होगा।

त्रयोदशी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य सुन्दर स्वरूप, महाशूर व चतुर तमोगुणी स्वभाववाला होगा।

चतुर्दशी तिथि में जन्म पानेवाला मनुष्य कठोर, अति शूर, चतुर, आकुल चित्त, पराये उत्कर्ष की ईर्षावाला, विरुद्ध वचन बोलने व दुर्बल शरीरवाला होगा।

पूर्णिमा तिथि में जन्म पाने वाला मनुष्य सुन्दर शरीर, न्याय से धन प्राप्त करने वाला, प्रसन्न चित्त, स्त्रियों से युक्त, हास्य विलासी, दयावान्, पुण्यात्मा होगा।

अमावास्या तिथि में जन्म लेनेवाला मनुष्य मातृ-पितृ भक्त, बुद्धिवान, शान्त स्वभाव, कष्ट से धन प्राप्त करने वाला, सम्मानयुक्त, प्रवासप्रिय, क्रांतिरहित, हीन व दुर्बल अंगवाला होगा।

नक्षत्र विचार

प्रत्येक शुभ कार्य आरम्भ करते समय सर्वप्रथम नक्षत्र का विचार करना आवश्यक है। अर्थात् जिस नक्षत्र पर जो शुभ कार्य का आरम्भ करना उचित है उसी समय वह कार्य करना चाहिये। नक्षत्र यह काल (समय) का एक मुख्य अंग होनें के कारण प्रत्येक समंजस मनुष्य को इसका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। आकाश के बारह भाग को राशि और सत्ताईस विभाग को नक्षत्र कहते हैं। चन्द्र को प्रत्येक नक्षत्र का भ्रमण करने के लिये १२ अंश २० कला का समय लगता है व इस गति से २७ नक्षत्रों का भ्रमण ३६० अंश में वह पूर्ण करता है। इस पृथ्वी पर रेल-मार्ग से भ्रमण करने के लिये मनुष्य ने जैसे छोटे-बड़े स्टेशन निर्माण किये हैं वैसे ही सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने आकाश में बारह राशि और सत्ताईस नक्षत्र के रूप में बड़े और छोटे स्टेशन तारों के रूप में निर्माण कर उनका अन्तर निश्चित कर दिया है। सृष्टि के आरम्भ से आज तक ये तारे अपने स्थान में ही स्थित हैं, इसीलिये इन्हें स्थिर या निश्चल कहते हैं। शास्त्रकारों ने कहा है कि—'न सरति तत् नक्षत्रम्' पंचांग में तिथि व दिन के समक्ष जो नक्षत्र लिखे रहते हैं उन्हें चन्द्र नक्षत्र कहते हैं व फलित

वर्तते समय सर्वप्रथम इसका विचार किया जाता है। नक्षत्र सत्ताईस हैं और उनका क्रम नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

१. अश्विनी	२. भरणी	३. कृत्तिका	४. रोहिणी
५. मृग	६. आर्द्रा	७. पुनर्वसू	८. पुष्य
९. आश्लेषा	१०. मघा	११. पूर्वाफाल्गुनी	१२. उत्तराफाल्गुनी
१३. हस्त	१४. चित्रा	१५. स्वाती	१६. विशाखा
१७. अनुराधा	१८. ज्येष्ठा	१९. मूल	२०. पूर्वाषाढ़ा
२१. उत्तराषाढ़ा	२२. श्रवण	२३. धनिष्ठा	२४. शततारका

२५ पूर्वाभाद्रपदा २६. उत्तराभाद्रपदा २७. रेवती।

इन सत्ताईस नक्षत्रों के सिवाय अभिजित् नाम का एक नक्षत्र अठ्ठाईसवाँ नक्षत्र भी है किन्तु उसका महत्व न होने के कारण उसकी गणना नक्षत्रों की कक्षा में नहीं की गयी। चन्द्र जिस मार्ग से आकाश में भ्रमण करता है उस मार्ग से यह नक्षत्र उत्तर दिशा की ओर बाहर होने के कारण चन्द्र नक्षत्रों की कक्षा में इसका वर्णन नहीं दिया गया। सूर्य को प्रत्येक नक्षत्र भ्रमण करने के लिये तेरह या चौदह दिन का समय लगता है; किन्तु अभिजित नक्षत्र का भ्रमण केवल चार या साढ़े चार दिन में समाप्त होता है। अतः इसका वर्णन पंचांगों में नहीं किया गया। नक्षत्रों में शुभ व अशुभ चर व स्थिर नक्षत्र भी होते हैं इसलिये प्रत्येक सांसारिक कार्य आरम्भ करने के पूर्व इनका विचार करना आवश्यक है। जैसे—

२७ नक्षत्र में १८ नक्षत्र शुभ और बाकी के ९ नक्षत्र—भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शततारका अशुभ माने गये हैं। नक्षत्रों के शुभाशुभत्व के अनुसार मनुष्य को उसके प्रयत्न से यश या अपयश मिला करता है। अतः इसका विचार करना आवश्यक समझा गया है। सवा दो नक्षत्रों की एक राशि होती है व इस गति से चन्द्र बारह राशि का भ्रमण एक मास में पूरा करता है।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी	दस्त्र	आर्द्रा	रुद्र	पूर्वा	भग	विशाखा	इन्द्राग्नी
भरणी	यम	पुनर्वसु	अदिति	उत्तरा	अर्यमा	अनुराधा	मित्र
कृत्तिका	अग्नि	पुष्य	बृहस्पति	हस्त	सूर्य	ज्येष्ठा	इन्द्र
रोहिणी	ब्रह्मा	आश्लेषा	सर्प	चित्रा	त्वष्टा	मूल	राक्षस
मृगशीर्ष	चन्द्र	मघा	पितर	स्वाती	वायु	पू० षाढ़ा	उदक
उ० षाढ़ा	विश्वेदेव	अभिजित	विधि	श्रवण	विष्णु	धनिष्ठा	वसु
शततारका	वरुण	पू० भाद्रपद	अजचरण				
उत्तरा भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	रेवती	पूषा				

नक्षत्रों के स्वामी के नाम उपयोग में लाने की प्रथा ज्योतिष ग्रन्थों का अवलोकन करने से सहज विदित होगा। स्वामी के नाम से नक्षत्रों के लक्षण का विचार किया जाता है इसलिये यह यहाँ लिखना और उसे जानना आवश्यक है।

सूर्य नक्षत्र

पंचांग में प्रत्येक तिथि व दिन के समक्ष जो नक्षत्र लिखे रहते हैं उन्हें चन्द्र नक्षत्र कहते हैं। अर्थात् चन्द्र उस दिन उन्हीं नक्षत्रों के समीप रहता है। सूर्य जब इन नक्षत्रों के समीप आता है तब उन्हें सूर्य नक्षत्र कहते हैं। सूर्य को एक नक्षत्र की परिक्रमा करने के लिये १३-१४ दिन का समय लगता है। सूर्य इन सत्ताईस नक्षत्रों के समीप जब मार्ग क्रमण करते हुए पहुँचता है तब उसे सूर्य नक्षत्र कहते हैं व इनका बोध पंचांगों में नीचे लिखे हुये शब्दों में किया जाता है। अर्क का अर्थ सूर्य है इसलिये मृगार्क:, हस्तार्क:, मरण्यार्क: आदि। आर्द्रा नक्षत्र के पास सूर्य पहुँचते ही वर्षा ऋतु का आरम्भ और हस्त नक्षत्र के भ्रमण समाप्त होते वर्षा ऋतु समाप्त होता है।

शुभाशुभ नक्षत्र

इन नक्षत्रों में कुछ शुभ और कुछ अशुभ, चर व स्थिर कहलाते हैं जिनका वर्णन नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, मृग, स्वाती, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, रेवती, ये नक्षत्र विवाह, खेती, गृह व ग्राम प्रवेश, वस्तु संग्रह आदि के लिये शुभ माने गये हैं।

अशुभ नक्षत्र—भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा ये नक्षत्र उग्र हैं।

मध्यम नक्षत्र—आर्द्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, विशाखा और शततारका ये नक्षत्र साधारण समझे गये हैं।

अशुभ नक्षत्र में शुभ कार्य आरम्भ करना वर्ज्य है।

चर व स्थिर नक्षत्र

इन नक्षत्रों में कौन कौन से कार्य करना उचित है उसका वर्णन नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

स्थिर नक्षत्र—रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा इन चार नक्षत्रों में देवालय व मकान बनाना, गाँव खरीदना, बाग लगाना, राज्याभिषेक के लिये शुभ समझे जाते हैं।

चर नक्षत्र—पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, स्वाती, शततारका, वाहन पर बैठने, विहार करने के लिये शुभ माने गये हैं।

मृदु, लघु, क्रूर, तीक्ष्ण तथा मिश्र नक्षत्र

मृदु नक्षत्र—मृग, चित्रा, अनुराधा, रेवती। ये वस्त्रालंकार, मित्र कार्य, क्रीडा आदि के लिये शुभ समझे जाते हैं।

लघुनक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त। ये तंत्र-मंत्र सीखने, लेन-देन, चित्र आदि निकालने के लिये शुभ है।

क्रूरनक्षत्र—भरणी, चित्रा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा। ये क्रूरकार्य के लिये उचित समझे गये हैं।

तीक्ष्णनक्षत्र-आर्द्रा, ज्येष्ठा, आश्लेषा व मूल। ये जारण, मारण कार्य के लिये उचित हैं।

मिश्रनक्षत्र—विशाखा व कृत्तिका। ये अग्निहोत्र, वृषोत्सर्ग के लिये उत्तम हैं।

नक्षत्रों के मुख

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, देवालय व घर बाँधने के लिये उत्तम माने गये हैं।

अधोमुख नक्षत्र—भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आश्लेषा, मूल, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, तालाब, कूँआ, तलघर बाँधने के लिये उत्तम हैं।

तिर्यङ्मुख नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुनर्वसू, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, रेवती, गाड़ी-घोड़ा चलाना, नौका चलाने के लिये उत्तम हैं।

नक्षत्रों के लोचन

लोचन चार प्रकार के होते हैं। जैसे—सुलोचन, मध्यलोचन, मंदलोचन व अन्धलोचन। वे नीचे लिखे अनुसार हैं—

सुलोचन नक्षत्र	मध्यलोचन नक्षत्र	मंदलोचन नक्षत्र	अन्धलोचन नक्षत्र
पुनर्वसु	आर्द्रा	मृगशिरा	रोहिणी
पूर्वाफाल्गुनी	मघा	आश्लेषा	पुष्य
स्वाती	चित्रा	हस्त	उत्तराफाल्गुनी
मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	विशाखा
श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराषाढ़ा	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराभाद्रपदा	भरणी	शततारका	धनिष्ठा
कृत्तिका	अभिजित्	अश्विनी	रेवती

नक्षत्रों के शुभाशुभादि का विचार कर फलित वर्तना चाहिये।

पुष्य नक्षत्र

जिस तरह चतुष्पाद प्राणियों में सिंह बलवान तथा श्रेष्ठ समझा जाता है, उसी तरह सब नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र श्रेष्ठ समझा जाता है। यद्यपि अपने राशि (जन्म) से चन्द्र चौथा, आठवाँ, बारहवाँ होने के कारण अनिष्ट समझा गया है तथापि उस दिन यदि पुष्य नक्षत्र हो तो अनिष्ट चन्द्र होते हुए भी शुभ फल मिलना निश्चित है। परन्तु विवाह के लिये यह नक्षत्र अनिष्ट माना गया है।

गण्डान्त

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की दो घड़ी व मूलनक्षत्र की प्रथम दो घटी को गंडांत कहते हैं। बालक का जन्म यदि इस समय पर होवे तो पिता को चाहिये कि वह बालक को न देखे और अज्ञानवश यदि देख लिया तो इस अत्यन्त अशुभ समय के अनिष्ट परिणाम से बचने के लिये जप, तप, दान कर शान्ति करें अन्यथा मृत्यु का सामना करने का दुर्धर प्रसंग उस पर आना संभव है। जन्म नक्षत्र का प्रभाव मनुष्य के स्वाभावादि पर इतने जोरों से पड़ता है कि लोग 'किस नक्षत्र पर इसका जन्म हुआ' 'यह इसके जन्म नक्षत्र का दोष है' आदि कहने लगते हैं।

नक्षत्रों के अंग्रेजी नाम

अश्विनी	बीटा एरेटिस	भरणी	एकतालिस एरेटिस
कृत्तिका	ईटाटारी	रोहिणी	आल्डिबरान
मृगशीर्ष	लाम्डा ओरायनिस	आर्द्रा	गामा जेमिनोरम
पुनर्वसु	पोलक्स	पुष्य	डेल्टा कैंक्री
आश्लेषा	झीटा हैड्री	मघा	रेग्युलस्
पूर्वाफाल्गुनी	थीटा लियोनिस	उत्तराफाल्गुनी	बीटाल्योनिस्
हस्त	डेल्टा कार्वी	चित्रा	स्पायका
स्वाती	आल्फाबूटिस्	विशाखा	आल्फालिब्रे
अनुराधा	डेल्टास्कार्पी	ज्येष्ठा	आल्फास्कार्पी
मूल	लामडा स्कार्पी	पूर्वाषाढ़ा	लामडा सैगीटरी
उत्तराषाढ़ा	पाईसैंगीटरी	अभिजित	ह्वीगा
श्रवण	आलटेअर	धनिष्ठा	बीटाडेल्फिनी
शततारका	लामडाअक्वेरी	पूर्वाभाद्रपद	मार्कब
उत्तराभाद्रपद	गामापिगैसी	रेवती	म्यूपिशियम

नक्षत्रों की आकृति

अश्विनी की आकृति घोड़े के मुख के समान।
भरणी की आकृति योनि के समान।
कृत्तिका की आकृति धारवाले छूरे के समान।
रोहिणी की आकृति बैलगाड़ी के समान।
मृगशिरा की आकृति हरिण के मस्तक के समान।
आर्द्रा की आकृति मणि के समान।
पुर्नवसु की आकृति मकान के समान।
पुष्य की आकृति वाण के समान।
आश्लेषा की आकृति चाक के समान।
मघा की आकृति घर के समान।
पूर्वाफाल्गुनी की आकृति खाट के समान।
उत्तराफाल्गुनी की आकृति बिस्तरा के समान।
हस्त की आकृति हाथ के पंजे के समान।
चित्रा की आकृति मोती के समान।
स्वाती की आकृति मूंगा के समान।
विशाखा की आकृति तोरन के समान।
अनुराधा की आकृति भात के ढेर के समान।
ज्येष्ठा की आकृति कुण्डल के समान।
मूल की आकृति सिंह के पूंछ के समान।
पूर्वाषाढा की आकृति हाथी के दाँत के समान।
उत्तराषाढ़ा की आकृति मंच के समान।
श्रवण की आकृति तीन पैर के बालक के समान।
धनिष्ठा की आकृति मृदंग के समान।
शततारका की आकृति गोल के समान।
पूर्वाभाद्रपदा की आकृति खाट के समान।
उत्तराभाद्रपदा की आकृति जुड़े लड़कों के समान।
रेवती की आकृति मृदंग के समान।

नक्षत्र के चरण व राशि

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और नव चरणों की एक राशि होती है अर्थात् सत्ताईस नक्षत्र के १०८ चरण होते हैं। हिन्दुओं के जन्म नाम का आद्याक्षर नीचे लिखे

हुए अनुसार आरम्भ होता है जिससे इस शास्त्र के तज्ञों को जन्म नाम के प्रथम अक्षर पर से चरण नक्षत्र, जन्म राशि और जन्म समय किस ग्रह की महादशा चालू है उसका ज्ञान सहज में हो तथा जन्म समय शुभ या अशुभ फलदायी है यह मालूम करना सहज हो सकता है।

चरण	नक्षत्र	राशि	राशि का स्वामी ग्रह
१—चू चे, चो, ला ली लू ले लो अ	अश्विनी भरणी कृत्तिका	मेष	मंगल
२—ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो	कृत्तिका रोहिणी मृग	वृषभ	शुक्र
३—का की कु घ ङ छ के को हा–	मृग आर्द्रा पुर्नवसु	मिथुन	बुध
४—ही ········· हू हे हो डा डी डू डे डो	पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा	कर्क	चन्द्र
५—मा मी मू मे मो टा टी टू टे ·········	मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी	सिंह	सूर्य
६— ··टो पा पी पू ष ण ठ पे पो······	उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा	कन्या	बुध
७—······रा री रू रे रो ता ती तू ते···	चित्रा स्वाती विशाखा	तुला	शुक्र
८—·········तो ना नी नू ने नो या यी यू	विशाखा. अनुराधा ज्येष्ठा	वृश्चिक	मंगल
९—ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे ··· ······	मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा	धन	गुरु

१०—…भो जा जी खी खू खे खो गा गी……	उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा	मकर	शनि
११—………गू गे गो सा सी सू से सो दा—	धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा	कुंभ	शनि
१२—……… दी दु थ छ ञ दे दो चा ची	पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती	मीन	गुरू

मूल नक्षत्र जन्म फल

इस नक्षत्र में चतुर्थ चरण के शुभ मुहुर्त में जन्म पाने वाला बालक प्रतापी, सौभाग्यशाली, ऐश्वर्य, आयु व कुल की वृद्धि करता है, किन्तु अशुभ महूर्त में उत्पन्न होने वाला वालक कुल का नाश करता हैं। जन्म पाने वाले बालकों के लिये यद्यपि वह वहुत अच्छा कहलाता है तथापि कटुम्व के सदस्यों के लिये वहुत ही हानिकारक समझा गया है।

मूल चरण फल

मूलनक्षत्र के चार चरणों में से तीन चरणों में जन्म पानेवाला बालक क्रमशः पिता, माता और धन को अनिष्टकारक जानना अर्थात् पहले चरण में जन्म हो तो पिता को अशुभ, दूसरे चरण में हो तो माता को और तीसरे चरण में हो तो धन का नाश करता है। किन्तु मूल का चौथा चरण उन सभी को शुभ फलदायक समझना चाहिये। वैसे ही आश्लेषा नक्षत्र का चौथा चरण पिता को, तीसरा चरण माता को और दूसरा चरण धन के लिये अनिष्टदायक समझा गया है व पहला चरण सब को शुभ जानना चाहिये।

मूले तिथि वार फलम्

कृष्ण पक्ष तृतीया मंगलवार में तथा दशमी शनिवार में और शुक्ल पक्ष चतुर्दशी बुधवार में हो तो ऐसे योग में मूलनक्षत्र में जन्म हुआ बालक को कुल का नाश करने वाला समझना चाहिये।

मूल वेला में फल

मूल तक्षत्र में जन्म का समय दिन में होता हो तो पिता को, सायंकाल में हो तो मामा को और रात्रि में हो तो पशुओं को व प्रातःकाल में हो तो मित्रजनों को अनिष्ट फलदायी समझना चाहिये। परन्तु मूल नक्षत्र में जन्म पाने वाला मनुष्य सुखी,

धन व वाहन युक्त, हिंसा करने वाला, बलवान्, स्थिर कर्म करने वाला, शत्रुनाशक और पुण्यात्मा होता है।

नक्षत्रों का पृथ्वी से सम्बन्ध

हम लिख चुके हैं कि नक्षत्र तारे हैं और इन तारों का स्वामी चन्द्र है। इसीलिये चन्द्र को नक्षत्रराज व तारानाथ कहते हैं। नक्षत्र और चन्द्र में पृथ्वी के समीप होने के कारण इनका प्रभाव पृथ्वी के समस्त वस्तुओं व प्राणियों पर पड़ना स्वाभाविक है। जैसे स्वाती नक्षत्र में सूर्य के रहते यदि वर्षा हुई और इस वर्षा का एक बूंद भी सीप के अन्दर प्रविष्ट हुआ तो वह मोती का रूप धारण करता है। उसी तरह चित्रा व हस्त के सूर्य के किरणों में कृमि-कीटाणुओं का नाश करने की शक्ति है। इस तरह नक्षत्रों का प्रत्यक्ष अनुभव मनुष्य को मिलते हुये भी यदि कोई मनुष्य विश्वास न करे तो उसके अज्ञानता का लक्षण कहना चाहिये। अतः देश के भावी कर्णधारों या नवयुवकों को इस त्रिकालदर्शी विद्या का ज्ञान होना कितना आवश्यक है इसका विचार सुज्ञ पाठक-गण स्वयं कर सकते हैं।

जन्म नक्षत्र का प्रभाव मनुष्य के मन, शरीर पर किस तरह पड़ता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण नीचे लिखे हुये उनके गुण, धर्म, स्वभाव, रूप, रंग से पाठकों के ध्यान में सहज आवेगा इसमें सन्देह नहीं। जैसे—

(१) अश्विनी—सुन्दर स्वरूप, मजबूत शरीर, दक्ष, अलंकार की खुशी, मानी स्वभाव, चंचल, धनाढ्य, प्रवासी, जनता को प्रिय।

(२) भरणी—निश्चयी, दृढ़, निरोगी, दक्ष, चतुर, लोभी, स्वार्थी, वेफिकर।

(३) कृत्तिका—तेजस्वी, प्रख्यात, क्रोधी, गर्विष्ट, परस्त्रीआसक्त, भोक्ता।

(४) रोहिणी—मधुरभाषी, सत्यवादी, रूपवान्, स्थिर बुद्धि, शास्त्रोक्त आचरण, परद्रव्य को तृणवत् समझने वाला, श्रीमान्, विलासी।

(५) मृग—चंचल, चतुर, डरपोक, उद्योगी, परोपकारी, कामातुर, रोगी उद्योगी, उत्साही, पशु-पक्षी का शौकीन।

(६) आर्द्रा—गर्विष्ट, दुष्ट, घातकी, वृथा बोलने वाला, चुंजक, हिंसक।

(७) पुनर्वसु—सुस्वभावी, शान्त वृत्ति, अल्प सन्तोषी, तपस्वी, नीतिमान्, गायक, सुखी, सत्वगुणी, रोगी, अधिक पानी पीने वाला।

(८) पुष्य—जितेन्द्रिय, शान्त, सर्वप्रिय, शास्त्रज्ञ, धर्मरक्षक, धनवान।

(९) आश्लेषा—धूर्त, कृतज्ञ, संचयी, निंदक, राजकारणी, सर्वभक्ष्यप्रिय।

(१०) मघा—देव व पितृभक्त, भोगी, धनवान, महान उद्योगी, बलवान्, दास-दासी युक्त, हिंमती, स्त्रीद्वेषी, जगप्रसिद्ध।

(११) पूर्वाफाल्गुनी—कांतिवान्, मधुरभाषी, दयालु, राजसेवक, प्रवासी।

(१२) उत्तराफाल्गुनी—विद्यावान्, धनवान्, सुखी, जनताप्रिय, उदार बुद्धि व शान्त।

(१३) हस्त—निर्दयी, निर्लज्ज, मदिराभक्त, चोरी करने की वृत्ति, उद्योगी।

(१४) चित्रा—ऊनी वस्त्रों का संग्रही, तामसी, उत्तम नेत्र व शरीर, विषयासक्त, गायनप्रिय, संशयी, रत्नपारखी, गणितज्ञ, पुष्पप्रिय, सुन्दर वस्त्रों का भोक्ता।

(१५) स्वाती—क्रय-विक्रय में प्रवीण, दयालु, मधुरभाषी, धर्माभिमानी, शान्त, विद्वान, विनयी, आनंदी, नीतिमान्, जितेन्द्रिय।

(१६) विशाखा—द्वेषी, कलहप्रिय, लोभी, घातकी, स्पर्धा न करने वाला।

(१७) अनुराधा—प्रवासी, विदेशवासी, वस्त्र व अलंकारप्रिय, धनाढ्य, सुखी, विषयासक्त।

(१८) ज्येष्ठा—संतोषी, घातक, क्रोधी, अल्प मित्र वाला।

(१९) मूल—सुखी, गर्विष्ट, धनवान, स्थिरचित्त, सौम्य स्वभाव, भोगी, दयालु, राजकरणी।

(२०) पूर्वाषाढ़ा—स्त्री का आज्ञाकारी, सन्तोषी, लोगों से स्नेह रखने वाला।

(२१) उत्तराषाढ़ा—नम्र, धार्मिक, कृतज्ञ, स्थूल देही, बहुमित्र वाला।

(२२) श्रवण—पण्डित, उदार बुद्धि, धनवान, कीर्तिमान्, ईश्वरभक्त, शास्त्री।

(२३) धनिष्टा—दाता, शूर, निर्लज्ज, वाद्यप्रिय, लोभी।

(२४) शततारका—द्यूतप्रिय, अल्पविद्या, विषयासक्त।

(२५) पूर्वाभाद्रपदा—धनवान, पराक्रमी, दुखी, कृपण, निपुण, उद्विग्न।

(२६) उत्तराभाद्रपदा—संततिवान्, सुखी, लोकप्रिय, निर्मल, विद्वान, मित्र।

(२७) रेवती—शूर, लोकप्रिय, मजबूत शरीर।

इन नक्षत्रों में से २, १०, १६, १८, १९, और २३ यह अशुभ नक्षत्र है अतः शुभ व इष्ट कार्य करते समय इन्हें वर्ज्य करना उचित होगा। ऊपर लिखे हुये नक्षत्रों के फल में कम या अधिक प्रमाण मिलना सम्भव है क्योंकि नक्षत्रों के अतिरिक्त फलित व। जन्मकुण्डली के लग्न, द्वादश भाव उनके स्वामी के स्थित होने पर, दृष्टि, योग, प्रतियोग, गोचर ग्रहों की गति, दृष्टि व महादशा व अन्तर्दशा पर भी अवलंबित हैं।

शरीर के अवयव पर जन्म नक्षत्र का प्रभाव

मनुष्य पुरुषजाति के शारीरिक अवयवों पर जन्म समय के सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक नीचे लिखे अनुसार परिणाम पड़ता है। जैसे :—

प्रथम तीन नक्षत्रों का प्रभाव मस्तक पर।

दूसरे तीन नक्षत्रों का प्रभाव मुख पर।

तीसरे दो नक्षत्रों का प्रभाव कंधों पर।

चौथे दो नक्षत्रों का प्रभाव वाहु पर।
पाँचवें दो नक्षत्रों का प्रभाव तलहाथ पर।
छठवें पाँच नक्षत्रों का प्रभाव हृदय पर।
सातवें एक नक्षत्र का प्रभाव नाभी पर।
आठवें एक नक्षत्र का प्रभाव गुह्य भाग पर।
नवमें दो नक्षत्र का प्रभाव जंघों पर।
दसवें छ नक्षत्रों का प्रभाव पाँवों पर।

इसके अतिरिक्त इन नक्षत्रों का प्रभाव स्त्री जाति के अवयवों पर नीचे लिखे अनुसार पड़ता है। जैसे—

प्रथम तीन नक्षत्रों का प्रभाव मस्तक पर।
दूसरे सात „ „ „ मुख पर।
तीसरे आठ „ „ „ स्तन पर।
चौथे तीन „ „ „ हृदय पर।
पाँचवें तीन „ „ „ नाभी पर।
छठवें तीन „ „ „ गुह्य स्थान पर पड़ता है।

जन्म समय के सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र का अंक यदि तलहाथ, गुह्य स्थान या पावों पर पड़ता हो तो उसे अशुभ और शेष भाग पर पड़ता हो तो शुभ समझना चाहिये। मान लो कि सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र का अंक १५ आया, यह पन्द्रहवाँ नक्षत्र पुरुष के हृदय पर आता है अतः वह शुभ और नक्षत्र फल भी शुभ मिलना निश्चित है।

जन्म नक्षत्र से जन्म ग्रह दशा का ज्ञान

सत्ताईस नक्षत्र तीन नक्षत्रों के क्रम से नौ ग्रहों में विभाजित हैं। जन्म नक्षत्र से जन्म ग्रहदशा का ज्ञान व जन्म कुण्डली के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति, युति, दृष्टि, आदि का ज्ञान फलित वर्तन में सहज होगा परन्तु जन्म नक्षत्र के आधार पर ही जन्म या व्यवहारिक नाम आद्याक्षर के अनुसार रक्खा गया हो तभी इसका लाभ मिलना सम्भव है अन्यथा नहीं। जैसे :—

जन्म नक्षत्र	विंशोत्तरी महादशा ग्रह	वर्षकाल समय
१—कृ०, उ० फा०, उ० षा०	सूर्य	६ वर्ष
२—रो०, ह०, श्र०	चन्द्र	१० वर्ष
३—मृ०, ध०, चि०	मंगल	७ वर्ष
४—आ०, स्वा०, शत०	राहु	१८ वर्ष
५—पु०, वि०, पू० भा०	गुरू	१६ वर्ष
६—पुष्य, अ०, उ० भा०	शनि	१९ वर्ष

जन्म नक्षत्र	विंशोत्तरी महादशा ग्रह	वर्षकाल समय
७—आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	बुध	१७ वर्ष
८—मघा, मूल, अश्विनी	केतु	७ वर्ष
९—पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	शुक्र	२० वर्ष

दिन-रात्रि जन्म फल

दिन में जन्म पाने वाला मनुष्य तेजस्वी, पिता के समान शील स्वभाववाला, सुन्दर दृष्टिवाला, राजाओं से प्रीति करने वाला, बन्धुओं में पूज्य व धनवान होता है।

रात्रि में जन्म पाने वाला अतिकामी, मन्द दृष्टिवाला, क्षयरोगी, गुप्त पाप करने वाला, दुष्टात्मा, मैला शरीर वाला होता है।

योग विचार

सूर्य और चन्द्र के भ्रमण गति के जोड़ को 'योग' कहते है। सूर्य की प्रतिदिन की मध्यम गति ५९ कला ८ विकला और चन्द्र की गति ७९० कला ३५ विकला है। एक भोग होने के लिये ८०० कला का जोड़ होना आवश्यक है। इस तरह सत्ताईस योग होते हैं। उनका नाम, क्रम व फल नीचे लिखे अनुसार मनुष्य को जन्म समय से मिलना निश्चित है। जैसे :—

विष्कुंभ	गंड	परिघ
प्रीति	वृद्धि	शिव
आयुष्मान्	ध्रुव	सिद्धि
सौभाग्य	व्याघात	साध्य
शोभन	हर्षण	शुभ
अतिगण्ड	वज्र	शुक्ल
सुकर्मा	सिद्धि	ब्रह्म
धृति	व्यतीपात	ऐन्द्र
शूल	वरीयान्	वैधृति

इन योगों के नाम पर से ही उनका फल समझना कठिन नहीं है तथापि यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि व्यतीपात व वैधृति ये दो योग अत्यन्त अशुभ माने गये हैं। अतः इन योगों पर कोई भी शुभ कार्य आरंभ करना उचित नहीं।

इनके अतिरिक्त ऊपर लिखे हुए योगों में से कुछ योग ऐसे हैं कि उनके आरंभ होते ही कुछ घटी तक वे अशुभ माने जाते हैं। जैसे :—

विष्कुंभ और वज्र योग के आरंभ के तीन घटी अशुभ माने गये हैं।

शूल योग के आरम्भ के पाँच घटी अशुभ माने गये हैं।

गंड और अतिगण्ड के आरम्भ के छः घटी अशुभ माने गये हैं।

व्याघात योग के नव घटी आरम्भ के अशुभ माने गये हैं।

परिध योग के पूर्वार्ध समाप्त होते तक के घटी अशुभ माने गये हैं। शेष योगों के समान यह शुभ माने जाते हैं।

अमृतसिद्धि योग

यह योग नीचे लिखे अनुसार दिन और नक्षत्र पर अवलंबित है। जैसे :—

१—रविवार को हस्त नक्षत्र हो।
२—सोमवार को मृग नक्षत्र हो।
३—मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो।
४—बुधवार को अनुराधा नक्षत्र हो।
५—गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो।
६—शुक्रवार को रेवती नक्षत्र हो।
७—शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो।

इस तरह वार और नक्षत्र के अनुसार शुभ योग पर कार्य का आरम्भ उचित माना गया है किन्तु तिथि का भी विचार अवश्य ध्यान में रखना चाहिये अन्यथा कार्य में यश मिलना असम्भव होगा। जैसे—रविवार को पंचमी हो, सोमवार को षष्ठी, मंगलवार को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी हो, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी हो तो ऊपर लिखे हुये अमृतसिद्धि योग होते हुये भी अशुभ फल मिलेगा यह ध्यान में रखना चाहिये। इसके अतिरिक्त नीचे लिखे हुये वार और नक्षत्र कुछ कार्यों के लिये अशुभ माने गये हैं। जैसे :—

१—मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र गृहप्रवेश के लिये, २—गुरुवार को पुष्य नक्षत्र विवाह के लिये, ३—शनिवार को रोहिणी नक्षत्र प्रयाण के लिये। अतः ऊपर लिखे अनुसार दिन, नक्षत्र और तिथि पर योगों का शुभाशुभ निर्भर है। इसके सिवाय बाकी योग सभी कार्यों के लिये शुभ समझे गये हैं।

मृत्यु योग

नीचे लिखे हुए वार के समक्ष यदि नक्षत्र हो तो उसे मृत्यु योग समझना चाहिये। ऐसे वार व नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य करना वर्ज्य है। जैसे—

१—रविवार को अनुराधा नक्षत्र हो।
२—सोमवार को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो।
३—मंगलवार को शततारका नक्षत्र हो।
४—बुधवार को अश्विनी नक्षत्र हो।
५—गुरुवार को मृग नक्षत्र हो।
६—शुक्रवार को आश्लेषा नक्षत्र हो।
७—शनिवार को हस्त नक्षत्र हो।

दग्ध योग

रविवार को द्वादशी तिथि हो।
सोमवार को एकादशी तिथि हो।
मंगलवार को पंचमी तिथि हो।
बुधवार को तृतीया तिथि हो।
गुरुवार को षष्ठी तिथि हो।
शुक्रवार को अष्टमी तिथि हो।
शनिवार को नवमी तिथि हो।

यह दिन व तिथि दग्ध योग कहलाते हैं। इन योगों पर कोई भी शुभ कार्य करना उचित नहीं।

यमघण्ट योग

नीचे लिखे हुए नक्षत्र उन वारों के समक्ष यदि हों तो यमघण्ट योग कहते हैं। इन योगों में नीचे दिये हुए कार्य करना अनुचित समझा गया है। जैसे—

१—रविवार को मघा नक्षत्र।
२—सोमवार को विशाखा नक्षत्र।
३—मंगलवार को आर्द्रा नक्षत्र।
४—बुधवार को मूल नक्षत्र।
५—गुरुवार को कृतिका नक्षत्र।
६—शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र।
७—शनिवार को हस्त नक्षत्र।

इन योगों में देवस्थापना, गृहप्रवेश, प्रयाण करना मना है व किया तो संकट मिलता है। यदि किसी बालक का जन्म हो तो दोष के शान्ति करने से दोष का निवारण होगा।

योग फल

काल का मुख्य अंग योग है। अतः प्रत्येक योग में जन्म लेने वाले मनुष्य को उसका फल नीचे लिखे अनुसार मिलना स्वाभाविक है—

(१) विष्कुम्भ योग—निरन्तर स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के सुख से युक्त, सब कार्य अपने मन से करने वाला, चंचल स्वभाव, शरीर सुख पाने वाला होता है।

(२) प्रीति योग—सून्दर रूप वाला, प्रसन्न चित्त, अच्छे विलास में आनंद मनाने वाला, धर्म में प्रीति रखने वाला, अतिदानी, वक्ता, चंचल मन का होता है।

(३) आयुष्यमान् योग—साहसी, धनी, अनेक स्थान व उद्यान में प्रवास करनेवाला, बहुत आयु वाला व मानी स्वभाव का होता है।

(४) सौभाग्य योग—ज्ञानवान्, गुणवान्, सत्यवादी, श्रेष्ठ आचार युक्त, विवेक बुद्धिवाला, बलवान, प्रशंसा करने योग्य, ऐश्वर्यवान् व महाअभिमानी होता है।

(५) शोभन योग—महाचतुर, शीघ्र कार्य करने वाला, योग्य उत्तर देने वाला, हमेशा मंगल कार्यों का करने वाला, बहुत बड़ाई पाने वाला, उत्तम मति वाला व दर्शनीय होता है।

(६) अतिगण्ड योग—सदा अहंकार युक्त, क्रोधी, बड़ा धूर्त, कलहप्रिय, कंठरोग वाला व पाखण्डी होता है।

(७) सुकर्मा योग—सब कलाओं में प्रवीण, सदा प्रसन्नचित्त, उत्साहयुक्त, साहसी, परोपकारी, हमेशा सुकर्म करने वाला होता है।

(८) धृति योग—सदा नियम का पालन करने वाला, धीरज वाला, वक्ता, पण्डित, प्रसन्नचित्त, दानी, सुशील व विनययुक्त होता है।

(९) शूल योग—दरिद्री, रोगी, सत्कर्म, विद्या व विनयरहित, उदर में कभी-कभी शूलरोग वाला होता है।

(१०) गण्ड योग—रूखा स्वभाव वाला, महाक्रोधी, धूर्त, मित्रों के कार्य में विमुख रहने वाला होता है।

(११) वृद्धि योग—बड़ा चतुर, क्रय-विक्रय से धन प्राप्त करने वाला, उत्तम वस्तुओं में प्रीति रखने वाला, संग्रही व सदा भाग्य की वृद्धि वाला होता है।

(१२) ध्रुव योग—मुख में सदा सरस्वती देवी का वास, घर में निरन्तर लक्ष्मी निवास करे व जगत् में उसकी निर्मल कीर्ति बनी रहेगी।

(१३) व्याघात योग—मिथ्या बोलने में प्रीति करने वाला, मन्ददृष्टि, क्रूर स्वभाव पराये दोष में तत्पर और घात करने वाला होता है।

(१४) हर्षण योग—शास्त्रों का पठन करने वाला, रक्त वर्ण, आभूषण व वस्त्र धारण करने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

(१५) वज्र योग—श्रेष्ठ बुद्धि व उत्तम बन्धु वाला, गुणवान, बड़ा पराक्रमी, सत्य-वादी, रत्नों का पारखी व हीरा जड़े हुए आभूषणों से युक्त होता है।

(१६) सिद्ध योग—शास्त्र का मर्म जानने वाला, चतुर, सुशील, उदारचित्त, भाग्य की सदा वृद्धि वाला होता है।

(१७) व्यतिपात योग—मातृ-पितृभक्त व आज्ञा पालन करने वाला, उदार बुद्धि वाला, रोगपीड़ित देह वाला, कठोर चित्त व दूसरों के कार्य में विघ्न करने वाला होता है।

(१८) वरीयान् योग—परिश्रम से धन प्राप्त कर भोगने वाला, नम्र स्वभाव वाला, उत्तम कार्य में धन का व्यय करने वाला, अच्छे कर्म कर जनता में श्रेष्ठ पद पाने वाला होता है।

(१९) परिघ योग—असत्य साक्षी देने वाला, दयाहीन, चतुर, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, अनेकों से शत्रुता रखने वाला होता है।

(२०) शिव योग—मंत्र विद्या में निपुण, कोमल देह, जितेन्द्रिय, ईश्वर की कृपा से सदा कल्याण प्राप्त करने वाला होता है।

(२१) सिद्धि योग—गौरवर्ण वाला, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सब कार्य करने में बड़ा कुशल व प्रत्येक काम में सिद्धि पाने वाला।

(२२) साध्य योग—नम्र स्वभाव व हंसतेमुख वाला, चतुर, अपने कार्य में निपुण शत्रुओं को जीतने वाला, श्रेष्ठमन्त्रों से सब कार्य सिद्ध करने वाला, बड़ा ही होशियार होता है।

(२३) शुभ योग—शुभ कर्म करने वाला व शुभ कर्म प्रचारक, सुन्दर वचन वाला, शुभ लक्षण वाला व शुभ उपदेश देने वाला होता है।

(२४) शुक्ल योग—महावली, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, विवाद व संग्राम में विजय पाने वाला, ऐश्वर्यवान् होता है।

(२५) ब्रह्म—शान्त स्वभाव, विद्याभ्यास में सदा प्रीति, सदाचारी, सदा सभा में आदर पाने वाला होता है।

(२६) ऐन्द्रयोग—सरस्वती व लक्ष्मीपुत्र, सुन्दर शरीर, तेजस्वी, अपने वंश में प्रभावी व राजा समान सुख पाने वाला होता है।

(२७) वैधृति योग—कुटिल, चंचल, दुष्टों का मित्र, धीरजरहित, दुष्ट-विचार, भ्रमिष्ट स्वभाव, शास्त्र व धर्म भक्तिरहित होता है।

इन सत्ताईस योगों में व्यतिपात व वैधृति योग अशुभ व शेष २५ योग शुभ माने गये हैं। यह २५ योग में कतिपय के आरम्भ की कुछ घटी को छोड़ कर वे दोष से मुक्त समझे जाते हैं। इन योगों का फल इनके नाम से ही स्पष्ट व्यक्त होता है तथा इनका प्रभाव जन्म समय या कार्य आरंभ करते समय यदि मनुष्य पर पड़ता है तो कोई आश्चर्य नहीं। अतः फलित वर्तने समय इनका विचार ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है। जन्म जिस योग में होता है उसके अनुसार मनुष्य के स्वभाव में उसका पूर्ण या कम प्रमाण में प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

(२८) चन्द्राधि योग—चन्द्र के ६–७–८ प्रत्येक भाव में शुभ ग्रह स्थित हो तो सम्पत्तिमान, वैभवशाली, सुखी, दीर्घायु, निरोगी, निर्भय, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला होगा।

(२९) शकट योग—चन्द्र से ६ या ८ भाव में गुरु यदि केन्द्र के न हों तो मनुष्य निर्धन, श्रम से सदा संतप्त, क्लेश मिलेगा।

(३०) लग्नाधि योग—लग्न से ६–७–८ भाव में शुभ ग्रह हों व पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो और चतुर्थ भाव में पाप ग्रह न हो तो मनुष्य विद्वान्, बली और यशस्वी होगा।

(३१) गजकेसरी योग—चन्द्र, नीच व अस्त न हो ऐसे बुध, गुरु, शुक्र से दृष्ट हो तथा चन्द्र से केन्द्र में गुरु हो तो तेजस्वी, राजा का प्रिय, बुद्धिमान, गणवान् व धन-धान्यसम्पन्न होगा।

(३२) अमला योग—लग्न या चन्द्र से दशम भाव में शुभ ग्रह हो तो आजन्म धनी, राजा का पूज्य, दाता, परोपकारी, बंधु को प्रिय, गुणवान्, ऐश्वर्यवान्, निष्कलंक होगा।

(३३) वेशी योग—रवि के द्वादश व द्वितीय भाव में चन्द्रातिरिक्त शुभ ग्रह हो तो उत्तम फल, पाप ग्रह हो तो अशुभ फल।

(३४) कर्तरी योग—लग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो सुशील,

वक्ता, गुणी, सुन्दर मनुष्य होगा किन्तु पाप ग्रह हो तो पापी, कामी, परधन हरण कर जीवन निर्वाह करने वाला होगा।

(३५) पर्वत योग—जन्म कुण्डली के केन्द्र और ६-८ भाग में शुभ ग्रह हो व पाप ग्रह से दृष्ट न हो या लग्न या द्वादश के स्वामी परस्पर केन्द्र में हो व मित्र ग्रह से दृष्टि हों तो भाग्यवान्, विद्याव्यसनी, विनोदी, दाता, कामी, परस्त्रीरत, यशस्वी, तेजस्वी, गांव का नेता होगा।

(३६) काहलयोग—लग्नेश बलवान हो तथा चतुर्थेश व नवमेश एक दूसरे के केन्द्र में हों या चतुर्थेश उच्च या स्वगृही का होकर दशमेश से युक्त व दृष्ट हो तो पराक्रमी व साहसी होगा।

(३७) मालिका योग—लग्न से प्रत्येक भाव में सप्तम भाव तक या २—द्वितीय भाव से सात भाव तक प्रत्येक में राहु व केतु रहित ग्रह हो तो धनवान्, गुणवान्, श्रीमान्, धैर्यवान् व प्रख्यात पुरुष होगा। ३—तृतीय भाव से सात भाव तक प्रत्येक भाव में ग्रह हो तो शूर, धनी किन्तु रोगी। ४—चतुर्थ से राजा व दाता। ५—पंचम से कीर्तिमान्, धनवान्, यज्ञ करनेवाला। ६—षष्ट भाव से धनप्राप्ति। ७—सप्तमभाव से बहुत स्त्रियों का पति। ८—अष्टम भाव से स्त्रीलंपट, दीर्घायु, धनहीन। ९—नवम भाव से तपस्वी, यज्ञ-कर्ता, गुणवान्। १०—धर्मशील, आचारसम्पन्न, सज्जनों को पूज्य। ११—सर्व कार्य में निपुण, राजस्वी उपयोग वाला। १२—खर्चीला किन्तु सर्वत्र पूज्य होगा।

(३८) चामर योग—दो शुभ ग्रह १-७-९-१० किसी भी भाव में हो या लग्नेश उच्च का केन्द्र में हो, गुरु से दृष्ट हो तो विद्वान्, वक्ता, राजपूज्य पंडित। आयु ७० वर्ष का होगा।

(३९) शंख योग—लग्नेश बलवान होकर ५-६ भाव के स्वामी परस्पर केन्द्र में हो या नवमेश बलवान होकर लग्नेश व दशमेश चर राशि का हो तो मनुष्य भोगी, दयालु, शास्त्रज्ञ, स्त्रीपुत्रयुक्त, सदाचारी, स्टेट वाला होगा। आयु ८० वर्ष।

(४०) भेरी योग—सर्वग्रह १-२-७-१२ वें भाव में हो व दशमेश बलवान हो या गुरु से केन्द्र स्थान में लग्नेश तथा शुक्र हो व नवमेश बलवान हो तो दीर्घायु, निर्भय, निरोगी, शूर, पराक्रमी, निपुण, सुखी व स्टेट, स्त्री-पुत्रादि से युक्त होगा।

(४१) मृदंग योग—ग्रह उच्च का नवांशपति केन्द्र त्रिकोण में हो व स्वगृह या उच्च में हो तो मनुष्य रूपवान्, धनवान्, गुणवान्, ऐश्वर्यवान, यशप्रद होगा।

(४२) श्रीनाथ योग—सप्तमेश दशम भाव में हो व दशमेश व नवमेश उच्च का होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो राजा समान सुखी और कल्याणकारक होगा।

(४३) शारदा योग—दशमेश पंचम भाव में, बुध केन्द्र में, रवि सिंह राशि में, वा बुध से गुरु ग्यारहवें भाव में हो, बुध से त्रिकोण में मंगल हो, चन्द्रमा से त्रिकोण में गुरु हो तो मनुष्य धर्मात्मा, विद्वान्, गुरु, देव, ब्राह्मण का भक्त होगा।

(४४) मत्स्य योग—यदि ४-८ भाव में पापग्रह, लग्न से नवम में पाप ग्रह हो और पंचम भाव में शुभ या पापग्रह हो तो मनुष्य दयालु, गुणवान, रूपवान, बलवान व कीर्तिमान्, ज्योतिषी होगा।

(४५) कूर्म योग—५-६-७ भाव में उच्च और मित्र का शुभ ग्रह हो तो मनुष्य धर्मशील, सर्वगुणी, सुखी व ऐश्वर्ययुक्त हो राजा-समान सुखी होगा।

(४६) लक्ष्मी योग—लग्नेश बलवान् हो व नवमेश परमोच्च केन्द्र या मूल त्रिकोण में हो मनुष्य रूपवान्, विद्वान्, गुणवान्, प्रसिद्ध व स्त्री-पुरुष युक्त सुखी होगा।

(४७) कुसुम योग—लग्न स्थिर राशि का शुक्र केन्द्र, शनि दशम में और चन्द्र ५ भाव में हो तो मनुष्य दाता, भोगी, श्रेष्ठ कीर्तिमान्, बड़े कुल का व पराक्रमी होगा।

(४८) कलानिधि योग—२ या ५ भाव में गुरु, बुध और शुक्र से युक्त हो तो मनुष्य गुणी, कामी, रोग व शत्रु व अरिष्टरहित होगा।

(४९) अंशावतार योग—लग्न चर राशि में हो व गुरु, शुक्र केन्द्र में और शनि उच्च का केन्द्र में हो तो मनुष्य वेदान्ती, शास्त्रज्ञ, जितात्मा, कामी व तीर्थयात्रा करने वाला होगा।

(५०) हरि हर ब्रह्मयोग—लग्नेश से सूर्य मंगल शुक्र ४-१०-११ भाव में हो तो ब्रह्मयोग या सप्तमेश से ४-८-९ भाव में चन्द्र बुध गुरु हो तो हर योग अथवा द्वितीयेश से २-८-१२ में शुभ ग्रह हो तो हरियोग होता है। इसमें जन्मा मनुष्य विद्यापारंगत, मधुरभाषी, कामी, सत्यभाषी व दूसरों पर उपकार करने वाला होगा।

करण फल

करण ११ हैं और ये तिथि के अर्धभाग कहलाते हैं। मनुष्य के आयुष्य में ग्रहों के अनुसार इनका प्रभाव पड़कर मनुष्य को सुख-दुःख मिलना स्वाभाविक है। अतः इनके फलित का ज्ञान होना आवश्यक समझ कर प्रत्येक करण का फल नीचे लिखने का प्रयत्न किया है व पाठकों को इससे लाभ होवे यही हमारी हार्दिक इच्छा है। जैसे :—

(१) बवकरण—इस करण में जन्म लेने वाला मनुष्य दयालु, सुशील, पण्डित, बलवान, कामी व बड़ा भाग्यवाला होता है।

(२) बालवकरण—बड़ा बलवान, शूरवीर, हास्य सहित विलास करने वाला, प्रेम से दान देने वाला, निर्मल मति और कला में तेज होता है।

(३) कौलवकरण—गम्भीर बुद्धि व मधुर वाणी वाला, मित्रों के सुख से युक्त व अनेक जनों को मान्य व कुल में श्रेष्ठ होता है।

(४) तैतिलकरण—चञ्चल दृष्टि, निर्मल बुद्धि, सुशील स्वभाव वाला, वातचीत में निपुण, कोमल व सुन्दर शरीर वाला व कला का ज्ञानी होता है।

(५) गरकरण—पराये उपकार का आदर करने वाला, सूक्ष्मविचारी, शूरवीर, शत्रुओं को जीतने वाला, उदारचित्त, सुन्दर शरीर।

(६) वणिजकरण—कलाओं में निपुण, सदा हास्य मुख व विलासी, पण्डित, सबसे मान पाने वाला और व्यापार से धन प्राप्ति करने वाला होता है।

(७) विष्टिभद्रा—सुन्दर वदन, चपल स्वभाव, दुष्टमति व निद्रावाला, अपने बुद्धि से शत्रु का नाश करने वाला होता है।

(८) शकुनिकरण—उत्तम बुद्धि, संपूर्ण गुणों से युक्त, सावधान चित्त, सबों का मित्र, सर्वसौभाग्य युक्त, मंत्रविद्या में निपुण होता है।

(९) चतुष्पदकरण—दुर्बल शरीर, पशुवल व धनवाला होता है।

(१०) नागकरण—दुष्ट स्वभाव, उल्टा वर्तन, दुष्टात्मा, कुल का नाशक, कुलद्रोही होता है।

(११) किंस्तुघ्नकरण—धर्म व अधर्म समान समझने वाला, शरीर व काम में निर्बल, दुनिया में मित्र-शत्रु कायम न रहने वाला होता है।

गण फल

गण तीन प्रकार के होते हैं। अर्थात्—१—देवगण, २—मनुष्यगण, ३—राक्षसगण। इनका फल नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—

(१) देवगण में जन्म पाने वाला मनुष्य—मधुरभाषी, सरलमति, गुणग्राहक, बुद्धिमान, धनवान व विद्वज्जनों को प्रिय होता है।

(२) मनुष्यगण में जन्म पाने वाला मनुष्य—देव, ब्राह्मण का सत्कार करने वाला, बलवान, दयालु, अभिमानी, धनी, सुन्दर कांति, कला में निपुण व अनेकों को सुख देने वाला होता है।

(३) राक्षसगण में जन्म पाने वाला मनुष्य—साहसी, कठोरचित्त, क्रोधी, दुष्टबुद्धि, सबसे विरोध करने वाला होता है।

गण्डान्त फल

गण्डान्त तीन प्रकार के होते हैं १—नक्षत्र गण्डान्त, २—तिथि गण्डान्त, ३—लग्न गण्डान्त। यदि तीनों गण्डान्त हो तो वह सबका नाश करने वाला होगा। नक्षत्र गण्डांत माता पिता को, तिथि गण्डान्त ज्येष्ठ बन्धु को और लग्न गण्डान्त स्वयं को अशुभ फलदायी समझे जाते हैं।

जन्म राशि पर गोचर ग्रहों का फल

ग्रह	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान	चतुर्थ स्थान	पंचम स्थान	षष्ट स्थान	सप्तम स्थान	अष्टम स्थान	नवम स्थान	दशम स्थान	एकादश स्थान	द्वादश स्थान
रवि	स्थाननाश	भय	ऐश्वर्य	मानहानि	दीनता	शत्रुहानि	लाभहानि	पीड़ा	क्षय	कर्मलाभ	धनलाभ	महाविपत्ति
चन्द्र	अर्थलाभ	वित्तनाश	द्रव्यलाभ	नेत्रपीड़ा	कार्यहानि	वित्तलाभ	स्त्रीलाभ	मृत्युपीड़ा	राजभय	सुखलाभ	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभय	धननाश	अर्थलाभ	शत्रुपीड़ा	प्राणनाश	वित्तलाभ	शोक	अस्त्रघात	कार्यहानि	शुभ	भूमिलाभ	अर्थनाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	वधशत्रु	अर्थलाभ	दुख	स्थानलाभ	शरीरपीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	शुभ	अर्थलाभ	वित्तनाश
गुरु	भय	अर्थलाभ	अशुभ	अर्थनाश	शुभ	अशुभ	राजपूजा	धननाश	धनवृद्धि	प्रणभंग	धनलाभ	मानसिक पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	अर्थलाभ	शुभ	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुवृद्धि	शोक	अर्थलाभ	वस्त्रलाभ	अशुभ	धनलाभ	धनागम
शनि	वित्तनाश	चिन्ता	शत्रुनाश	शत्रुवृद्धि	पुत्रनौकर नाश	अर्थलाभ	अनिष्ट	शरीरपीड़ा	धनक्षय	मानसिक उद्वेग	वित्तलाभ	अनर्थ
राहु	अर्थक्षय	रोग	शुभफल	शत्रुभय	कार्यहानि	शुभ	स्त्रीकष्ट	मृत्युसम पीड़ा	प्रवास	वैर	कार्यसिद्धि	अग्निभय
केतु	मानसिक पीड़ा	नेत्रपीड़ा	सन्मान	सुखनाश	पुत्रकष्ट	भोग	स्त्रीकष्ट	,, ,, ,,	अशुभ	विरोध	सुखलाभ	धननाश

राशि विचार

आकाश के बारह समान भाग को राशि और सत्ताईस समान भाग को नक्षत्र कहते हैं। भूमण्डल के ३६० अंश में से प्रत्येक राशि के ३० अंश होवे हैं। इस तरह ३६० अंश बारह राशि में विभाजित किये गये हैं। चन्द्र को एक राशि में भ्रमण करने के लिये सवा दो दिन का समय लगता है। यह नीचे लिखे हुये कोष्टक से स्पष्ट सिद्ध होता है—

नक्षत्र		नक्षत्र		नक्षत्र		चंद्र
अश्विनी	पूर्ण	भरणी	पूर्ण	कृत्तिका	१।४	मेष
कृत्तिका	३।४	रोहिणी	पूर्ण	मृग	१।२	वृषभ
मृग०	१।२	आर्द्रा	पूर्ण	पुनर्वसु	३।४	मिथुन
पुनर्वसु	१।४	पुष्य	पूर्ण	आश्लेषा	पूर्ण	कर्क
मघा	पूर्ण	पूर्वाफा०	पूर्ण	उत्तराफा०	१।४	सिंह
उत्तरा०	३।४	हस्त	पूर्ण	चित्रा	१।२	कन्या
चित्रा	१।२	स्वाती	पूर्ण	विशाखा	३।४	तुला
विशाखा	१।४	अनुराधा	पूर्ण	ज्येष्ठा	पूर्ण	वृश्चिक
मूल	पूर्ण	पूर्वाषाढ़ा	पूर्ण	उत्तराषाड़ा	१।४	धन
उत्तराषाढ़ा	३।४	श्रवण	पूर्ण	धनिष्ठा	१।२	मकर
धनिष्ठा	१।२	शततारका	पूर्ण	पूर्वा भा० प०	३।४	कुंभ
पूर्वाभाद्र०	१।४	उ० भाद्रपद	पूर्ण	रेवती	पूर्ण	मीन

राशि बारह हैं और नक्षत्र सत्ताईस हैं अर्थात् २७ नक्षत्रों का पूर्ण भ्रमण करने के लिए चन्द्र को प्रति नक्षत्र का भ्रमण पूर्ण करने के लिये सवा दो दिन का समय लगता है यह स्पष्ट है। जन्म समय चन्द्र जिस राशि में स्थित हो वही उस मनुष्य की जन्मराशि कहलाती है। प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग या चार चरण कहते हैं। चरण को पाद की संज्ञा दी गयी है। अतः पाव नक्षत्र को एक पाद, अर्ध नक्षत्र को द्विपाद व तीन चतुर्थांश को त्रिपाद कहने की प्रथा है। प्रत्येक कार्य आरम्भ करने के पूर्व चन्द्र बल होना अत्यन्त आवश्यक समझा गया है। अतः राशि की दिशा आदि का सर्वप्रथम ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है यह पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये।

मेष सुवृश्चिक भौमपति, वृष तुला शुक्रहि जानु।
मिथुनरु कन्या बुधहि गति, धनु मीन गुरु मानु॥

मेष
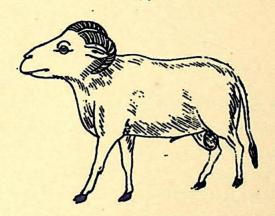
पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः ।
पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्पसंगप्रजो रूक्षनृपः समोऽजः ॥ १ ॥

वृष
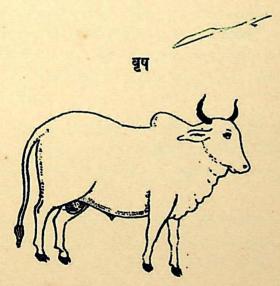
वृषः स्थिरः स्त्रीक्षितिशीतरूक्षो याम्येट् सुभूर्वायुनिशाचतुष्पात् ।
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभोऽपि वैश्यः ॥ २ ॥

मकर कुम्भ स्वामी शनि, सूर्य सिंह को होय।
कन्या राहू स्वगृही केतू मीन गनौय॥

इस प्रकार बारह राशियों के नाम निम्नलिखित हैं :—

१–मेष	२–वृषभ	३–मिथुन	४–कर्क
५–सिंह	६–कन्या	७–तुला	८–वृश्चिक
९–धन	१०–मकर	११–कुम्भ	१२–मीन

जन्म कुण्डली में इनका बोध केवल अंकों से किया जाता है। प्रत्येक राशि के रूप, रंग, गुण, धर्मस्वभाव, आदि भिन्न हैं जिसका वर्णन नीचे किया है। जैसे :—

(१) मेष—उष्ण प्रकृति, ज्वर, पित्त व रक्तविकार, तामसी, निग्रही, अल्पकेश, कृश, मध्यम ऊंचा शरीर, उग्र दृष्टि, विद्या व बुद्धिकर्मा, बंधु, पिता व जन्मभूमि से दूर रहने वाला, चंचल, कामी, एकान्तप्रिय, सेवाचतुर, अल्प संतति, दुर्बल घुटने, गुप्त रीति से काम करने वाला, सिर या मुंह पर फोड़े के दाग, देवता व उपासनाप्रिय, कमी भोजन व शाकाहारी-प्रिय।

(२) वृषभ—गोरा, कांतिवान्, चमकदार चेहरा, मोहक, मज़बूत, मध्यम ऊंचा शरीर, शूर, सुखी, शत्रु को पराजित करने वाला, माता-पिता को सुख देने वाला व पितृधन या स्टेट का उपभोग लेने वाला, स्त्रीप्रिय, विलासी, वस्तुओं का शौकीन व खर्च करने वाला, अधिक कन्या संतति वाला, चंचल, खेती व पशुओं का शौकीन, क्षमाशील, मध्य व अन्त आयु के समय सुखी रहने वाला, खेती बाग-बगीचा फल-फूल का धन्धाप्रिय।

(३) मिथुन—शास्त्री, पण्डित, वक्ता, कवि, ग्रन्थकार, प्रियभाषी, प्रेमालु स्वभाव, कलासम्पन्न, सत्यवादी, रूपवान्, स्त्रीअभिलाषी, शरीर पतला, वकील, जासूस, संवाददाता, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, पुत्र संख्या अधिक, बुद्धि व तर्कवान्, अतिभोजनप्रिय।

(४) कर्क—गोल व मोहक चेहरा, मध्यम ऊंचा व पतला शरीर, स्त्रीकामी, चैनी, नाटकी, बेफिकर, प्रेमवश में पड़कर खर्च करने वाला, देव-ब्राह्मणभक्त, द्विभार्या, सम्पन्न, गुह्यरोगी, डरपोक, चंचल बुद्धि, जलाशय के सन्निद्ध रहने वाला, मादक पदार्थ-व्यापारप्रिय।

(५) सिंह—साधारण विद्या, धैर्यवान्, चितातुर, उदार, अभिमानी, मातृभक्त, खेती करने वाला, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, प्रख्यात, तालीमबाज, काला रंग, जोर की आवाज, शीघ्रक्रोधी, चिन्तातुर, साहसी, दन्तरोगी, शृंगार से अलिप्त रहने वाला, साधु-सन्तप्रिय।

(६) कन्या—मध्यम ऊँचा शरीर, गजगति से चलने वाला, हाथ-पांव हिलाते चलने वाला, सुकुमार, कलानिपुण, रतिसुखप्रिय, प्रियभाषी, निर्व्यसनी, पवित्र-वर्तन-प्रिय, हँसते हुये बोलने वाला, परम्पराप्रिय, दयालु, देशाटन करने वाला, सदा आनन्दी, शास्त्र व्यासंगी, साधारण विद्वान, यन्त्रालय से सम्वन्ध रखने वाला, खनिज व कामप्रिय, उत्तम पदार्थप्रिय, विद्वज्जन संगतिप्रिय।

(७) तुला—ईश्वरभक्त, सत्वगुणी, देव-ब्राह्मण, साधु-सन्त का पूजन करने वाला, स्वधर्माचरणी, पुण्यकर्मी, ऊँचा शरीर, साधारण गोरे वर्ण, ऊंची नाक, प्रवासी, हँसमुख, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, गहरे दिल वाला, अल्प संतति, किन्तु पुत्र संतति, देन-लेन कार्य में कुशल, तंटे मिटाने वाला, न्यायकर्मप्रिय।

(८) वृश्चिक—साधारण ऊंचा शरीर, मजबूत बांधा, शूर, गंभीर, त्यागशील, साहसी, कुटुम्वसम्पन्न, कम ऊंचाई का, वाल्यावस्था में रोगी, मतलवी, गुरु व मित्र से द्रोह, वैद्यकशास्त्र की रुचि, स्त्रियों का शौकीन, खदान में काम करने वाला, कन्या संतति अधिक, अस्वस्थ मन, असन्तुष्ट हृदय, लोगों के जाल में फँसने वाला, गुप्त रीति से वदला लेने वाला।

(९) धन—निरोगी व मजवूत शरीर, साधारण स्थूल देही, ऊंचा माथा, लंवी नाक, साधारण गोरा, मोहक, गम्भीर दिल वाला, उदार, तेजस्वी, पिता का धन प्राप्त करने वाला, शिल्पज्ञ, वंधुद्वेषी, न्यायप्रिय, जवरदस्ती से काबू में न आने वाला, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, अधिक पुत्र संख्या किन्तु मध्यम सन्तति, कुल में गौरव प्राप्त करने वाला।

(१०) मकर—स्वस्त्री व पुत्र पर अधिक प्रेम करने वाला, प्रेमालु अन्तःकरण, धार्मिक वृत्ति, शरीर से कृश, चिडखोर, भोजनप्रिय, स्वार्थी, जमाखर्च लिखने का प्रेमी, वात प्रकृति शरीर, दूर का प्रवासप्रिय, धर्मप्रिय, पहाड़-जंगल घूमने का शौकीन, विद्या व बुद्धि कम, चंचल वृत्ति, अधिक संख्या में सन्तति परन्तु कन्या संतति अधिक।

(११) कुम्भ—ऊंचा शरीर व अवयव वड़े, सुन्दर चेहरा, विद्या व्यासंग, कावेवाज, वुद्धिमान, परस्त्री वन्धनप्रिय, पापरत, सुगंधी पदार्थों का प्रेमी, द्यूतप्रिय, कठोर-दिल, भाई-वहिनों से अलग रहने वाला, हमेशा संपत्ति कम व अधिक का अनुभव मिलाने वाला, क्षुद्रकारण से नाराज होने वाला, संतति कम, कभी-कभी विचाररहित हो काम करने वाला।

(१२) मीन—परधनप्रिय, स्त्री व वस्त्र का शौकीन, वर्ण साधारणतः काला, विद्या व वुद्धि साधारण, ऊंचा मस्तक व नाक, सुन्दर शरीर, स्त्री के वश में रहने वाला, पशुप्रिय, संतति का शौकीन।

ऊपर लिखे हुये द्वादश राशि के लक्षण जन्म कुण्डली के प्रथम स्थान में (लग्न) जो राशि स्थित हो उसके अनुसार व ग्रहों की स्थिति या दृष्टि के अनुसार कम या

मिथुन
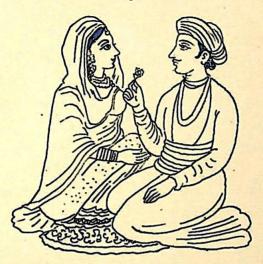
प्रत्यक्समीरः शुकभा द्विपान्ना द्वंद्वं द्विमूर्तिर्विषमोदयोष्णः ।
मध्यप्रजासंगवनस्थशूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्धदिनेट् तथोग्रः ॥ ३ ॥

कर्क

बहुप्रजासंगपदः कुलीरश्चरोऽम्बना पाटलहीनशब्दः ।
शुभः कफी स्निग्धजलांबुचारी समोदयो विप्रनिशोत्तरेशः ॥ ४ ॥

अधिक प्रमाण से मिलना सम्भव है। परन्तु लग्न व चन्द्र की राशि भिन्न हो तो मिश्ररूप से फल मिलेगा। मान लिया जाय कि लग्न में कर्कराशि (४) का अंक स्थित है इसका लक्षण मनुष्य को अधिक कामवासनाप्रेमी वनाने का है किन्तु जन्म कुण्डली के प्रथम स्थान (लग्न) में यदि गुरु ग्रह स्थित हो तो परस्त्री का लाभ मिलना अशक्य है। साथ ही जन्मकुण्डली का फलित वर्तते समय द्वादश राशि के रंग-रूप-गुण-धर्म, स्वभाव आदि का पूर्ण ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है और यह नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—

१—राशि के रंग—मेष—लाल, वृषभ—गोरा, मिथुन—फीका हरा, कर्क—गोरा व कुछ पीला, सिंह—साधारण श्वेत, कन्या—नानावर्ण, तुला—श्याम, वृश्चिक—स्वर्ण वर्ण, धन—फीका सफेद, मकर—थोड़ा काला सफेद, कुम्भ—मुंगुस रंग का, मीन—निस्तेज सफेद।

२—राशि के स्वामी—मेष—मंगल, वृषभ—शुक्र, मिथुन—बुध, कर्क—चन्द्र, सिंह—सूर्य, कन्या—बुध, तुला—शुक्र, वृश्चिक—मंगल, धन—गुरु, मकर—शनि, कुम्भ—शनि और मीन—गुरु।

३—राशि के शुभाशुभ—मेष—अशुभ, वृषभ—शुभ, मिथुन—शुभ, कर्क—शुभ, सिंह—अशुभ, कन्या—शुभ, तुला—शुभ, वृश्चिक—अशुभ, धन—शुभ, मकर व कुम्भ—अशुभ और मीन—शुभ।

४—राशि के सम-विषम—१-३-५-७-९-११ विषम और २-४-६-८-१०-१२ यह सम राशि कहलाते हैं।

५—राशि के स्त्री पुरुष—१-३-५-७-९-११ पुरुष राशि और २-४-६-८-१०-१२ यह स्त्री राशि कहलाते हैं। पुरुष राशि को क्रूर और स्त्री राशि को सौम्य राशि कहते हैं।

६—राशि के स्वभाव—१-४-७-१० चर राशि, २-५-८-११ स्थिर राशि, ३-६-९-१२ द्विस्वभाव राशि कहलाते हैं।

७—राशि के लक्षण—१-५-८-१० चंचल राशि, २-४-७-११ शान्त राशि और ३-६-९-१२ यह चंचल व शान्त राशि कहलाते हैं।

८—राशि की जाति—२-८-१२ ब्राह्मण जाति, १-५-९ क्षत्रिय, ३-७-११ वैश्य और ४-६-१० शूद्र राशि कहलाते हैं।

९—राशि की दिशा—१-५-९ पूर्व दिशा, २-६-१० दक्षिण, ३-७-११ पश्चिम व ४-८-१२ राशि उत्तर दिशा के राशि कहलाते हैं।

१०—राशि के द्रव्य—मेष—वस्त्र, वृषभ—चावल, मिथुन—जंगल के फल, कर्क—केला, सिंह—गेहूँ, कन्या—बांस, तुला—मूंग, तिल आदि पतले धान्य, वृश्चिक—साटा व साटे के सब पदार्थ, धन—घोड़े व शस्त्र, मकर—सोना व इतर धातु, कुम्भ—कमलफूल व जलाशय के अन्य फूल और मीन—पानी में उपजने वाले पदार्थ।

११—राशि के निवासस्थान—मेष—धातु व रत्न के खदान, वृषभ–पशु के स्थान, मिथुन–रति विलास व द्यूत के स्थान, कर्क—तालाब व कुंआ, सिंह—पर्वत गुहा व अरण्य, कन्या—स्त्रियों के क्रीड़ागृह, तुला—बिक्री की जगह, बाजार, वृश्चिक—बिवारी प्राणी रहने के जगह, धन—अश्व, गज व रथशाला, मकर—नदी व पानी के जगह, कुम्भ–पानी से भरे हुये बर्तनों के जगह और मीन–सरोवर, महानदी व समुद्र के स्थान।

१२—राशि के तत्व—१-५-९ अग्नि राशि, २-६-१० भूमि राशि, ३-७-११ वायु राशि और ४-८-१२ जलराशि कहलाते हैं।

१३—राशि के देह स्वरूप—१-२-११ ह्लस्वदेही, ३-४-९-१०-१२ मध्यमदेही और ५-६-७-८ दीर्घदेही राशि कहलाते हैं।

१४—राशि के बलाबल समय—१-२-४-९-१० पृष्ठोदयी, ३-५-६-७-८ व ११ शीर्षोदयी और मीन उभयोदयी राशि कहलाते हैं।

१५—राशि के दिवारात्रि बल—१-२-३-४-९-१० रात्रिबली, ५-६-७-८-११ दिवाबली और मीन उभय काल बलवान होते हैं।

१६—अल्प व बहुप्रसव राशि १-३-५-६-९ अल्प प्रसव अथवा वन्ध्या राशि, २-४-८-१२ बहुप्रसव राशि, और ७-१०-११ मध्यम प्रसव राशि कहलाते हैं।

१७—घातकी व अल्पायुषी राशि—८-१० घातकी राशि संतति को व्यंग, ३-६-९-१२ द्विशरीर सन्तान राशि, ४-८-१२ मूकराशि और मकर १० कुरूप व अल्पायुषी संततिदायक है।

१८—राशि के गुणधर्म—३-४-९-१२ सत्वगुणी, १-२-५-७ रजोगुणी, ६-८-१०-११ तमोगुणी राशि कहलाते हैं।

१९—राशि की प्रवृत्ति—१-२-३-४ ऐहिक व शारीरिक सुख की प्रवृत्ति, ५-६-७-८ आध्यात्मिक प्रवृत्ति राशि और ९-१०-११-१२ धार्मिक विचार व नियम पालन करने वाले राशि कहलाते हैं।

२०—राशि के शरीर अवयव में स्थान—मेष—शिर, वृषभ—मुख, मिथुन–बाहु, कर्क—हृदय, सिंह—पेट, कन्या—कमर, तुला—बस्ती, वृश्चिक–गुह्यभाग, धनु—ऊरु, मकर—जानु, कुम्भ—जंघा और मीन—पांव। राशि के स्वरूप–मेष–मेढ़ा, वृषभ—बैल, मिथुन—पुरुष के हाथ में गदा व स्त्री के हाथ में वीणा ऐसे हसन्त-मुख पति-पत्नी, कर्क—केकड़ा सिंह–सिंह, कन्या–एक हाथ में धान्य व दूसरे में अग्नि लेकर नांव पर बैठी हुई स्त्री, तुला—हाथ में तराजू लिया हुआ पुरुष, वृश्चिक—बिच्छू, धन—कमर के ऊपर का भाग पुरुष के हाथ में लिया हुआ धनुष व नीचे का भाग मुखरहित घोड़े के शरीर का ऐसा प्राणी, मकर–हरिण के मस्तक समान

सिंह

पुमान्स्थिरोम्निर्दिनपीतरूक्षः पित्तोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात् ।
समोदयो दीर्घंरवोल्पसंगप्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥ ५ ॥

कन्या

पांडुर्द्विपात् स्त्रीद्वितनुर्यमाशा निशा मरुच्छीतसमोदयक्ष्मा ।
कन्यार्धंऽशब्दा शुभभूमिवैश्या रूक्षाऽल्पसंगप्रसवा शुभा च ॥ ६ ॥

लिए हुए मगर, कुम्भ—हाथ में रिक्त घड़ा लिया पुरुष व मीन दो मछलियाँ जिनका एक दूसरे का मुख पूंछ के तरफ हो।

अनेक राष्ट्रों की राशि

जगत के समंजस व ज्ञानीजन ज्योतिषशास्त्र के आधार पर अपने जन्म समय के जन्मराशि का ज्ञान प्राप्त करते हैं उसी तरह जगत के अनेक धुरन्धर विद्वान् ज्योतिषज्ञ, आकास्थ ग्रह संशोधक व तत्ववेत्ताओं ने अपने वर्षों के घोर प्रयत्न अनुभव के पश्चात् जगत के अनेक देशों के जन्मराशी प्रत्येक देश की परिस्थिति के अनुसार शोध कर निश्चित की है। उसे सुज्ञ पाठकों के लाभार्थ यहां लिखना हम आवश्यक समझते हैं। जैसे :—

१—इङ्गलैण्ड, जापान, सिरिया, पॅलेस्टाईन, जर्मनी, डेनमार्क। ... मेष राशि।

२—ईराक, आयरलैण्ड, पोलैण्ड, एशियामाईनर, जार्जिया, काकेशस, श्वेत रसिया, ग्रशिअन, आर्चपेलोगो। ... ... वृषभ राशि

३—युनाईटेड स्टेट आफ अमेरिका, बेल्जियम, इजिप्ट्स, इङ्गलैण्ड का पश्चिमी भाग, ट्रिपोली आर्मिनिया, सार्डिनिया, लाबंडी, फ्लॅन्डर्स, वेल्स। ... मिथुन राशि।

४—स्काटलैण्ड, हालैण्ड, न्यूजीलैण्ड, उत्तर व पश्चिम अफ्रिका, मारीशस वेट, राग्वे। ... ... कर्क राशि।

५—फ्रान्स, इटली, बोहेमियां, सिसली, खाल्डिया से बसरा प्रान्त तक, उत्तर रोमानिया, आल्प्स पर्वत, सीडोन, टायर। ... ... सिंह राशि।

६—यूरोपीय तुर्कस्थान, स्विटजरलैण्ड, वेस्टइण्डीज असीरिया, मेसोपोटेमियां, क्रीट क्रोशिया, सालेशिया, बाबिलोनिया, मोरिया, तेसली, ग्रीस, व्हजीनिया व ब्राजिल। ... ... कन्या राशि।

७—आस्ट्रिया, इण्डोचायना, चीन, तिब्बत, कास्पियन समुद्र का किनारा, उत्तर इजिप्ट, सव्हाय, उत्तर चीन, ब्रह्मदेश, अरजेण्टाईना। ... तुला राशि।

८—अल्जीरिया, बार्बरी, बव्हेरिया, कॅपेडोशिया, जुडीया, मोरक्को, जुटलैण्ड, नार्वे, उत्तर सीरिया, ट्रान्सवाल, क्वीन्सलैण्ड, केटालोनिया ... वृश्चिक राशि।

९—अरबस्थान, आस्ट्रेलिया, फेलिक्स, केपफिनिस्टरा डालमेशिया, हंगरी, इस्त्रिया, मोरेव्हिया, श्वैलेव्होनिया, स्पेन, टस्कनी, मेडागास्कर। ... धन राशि।

१०—हिन्दुस्थान, खोरासन, सिराकन, अफगानिस्तान, ग्रेस मसिडोनिया, मोरिया, इलिरिया, आलबेनिया, वोस्त्रियां, बलगेरिया, ग्रीस, हेस, सक्फनी, स्टिरिया, रोमन्डिओला, मक्लेनवर्ग, मेक्सिको, लिथुआनिया, आर्कनीवेट। ... मकर राशि।

११—खण्डकाल, अरबस्तान, प्रशिया, रशिया, लिथुआनिया, स्वीडन, सरकेशिया, तार्तरी, वेस्टकालिया, वालाबिया, पीडमोट, अबिसीनिया। ... कुम्भ राशि।

१२—पुर्तगाल, कलेब्रिया, गोलिशिया, नार्मपडी, न्युबिया, सहारा। मीन राशि।

हिन्दुस्थान के कुछ शहरों की राशि

१—मद्रास, मैसूर, बड़ौदा	...	...	मेष राशि
दिल्ली ...	...	...	वृषभ राशि
कलकत्ता, दक्षिण हैदराबाद	...	...	कर्क राशि
पूना, नागपूर ...	...	...	कन्या राशि
२—मुम्बई, सूरत, जंजिरा	...	...	वृश्चिक राशि
महाराष्ट्र, कोल्हापुर, काठियावाड़	...	...	धन राशि
बंगाल, इलाहाबाद	...	...	मकर राशि
पंजाब, पानीपत, काशी ...	...	...	मीन राशि

मनुष्य के जन्म कुण्डली के भावों से जिस तरह अनेक बातों का विचार करने के सम्बन्ध में हम पहले लिख चुके हैं उसी तरह देश व शहर के राशि कुण्डली से फलित वर्तना चाहिये यह स्पष्ट सिद्ध होता है। किन्तु प्रत्येक ग्रह की शुभाशुभ स्थिति, दृष्टि व युति के अनुसार किन बातों का विचार किया जाता है यह नीचे लिखा है :—

१—रवि से—राजा, सन्तानधारी लोग, न्यायाधीश का विचार।

२—चन्द्र से—प्रजा जनसमाज, स्त्री का विचार।

३—मंगल से—सेनापति, फौज, डाक्टर, शस्त्र का भण्डार, अग्निप्रलय, असन्तोष आदि का विचार।

४—बुध से—परराष्ट्र, वकील, दूत, ग्रन्थकर्ता, ज्ञानभण्डार का विचार।

५—गुरु से—न्यायाधीश, वकील, धर्म पेढी वाले, धनउपार्जन आदि का विचार।

६—शुक्र से—कलाकौशल्य, विवाहोत्सव, नये संतति का विचार।

७—शनि से—खेती करने वाले, खदान, मजदूर वर्ग का विचार एवं पुराने स्थल का विचार।

८—हर्शल—शास्त्रीय प्रगति, रेलवे, ज्योतिष विद्या का विचार एवं विमान विद्या, भौतिक क्षोभ का विचार।

९—नेपच्यून—लफंगाई, गुप्तकष्ट, दिवालखोरी का विचार।

ऊपर दिये हुए बातों का राष्ट्रीय विचार अत्यन्त सावधानीपूर्वक करने से ही फलित मिलना सम्भव है यह सदा ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है।

तुला
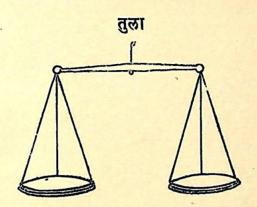
पुमांश्चरश्चित्रसमोदयोष्णः प्रत्यङ् मरुत् स्निग्धरवो न वन्यः ।
स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्य्यो द्विपदः समानः ॥ ७ ॥

वृश्चिक
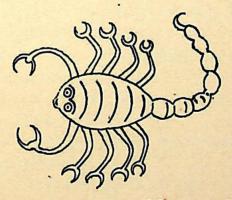
स्थिरः सितः स्त्रीजलमुत्तरेशो निशा रवोनो बहुपात् कफी च ।
समोदयो वारिचरोऽतिसंगप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥ ८ ॥

तारक मारक राशि

१—मेष-धन-सिंह—यह परस्पर सहायक राशि है। इन राशियों में यदि ग्रह वलवान हो तो मनुष्य सत्ताधिकारी होता है। ये राशि उत्कर्षदायक, महत्वदर्शक, उच्च व नीच स्थिति निर्माण कर सकते हैं।

२—वृषभ-कन्या-मकर—ये सामान्य राशि है। इस राशि के मनुष्य स्वार्थी वृत्ति के होते हैं। इस राशि के मनुष्य से ऊंचे दरजे के सार्वजनिक कार्य होना बहुधा अशक्य है जब तक कि उनके साथ वलवान ग्रह स्थित न हो।

३—मिथुन-तुला-कुम्भ—यह राशि प्रगति के दृष्टि से सामान्यतः स्थिर परन्तु वाद-विवाद व चिकित्सा करने के लिये बौद्धिक व उत्तम राशि है।

४—कर्क-वृश्चिक-मीन—इस राशि के मनुष्य सार्वजनिक आन्दोलनों में भाग लेने वाले, समाज के नेता, मुत्सद्दी, सलाहकार, चतुर लोगों की अनुकूलता प्राप्त करने वाले, स्वतन्त्र वृत्ति वाले, मार्मिक ग्रन्थकर्ता व मार्गदर्शक होते है।

ऊपर लिखे हुये फलित, यदि इन राशियों में चन्द्र स्थित हो और अशुभ ग्रहों की युति व दृष्टि न हो तभी मिलना संभव है। अन्यथा पूर्ण फल मिलना सम्भव नहीं।

द्वादश राशि के घातक तिथि वार आदि

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य के लिये जो तिथि, वार, नक्षत्र, चन्द्र, प्रहर, मास घातक हैं उनका वर्णन नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—

मेष राशि—१-६-११ तिथि, रविवार, मघा नक्षत्र, पहिला प्रहर, पहला चन्द्र, कार्तिक मास, विष्कुम्भ योग व ववकरण घातक है।

वृषभ राशि—५-१०-१५ तिथि, हस्त नक्षत्र, शूल योग, शकुनीकरण, चौथा प्रहर, पाचवां चन्द्र, मार्गशीर्ष मास।

मिथुन राशि—२-७-१२ तिथि, चन्द्रवार, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग, कौलवकरण तीसरा प्रहर, नववां चन्द्र व पौष मास।

कर्क राशि—२-७-१२ तिथि, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, धृति योग, नागकरण, पहिला प्रहर, दूसरा चन्द्र व माघ मास।

सिंहराशि—३-८-१३ तिथि, शनिवार, मूल नक्षत्र, धृति योग, ववकरण, पहला प्रहर, छठवां चन्द्र, फाल्गुन मास।

कन्या राशि—५-१०-१५ तिथि, शनिवार, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग कौलवकरण, पहला प्रहर, दसवां चन्द्र, चैत्र मास।

तुला राशि—४-९-१४ तिथि, गुरुवार, शततारका नक्षत्र, शुक्ल योग तैतिलकरण, चौथा प्रहर, तीसरा चन्द्र, वैशाख मास।

वृश्चिक राशि—१-६-११ तिथि, शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, ब्रह्म योग, गर-करण, पहिला प्रहर, सातवां चन्द्र, ज्येष्ठ मास।

धनराशि—३-८-१३ तिथि, शुक्रवार, भरणी नक्षत्र, वैधृतियोग, तैतिलकरण, पहिला प्रहर, चौथा चन्द्र, आषाढ़ मास।

मकर राशि—४-९-१४ तिथि, मंगलवार, रोहिणी नक्षत्र, गण्ड योग, शकुनी-करण, चौथा प्रहर, आठवां चन्द्र, श्रावण मास।

कुम्भ राशि—३-८-१३ तिथि, गुरुवार, आर्द्रा नक्षत्र, व्याघातयोग, किंस्तुघ्नकरण, तीसरा प्रहर, ग्यारहवां चन्द्र, भाद्र मास।

मीन राशि—५-१०-१५ तिथि, शुक्रवार, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, चतुष्पादकरण, चौथा प्रहर, बारहवां चन्द्र, आश्विन मास।

ऊपर लिखे हुए द्वादश राशि के सदस्यों को घातक तिथि, वार, नक्षत्र आदि में कोई भी शुभ कार्य को आरम्भ न करना उचित होगा अन्यथा उन्हें कार्य में अपयश मिलते ही पश्चाताप का प्रसंग आवेगा।

२—ग्रह विचार

प्राचीन तपस्वी, त्रिकालज्ञ महर्षियों का कथन है कि श्री ब्रह्माजी के मन में जब सृष्टि निर्माण करने की इच्छा प्रकट हुई तब प्रथम उनके मन से चन्द्र और आकाश, नेत्रों से सूर्य, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, ध्वनि, स्पर्श, रंग व गुण अग्नि से, जल, स्वाद, इत्यादि जल से—भूमि, सुगंध, स्पर्श, ध्वनि, इत्यादि इस क्रम से दो ग्रह और पंचतत्व निर्माण हुये। पश्चात् अग्नि से मंगल, भूमि से बुध, जल से शुक्र, वायु से शनि, आकाश से गुरु ऐसे पांच ग्रहों को जन्म मिला। तदनन्तर मेष से मीन तक १२ राशि और अश्विनी से रेवती तक २७ नक्षत्र और उनके चरण निर्माण किये। नक्षत्र और राशि यह दोनों आकाश के एक पट्टा है जिससे सप्त ग्रह हमेशा भ्रमण करते है। ज्योतिषशास्त्र के राशि व नक्षत्र एक मुख्य अंग हैं जिनके बिना इस शास्त्र का ज्ञान होना असम्भव है। प्रत्येक राशि के ३० अंश होते हैं और इन्हीं ३६० अंश के मार्ग से प्रत्येक भ्रमण करते हैं। प्रत्येक मनुष्य प्राणी में जन्म पाते ही इन्हीं ग्रह, राशि व नक्षत्रों के गुणधर्म, रूप रंग के अनुसार प्रभावित हो मनुष्य में भिन्न-भिन्न रूप रंग दृष्टिगोचर होते हैं व इनके प्रभाव से ही इस जगत में प्रत्येक मनुष्यमात्र को सुख, दुःख, हानि, लाभ, यशापयश-माता-पिता, स्त्री-सन्तान, मित्र-रिपु, जीवन व मृत्यु आजन्म मिलता है।

आकाश के स्थिर तेजोगोल को तारे और अस्थिर तारों को अर्थात् सूर्य की परिक्रमा करने वाले तेजोगोल को ग्रह कहते हैं। इस नियम के अनुसार सात ग्रह जैसे—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और राहू व केतु दो उपग्रह, ऐसे कुल नवग्रह मान्य किये गये हैं—साथ ही साथ पृथ्वी भी सूर्य की परिक्रमा नित्य करती है

धनु

ना स्वर्णभाः शैलसमोदयोऽतिशब्दो दिनं प्राग्दृढरूक्षपीतः ।
राजोष्णपित्तो धनुरल्पसूतिसंगो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः ॥ ९ ॥

मकर

मृगश्चरः क्ष्मा द्वैरवोशायमाण स्त्रीपिंगरूक्षः शुभभूमिशीतः ।
स्वल्पप्रजासंगसमीररात्रिरादौ चतुष्पाद् विषमोदयो विट् ॥ १० ॥

इसलिये इसे भी एक ग्रह माना गया है। इन ग्रहों के अतिरिक्त पाश्चात्य देश के धुरंधर विद्वान, ज्योतिषज्ञ व संशोधकों ने ईस्वी सन् १७८७ में हर्षल नाम के ग्रह का व ईस्वी सन् १८४६ में नेपच्यून नाम के ग्रह का शोध किया व इसका सविस्तार वर्णन आगे ग्रहों के अन्तर्गत किया है।

अनादि काल पूर्व से ईस्वी सन् १८४६ तक हमारे देश के प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों में सात ग्रह व दो उपग्रह का वर्णन किया गया है, परन्तु ईस्वी सन् १७८७ में पहला नया ग्रह हर्षल व ईस्वी सन् १८४६ में दूसरा ग्रह नेपच्यून का शोध पाश्चात्य देश के संशोधकों ने करने के बाद मराठी ज्योतिष के ग्रन्थो में इसका वर्णन करना आरम्भ हुआ यह हम पहले लिख चुके हैं। हमारे देश के ज्योतिषज्ञ व विद्वान रत्नों ने इन सात ग्रहों के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है उसे नीचे लिख देना हम आवश्यक समझते हैं। जैसे :—

सप्तग्रह वर्णन

१—हम भाई है सात निराले, अपने धुन में चलने वाले।
रविवार है सबका राजा, रखते हैं हाथों में बाजा॥
आनन्द मनाया करते हैं, आराम सिखाया करते हैं।
मन नहीं किसी के काले, हम भाई हैं सात निराले॥

२—सोमवार है सबका प्यारा, चन्दा के आँखों का तारा।
तूफानों के डर को वह त्यागे, चलता है सबके आगे आगे।
रास्ते सबके देखे भाले, हम भाई हैं सात निराले॥

३—मंगल को दंगल भाता है, वह आते धूल उड़ाता है।
सोमवार के पीछे सदा है चलता, अपनी राह कभी न बदलता॥

४—बुध सदा शुद्ध रहने वाला, खरी बात सदा कहने वाला।
कहता जो भी काहिल होते, दुनियां भर में जाहिल होते॥

५—गुरु बन कर गुरुवार पछारे, बड़े अकड़ से रहते प्यारे।
काम हमेशा करते सबका पक्का, नहीं जानते धर्म धक्का॥
भर देते हैं अमृत के प्याले, हम हैं भाई सात निराले।

६—शुक्र भाग से आया करता, व सदा भागते जाया करता।
कहता है मुझे पकड़ने वालो, कर लो काम अकड़ने वालो॥
तूफान नहीं टाले हैं जाते, हम हैं भाई सात निराले।

७—शनि आता घूमते घामता, अपने धुन में मगन है रहता॥
कहता है मैं हूँ सबसे छोटा, मगर काम न करूँगा कभी खोटा।
हमने सब झगड़े हैं पाले, हम हैं भाई सात निराले॥

जन्म कुण्डली के आधार पर फलित वर्तते समय सर्वप्रथम आकाशस्थ ग्रहों की स्थिति का, पश्चात् पृथ्वी की परिस्थिति का विचार अधिकतर किया करते हैं। इसी कारण सात ग्रह और दो उपग्रह ऐसे नव ग्रहों का विचार मुख्यतः किया जाता है। पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चन्द्र अपना मार्ग सूर्य और पृथ्वी इन दोनों के मध्य रेखा पर से क्रमण करता है। उस रेखा के दोनों दिशा के दो विन्दुओं को राहू और केतु कहते हैं। इसी कारण ये दोनों उपग्रह जन्म कुण्डली में सदैव परस्पर सप्तम स्थान में स्थित हुए दिखाई देते हैं। राहू चन्द्र को व केतु सूर्य को सदैव ग्रसता है। इसलिये ये उपग्रह सूर्य और चन्द्र के शत्रु कहलाते हैं। ग्रहों का राश्यंतर पंचांग के आखिरी कोष्टक के पश्चात् लिखा जाता है। जैसे—धनुष्यर्क : अर्क—रवि : कर्केज्ञः ज्ञ—बुध धनेगुरु : सिंहेराहु : मेषे शनि : इत्यादि।

राशि व ग्रहों का परस्पर संवंध व स्वामित्व

सप्तग्रहों को द्वादश राशि के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त होने का कारण जानने के पूर्व उनके आकाशस्थ स्थिति गति और अन्तर का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक ग्रह नीचे लिखे हुए क्रम के अनुसार एक दूसरे से दूर हैं। उदाहरणार्थ—सूर्य से चन्द्र, चन्द्र से बुध, बुध से शुक्र, शुक्र से मंगल, मंगल से गुरु, गुरु से शनि, शनि से हर्षल और हर्षल से नेपच्यून।
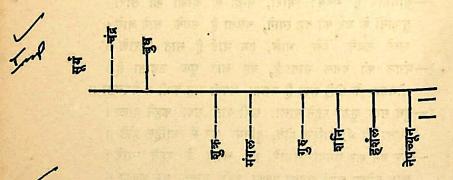
परन्तु इन ग्रहों में से मंगल ग्रह को मेष राशि का स्वामित्व सर्वप्रथम क्यों प्राप्त हुआ यह आधार युक्त लिखना हमारे लिये कठिन है तथापि हमारा यह व्यक्तिगत मत है कि अन्य ग्रहों से मंगल पृथ्वी के समीप होने तथा वह पुरुष ग्रह, क्षत्रिय जाति ग्रहों का सेनापति, अग्नि तत्व का होने के कारण यह बहुमान प्रथम मंगल को दिया गया होगा और इसी कारण से वह पृथ्वीपुत्र कहलाता है तथा इसी कारण से देश के आकाशस्थ ग्रहों के तज्ञों ने यह क्रम निश्चित किया होगा। सप्त ग्रहों को द्वादश राशियों का स्वामित्व कैसे प्राप्त हुआ यह नीचे लिखा है।

कुम्भ

कुंभोऽपदो ना दिनमध्यसंगप्रसूः स्थिरः कर्बुरवन्यवायुः ।
स्निग्धोष्णखण्डस्वरतुल्यधातुः शूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः ॥ ११ ॥

मीन
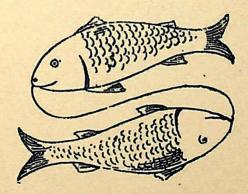
मीनोऽपदः स्त्री कफवारिरात्रिर्निःशब्दबभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ।
स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेट् विषमोदयश्च ॥ १२ ॥

ग्रह राशि	मंगल मेष	शुक्र वृषभ	बुध मिथुन	चन्द्र कर्क	सूर्य सिंह	बुध कन्या	शुक्र तुला	मंगल वृश्चिक	गुरु धन	शनि मकर व कुम्भ	गुरु मीन

सूर्य से मंगल, बुध, चन्द्र और शुक्र अत्यन्त नजदीक होने के कारण उसके उष्णता के प्रभाव से ये चार ग्रह अपना मार्ग शीघ्र गति से भ्रमण करते हैं। अतः ये शीघ्र गति ग्रह कहलाते हैं व गुरु और शनि सूर्य से अत्यन्त दूर होने के कारण अपना मार्ग मन्द गति से भ्रमण करते हैं व इसलिए वे मन्द गति ग्रह कहलाते हैं व इसका वर्णन शास्त्रज्ञों ने इसी आधार पर लिखा हो तो उसे उचित ही समझना चाहिये। ग्रहों को आकाश के बारह बार भ्रमण करने के लिये जो समय लगता है वह उनके मंद या शीघ्र गति पर ही अवलंबित है। जैसे :—

ग्रहों का भ्रमण गति काल

प्रत्येक ग्रह को एक राशि भ्रमणकर दूसरे राशि में प्रवेश करने के लिये जो समय लगता है वह नीचे लिखे अनुसार है :—

सूर्य एक महीना, चन्द्र सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बुध एक महीना, गुरु १३ महीना, शनि तीस महीना, राहू १८ महीना, केतु १८ महीना, हर्शल ७ वर्ष, नेपच्यून १३॥। वर्ष।

साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि ऊपर लिखे हुए नियम के विरुद्ध ग्रह, नियमित समय से कम या अधिक समय तक प्रत्येक राशि में रहते हैं व इसका वर्णन पंचांगों में स्तम्भी, वक्री, मार्गी आदि शब्दों में लिखा जाता है।

स्तंभी ग्रह

ऊपर लिखे हुए भ्रमण गति काल से अधिक समय तक जिस राशि में ग्रह स्थित हो, उसी राशि में वास करता हो तो उसे स्तंभी कहते हैं।

वक्री ग्रह

कोई भी ग्रह जिस राशि में वह स्थित हो, भ्रमण समय पूरा करके आगे पिछले राशि में जाता है उसे वक्री ग्रह कहते हैं।

मार्गी ग्रह

वक्री हुआ ग्रह जब अपने पूर्व राशि में प्रयाण करता है उस काल में मार्गी ग्रह शब्द से बोध किया जाता है।

उदित ग्रह

सूर्य की परिक्रमा करते हुए कोई भी ग्रह पृथ्वी के लोगों को जब दिखाई देता है तब उसे उदित ग्रह कहते हैं। फल—शुभाशुभ।

अस्तगत ग्रह

सूर्य की परिक्रमा करते समय जब ग्रह पीछे जाने के कारण जगत के लोगों को नहीं दिखायी देता तब उसे अस्तगत ग्रह कहते है। फल—निष्फल।

कर्तरी ग्रह

शुभ ग्रह के द्वितीय और द्वादश भाव में जन्म कुण्डली में जब अशुभ ग्रह स्थित हों तो उसे कर्तरी ग्रह कहते हैं जिसका परिणाम पूर्णरूप से मिलना असम्भव है।

दोषशामक ग्रह

राहू का दोष बुध से, मंगल, बुध, राहू, शु, श, का दोष गुरु से, राहु और बुध का दोष शनि से, मं०, बु० गु० शु० श० रा० का दोष चन्द्र से, बु० श० रा० का दोष मंगल से, मं०, बु०, श० रा० का दोष शुक्र से, रा० बु० श० शु० गु० मं० चं० का दोष सूर्य से शमन होता है।

उत्तरायण का रवि सब दोषों को विशेष रूप से नष्ट करता है।

ग्रहों की परस्पर शक्ति

नीचे लिखे हुए क्रम से ग्रह एक दूसरे से बलवान समझे गये हैं। जैसे शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र और चन्द्र से सूर्य। अर्थात् सब ग्रहों में सूर्य बलवान व शनि निर्बली समझा गया है। कुण्डली का भविष्य-कथन करते समय इनके शक्ति का विचार करना आवश्यक है।

ग्रहों के मारक ग्रह

नीचे लिखे हुए क्रम से प्रत्येक ग्रह एक दूसरे के बल को नष्ट करते हैं। जैसे—सूर्य का बल शनि से, शनि का बल मंगल से, मंगल का बल गुरु से, गुरु का बल चन्द्र से, चन्द्र का बल शुक्र से, शुक्र का बल बुध से, बुध का बल चन्द्र से नष्ट होता है।

तारकमारक ग्रह

रवि का मारक ग्रह श० रा० है बाकी के ग्रह तारक हैं।

ग्रहों के वर्णन

(१) ग्रहों के नाम—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहू, केतु, हर्शल, नेपच्यून।

(२) ग्रहों के राशि स्वामित्व—रवि–सिंह, चन्द्र–कर्क, मंगल–मेष और वृश्चिक, बुध–मिथुन और कन्या, गुरु–धन और मीन, शुक्र–वृषभ और तुला, शनि–मकर और कुंभ।

(३) ग्रहों के स्वगृह राशि—रवि–सिंह, चन्द्र–कर्क, मंगल–वृश्चिक, बुध–कन्या, गुरु–मीन, शुक्र–वृषभ, शनि–मकर, राहू–कन्या, केतु–मीन।

(४) ग्रहों के मूल त्रिकोण—रवि–सिंह, चन्द्र–वृषभ, मंगल–मेष, बुध–कन्या, गुरु–धन, शुक्र–तुला, शनि–कुंभ।

(५) ग्रहों के उच्चराशि—रवि–मेष, चन्द्र–वृषभ, मंगल–मकर, बुध–कन्या, गुरु–कर्क, शुक्र–मीन, शनि–तुला, राहू–मिथुन, केतु–धन।

(६) ग्रहों की नीच राशि—रवि–तुला, चन्द्र–वृश्चिक, मंगल–कर्क, बुध–मीन, गुरु–मकर, शुक्र–कन्या, शनि–मेष, राहू–मीन, केतु–कन्या।

(७) ग्रहों के जाति—गुरू व शुक्र–ब्राह्मण, रवि व मंगल–क्षत्रिय, चन्द्र–वैश्य, बुध–शूद्र, शनि–अन्त्यज और राहू-केतु–मातंग।

(८) ग्रहों के गुण—रवि, चन्द्र गुरु–सत्वगुणी, बुध-शुक्र–रजोगुणी, मंगल, शनि, राहू, केतु–तमोगुणी।

(९) ग्रहों के स्वभाव—रवि–स्थिर, चन्द्र–चंचल, मंगल–उग्र, बुध–मिश्र, गुरु–मृदु, शुक्र–लघु, शनि–अत्यन्त तीक्ष्ण।

(१०) ग्रहों का वर्ण—रवि मंगल–लाल, चन्द्र–गोरा, बुध–हरा, गुरु–पीला, शुक्र–चित्रकवरा, शनि–काला, राहू–नीला, केतु–मिश्रित।

(११) ग्रहों के अधिकार—रवि–आत्मा, चन्द्र–मन, मंगल–शक्ति, बुध–वाणी, गुरु–ज्ञान और सुख, शुक्र–काम, शनि, राहू, केतु–दुख।

(१२) ग्रहों के राज्याधिकार—सूर्यचन्द्र–राजे, बुध–युवराज, मंगल–सेनापति, गुरु–शुक्र प्रधान, शनि–सेवक।

(१३) ग्रहों का स्वरूप—रवि–गोल, चन्द्र–सुन्दर, मंगल–कृश बुध–प्रसन्न, गुरु–स्थूल, शुक्र–तेजस्वी, शनि–आलसी, राहू, केतु–मलीन।

(१४) ग्रहों का शारीरिक अन्तर्भाग—रवि–अस्थि, चन्द्र–रुधिर, मंगल–मज्जा, बुध–त्वचा, गुरु–चर्वी, शुक्र–वीर्य, शनि, राहु, केतु–स्नायु।

(१५) ग्रहों का स्त्री-पुरुषत्व—रवि, मंगल, गुरु–पुरुष, चन्द्र, शुक्र–स्त्री, बुध, शनि–क्लीब।

(१६) ग्रहों का तत्व—रवि, मंगल–तेजतत्व, चन्द्र, शुक्र–जलतत्व, बुध–पृथ्वीतत्व, गुरु–आकाशतत्व, शनि–वायुतत्व, राहू–जलवायुतत्व, केतु–आकाशतेजतत्व।

(१७) ग्रहों से आप्तवर्ग सुख—रवि–पिता, चन्द्र–माता, मंगल-बुध–भगिनी, गुरु–सन्तति, शुक्र–स्त्री, शनि–नौकर, राहू–आजा, केतु–आजी।

(१८) ग्रहों से विद्याअध्ययन—रवि–राजविद्या, चन्द्र–ज्योतिषविद्या, मंगल–धनुर्विद्या, बुध–गणितविद्या और गुरु–वेदान्त व व्याकरण, शुक्र–गायन-वादनविद्या, शनि–कायदा, राहू–गारुड़ी और केतु–तंत्रमंत्र विद्या।

(१९) ग्रहों के दिशा—रवि-पूर्व, मंगल-दक्षिण, शनि-पश्चिम, बुध-उत्तर, शुक्र-आग्नेय, राहूकेतु-नैऋत्य, चन्द्र वायव्य, गुरू ईशान्य।

(२०) ग्रहों के वस्त्र—रवि–मोटे, चन्द्र–नये, मंगल–जले हुये, बुध–सड़े हुए, गुरु–मध्यम, शुक्र–दृढ़, शनि–जीर्ण।

(२१) ग्रहों के ऋतु—रवि-मंगल–ग्रीष्म, चन्द्र–वर्षा, बुध–शरद, गुरु–हेमंत, शुक्र–वसन्त, शनि–शिशिर।

(२२) ग्रहों के द्रव्य—रवि–ताम्बा, चन्द्र–मणि, मंगल–सोना, बुध–सीप, गुरु–रूपा, शुक्र–मोती, शनि–लोहा, राहू–शीसा, केतु–कांसा।

(२३) ग्रहों के रत्न—रवि–माणिक, चन्द्र–सफेद मोती, मंगल–मूंगा, बुध–पन्ना, गुरु–पुखराज, शुक्र–हीरा, शनि–नीलम, राहू–गौमेद, केतु–लहसुनिया।

(२४) शत्रु मित्रत्व—

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
रवि	चं० मं० गु०	शु० श० रा० के०	बुध
चन्द्र	र० बु०	रा० के०	मं० गु० शु० श०
मंगल	र० चं० गु०	बु०	शु० श० रा० के०
बुध	र० शु०	चं०	गु० श० मं० रा० के०
गुरु	र० चं० मं० रा० के०	बु० शु०	श०
शुक्र	बु० श० रा० के०	र० चं०	गु० मं०
शनि	बु० शु० रा० के०	र० चं० मं०	गु०

(२५) ग्रहों के उदय भाग—रवि, मंगल, शनि, राहू, केतु ये शरीर के पीछे भाग से उदय होते हैं।

चन्द्र, बुध, शुक्र, यह शरीर के शीर्ष भाग से उदय होते हैं।

गुरु उभय भाग से उदय होते हैं।

(२३) पशु पक्षी रूप—रवि-बुध–पक्षी स्वरूप, चन्द्र–सरपट चलने वाला प्राणीरूप, मंगल-शनि–चुतष्पाद प्राणी, गुरु व शुक–द्विपाद प्राणी।

(२७) ग्रहों के कारक स्थान—रवि, मंगल, शनि, राहू, केतु, पर्वत व अरण्य-कारक, चन्द्र व शुक्र जलाशयकारक, बुध व गुरु–विद्वानों के घर या गाँव के कारक कहलाते हैं।

(२८) ग्रहों के वर्ष काल—मंगल–बाल, बुध–कुमार, शुक्र–१६ वर्ष, गुरु–३० वर्ष, रवि–५० वर्ष, चन्द्र–७० वर्ष व शनि, राहू, केतू का १०० वर्ष का काल समझा जाता है।

(२९) ग्रहों के देवता—रवि–अग्नि, चन्द्र–पानी, मंगल–षड़ानन, बुध–हरि, गुरु–इन्द्र, शुक्र–इन्द्राणी, शनि–विरिंची।

(३०) ग्रहों का क्रीडास्थान—रवि–देवताघर, चन्द्र–जलाशय के तीर, मंगल–अग्नि, बुध–क्रीडाभवन, गुरु–भण्डारघर, शुक्र–शयनघर, शनि–कचराघर, राहू–गाँव के अन्तिम स्थान व केतु–स्मशान।

(३१) ग्रहों का काल समय—रवि–अयन, चन्द्र–क्षण, मंगल–दिवस, बुध–ऋतु, गुरु–महीना, शुक्र–पक्ष, शनि–वर्ष।

(३२) ग्रहों का बलदायक काल—चन्द्र, मंगल, शनि, केतु ग्रह रात्रि के समय बलवान रहते हैं। रवि, गुरु, शुक्र यह ग्रह दिन को बलवान रहते हैं। उसी तरह अशुभ ग्रह कृष्णपक्ष में बलवान होते हैं और शुभ ग्रह शुक्लपक्ष में बलवान होते हैं। वैसे ही उत्तरायण में शुभ ग्रह व दक्षिणायन में अशुभ ग्रह बलवान होते हैं।

(३३) ग्रहों का निसर्ग बल—शनि से मंगल बलवान, मंगल से बुध बलवान, बुध से गुरु बलवान, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र, चन्द्र से रवि, निसर्गतः बलवान होते हैं।

(३४) ग्रहों का पराभव—रवि से शनि, शनि से मंगल, मंगल से गुरु, गुरु से चन्द्र, चन्द्र से शुक्र, शुक्र से बुध, बुध से चन्द्र पराभव होते हैं।

(३५) ग्रहों का पाप व शुभत्वं—१–प्रकाशमान चन्द्र, शुभग्रह युक्त बुध, गुरु, शुक्र शुभ ग्रह कहलाते हैं। २–क्षीण चन्द्र, मंगल व पापग्रह युक्त बुध, शनि, राहू, केतु पाप ग्रह कहलाते हैं। ३–गुरु व शुक्र ये अत्यन्त शुभ ग्रह हैं, मंगल, शनि ये क्रूर ग्रह अत्यन्त पापग्रह हैं। ५–चन्द्र–शुक्ल दशमी से कृष्ण पंचमी तक पूर्ण बली ६–शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मध्यम बली और कृष्ण षष्ठी से अमावस्या तक चन्द्र बलहीन कहलाता है।

(३६) ग्रहों के भाग्योदय काल—रवि का २२ से २४ वर्ष तक, चन्द्र २४ से २५ वर्ष तक, मंगल २८ से ३२ वर्ष तक, बुध ३२ से ३६ वर्ष तक, गुरु १६ से २२ वर्ष तक, शुक्र २५ से २८ वर्ष तक, शनि ३६ से ४२ वर्ष तक, राहू ४२ वर्ष से ४८ वर्ष तक और केतु का ४८ से ५४ वर्ष तक का भाग्योदय काल माना गया है।

(३७) ग्रहों की वेदाभ्यास रुचि—मंगल सामवेद अभ्यास रुचि, बुध अथर्ववेद, गुरु ऋग्वेद और शुक्र यजुर्वेद का रुचिकारक है।

(३८) ग्रहों के दृष्टिफल—प्रत्येक ग्रह जन्मकुण्डली में जिस स्थान में स्थित हों उस स्थान से सप्तम स्थान (भाव) पर उनकी पूर्ण दृष्टि पड़ती है और उनके शुभाशुभ स्थिति अनुसार उसका शुभ या अशुभ फल मिलना निश्चित है। किन्तु मंगल, गुरु,

व शनि की पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान के सिवाय नीचे लिखे हुये स्थानों पर भी पड़ती है। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। जैसे :—

(१) मंगल की पूर्ण दृष्टि अपने स्थान से ४–७–८ स्थान पर पड़ती है।

(२) गुरु की पूर्ण दृष्टि अपने स्थान से ५–७–९ स्थान पर पड़ती है।

(३) शनि की पूर्ण दृष्टि अपने स्थान से ३–७–१० स्थान पर पड़ती है।

इसके सिवाय प्रत्येक ग्रह जिस स्थान (भाव) में स्थित हो उस स्थान से तीसरे और दसवें स्थान पर उनकी १।४ दृष्टि पड़ती है।

(४) ग्रह की द्विपाद दृष्टि अपने स्थान से ५ और ९ स्थान पर पड़ती है।

(५) ग्रह की त्रिपाद दृष्टि अपने स्थान से ४ और ८ स्थान पर पड़ती है। ग्रहों के दृष्टि का फल ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति के अनुसार मिलता है यह ध्यान में रखने योग्य है। शनि की एक पाद दृष्टि, गुरु की द्विपाद दृष्टि और मंगल की त्रिपाद दृष्टि, ये पूर्ण दृष्टि समान फलदायक हैं।

सारावली ग्रन्थ में ग्रहों की दृष्टि का कारण

सूर्य व चन्द्र यह दोनों राजा ग्रह कहलाते हैं। बुध राजकुमार और शुक्र राज्य-मंत्री कहलाते हैं। ये कामासक्त होते हैं। अतः इनकी दृष्टि सदैव सप्तम (स्त्री) स्थान पर रहती है।

(२) मंगल सेनापति ग्रह कहलाता है। अतः राजा को सुख देने के हेतु चतुर्थ स्थान पर, स्त्री को सुख देने के हेतु सप्तम स्थान पर और मृत्यु के भय से वचाने के हेतु अष्टम मृत्यु स्थान पर सदैव दृष्टि रखना यह सेनापति का कर्त्तव्य है। इसी हेतु इस ग्रह की दृष्टि चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर रहती है।

३—गुरु विद्या, संसार सुख, व धर्म का दाता ग्रह कहलाता है अतः विद्या देना, सांसारिक सुख देना व धर्म की रक्षा करना गुरू का परम कर्तव्य है। अतः इस ग्रह की दृष्टि पंचम, सप्तम और नवम स्थान अर्थात कमशः विद्या, संसारिक व धर्मस्थान पर सदैव रहती है।

४—शनि—नौकर, सेवक ग्रह कहलाता है। अतः इस ग्रह की दृष्टि सदा तीसरे पराक्रम, सप्तम स्त्री, संसारिक सुख और दशम राजसुख की रक्षा करना यह सेवक का मुख्य कर्तव्य है। अतः इस ग्रह की दृष्टि ऊपर लिखे हुए तीनों स्थान पर सदैव रहना स्वाभाविक है।

५—राहु और केतु ग्रह शनि के मित्र कहलाते हैं। अतः इन दोनों ग्रहों की दृष्टि मित्र के स्थान पर रहना स्वाभाविक है। इसके सिवाय इन ग्रहों की ५–७ भाव पर पूर्ण, स्वगृह पर त्रिपाद, २ व १० भाव पर द्विपाद, ३–६ भाव पर भी एक पाद दृष्टि रहा करती है।

३९—ग्रहों के नैसर्गिक शत्रु-मित्र गृह—कोई भी ग्रह दूसरे ग्रह से जन्मकुण्डली में या प्रश्नकुण्डली में २–३–४–१०–११–१२ भाव में स्थित हो तो वह उस ग्रह का तात्कालिक मित्र और १–५–६–७–८–९ भाव (स्थान में) स्थित हो तो तात्कालिक शत्रु कहलाता है। इस नियम के अनुसार यदि वे जन्मकुण्डली या प्रश्नकुण्डली में नैसर्गिक या तात्कालिक रीति से परस्पर मित्र हों तो वे अधिमित्र कहलाते हैं और उनका श्रेष्ठ फल मिलता है परन्तु यदि वे शत्रु हों तो अधिशत्रु कहलाते हैं और उसका अशुभ फल मिलना निश्चित है।

४०—ग्रहों का शरीर अंग से सम्बन्ध—यह नीचे लिखे अनुसार विचार करना चाहिये।

रवि—सिर से मुख भाग तक का स्वामी कहलाता है।
चन्द्र—गले से हृदय ,, ,, ,, ,,
मंगल—पेट से पीठ ,, ,, ,, ,,
बुध—हाथ और पाँव ,, ,, ,, ,,
गुरु—कमर से जाँघ ,, ,, ,, ,,
शुक्र—शिश्न से वृषण ,, ,, ,, ,,
शनि—घुटने से पेंडुरी ,, ,, ,, ,,

इन ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के नियोजित अंग पर उनका शुभाशुभ परिणाम मिलेगा परन्तु इसका विचार अन्य शुभ, अशुभ ग्रहों की युति, दृष्टि, उच्च या नीच राशि और अंश पर करना आवश्यक है।

ग्रहों के अवस्था और फलः—

४१—ग्रहों के अवस्था १–दीप्त, २–स्वस्थ, ३–मुदित, ४–शान्त, ५–शक्त, ६–पीड़ित, ७–दीन, ८–खल, ९–विकल, १०–भीत। ऐसे ग्रहों के दस अवस्था होते हैं।

१—ग्रह अपने उच्च या मूल त्रिकोण का हो तो दीप्त।
२—स्वगृह का हो तो स्वस्थ।
३—मित्र ग्रह में हो तो मुदित।
४—शुभ ग्रह के वर्ग में हो तो शान्त।
५—देदीप्यमान ग्रह हो तो शक्त। पृथ्वी के समीप होते ही देदीप्यमान कहलाता है।
६—दूसरे ग्रह से आच्छादित हो तो वह पीड़ित।
७—शत्रु राशि या शत्रु ग्रहों के अंश में हो तो वह दीन।
८—पाप ग्रह से युक्त हो तो खल।
९—नीच राशि का ग्रह हो तो भीत

१०—अस्तंगत हो तो विकल।

१—दीप्त अवस्था में—मनुष्य बुद्धिमान, सुन्दर, स्वरूपवान, तीर्थों में जाने वाला और शत्रुनाश करने वाला कहलाता है।

२—स्वस्थ अवस्था में—कीर्तिमान्, सदा प्रसन्नचित, ज्योतिष जानने वाला, मिलकियत कमाने वाला, विजयी व राजपूजित होता है।

३—हर्षित अवस्था में—मनुष्य सदाचारी, धर्मात्मा होता है।

४—शान्त अवस्था में—मनुष्य शान्त, धनयुक्त, तेजस्वी होता है।

५—शक्त अवस्था में—मनुष्य निरोगी, सुन्दर देही, प्रशंसनीय, मधुरभाषी।

६—पीड़ित अवस्था में—रोगी, मानसिक चिंता।

७—दीन अवस्था में—बुद्धिहीन, परस्त्री-आसक्त।

८—खल अवस्था में—पापग्रह से युक्त व उसी ग्रह के अनुसार उसका फल।

९—विकल अवस्था में—सूर्य सान्निध्य होने से अस्त व निष्फल।

१०—भीत अवस्था में—नीच राशि से युक्त उसी ग्रह के अनुसार उसका फल।

जन्म के समय की अवस्था के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को इस जन्म में सुख या दुःख मिलना निश्चित है, चाहे उसका विश्वास हो अथवा न हो इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु जो घटना अनुभवसिद्ध है उसपर अविश्वास करना वृथा है।

राशि पर से ग्रहों के बल

१—रवि–१–४–५–९ राशि में बलवान होता है परन्तु वह लग्न या दशम भाव में स्थित हो। २–४–६–८–१२ भाव में राशि बली होकर भी हीन फल देता है। धन स्थान में कुटुम्ब सुख नहीं देता और मनुष्य को सदा कर्ज में रखता है। चतुर्थ स्थान में चिन्ता, छठवें स्थान में शत्रुपीड़ा, अष्टम स्थान में धन का नाश व शरीर कष्ट व द्वादश स्थान में धन का व्यय करा कर कर्ज में रखता है। यह राशि के आरम्भ में बलवान रहता है।

२—चन्द्र–१–४–७–१० हर राशि में स्थित हो तो मनुष्य का मन सदा चञ्चल व वेचैन रहेगा। मनोराज्य, जल्द प्रवास, उतावलापन बना रहेगा। चन्द्र, सिंह राशि में हो तो वह मान सन्मान के चिन्ता में व्यग्र रहेगा। वृश्चिक राशि में हो तो कपटी, सदा वदला लेने के तरफ उसका मन वना रहेगा। धन में हो तो व्यायाम के तरफ चित्त रहेगा। यह फल राशि के अन्तिम भाग के समय मिलेगा।

३—मंगल–१–५–८–९–१०–११–१२ राशि का मंगल बलवान होता है। अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्र का मंगल मनुष्य को पराक्रमी व कुलदीपक बनाता है। मिथुन राशि का मंगल वाद-विवाद में प्रवीण और स्वाभिमानी वनाता है। कर्क का

मंगल स्त्री के विषय में हीन विचार, तुला राशि का स्फूर्तिदायक व कुम्भ राशि का मंगल तत्ववेत्ता वनाता है। राशि के आरम्भ में यह फलदायी होता है।

४—वुध–३–६ राशि में वलवान होता है, १–८ राशि में मद्यपानरत, नास्तिक, चोर, निर्धन, असत्यभाषी वनाता है। २–७ राशि में गुरुभक्तिपरायण, कौटुम्बिक सुख, उदार वुद्धि देता है। स्वगृही हो तो क्षमाशील, युक्तिवान, ज्ञानी, कलासम्पन्न, उदार वनाता है। कर्क राशि में हो तो स्वजन विरोधी, धन खर्च करनेवाला तथा सिंह राशि में हो तो स्त्रीद्वेष्टा, सुखहीन, भ्रमणशील, स्वजनों से अनादर पानेवाला एवं गुरु राशि का हो तो पण्डित, सेवाकुशल, राज्यपूज्य होता है। शनि राशि का हो तो कारीगर, दूत कर्म करनेवाला, निर्धन व कर्जदार वनाता है। राशि के मध्य भाग में यह फल मिलता है।

५—गुरु १–४–५–९–१२ राशि में हो तो धनदायक व वलवान, कुम्भ में हो तो संततिहीन, ४–८–१२ राशि में हो तो विपुल संतति, २–४–८–१०–१२ राशि में हो तो अधिक कन्या संतति, तुला राशि में हो तो सत्त्वगुणी, मकर में कर्मठ होता है। यह फल राशि के मध्य भाग में मिलता है।

६—शुक्र स्वगृह या उच्च राशि में हो तो वलवान, ४–८ राशि में रतिसुख, व्यभिचारी, ५–९ राशि में तेजस्वी, वलवान, गुरु राशि में हो तो व्रह्मचारी, व्रह्मचर्य का पालन कर सकेगा।

७—शनि–७–१०–११ राशि में वलवान कहलाता है, १–४–५–८–९ राशि में अनिष्ट फल देता है, ३–७–११ राशि में दातृत्व शक्ति, ४–१० राशि में कफ, सर्दी दमा, विकार उत्पन्न करता है यह फल अन्त भाग में मिलता है।

८ व ९—राहू व केतु–स्वगृह या उच्च के हों तो शुभ फल, राहू १–२–३–४–६–१२ इन राशियों में वलवान कहलाता है और केतु २–४–८–९–१२ इन राशियों में वलवान होता है।

१०—हर्शल–३–७–११ में हर्शल वलवान कहलाता है।

११—नैपच्यून–४–८–१२–राशि में नैपच्युन वलवान कहलाता है।

ग्रहों के स्वरूप व फलादेश

सूर्य—पराक्रमी, शूर, गंभीर, सत्वगुणी, चौड़ा शरीर, कुछ काला व लाल वर्ण, थोड़े-थोड़े वाल यह सूर्य का स्वरूप है। सूर्य से स्वतः आत्मा, तेज, पितृसुख, आरोग्य, शक्ति, सम्पत्ति का विचार करना चाहिए व क्षय, अतिसार ज्यादा भोजन मस्तक का दर्द आदि रोग होते हैं। देव, व्राह्मण, राजा व राजसेवक से पीड़ा व कष्ट का विचार करना चाहिये।

चन्द्र—चंचल, प्रवासी, शान्त, सात्विक, मधुरभाषी, ज्यादा उम्रवाले स्त्री से मैत्री करनेवाला, सुन्दर, मजवूत देही, वुद्धिमान, गोल शरीर, कफ-वात प्रकृति आदि

चन्द्र का स्वरूप है । चन्द्र से मन, बुद्धि, मातृसुख, राजकृपा का विचार करना चाहिये : कँवल, पीनस, पांडुरोग व स्त्रीसम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं ।

मंगल—क्रूर, कपटी, अत्यन्त चपल, शूर, विषयलम्पट, तमोगुणी, लाल गौर-वर्ण, उत्तम अवयव, आदि मंगल के स्वरूप है । मंगल से गुण, रोग, सामर्थ्य छोटे भाई, जमीन, शत्रु का विचार किया जाता है । शस्त्र व अग्नि से पीड़ा, कफ, अण्डवृद्धि, गलवे, व्रण आदि के रोग होते हैं ।

बुध—स्पष्टवादी, काला हरा रंग का शरीर, बहुभाषी, कृश शरीर, रजोगुणी, खूब मस्करी, पित व कफ प्रकृति, दूसरे के हानि में आनन्द मनाने वाला, पराक्रम व वैभव का उपयोग करने वाला आदि बुध का स्वरूप है । बुध से विद्या, आप्त वर्ग, मामा, मावसी, मित्र, वाणी का विचार किया जाता है । गुह्य रोग, उदर रोग, वात, कुष्ठ, मंदाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि रोग उत्पन्न होता है ।

गुरु—मोटा शरीर व पेट, पीला रंग, सर्वगुणसम्पन्न, शास्त्रज्ञान, [illegible]यासंगी, बुद्धिमान, सम्पत्तिमान, धार्मिक आचरण, क्षमाशील आदि गुरु का स्वरुप हैं । गुरु से द्रव्य, शरीर बल, चालाकी, संतति ज्ञान का विचार किया जाता है । गुरु से गुल्म रोग, देव, आचार्य, गुरु, ब्राह्मण के श्राप से पीड़ा ।

शुक्र—सुन्दर, मध्यम शरीर का आकार, चित्र-विचित्र सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, सौम्य दृष्टि, मजाकी, रजोगुणी, वात-कफ प्रकृति, सुख, बल, सद्गुण, ऐश्वर्य आदि के निवासस्थान शुक्र का स्वरूप है । पत्नी, वाहन, अलंकार, क्रीड़ा, रति सुख, ऐशो-आराम का विचार किया जाता है । स्त्री से पीड़ा व स्त्री सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहने वाला होता है ।

शनि—कृश व रुक्ष शरीर, हरा काला वर्ण का शरीर, दाँत के बड़े पिंगट, नेत्र, केश व अवयव लम्बे, मलिन वस्त्र धारण करने वाला, तामसी, आलसी शनि का स्वरूप है । शनि से धन्धा, आयुष्य, मृत्यु, विपत्ति या सम्पत्ति का विचार किया जाता हैं । संधिवात विकार रोग, भूत-प्रेत बाधा, चोरों से त्रास आदि होता है ।

राहु—शनि के अनुसार शरीर का रूप रंग, पिता के विचार, दैवी, माता, अपस्मार, फांसी लगाकर मरना, विषधारी प्राणी से त्रास, भूत-प्रेत-पिशाच बाधा, अरुचि, कुष्ठ व्याधि होते हैं ।

केतु—माता-पिता का विचार करना चाहिये । दैवी, गोवर, गुदा, शत्रु से त्रास, नीच जाति के लोगों से त्रास मिला करता है ।

ग्रहों के योग

जन्म समय अथवा वर्तमान समय कुण्डली में जब दो या अधिक ग्रहों की युति हो उसे ग्रहों का संयोग या योग कहते हैं । जब एक ही स्थान भाव में शुभ और अशुभ

ग्रहों का योग होता है तब उसका फल किस तरह मिलेगा इसका विचार सर्वप्रथम करना आवश्यक है। भिन्न-भिन्न गुणधर्म, रूपरंग, स्वभावादि के ग्रहों का जब एक ही भाव राशि में योग होता है तो फलित वर्तते समय उन ग्रहों में से बलवान ग्रह कौन है इसका विचार करना चाहिये। कारण यह है कि सदाचारी मनुष्य के प्रभाव से दुराचारी भी सदाचारी हो सकता है या दुराचारी के सहवास से सदाचारी भी दुराचारी बन बैठता है। इसलिये शुभ या अशुभ में प्रभावशाली ग्रह कौन है इसका विचार अवश्य करना चाहिये। योग सात प्रकार के हैं। जैसे—१–युति योग, २–द्विर्दादश योग, ३–त्रिरेकादश योग, ४–केन्द्र योग, ५–समसप्तम योग, ६–षडाष्टक योग, ७–नवमपंचम योग।

१—दो या अधिक ग्रह जब एक ही भाव में स्थित हों उसे युति योग कहते हैं।

२—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब द्वितीय और द्वादशस्थान में स्थित हो उसे द्विर्दादश योग कहते हैं।

३—जब एक ग्रह से दूसरा ग्रह ३ और ११ भाव में हो तो उसे त्रिरेकादश योग कहते हैं।

४—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब ४ या १० भाव में हो तो उसे केन्द्र योग कहते हैं।

५—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब ५ या ९ भाव में हो तो उसे नवमपंचम योग कहते हैं।

६—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब ६ या ८ भाव में स्थित हो तो उसे षडाष्टक योग कहते हैं।

७—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब ७ सप्तम भाव में स्थित हो तो उसे समसप्तक योग कहते हैं।

१—युति योग—जिस भाव में दो या अधिक ग्रह की युति हो उनका फल वर्तते समय इन ग्रहों के राशि व भाव के साथ ही उनके दृष्टि का भी विचार करना आवश्यक है। ग्रहों के युति में जो ग्रह अधिक बलवान हो व अधिकार युक्त हो उसके अनुसार फल मिलना निश्चित है। उदाहरणार्थ रवि से जब कोई ग्रह युति करता है तब उसका अस्त होने के कारण रवि का प्रभाव ही अधिक पड़ेगा। किसी ग्रह की युति ६–८–१२ भाव में हो तो वह कष्टदायक फल देगा।

२—द्विर्दादश योग—यह योग भी अनिष्ट फलदायी कहलाता है।

३—त्रिरेकादश योग—यह योग शुभ व उत्कर्ष के लिये अनुकूल माना गया है।

४—केन्द्र योग—चतुर्थ और दशम स्थान में से चतुर्थ के योग का फल कुछ समय तक मिलता है किन्तु दशम भाव केन्द्र योग का फल दीर्घकाल तक मिलता रहेगा।

५—नवमपंचम योग—यह योग शुभ माना गया है किन्तु स्थान, राशि व दृष्टि पर फलित निर्भर है। अतः प्रथम इसका विचार करना चाहिये तभी अशुभ या शुभ फल मिलना सम्भव है।

६—षडाष्टक योग—यह अशुभ समझा गया है किन्तु शुभ ग्रह हों तो शुभ फल व अशुभ ग्रह हों तो अशुभ फल मिलना निश्चित है।

७—समसप्तक योग—इस योग में जो ग्रह वलवान हो उसके अनुसार शुभ या अशुभ फल मिलता है। अर्थात् इन योगों में से त्रिकोण व त्रिरेकादश योग उत्तम, युति, समसप्तक सप्तक व द्विर्दाशक योग मध्यम, केन्द्र व षडाष्टक योग अनिष्ट फल उत्पन्न करेगा।

जन्मकुण्डली में महत्वपूर्ण योग यानी शरीर सुख, सम्पत्ति, संतति, विद्या, स्थावर स्टेट, धन, स्त्री, राजवैभव, श्रेष्ठ अधिकार, लोकमान्यता, व्यापार, नेतृत्व आदि व इनके विपरीत शरीर, संपत्ति, विद्या, स्त्री, अधिकारभ्रष्ट, द्रव्यनाश, व्यापार में हानि, वैमनस्य, लोकापवाद, पराधीनता आदि कहलाते हैं। इनमें से किस प्रकार का फल और कब मिलना सम्भव है यह जानना, तथा काल का निर्णय करना यही इस शास्त्र की विशेषता है। इसका विचार करते समय १–४–५–९–११ स्थान व उस भाव के स्वामी के शुभाशुभत्व का विचार अवश्य करना चाहिये। जन्म ग्रह के साथ गोचर के ग्रह संयोग होने पर जब वे अपने जन्म समय के अंश पर पहुँचते हैं तभी उनके शुभाशुभत्व का फल मनुष्य को मिलेगा यह ध्यान में रखना चाहिये। ऊपर लिखे हुये योगों में १—त्रिरेकादश व नवमपंचम योग, शुभ फलदायी कहलाता है, २—युतियोग और द्विर्द्वादश योग शुभाशुभ, ३—केन्द्र योग अशुभ, ४—षडाष्टक योग अत्यन्त अशुभ, ५—सप्तम योग शुभाशुभ फलदायी कहलाते हैं, इसके अतिरिक्त जन्म या वर्तमान समय जन्म या गोचर ग्रहों के संयोग से अन्य कई योग प्राप्त होते हैं। जैसे—वेदांत योग, ब्रह्मज्ञान योग, बन्धन योग, चोर योग, व्यभिचार योग, वैराग्य योग, दारिद्र योग, धनलाभ योग व द्रव्य संचय योग आदि। इन सब योगों में धनलाभ योग प्रत्येक सांसारिक मनुष्य के लिए विशेष महत्वपूर्ण होने के कारण उसके विषय में प्रथम विचार करना हम आवश्यक समझते हैं :—

धनलाभ और द्रव्य संचय योग :—

इस जगत में प्रत्येक सांसारिक मनुष्य को अपना जीवन सुख व शांति से क्रमण करने के लिये धन की आवश्यकता इतने अधिक प्रमाण पर प्रतीत होती है कि जितनी उसे अपने प्राण रक्षण के लिये हवा व पानी की आवश्यकता प्रतीत होती है। इस अखण्ड-मण्डलाकारम् में इतनी अद्वतीय शक्ति, अद्‌भुत जादू, विचित्र मोह, अमोघ आकर्षण शक्ति और अखण्ड प्रेम भरा दिखायी देता है कि किसी भी मनुष्य को धन के

विना एक क्षण भी जीवित रहना असम्भव हो जाता है व इसे प्राप्त करने के लिये वह शारीरिक, मानसिक, आप्तवर्ग, धर्म-कर्मादि सुखों को तिलांजली देने के लिये तत्पर हो जाता है। लक्ष्मी ने जगत के सारे मनुष्यों को चाहे वह श्रीमान या गरीव, साधु या सन्त, ज्ञानी या अज्ञानी, सांसारिक या सन्यासी सवको अपने मोहपाश में इतने बुरे तरह से फँसा कर रक्खा है कि उसके प्राप्ति के लिये वह सदैव चिंतित हो घोर प्रयत्न करता, सव सुखों का त्याग करता और ईश्वर का सदैव चिंतन करता है। परन्तु इतने पर भी यश न मिला तो वह घोर पाप कर्म करने के लिये उद्यत हो जाता है। इतना ही नहीं किन्तु अनेक प्रसंग पर अपने प्राण की वाजी लगाकर अपनी जीवनयात्रा समाप्त कर वैठता है। लक्ष्मी में इतनी प्रचण्ड व अद्वितीय शक्ति वास करती है कि मनुष्य के पास उसका आगमन होते ही वह अविद्य हो तो विद्वान, दुर्गुणी हो तो सदगुणी, मूर्ख हो तो गुणवान, कुरूप हो तो सुस्वरूप एक ही क्षण में दिखने लगता है। सारांश "सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयंति"। यह प्रत्यक्ष प्रभाव दीखने लगता है। लक्ष्मी का महत्व इतने अधिक प्रमाण पर होने के कारण यदि प्रत्येक मनुष्य "मुझे कव धन मिलेगा" इसकी मार्ग-प्रतीक्षा या चिंतन करता हो तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु यह जानने के लिये जन्म-कुण्डली के सिवाय अन्य कोई साधन नहीं। यह प्रत्येक समंजस मनुष्य को मान्य करना पड़ता है। जन्म कुण्डलियों में कौन से ग्रह किन राशियों व भाव में स्थित होने से द्रव्य संचय व धनलाभ होना सम्भव है इसका विचार प्रथम करना चाहिये।

राशि	ग्रह	राशि	ग्रह
मेष	शु०, श०	तुला	र०, मं०
वृषभ	गु० शु०	वृश्चिक	बु० गु०
मिथुन	चं०, मं०	धन	शु०, श०
कर्क	र०, शु०	मकर	मं०, श०
सिंह	बु०	कुम्भ	गुरु
कन्या	चं०, शु०	मीन	म०, श०

उपर लिखे हुए नियोजित दो ग्रह उसी राशि में स्थित हों तो उत्तम फल, एक ग्रह हो तो मध्यम फल और एक भी न हो तो अनिष्ट फल मिलेगा, यह ध्यान रखने योग्य है। धनलाभ के विषय में राशि और ग्रह का विचार करते हुए यह भी सोचना चाहिये कि जन्म लग्न व राशि से शुभ या अशुभ भाव में वह स्थित है या नहीं क्योंकि लग्न से शुभ ग्रह ६-८-१२ के सिवाय अन्य भावों में हो तभी शुभ फल मिलना सम्भव है। जन्म राशि से द्वितीय भावों में शुभ ग्रह का स्थित रहना, लग्न से द्वितीय भाव में गुरु, शुक्र, और चतुर्थ भाव में गुरु, एवं अशुभ ग्रहों का ३-६-१०-११ भाव में होना, द्रव्य लाभ व संचय के लिये आवश्यक है।

सट्टा शर्यंत, लाटरी से धनलाभ योग :—

जन्म कुण्डली में १ रवि, मंगल, बुध, शुक्र, बलवान हो, २—रवि लग्न या जन्म राशि से ३-६-११ भाव में हो व शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो रेसेस से लाभ, ३—रवि लग्न व राशि से २-५-१० भाव में हो व सप्तमेश से दृष्ट हों व किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि न हो, ४—मंगल, बुध शुक्र अपने उच्च राशि में होकर २-४-५-९-१०-११ भाव में हो तो सट्टा से निरंतर लाभ ५—रवि चन्द्र, रवि बुध, चन्द्र मंगल, रवि शुक्र, रवि मंगल रवि बुध मंगल, शुक्र लग्नेश से युक्त व दृष्ट हों और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो विशेष लाभ होगा।

वेदान्त विद्या योग :—

केन्द्र या त्रिकोण में यदि गुरु स्थित हो तो मनुष्य वेदान्त का प्रेमी होता है।

ब्रह्मज्ञान योग :—

उच्च या स्वराशि का गुरु यदि १-६-८-१०-१२ भाव में हो व शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ब्रह्मज्ञानी होगा।

दारिद्र योग :—

१—पापग्रह ३-११ भाव में और शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण भाव के सिवाय अन्य भाव में हो।

२—बुध, गुरु, शुक्र केन्द्र भाव में न हो और मंगल दशम में न हो।

३—तीसरे, नवें, दसवें व ग्यारहवें भाव के स्वामी निर्बली हों।

४—केन्द्र में शुभ ग्रह न हो और एक भी ग्रह अपने स्वराशि मूल त्रिकोण या उच्च राशि का न हो।

५—तीन ग्रह जन्मकुण्डली में नीच के हों।

६—सब ग्रह चर राशि में हो।

७—केन्द्र में पाप ग्रह हों।

८—७-८-९-१० भाव में सब ग्रह हों।

९—राहु, केतु के सिवाय सब ग्रह क्रमशः तीन राशि में हो।

१०—उसी तरह दो राशि में हो।

११—१-२-४-७-१० भाव में पाप ग्रह हो।

१२—चन्द्र, मंगल परस्पर समसप्तक भाव में हो।

१३—धन भाव में शनि स्थित हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो चोरी से धन का नाश।

वैराग्य योग :—

१—चार भाव में बुध व १० वें भाव में शनि हो, २—दशमेश शनि से युक्त हो व दशम में स्थित हो, ३—दशम भाव में चन्द्र, बुध हो व शनि की दृष्टि हो। ४–१–९–११ राशि का केतु व्यय भाव में हो।

व्यभिचार योग :—

१—सप्तम में मंगल व पापग्रह की दृष्टि हो, २—शुक्र, मंगल से दृष्ट या युक्त हो, ३—सप्तम में शुक्र, शनि से दृष्ट हो। ४—सप्तम में मंगल, शनि, राहू उच्च राशि के हों, ५–१–२–५–६–७ भाव के स्वामी शुक्र या पाप ग्रह से युक्त हो। ६–लग्नेश व षष्ठेश शनि, मंगल से युक्त हो। ७–२–७ व १० भाव के स्वामी चतुर्थ में हो। ८–सप्तम भाव में चन्द्र पाप ग्रह से युक्त व दृष्ट न हो। ९–सप्तमेश मंगल से युक्त व दृष्ट हो।

चोर योग

१—षष्ठ भाव में मंगल, बुध बलवान हो, तथा शनि से दृष्ट हो तो वह चोर होगा। २ लग्न में मकर का मंगल और सप्तम में शनि हो तो राजदण्ड होगा। ३—लग्नेश पाप ग्रह से युक्त हो, नीच भाव में हों और तृतीयेश लाभ में हो तो चोर होगा। ४—लग्नेश पापग्रह हो व लग्न में पापग्रह स्थित हो व तृतीयेश नीच का हो तो वह चोरों का गुरु होगा। ५—लग्नेश व तृतीयेश नीच राशि और भाव में हो व नीच ग्रह से युक्त व दृष्ट हों तो चोर योग।

बन्धन योग

२–५–६–९–१२ इन भावों में से किसी भी भाव में पाप ग्रह हों तो बन्धन या कारागृहवास योग कहलाता है। दूसरे भाव में राहु, शुक्र योग, ६–१२ भाव में मंगल, शनि ७ वें भाव में तो बन्धन योग होगा। शुक्र नीच का हो तो अपराध होगा किन्तु बन्धन योग न होगा।

नीच कर्म योग

६वें स्थान में बुध, मंगल, मकर राशि में मंगल, सप्तम में शनि, लग्न में नीच ग्रह, लग्नेश नीच का होकर पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट या व्यय भाव में हो, तृतीयेश नीच का हो तो नीच मार्ग व चोरी से धन संपादन करेगा। कुण्डली में दो से अधिक नीच ग्रह या पाप ग्रह हो तो नीच बुद्धि या संगत से धन प्राप्त करेगा।

अनफा, सुनफा, व दुरुधरा योग

१—अनफा—जन्मकुण्डली में जिस स्थान में चन्द्र स्थित हो उसके अंतिम भाव यानि द्वादश भाव में रवि के सिवाय कोई भी ग्रह हो उसे अनफा योग कहते हैं। इस योग का मनुष्य धनवान, कीर्तिमान, सुप्रसिद्ध व सुखी होता है।

२–सुनफा–चन्द्र के अगले भाव यानि द्वितीय भाव में रवि के सिवाय कोई भी ग्रह हो तो उसे सुनफा योग कहते हैं। इस योग का मनुष्य राजआश्रित, सर्वसाधन सम्पन्न, ऐश्वर्यवान् व पराक्रमी होता है।

३–दुरुधरा–चन्द्र के द्वादश और द्वितीय भाव में सूर्य के सिवाय कोई भी ग्रह हो उसे दुरुधरा योग कहते हैं। इस योग का मनुष्य धन, धान्य, पशु, दास, दासी से सम्पन्न हो व उसे कुटुम्ब की मिलकियत प्राप्त होगी।

नाभस योग

सारावली व वृहज्जातक ग्रन्थों में नाभस योग का सविस्तार वर्णन किया गया है, किन्तु यहां मुख्य-मुख्य दो योगों का वर्णन करना हम आवश्यक समझते हैं। इस योग में कुछ शुभ और कुछ अशुभ योग भी हैं जिनका वर्णन नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—

१—लग्न व सप्तम भाव में सब ग्रह स्थित हो तो शकट योग। इस योग का मनुष्य गाड़ी भाड़े से चला कर अपनी उपजीविका साध्य करता है किन्तु वह रोगी होता है। उसकी स्त्री मानी, अन्दर एक बाहर दूसरे स्वभाव की, कृश, कृपण होती है और उसे पेट में दुःख का रोग होता है।

२—लग्न और चतुर्थ या चतुर्थ और सप्तम या सप्तम और दशम या दशम और लग्न, भाव में सब ग्रह हो तो गदा योग। फल—यह यज्ञकर्ता, धनवान किन्तु लोभी होगा।

३—लग्न, पंचम, नवम इन तीनों भावों में सब ग्रह हों तो शृंगाटक योग। फल—हमेशा सुखी, उदार स्वभाव व परोपकारी होगा।

४—चौथे व दसवें इन दो भाव में सब ग्रह हों तो विहंगम योग। फल—दलाली व कलह करना व वृत्ति निष्ठुर रहेगी।

५—लग्न के सिवाय किसी भी स्थान से ५–९ भाव में सब ग्रह हो तो हलयोग। फल—खेती बगीचा का काम करना।

६—लग्न द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ इन भावों में सब ग्रह हो तो यूपयोग। फल—धार्मिक, दाता, वेदान्ती, कृतज्ञ, सहनशील व प्रबुद्ध होगा।

७—चार से सात भाव तक सब ग्रह हों तो शरयोग। फल—हीन वृत्ति, निर्धन व सुखहीन होगा।

८—१०–११–१२–१ भाव में सब ग्रह हो तो दण्डयोग। फल—नीच वृत्ति व प्रियजनहीन होगा।

९—लग्न से सप्तम भाव तक प्रत्येक में एक एक ग्रह हों तो नौका योग। फल—कृपण, अस्थिर, सुखी व कीर्तिवान होगा।

१०—४–५–६–७–८–९–१० भाव में सब ग्रह क्रमशः हों तो कूटयोग। फल—असत्यभाषी व वन्धन होगा।

११—७–८–९–१०–११–१२–१ सब ग्रह क्रम से हों तो छत्रयोग। फल—वृद्धावस्था में सुखी होकर स्वजन को सुखी करेगा।

१२—दशम भाव से अगले छः भाव में सब ग्रह क्रमतः स्थित हो तो चापयोग। फल—जवानी में सुख प्राप्त व वृद्धकाल में स्त्रीसुख सिवाय सब सुख प्राप्त होगा।

१३—सब ग्रह सम राशि में हो तो समुद्र योग कहलाता है।

१४—सब ग्रह विषम राशि में हों तो चक्रयोग कहलाता है। इन दोनों योगों का मनुष्य राजा समान ऐश्वर्य प्राप्त होता है परन्तु एक ग्रह भी उच्च का होना चाहिये।

१५—सात ग्रह क्रम से सात स्थान में स्थित हो तो मालायोग कहलाता है।

१६—सात ग्रह क्रम से ६ स्थान में स्थित हों तो दामिनी योग कहलाता है।

१७—सात ग्रह क्रम से पाँच स्थानों में स्थित हों तो पाश योग कहलाता है।

१८—सात ग्रह क्रम से चार स्थान में स्थित हों तो केदार योग कहलाता है। यह चारो योग १५ से १८ तक का फल—वैभव, यश, परोपकार, बुद्धि आदि शुभदायी समझे जाते हैं।

१९—सात ही ग्रह तीन स्थानों में क्रम से हों तो शूल योग।

२०—सात ही ग्रह दो स्थान में क्रम से हों तो युग योग।

२१—सात ही ग्रह एक स्थान में क्रम से हों तो गोल योग। इन तीनों का फल अशुभ होता है और यह अशुभ योग कहलाते हैं। विपन्न स्थितिकारक होते हैं।

२२—सब ग्रह चार १–४–७–११ भाव में हों तो कमलयोग। फल—गुणवान्, प्रख्यात, कुशल हँसमुख व श्रीमान् होगा।

२३—सब ग्रह २–५–८–११ पणफर या ३–६–९–१२ आपोक्लिम भाव में हो तो सुख दुःख समान मिलेगा।

२४—दूसरे भाव से ८ भाव तक सब ग्रह स्थित हों तो उसे अर्धचन्द्र योग कहते हैं। फल—बहुजन को मान्य व व्यवहारदक्ष मनुष्य होता है।

२५—लग्न में चन्द्र या शनि, तृतीय में उच्च का शनि या वहीं मंगल हो, पंचम व नवम में स्वक्षेत्र का गुरु, मीन लग्न में गुरु या शुक्र, मेष राशि का रवि व मकर राशि का मंगल यदि हो तो मनुष्य लखपती होगा। राजा समान वैभव व सम्पन्न व गो, ब्राह्मण को पूज्य मानने वाला होगा।

केमद्रुम योग

१—जन्म समय में चन्द्रमा से बारहवें व दूसरे भाव में यदि एक भी ग्रह न हो तो उसे केमद्रुम योग कहते हैं। फल—लक्ष्मी से वियोग और उसे निर्धन बनाता है।

२—सूर्य से यदि चन्द्रमा १–४–७–१० केन्द्र भाव में स्थित हो तो वह पुरुष अल्प भाग्यवाला होता है।

३–यदि सूर्य से चन्द्रमा पणकर भाव अर्थात् २–५–८–११ भाव में हो तो वह पुरुष मध्यम भाग्यवाला होता है।

४—यदि सूर्य से चन्द्रमा आपोक्लिम ३–६–९–१२ भाव में हो तो वह पुरुष उत्तम भाग्यवाला होता है।

५—यदि चन्द्रमा को सम्पूर्ण ग्रह देखते हों तो केमद्रुम योग को भंग कर मनुष्य को सम्पूर्ण सुखी बनाकर चिरंजीवि बनाता है।

६—चन्द्रमा से केन्द्र १–४–७–१० भाव में यदि सब ग्रह स्थित हों तो केमद्रुम योग को नष्ट कर वह कल्पवृक्ष के समान और श्रेष्ठ फल देने वाला होता है।

७—जन्म समय चन्द्रमा यदि मेष राशि में हो, मंगल व गुरु तुलाराशि में और सूर्य कन्या राशि मे हो तो उसे राजयोग का फल मिलना निश्चित है।

अरिष्ट मरण योग

१—जन्म लग्न से अष्टम स्थान में गुरु, मेष या वृश्चिक राशि का स्थित हो और सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि की या इनमें से एक भी ग्रह की दृष्टि हो व शुक्र की दृष्टि न होवे तो ऐसे योग का बालक शीघ्र मरण पाता है।

२—जन्म समय चन्द्र यदि ६–८ भाव में हो और इस स्थान पर पाप ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक की तत्काल मृत्यु समझना।

३—सूर्य या चन्द्र राशि में जन्मे हुए बालक की जन्मकुण्डली में यदि १–४–७–१० व ५–९ भाव में पापग्रह स्थित हो व ६–८–१२ में शुभ ग्रह भी हो तो बालक की शीघ्र मृत्यु समझना।

४—जन्म समय चन्द्र दो पाप ग्रहों के मध्य में हो और अन्य ग्रह ४–७–८ भाव में हो तो शीघ्र मृत्यु समझना।

५—जन्म समय पाप ग्रह १ या ८ भाव में हो और क्षीण चन्द्र १२ वें भाव में हो व शुभ ग्रह केन्द्र १–४–८–१० में न हो तो बालक की तत्काल मृत्यु जानना।

६—जन्म समय सूर्य, मंगल, शनि यह तीनों ग्रह ८ भाव में हो तो एक मास में मृत्यु जानना।

७—पापग्रह ६–८ भाव में हो व उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो एक वर्ष में मृत्यु जानना।

८—पापग्रह युक्त लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु एक मास में होगी।

९—लग्नेश से आठवें स्थान में क्षीण चन्द्र हो व उस पर पापग्रह की दृष्टि हो तथा शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो दो वर्ष में बालक की मृत्यु जानना ।

१०—केन्द्र १-४-७-१० में वक्री शनि हो और वह स्थान मंगल की १-८ राशि का हो व बलवान मंगल की उस पर दृष्टि हो तो तीन वर्ष में बालक की मृत्यु होगी ।

११—यदि कर्क राशि का बुध ६-८ भाव में हो व चन्द्र की दृष्टि हो तो मृत्यु चौथे वर्ष में होगी ।

१२—जन्म समय यदि बुध, गुरु, शुक्र या मंगल, शुक्र, शनि तीन ग्रह चन्द्र से युक्त होवे तो बालक की मृत्यु पांच वर्ष में होगी ।

१३—जन्म समय रवि, मंगल, शनि लग्न में हो और क्षीण चन्द्र ७ वें भाव में हो तथा गुरु से अदृष्ट हो तो मृत्यु सातवें वर्ष में होगी ।

१४—सूर्य, चन्द्र युक्त बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो ग्यारहवें वर्ष मृत्यु समझना ।

१५—राहु सप्तम भाव में हो व रवि, शनि की उस पर दृष्टि हो तो बारह वर्ष में मृत्यु समझना ।

१६—उपर लिखे हुये अरिष्ट योगों में यदि चन्द्र सिंह राशि में हो तो मृत्यु पांचवें वर्ष, तुला राशि में हो तो चौथे वर्ष, मेष राशि में हो तो आठवें वर्ष, मीन राशि में हो तो दसवें वर्ष, मकर राशि में हो तो बीसवें वर्ष, धन राशि में हो तो अट्ठारहवें वर्ष, कुम्भ राशि में हो तो इक्कीसवें वर्ष, कर्क राशि में हो तो बाईसवें वर्ष, वृश्चिक में हो तो तेईसवें वर्ष के पश्चात् मृत्यु समझना चाहिये ।

द्विग्रह योग फल

१—रवि, चन्द्र योग—कार्यकुशल, कपटी, यंत्रादि की रुचि वाला होगा ।

२—रवि, मंगल योग—पुरुषार्थी, शीघ्र क्रोधी, साहसी, उद्धत होगा ।

३—रवि, बुध योग—शास्त्रज्ञ, प्रियवक्ता, संपत्तिमान्, दास वृत्ति ।

४—रवि, गुरु योग—मंत्री, सम्पन्न, चतुर व परोपकारी ।

५—रवि, शुक्र योग—गायन-वादन का शौकीन व शास्त्राभ्यासी ।

६—रवि, शनि योग—व्यापारी, गुणज्ञ, धन संपन्न, श्रद्धावान ।

७—चन्द्र, मंगल योग—कुटिल, पराक्रमी, कलहप्रिय, माता-पिता विरोधी ।

८—चन्द्र, बुध योग—सुन्दर, दयालु, नम्र, उत्तम वक्ता ।

९—चन्द्र, गुरु योग—अत्यन्त कारस्थानी, लोकोपकारी, कार्यनिमग्न ।

१०—चन्द्र, शुक्र योग—चतुर व्यापारी, व्यसनी, सुगंधी चीजों का शौकीन ।

११—चन्द्र, शनि योग—दुर्वतनी, आलसी, अनेक स्त्रियों को संभोग करने वाला।
१२—मंगल, बुध योग—वैद्य, ज्ञानी, व्यापारी, स्त्रीलोलुप।
१३—मंगल, गुरु योग—मंत्र शास्त्रज्ञ, कुशल व श्रेष्ठ।
१४—मंगल, शुक्र योग—स्त्रियों का शौकीन, विलासी, गर्विष्ट, जुगारप्रिय।
१५—मंगल, शनि योग—अन्याय से द्रव्य प्राप्ति करने वाला, कलहप्रिय सुखरहित।
१६—बुध, गुरु योग—उदार, प्रसन्न चित्त, संगीतज्ञ, नीतिमान्।
१७—बुध, शुक्र योग—कुटुम्बपालक, गुणी, अधिक बोलने वाला।
१८—बुध, शनि योग—चंचल स्वभाव, कलहप्रिय, दयालु।
१९—गुरु, शुक्र योग—सर्व प्रकार से सुखी व विद्वान।
२०—गुरु शनि योग—शूर, यशस्वी, गाँव में श्रेष्ठ संपत्तियुक्त।
२१—शुक्र, शनि योग—कला में कुशल, उत्तम शरार, मल्लविद्या निपुण।

त्रिग्रह योग फल

१—रवि, चन्द्र, मंगल योग—शूर, यंत्रविद्या में निपुण व पापी होगा।
२—रवि, चन्द्र, बुध योग—साहसी, तेजस्वी, मुत्सदी।
३—रवि, चन्द्र, गुरु योग—मायालू, क्रोधी, सुबुद्ध, प्रवासी।
४—रवि, चन्द्र शुक्र योग—शास्त्रों में निपुण, परधनाभिलाषी।
५—रवि, चन्द्र, शनि योग—निर्धन, कलहप्रिय, परतंत्र।
६—रवि, मंगल, बुध योग—पुत्र व धनहीन, निष्ठुर, साहसी, मल्ल।
७—रवि, मंगल, गुरु योग—सत्यभाषी राजमन्त्री, वक्ता।
८—रवि, मंगल, शुक्र योग—नेत्र रोगी, सुदैवी, कुलीन।
९—रवि, मंगल, शनि योग—निर्धन, रोगी, अविचारी।
१०—रवि, बुध, गुरु योग—श्रीमंत, नेत्र रोगी, कवि, कुशल।
११—रवि, बुध, शुक्र योग—प्रवासी, वाचाल, स्त्री में विषयासक्त।
१२—रवि, बुध, शनि योग—दैवहीन, सबों से त्यक्त, उदास वृत्ति।
१३—रवि, गुरु, शुक्र योग—राज्यमंत्री, शूर, द्रव्यहीन, पूज्य।
१४—रवि गुरु, शनि योग—निर्भय, स्त्रीपुत्र व मित्र सुख युक्त, सुखी, स्वजन त्यक्त।
१५—रवि, शुक्र, शनि योग—शत्रु से भयभीत, दुराचारी।
१६—चन्द्र, मंगल, बुध योग—मित्रहीन, नीच वृत्ति, त्रस्त, दुखी।
१७—चन्द्र, मंगल, गुरु योग—स्त्रीलंपट, चोरी करने की सदा वृत्ति।
१८—चन्द्र, मंगल, शुक्र योग—प्रवासी, स्त्री व मातृ सुख का प्रभाव साधारण।
१९—चन्द्र, मंगल, शनि योग—तिरपट स्वभाव, लोगों में अप्रिय, बचपन में मातृनाश।

२०—चन्द्र, बुध, गुरु योग—तेजस्वी, धन, पुत्र, कीर्ति युक्त, सुखी, भाग्यवान।

२१—चन्द्र, बुध, शुक्र योग—विद्वान, सौम्य स्वभाव, धनलोभी।

२२—चन्द्र, बुध, शनि योग—पूज्य, स्वतंत्र, अस्वस्थ।

२३—चन्द्र, गुरु, शुक्र योग—कलाकुशल, बहुश्रुत, सदाचरणी व सुशील माता का पुत्र।

२४—चन्द्र, गु , शनि योग—ग्रामाध्यक्ष, निरोगी, शास्त्रज्ञ।

२५—चन्द्र, शुक्र, शनि योग—भाग्यवान, लेखक, सुखी।

२६—मंगल, बुध, गुरु शनि योग—धनवान, कवि, सुशील पत्नी वाला।

२७—मंगल, बुध, शुक्र योग—दुष्ट, उत्साही, विकृत अंग।

२८—मंगल, बुध, शनि योग—प्रवासी, सेवक, सुखी, मुखरोगी।

२९—मंगल, गुरु, शुक्र योग—राजप्रिय, सुविद, स्त्री व पुत्र सुखी।

३०—मंगल, गुरु, शनि योग—नीच वृत्ति, निर्दयी, लोगों से अनादर।

३१—मंगल, शुक्र, शनि योग—प्रवासी, सुखहीन।

३२—बुध, गुरु, शुक्र योग—शत्रुजित्, सदाचरणी, सत्पुत्रवान।

३३—बुध, गुरु, शनि योग—धन व ऐश्वर्यवान्, साधु वृत्ति।

३४—बुध, शुक्र, शनि योग—धूर्त, कुशल, स्वदेश भक्त।

३५—गुरु, शुक्र, शनि योग—कीर्तिमान्, सुशील, सुखी, भाग्यवान्।

चार ग्रहों की युति

१—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध योग—संसार कार्य में चतुर, रोगी, कपटी, लेखक।

२—रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु योग—बुद्धिमान, कीर्तिमान, दयालु, परोपकारी।

३—रवि, चन्द्र, मंगल, शुक्र योग—स्त्री, संतति व संपत्तियुक्त, विद्वान, कुशल, कृपालु।

४—रवि-चन्द्र, मंगल, शनि योग—प्रवासी, चंचल नेत्र, निर्धन।

५—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु योग—उदार, गुणवान, स्त्री-संतति-संपत्ति युक्त।

६—रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र योग—वक्ता किन्तु व्यग्र।

७—रवि, चन्द्र, बुध, शनि योग—निर्धन, कृतघ्न।

८—रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र योग—राज्यपूज्य, भोगी, वन में प्रवास।

९—रवि, चन्द्र, गुरु, शनि योग—वेश्याप्रिय, बहुत पुत्रवान्।

१०—सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि योग—लड़की से धन प्राप्ति, निर्बल, डरपोक।

११—रवि, मंगल, बुध, गुरु योग—विवाहित, धनवान, प्रवासी, बलवान, नेत्र रोगी, संकट भोगने में प्रवीण।

१२—रवि, मंगल, बुध, शुक्र योग—परस्त्रीरत, चोरीप्रिय।

१३—रवि, मंगल, बुध, शनि योग—नीचकृत्य, भोगी, सेनापति ।

१४—रवि, मंगल, गुरु, शुक्र योग—प्रख्यात, पूज्य, धनवान ।

१५—रवि, मंगल, शुक्र, शनि योग—दुष्टकर्मों का नेता ।

१६—रवि, मंगल, गुरु, शनि योग—निर्धन, भ्रमिष्ट ।

१७—रवि, बुध, गुरु, शुक्र, शनि योग—धनवान, कीर्तिमान ।

१८—रवि, बुध, गुरु, शनि योग—बुरा आचरण, लड़ाकू ।

१९—रवि, बुध, शुक्र, शनि योग—सत्यभाषी, सदाचारी ।

२०—रवि, गुरु, शुक्र, शनि योग—कलाकुशल, नीचों का नेता ।

२१—चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु—मुत्सद्दी, कवि, राजप्रिय ।

२२—चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र—रूपहीन, सुखी, ज्ञाता, उत्तम स्त्री-पुत्र युक्त ।

२३—चन्द्र, मंगल, बुध, शनि—शूर, दत्तक, स्त्री-पुत्र-सुखी ।

२४—रवि, मंगल, गुरु, शुक्र—झूठ का सच व सच का झूठ करने वाला, द्रव्य-लोभी, निद्राप्रिय ।

२५—चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि—स्थिरबुद्धि, पण्डित, सुखी ।

२४—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र—बहिरा, धनवान, विद्वान ।

२७—चन्द्र, बुध, गुरु, शनि—अति विद्वान, आप्तप्रिय, धार्मिक वृत्तिवाला ।

२८—चन्द्र, बुध, शुक, शनि—परस्त्रीरत, द्वेषी ।

२९—चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि—श्रद्धाहीन, प्रथम सुखी अनंतर दुखी ।

३०—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—निंदित, धनवान ।

३१—मंगल, बुध, गुरु, शनि—रोगी, निर्धन ।

३२—बुध, गुरु, शुक्र, शनि—धनवान, गुणवान ।

पाँच ग्रहों की युति

१—रवि, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु—युद्धकुशल, शक्तिमान् परन्तु मूर्ख ।

२—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र—परोपकारी, उपयोगी, बंधुहीन, परधर्म में श्रद्धा ।

३—रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि—स्वस्त्रीप्रिय ।

४—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि—स्त्री-पुत्रहीन, अल्पायुषी ।

५—रवि, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि—परस्त्रीरत, पापी ।

६—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र—धन, कीर्ति, बलवान, अधिकारी ।

७—रवि, चन्द्र बुध, गुरु, शनि—डरपोक, पापी, उग्र स्वभाव, परान्नप्रिय ।

८—रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि—निर्धन, पुत्रहीन, रोगों से पीड़ित शरीर वाला ।

९—रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि—शत्रुभय, निर्भयी, वक्ता ।

१०—रवि, मंगल, बुध, गुरु, शनि—द्रव्यहीन ।

११—रवि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—परस्त्रीरत, सेनापति, सैन्य व घोड़ों का अधिकारी, आनन्दी।

१२—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—कलाकौशलप्रवीण, पूज्य, रोगी।

१३—रवि, मंगल, बुध, शुक्र, शनि—संकट-दुख—रोगयुक्त।

१४—चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि—मूर्ख, चोर, निर्धन।

१५—रवि, मंगल, बुध, गुरु, शनि—मंत्रविद्या में सदा निमग्न।

१६—रवि, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—धार्मिक, ज्ञानी, गुरु व देवभक्त, सुशील, शास्त्री।

१७—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, भौम—विद्वान्, धन—धान्य—सुखी, साधु।

१८—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—राजा समान सदा सुखी व सर्वत्र पूज्य।

छ ग्रहों की युति योग

१—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—स्त्री-पुत्र-युक्त, संपत्तिवान्, तीर्थयात्राप्रिय।

२—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि—परदेशवासी, भ्रमिष्ट, घूमा हुआ शिरवाला।

३—रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि—उत्तम बुद्धि किन्तु भटकने वाला।

४—चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—धार्मिक वृत्ति, तीर्थयात्रा करने वाला।

५—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि—पुत्रहीन, चोर, मूर्ख, परस्त्रीगमन, विदेश वास।

६—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि—नीच, निंद्य, क्षय व पीनस रोगी।

७—रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि—स्त्री-पुत्र-धन से सदा दुखी।

ग्रहों के शुभाशुभत्व का विचार

आकाशस्थ नवग्रहों में से चार ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ माने गये हैं और पाँच ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहू, केतू ये अशुभ ग्रहों की श्रेणी में गिने जाते हैं। शुभ ग्रहों के संख्या की अपेक्षा अशुभ ग्रहों की संख्या अधिक होने के कारण इस जगत में मनुष्य को सुख की अपेक्षा दुःख अधिक प्रमाण पर मिलना स्वाभाविक है। सुख-दुख, हानि-लाभ, यश—अपयश, अनुकूल-प्रतिकूल समय का परस्पर सम्बन्ध इतना घनिष्ट है कि एक के सिवाय दूसरे का अस्तित्व इस जगत में रहना अशक्य है। सुख यह पूर्वजन्म के पुण्यकर्मों का फल व दुख यह पापकर्मों का फल है यह सर्वविदित है परन्तु सुख या दुःख भोगते समय मनुष्य यदि अपना चित्त स्थिर रख धर्म व कर्म से च्युत न हो, ईश्वर के प्रति अटल श्रद्धा व विश्वास रखता हो तो उसे शीघ्र ही ज्ञात होगा कि यह चक्र रवि-उदय व रवि-अस्त के समान क्षणिक है। मनुष्य को चाहिये कि वह किसी

भी परिस्थिति में क्यों न हो, वही शान्ति व आनन्द के साथ अपना कर्त्तव्य कर्म करता रहे, क्योंकि विश्वास के बिना सुख की प्राप्ति आगे होना अशक्य है। इस सम्बन्ध में महान ईश्वरभक्त श्रीतुलसीदासजी ने कहा है :—

कोई तन से कोई मन से कोई चिन्ता-चित्त-उदास।
थोड़े-थोड़े सब दुखी सुखी राम के दास॥

जो सज्जन सुख-दुख की इस परिभाषा से परिचित हों उन्हें प्रत्येक परिस्थिति में अपना आयुष्य शांति, समाधान व सुख से क्रमण करना सहज है। दुःखदायक परिस्थिति को भोगते समय प्रत्येक मनुष्य को यह समझना चाहिये कि पूर्वजन्म में किये हुए पापकर्मों के फल नष्ट हो रहे हैं और वर्तमान आयुष्य में ऐसा कुकर्म न करे जिससे उसे अगले जन्म में इस प्रकार की यातना भोगने का पुनः प्रसंग आवे। इन विचारों को कार्य रूप में लाने से उसका चित्त सदा ईश्वर का स्मरण करने की ओर जाना स्वाभाविक है। अन्त में इस दुःखमय संसार से विरक्त हो, दुःख यह ईश्वर प्राप्ति का उत्तम व श्रेष्ठ साधन है यह असमंजस मनुष्य को मानना होगा क्योंकि इसी मार्ग से उसका भविष्य उज्ज्वल होना सम्भव है। मनुष्य को चाहिये कि इनके क्षणिक प्रभाव से प्रभावित न होकर उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर की ओर अपना तन-मन अर्पण करते हुए वर्तमान कष्ट को सहर्ष भोगने का प्रयत्न करे। सुख-दुःख परिस्थिति का यही श्रेष्ठ सदुपयोग उसे समझना चाहिये क्योंकि प्राचीन विद्वान व परम ईश्वर भक्तों ने कहा है कि—

१—भगवान ने दी जो परिस्थिति वही साधन रूप है।
विश्वास करके उसे वरतो फल महान अनूप है॥
२—विश्वासहीन मनुष्य को सर्वत्र अन्धा कूप है।
विश्वास से ही मिलते हरी विश्वास प्रभु का रूप है॥

शरीर के भिन्न भागों पर नवग्रहों का प्रभाव

१—रवि का अधिकार—हृदय व उसके धमनी, पुरुष की दाहिनी आँख व स्त्री की बायीं आँख, नेत्र रोग, मूर्च्छा, पांव दर्द, ज्वर, पितासुख व वैद्यक विद्या की रुचि रवि के अधिकार से प्राप्त होता है। सप्तम भाव में रवि हो तो सिर का भाग व आँखें बड़ी रहती हैं।

२—चन्द्र का अधिकार—मस्तक पर रहता है। अशुभ चन्द्र हो तो स्वभाव चंचल रहेगा। जन्म समय चन्द्र यदि ३-७-१०-११ राशि का हो तो मनुष्य दूरदर्शी, दृढ़-निश्चयी, विचारी, शोधक, बुद्धिमान, मेहनती, एकान्तवास-प्रिय व संशयी होगा। चन्द्र शुभ हो तो मनुष्य विश्वासपात्र, सभ्य, सत्वहृदयवाला होगा। वृषभ राशि का चन्द्र हो तो हठी स्वभाव का होगा। कृष्णपक्ष अष्टमी से शुक्ल प्रतिपदा तक जन्म पाने

वाले लोग डरपोक, उतावले, चंचल मति के, पश्चात्ताप करने वाले होते हैं। यदि चन्द्र क्षीण हो तो बीमार होना, कम और अधिक होना, सर्वस्व चन्द्र पर निर्भर है।

३—मंगल का अधिकार—मांस पर रहता है। मंगल यदि तृतीय भाव में या जन्मतः शुभ स्थान में हो तो मनुष्य साहसी, धाड़सी व मरदानी गुण, ऊँचा शरीर व नाक, आँखें लाल व रोगी, तामसी स्वभाव, आप मतलवी, वदला लेने की कुबुद्धि, रवि युक्त मंगल या अनिष्ट मंगल से होती है। नीच भाव में मंगल हो तो वह अधर्मी, अन्यायी, निर्दयी होगा। ३–९ भाव में मित्र राशि या उच्च अंश का हो व शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह धनाढ्य होगा।

४—बुध का अधिकार—बुद्धि का मालिक है। वह पापग्रह से युक्त हो या शत्रु क्षेत्र में अकेला स्थित हो अथवा ४–८–१२ स्थान में हो तो बुद्धि में भ्रम, पागलपन, मन की अस्थिर स्थिति का विकार उत्पन्न करता है। लग्न में स्वगृहीत हो तो सुन्दर शरीर, विनोदी भाषण का होगा। वक्तृत्वशक्ति, वेदान्तज्ञान, ग्रन्थलेखन, गणित का ज्ञान बुध से प्राप्त होता है।

५—गुरु का अधिकार—ज्ञान शक्ति पर है। शुभ स्थान में यदि गुरु हो तो मनुष्य पुष्ट-देह, गौर वर्ण, उत्तम अवयव, काले और क्रूर, आँखें पानीदार होती हैं। पंचम में धन राशि का व नवम में मीन राशि का गुरु हो तो वह ग्रन्थकर्ता होगा। गुरु पाप ग्रह से दृष्ट हो तो स्थित स्थान का फल आधा देता है। ३–६–८–१२ इस भाव में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट गुरु हो तो वह गर्विष्ट वनाता है और अधूरी विद्या देता है जिसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

६—शुक्र का अधिकार—वीर्य, रेत, गर्भाशय, जननेन्द्रिय, फोड़ा, स्तन, कण्ठ आदि पर पड़कर उसी भाग में रोग उत्पन्न करता है। शुभ स्थान में शुक्र हो तो मनुष्य नाजुक देह, तेजपुन्ज पानीदार आँखें, क्षमाशील व चैनी स्वभाव, औषधि का ज्ञानी, गायन कला-प्रिय, मधुर आवाज का व मामूली संकट से घवड़ाने वाला होता है। शुक्र यदि शत्रु क्षेत्र नीच राशि पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह डरपोक, अविचारी, स्त्रीवश, दुष्कर्म करने वाला और धन स्थान में नीच का शुक्र हो तो नेत्र पीड़ा होना सम्भव है।

७—शनि का अधिकार—कमर, घुटने व स्त्रियों के गर्भाशय पर रहता है। शनि ६–८ स्थान में पापग्रह से युक्त हो तो वह जलोदर, अर्धांगवायु, अन्तर्गल, क्षय, दांत के विकारआदि रोग उत्पन्न करता है। स्त्रियों के कुण्डली में शनि पंचम भाव में अनिष्ट हो तो वांझपन, गर्भपात, अल्पायुसन्तान तथा पापग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो अनेक पुत्रों की प्राप्ति कराता है। पापक्षेत्र या लग्न या २–५–६ भाव में शनि हो तो मनुष्य उदास, एकान्त-वास, सुख-दुर्बल व सदा आपत्ति निर्माण करता है।

हमारे अल्प मत से प्रत्येक मनुष्य पूर्वजन्मों में किये हुए पुण्य व पाप कर्मों के फल को भोगने के लिये इस पृथ्वी पर जन्म पाता है और इन्हीं शुभाशुभ ग्रहों के आधार

पर वह माता के गर्भ में शरीर धारण करते समय रूप-रंग, गुण-स्वभावयुक्त जन्म लेता है। ग्रहों का प्रभाव यदि माता के गर्भ समय ही उसे मिलना निश्चित है तो उस पर जन्म लेने के पश्चात् ग्रहों का प्रभाव नहीं पड़ता ऐसा समझना कहाँ तक सयुक्तिक होगा इसका विचार पाठकगण स्वयं कर सकते हैं। मनुष्य प्राणी स्वतंत्र होते हुये भी वह स्थिति के फेरों में पड़ने पर परतंत्र वन बैठता है यह निर्विवाद है। पूर्वजन्म में किये हुए अनेक शुभाशुभ फल भोगने के हेतु, वर्तमान जन्म में प्रारब्ध के रूप में वह जन्म लेते समय अपने साथ लाता है यह भी निश्चित है परन्तु दुष्कर्मों के फल दुष्ट प्रारब्ध का प्रतीक होने के कारण, उसे घटाने के लिये प्रयत्न करना आवश्यक है। प्रारब्ध का भोग हटाना मनुष्य के लिये असम्भव है किन्तु प्रयत्न के वल से उसे घटाना सम्भव है। अनेक प्रसंग पर सोया हुआ प्रारब्ध प्रयत्न के वल से जागृत किया जा सकता है यह कर्म सिद्धान्त का तत्व है और महाभारत में श्रीकृष्ण भगवान् ने इस सम्वन्ध में कहा है। महामुनि वशिष्ठ जी ने भी श्रीरामचन्द्र प्रभु को योगवाशिष्ट में वोध किया है इससे प्रयत्न की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। प्रवल प्रारब्ध की मर्यादा उल्लंघन करना कठिन है क्योंकि वह जीवात्मा के कर्म का फल है परन्तु यह प्रयत्न पूर्वजन्म के दुष्टकर्म के अपेक्षा यदि अधिक जोरदार हुआ तो उसके दुष्परिणाम को घटना सम्भव है। ऐसे परिस्थिति में प्रत्येक समंजस मनुष्य को चाहिये कि वह शास्त्रोक्त उपाय करने का यथाशक्ति प्रयत्न करे ताकि वह अपना जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत कर सके। ज्योतिषशास्त्र के फलित पर हमारा विश्वास नहीं ऐसे कहनेवालों की संख्या वर्तमान समय में अधिक है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु विपरीत परिस्थिति के फेरों में पड़कर वह अविश्वासी होने पर भी उसके दुष्परिणामों से बचने के लिये उन्हीं ज्योतिषज्ञ के वताये हुये उपायों को कार्य रूप में लाने का भरसक प्रयत्न करते हुए दिखाई देता है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि दुष्कर्मों के दोष को वह प्रयत्न केवल घटा सकता है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे उन शास्त्रोक्त उपायों का अवलम्बन शीघ्र ही करना आरम्भ करे जिससे सुख मिले।
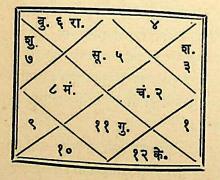
राज योग

राज योग
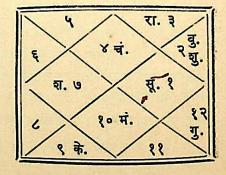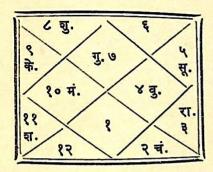
धन योग

धन योग
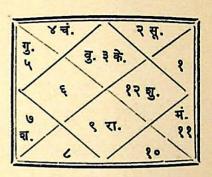
भाग्यवान योग

भाग्यवान योग

धनहीन योग

अचानक द्रव्यलाभ योग

भ्रातृसुख योग
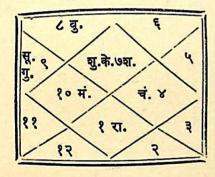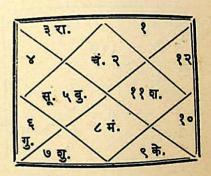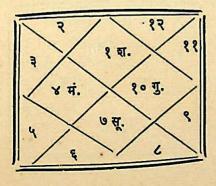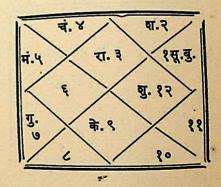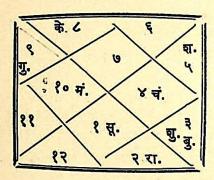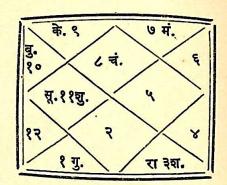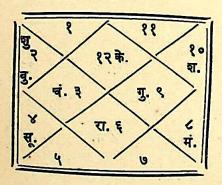
भ्रातृसुखनाश योग

मातृसुख योग

मातृसुखनाश योग
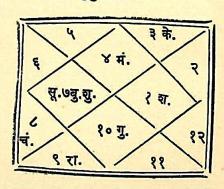
पितृसुख योग
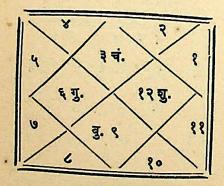
पितृसुखनाश योग
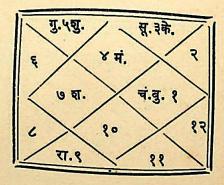
ग्रहों का योग

१—गुरु शनि का केन्द्र योग हो तो मनुष्य कष्ट में आयुष्य वितावेगा; व ध्येय-साधन के लिये उसे वहुत श्रम करना पड़ेगा, साथ ही वहुत समय भी लगेगा। परन्तु शनि, गुरु के दशम स्थान में यदि हो तो वह सुप्रसिद्ध पुरुष होगा।

२—गुरु से शनि यदि चतुर्थ भाव में होवे तो उसे पुत्रसुख मिलना कठिन जानना।

३—गुरु शनि का षडाष्टक योग हो तो वह वेफिक्र हो, उसके कार्य में अनेक वाधा उपस्थित होना निश्चित है।

४—वुध-हर्षल का समसप्तक योग हो तो वह विचित्र स्वभाव का होगा। स्वतंत्र विचार का एवं दूसरे के मतों का परवाह न करेगा।

५—शुक्र-हर्षल का त्रिकोण हो तो वहुत स्नेही, प्रेम विवाह की रुचि, अनेक लोगों से मित्रता, ललितकला का व्यसनी होगा।

६—गुरु नेपच्यून का त्रिकोण योग यदि हो तो भक्तिमार्ग, भावनाप्रधान, फुर्ती से काम करने वाला, समाज कल्याण कार्य में रुचि व हस्त-कौशल-कला में निपुण होगा।

७—वुध-मंगल केन्द्र योग में हो तो शीघ्र क्रोधी, धैर्यवान्, दूसरों को दोषी ठहराने वाला, दूसरों से तिरस्कृत होना, झूठे वात करने वाला समझा जायेगा।

८—शनि-नेपच्यून की युति या प्रतियोग हो तो उसकी गुप्त कृत्यों प्रसिद्ध होवेगी।

९—शुक्र-मंगल का षडाष्टक योग हो तो वह चैनी व खर्चिक होगा।

१०—शुक्र-शनि का त्रिकोण योग हो तो विरोधी विचार वाले से सहकार्य का योग होगा।

११—गुरु मंगल का केन्द्र योग, समसप्तक योग, अथवा युति हो तो पास में पैसा टिकेगा नहीं।

१२—चन्द्र-वुध की युति हो तो उत्तम स्मरणशक्ति वाला होगा।

१३—वुध-शनि युति हो तो वह कपटी दिल का, मन के अन्दर गांठ रखने वाला, बुद्धि का दुरुपयोग करने वाला और मन को अपने कब्जे में रखने वाला होगा।

१४—रवि, चन्द्र या लग्न से दशम में शनि-हर्षल हो तो ४२ से ४५ वर्ष के आयु में क्रांतिकारक योग आवेगा।

१५—रवि या चन्द्र के चतुर्थ में शनि हो तो उसके कर्तवगारी के आगे ही मृत्यु होगा।

१६—लग्न में वुध हो तो हँस कर वोलने वाला व कपड़ों में पैसा ज्यादा खर्च करने वाला होता है।

१७—लग्न में यदि शुक्र स्थित हो तो मनुष्य को पीला व सफेद रंग के कपड़ों की अधिक रुचि होती है।

१८—जन्म चन्द्र से गोचर का हर्षल भ्रमण करता हो तो मनुष्य के मन में एक क्रांति पैदा होती है।

१९—जन्म रवि से पाँचवाँ हर्शल हो तो उपासना में सिद्धि होती है।

२०—बुध-शुक्र की युति जन्मकुण्डली में हो तो मनुष्य की सांपत्तिक स्थिति सुधरती है।

२१—मंगल यदि शनि या हर्षल से दूषित हो तो स्नेह में विगाड़ उत्पन्न करेगा।

२२—रवि, मंगल का सुयोग जन्मकुण्डली में हो तो आत्मिक वल वढ़ाता है।

२३—वुध-गुरु का शुभ योग हो तो सन्त व सद्‌गुरु के भेट का लाभ होगा।

२४—जन्मकुण्डली में शुभ योग होते हुये यदि हर्षल ६–८–१२ भाव से भ्रमण करने पर मनुष्य को निर्वली समझना चाहिये।

२५—चन्द्र-नेपच्यून की युति या केन्द्र हो तो मनुष्य के मन में विस्मरण होना निश्चित है।

२६—रवि, चन्द्र या लग्न के द्वितीय या द्वादश स्थान में पापगृह स्थिति हो तो वह कर्ज में डूवा रहेगा।

२७—चन्द्र यह जन्मकालीन नेपच्यून के समीप भ्रमण करे तो भविष्य सूचक स्वप्न दिखाया करते हैं।

द्वादश भाव स्थान विचार

आकाश के वारह भाग को राशि व कुण्डली के बारह स्थान को भाव कहते हैं। अतः द्वादश भाव में द्वादश राशि का लिखा जाना अत्यन्त स्वभाविक है। परन्तु ग्रह ९+२ है और यह जिस राशि में जन्म समय स्थित हो उसी राशि में लिखे जाते हैं। अतः जन्मकुण्डली में कई राशि विना ग्रह के दिखाई देते हैं। जन्मकुण्डली के फलादेश वर्तते समय भाव प्रमुख साधन समझा जाता है और इसीलिये इसका विचार सर्वप्रथम किया जाता है। जन्मकुण्डली में भावों का क्रम नीचे लिखे अनुसार है।

द्वादशभाव के स्थान

द्विती.भा.
द्वाद.भा.
तृती. भा.
प्रथम भाव
एका. भा.
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भा.
अष्टम भा.

लग्न या जन्म कुण्डली
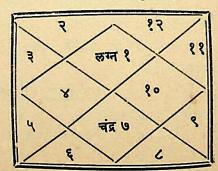
मनुष्य के जन्म समय जो राशि गणितशास्त्र के आधार पर सिद्ध की जाती है उसे प्रथम भाव में लिखने के पश्चात् क्रम से अगले एकादश राशि में अन्य एकादश भाव में लिखे जाते हैं। जैसे—मान लो कि किसी वालक का जन्म मेष लग्न में हुआ तो सर्वप्रथम मेष का अंक १ प्रथम भाव में व तत्पश्चात् वृषभ से मीन राशि के अंक शेष ग्यारह भाव में लिखे जाते है। इसके अतिरिक्त जन्म समय चन्द्र जिस राशि में स्थित हो उसे उस वालक की जन्मराशि कहते हैं और इसका ज्ञान सहज हो सके, इस हेतु इसे राशि कुण्डली के रूप में लिखने की प्रथा है।

राशि कुण्डली

जन्म दिवस चन्द्र तुला राशि में स्थित था, अतः राशि कुण्डली में तुलाराशि प्रथम भाव में लिखने के पश्चात् अन्य राशियों का उल्लेख शेष एकादश भावों में किया जाता है।

द्वादश भावों से अन्य अनेक बातों का वोध होता है और वह नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—
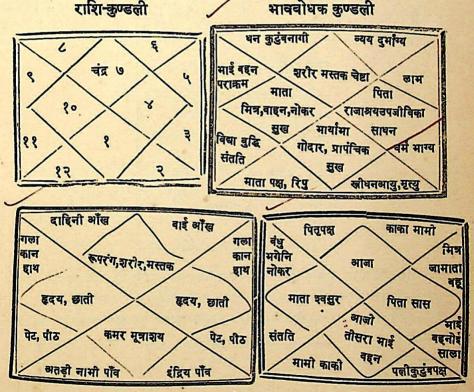
कुण्डली के द्वादश भाव से जन्म समय का विचार

सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है यह सभी जानते हैं वह दक्षिण में पहुँचने पर मध्यान्ह काल, पश्चिम दिशा में पहुँचने पर सन्ध्या काल व उत्तर दिशा में मध्य रात्रि

का काल समझा जाता है। सूर्य का भ्रमण लग्न से दाहिने दिशा की ओर अर्थात् दक्षिण, पश्चिम, उत्तर हुआ करता है। वह बारह भाव दो घण्टे की गति से भ्रमण करने के पश्चात् पुनः पूर्व से उदय होता है। सूर्य के इस गति से मनुष्य का जन्मकाल समय किसी भी पाठक को सहज में ज्ञात होगा इसमें सन्देह नहीं, नीचे लिखे हुये कुण्डली में रवि के स्थिति से यह सहज मालूम हो सकता है। जैसे :—

कुंडली के भाव
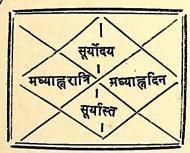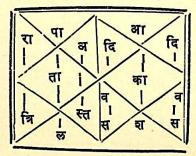
सूर्य गति से जन्म समय का ज्ञान
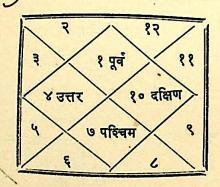
सूर्य यदि प्रथम भाव में हो जन्म समय सूर्योदव के समय से दो घण्टे तक इस भाव का भ्रमण पूरा करके दक्षिण दिशा की ओर से भ्रमण करता है। अर्थात्—

१—प्रथम भाव में सूर्य हो तो लगभग ६ से ८ वजे तक का प्रातःकाल समझना चाहिये।
२—द्वादश ,, ,, ,, ८ से १० ,, ,, ,, ,, चाहिये।
३—एकादश ,, ,, ,, १० से १२ ,, ,, ,, ,, चाहिये।
४—दशम ,, ,, ,, १२ से २ ,, ,, ,, ,, चाहिये।
५—नवम ,, ,, ,, २ से ४ वजे मध्यान्ह काल समझना चाहिये।
६—अष्टम ,, ,, ,, ४ से ६ ,, ,, ,, ,, ।
७—सप्तम ,, ,, ,, ६ से ८ वजे सूर्यास्त ,, ,, ।

८—षष्ट भाव में सूर्य हो तो लगभग ८ से १० बजे रात्रि काल समझना चाहिये।
९—पंचम ,, ,, ,, १० से १२ रात्रि समझना चाहिये।
१०—चतुर्थ ,, ,, ,, १२ से २ मध्यरात्रि समझना चाहिये।
११—तृतीय ,, ,, ,, २ से ४ रात्रि समझना चाहिये।
१२—द्वितीय ,, ,, ,, ४ से ६ प्रातःकाल समझना चाहिये।

इस रीति से किसी अज्ञ मनुष्य को जन्मकाल का लगभग समय सहज ही मालूम हो सकता है।

कुण्डली के भावों से अन्य बातों का ज्ञान
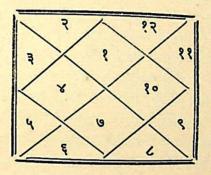
१—स्वभाव, इच्छा, धोखा, महत्वाकांक्षा।

२—कटु या मधुर वाचा, कौटुम्बिक जीवन।

३—हस्ताक्षर व खाने की रुचि।

४—स्थावर स्टेट, पितृधन, ऐश्वर्य, नौकर।

५—सट्टा, शर्यत, लाटरी, द्यूत, लाभ।

६—शरीर व प्रापंचिक क्लेश।

७—भागीदारी धन्धा, उत्कर्ष, अधःपात, दीवानी दावा।

८—स्त्रीधन लाभ, लाटरी, आत्महत्या, अधःपात, कल्पनातरंग।

९—समुद्र यात्रा, प्रवास।

१०—उपजीविका राजाश्रय, यशोपयश, वैभव।

११—मित्र, जमात, बहुसुख-दुख।

१२—ऋणग्रस्त स्थिति, अनिष्ट, धोखा।

द्वादश भाव से दिशाज्ञान

शरीर का भाग
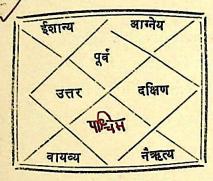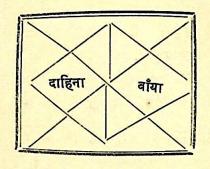
उपर लिखे हुये कुण्डलियों के द्वादश भाव में द्वादश राशि स्थित हैं परन्तु इन राशियों के स्वामी (ग्रह) केवल सात हैं। ऐसे स्थिति में अपने-अपने भाव (घर) का प्रबन्ध राशि (नौकर) के जिम्मेदारी पर छोड़ने के सिवाय दूसरा मार्ग नहीं। साथ ही यह प्रतिदिन का अनुभव मनुष्य को नित्य मिलता है कि यदि स्वामी (मालिक) की दृष्टि अपने भाव (घर व नौकर) पर न हो तो उस भाव का पूर्ण रूप से फल मिलना असम्भव है। इसके सिवाय स्वामी के मित्र की दृष्टि यदि उस मित्र भाव पर हो तो कुछ फल मिलना स्वाभाविक है। परन्तु शत्रु की दृष्टि उस स्थान पर हो तो उस स्थान का फल कुछ भी न मिलना स्वाभाविक है। हम प्रथम लिख चुके हैं कि सूर्य और चन्द्र को छोड़कर वाकी पांच ग्रहों को दश राशि का स्वामित्व प्राप्त हुआ। जैसे—

ग्रह—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	५	४	१-८	३-६	९-१२	२-७	१०-११

राहु व केतु उपग्रहों को राशि का स्वामित्व मिलना असम्भव था इसलिये वुध और गुरु ने मिथुन और धन अपने राशि पर क्रम से अधिकार दिया और ये इन उपग्रहों के उच्चराशि कहलाते हैं और राहु का स्वगृह कन्या व केतु का स्वग्रह मीन राशि है। अर्थात् राहू और केतु को कन्या व मीन राशि का स्वामित्व बुध व गुरु ने दिया और मिथुन व धन इन उपग्रहों के क्रम से उच्च राशि कहलाते हैं। इस तरह गुरु महाराज ने अपने दोनों राशियों पर (अर्थात् धन व मीन) पूरा अधिकार रखते हुये, केतु व नेपच्यून उपग्रह व ग्रह को क्रम से अधिकार देकर अपने दातृत्व शक्ति का परिचय अन्य ग्रहों को दिया व इसीलिये वह सब ग्रहों में श्रेष्ठ ग्रह माना जाता है। यह अद्वितीय दानशक्ति का उदाहरण गुरु महाराज ने अपने जाति (ब्राह्मण) के लोगों को देकर इस जगत में उन्हें श्रेष्ठ व अमर बनाया। यह ब्राह्मण जाति के लोगों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि दान के विना इस जगत में मान प्राप्त होना सर्वथा असम्भव है और अन्य दानों में विद्यादान सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। इसका विस्मरण इस जाति के लोगों

को कभी न करना चाहिये। इसका अनुकरण शनि ग्रह ने अपने कुम्भ राशि का स्वामित्व हर्शल ग्रह को देकर किया यह सर्वश्रुत है।

द्वादश भाव तथा उस भाव के राशि स्वामी अपने भाव में स्थित न हो या उसकी पूर्वदृष्टि अपने भाव (घर) पर न रहे तो उस भाव का फल राशि (नौकर) के मर्जी अनुसार मिलना स्वाभाविक है जिसका अनुभव अपने देशवासियों को अंग्रेजी राज्य के आरम्भ से मिलता आया है। राजा के गैरहाजिरी में राज्य का शासन जिस तरह नियोजित मंत्री के इच्छानुसार मिलना स्वाभाविक है उसी तरह ग्रह के गैर हाजिरी में राशि के फल का प्रभाव मिलना योग्य नहीं समझना चाहिये। परन्तु जैसे राजा की दृष्टि का फल अपने राज्य कारभार पर अथवा मालिक की दृष्टि का फल क्रम से अपने प्रजा या कुटुम्बियों को मिलता है वैसे ही ग्रहों के दृष्टि का फल उनके गुणधर्म स्वभावानुसार प्रत्येक मनुष्य को मिलना स्वाभाविक है। यह ध्यान में फलित वर्तते समय अवश्य रखना चाहिये।

जन्मकुण्डली यह मनुष्य के जन्म समय आकाशस्थ ग्रहों की गति और शुभाशुभ स्थिति के अनुसार मानवी जीवन में मिलने वाले शुभाशुभ घटनाओं का एक प्रत्यक्ष नक्शा है जिसके आधार पर मनुष्य को उसके सुख-दुःखादि का अनुभव व ज्ञान होना निश्चित है। हमारे शास्त्रज्ञों ने शास्त्रीय पद्धति के अनुसार द्वादश भावों का वर्गीकरण व उनके शुभाशुभत्व की योजना कितने विद्वत्ता पूर्वक की है कि जिसका महत्व व्यावहारिक दृष्टि से प्रत्येक मनुष्य को मिलना स्वाभाविक है। इस पर से ही उनके कुशलता व दूरदर्शित्व का परिचय पाठकों को ध्यान में सहज ही में आवेगा, इसमें सन्देह नहीं। मानवी जीवन सुखमय होने के लिये संसार में जिन साधनों की अधिक आवश्यकता है उसी क्रम से द्वादश भावों को महत्व दे उनका वर्गीकरण किया गया यह सुज्ञ पाठकों के ध्यान में आवेगा यह स्पष्ट है। जैसे—भावों के शास्त्रीय नाम।
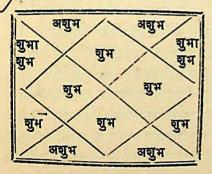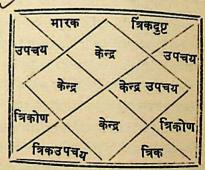
भावों के शुभाशुभत्व

१—केन्द्र स्थान १–४–७–१० भाव

२—पणफर ,, २–५–८–११ भाव

३—उपचय ,, ३–६–१०–११ भाव
४—चतुरस्त्र ,, ४–८ भाव
५—त्रिकोण ,, ५–९ भाव
६—त्रिक ,, ६–८–१२ भाव
७—मारक ,, २–७ भाव
८—आपोक्लिम स्थान ३–६–९–१२ भाव

शास्त्रीय नाम

बलवान ग्रह केन्द्र १–४–७–१० व त्रिकोण ५–९ में स्थित हों तो विशेष वलवान कहलाते हैं और उनका प्रभाव आयुष्य भर मिलता है परन्तु जन्म स्थान से चतुर्थ स्थान, चतुर्थ के अपेक्षा सप्तम स्थान, सप्तम से दशम स्थान क्रमशः अधिक बलवान होते हैं और इन स्थानों में शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति व दृष्टि युति के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य को शुभाशुभ फल आजन्म मिलना निश्चित है। चार राशि के ग्रहों का परिणाम विशेष, स्थिर राशि के ग्रहों का परिणाम मध्यम और द्विस्वभाव राशि के ग्रहों का अल्प प्रमाण पर फल मिलता है यह ध्यान में रखने योग्य है।

इस संसार में सांसारिक सुख हर व्यक्ति को मिलने के लिये १—शारीरिक सुख, ४—मातृ सुख, ७—भार्या सुख, १० पितृ सुख का साधन होना अत्यन्त आवश्यक है व इनके विना जीवन कितना कष्टमय समझा जाता है यह सर्वश्रुत है। इसी हेतु से शास्त्रकारों ने कुण्डली के १–४–७–१० स्थान को श्रेष्ठ व शुभ माना है क्योंकि दुनियां के सब सुखों के यह केन्द्र स्थान है। इसके साथ ही बुद्धि व अवकाश दोनों की अधिक आवश्यकता है। अतः ५–९ इन दो भावों को द्वितीय श्रेष्ठ व शुभ भावों की मान्यता दी गयी और उन्हें त्रिकोण भाव कहते हैं। यदि किसी महाशय ने ऐसा प्रश्न किया कि बुद्धि पंचम भाव के साथ अवकाश (भाग्य) भाव को समान महत्व देने का कारण क्या? जिसका उत्तर यह है कि मनुष्य के बुद्धि का विकास के लिये यदि उसे अवकाश ही न मिले तो क्या वह बुद्धि का यथार्थ उपयोग कर सकेगा? अर्थात् नहीं। इसी तरह अवकाश होते हुये भी यदि मनुष्य में बुद्धि न हो तो क्या उस अवकाश का यथार्थ उपयोग कर सकेगा? अर्थात् नहीं। तात्पर्य यह निकलता है कि इन दोनों भावों का परस्पर सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि एक के सिवाय दूसरे का उपयोग मनुष्य को करना अशक्य है। इसी कारण शास्त्रकारों ने इन दो भावों को जो समान महत्व दिया वह यथार्थ और स्तुत्य है। केन्द्र व त्रिकोण छः भावों को यदि श्रेष्ठ स्थान दिया गया तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। इन छः भावों के स्वामी अपने-अपने भाव या केन्द्र व त्रिकोण भाव में यदि स्थित हों तो वे अत्यन्त शुभ फलदायी व श्रेष्ठ माने जाते हैं क्योंकि मनुष्य को इनके प्रभाव के कारण परम सुख मिलना निश्चित है। इस सम्बन्ध में पाराशरी ग्रन्थ में कहा है कि :—

लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणं च विष्णुस्थानं च केन्द्रकम् ।
तयोः सम्बन्धमात्रेण राजयोगादिकं भवेत् ॥

अर्थात् त्रिकोण यह लक्ष्मी का स्थान और केन्द्र यह विष्णु का स्थान है। इनके स्वामी का परस्पर सम्वन्ध या योग इन्ही छः भावों में से किसी एक भाव में हो जाय तो वह श्रेष्ठ शुभ फलदायी व राजकारक योग समझा जाता है।

परन्तु केन्द्र के चार भाव १–४–७–१० में से सप्तम भाव मारक भाव होने के कारण केवल ४–१० भाव के स्वामी सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं। यह पाराशरी ग्रन्थ में लिखे श्लोक से सिद्ध होता है:—

पंचमं नवमं चैव विशेषं धनमुच्यते।
चतुर्थं दशमं चैव विशेषं सुखमुच्यते॥
चत्वारो राशयो भद्रा केन्द्रकोणशुभावहाः।
तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभोभवेत्॥

अर्थात् ४–५–९–१० इन चार भावों के स्वामी के परस्पर सम्वन्ध व योग होने पर ही पहले लिखे हुये श्लोक का फल अवश्य मिलेगा।

२—त्रिकोण भाव अर्थात् ५–९ भाव से ३रा पराक्रम व ११वां लाभ भाव निकृष्ट होने व इनका परस्पर सम्वन्ध होने के कारण इन भावों का विचार करना यहाँ आवश्यक है। ३–५–९–११ इन चार भावों का सम्बन्ध केन्द्र भाव के समान परस्पर घनिष्ट है क्योंकि बुद्धि, अवकाश (भाग्य), पराक्रम और लाभ के विना मनुष्य को इस दुनियां में सुख मिलना असम्भव है अर्थात् बुद्धि, अवकाश व पराक्रम के विना लाभ होना असम्भव है। पराक्रम बुद्धि पर और लाभ अवकाश पर निर्भर है यह स्पष्ठ सिद्ध होता है। तात्पर्य—पराक्रम और लाभ यह दोनों भाव कुछ अंश से परावलम्बी हैं। अतः शास्त्र-कारों ने इन्हें सामान्य भाव (उपचय) की संज्ञा दी तो कोई आश्चर्य नहीं।

३—मनुष्य को अपना जीवन सुख से क्रमण करने के लिये केन्द्र, त्रिकोण भावों के साथ ही पराक्रम व लाभ ३–११ भाव की भी उतनी ही आवश्यकता है व ऊपर लिखे अनुसार इस पर विचार किया गया है। अब बाकी रहे हुये २–६–८–१२ भावों का विचार करना आवश्यक है। प्रथम ६–८–१२ इन तीनों भावों का विचार करने से यह स्पष्ट ज्ञात होगा कि षष्ठ (रोग-रिपु) अष्टम (मृत्यु) और द्वादश (व्यय-खर्च) भाव है। खर्च, रोग व मृत्यु मानवी सुख के परम शत्रु हैं यह सभी को मान्य है। अतः शास्त्र-कारों ने इन तीनों भावों को यदि अशुभ भाव की संज्ञा दी तो उसे योग्य ही कहना चाहिये। रोग भाव से हर प्रकार के रोग होना व अष्टम भाव के स्वामी के प्रभाव से मृत्यु होना, उसी तरह द्वादश भाव के स्वामी से धन का खर्च होना यह सुख से जीवन क्रमण करने के लिये एक भारी आपत्ति मान्य की गयी है तो इसमें आश्चर्य नहीं।

४––ऊपर लिखे दस भावों का विचार करने के पश्चात् द्वितीय (धन) भाव का विचार करना भी अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि इस भाव से धन का बोध होता है। परन्तु धन का संचय होना यह १–४–३–११–५–९ के भाव के स्वामी पर सर्वस्व अवलंवित है। इतना ही नहीं किन्तु रोग व मृत्युसम पीड़ा आदि से छुटकारा पाने के लिये खर्च करने के पश्चात् जो धन शेष रह जाय तभी मनुष्य को द्वितीय भाव का फल मिलना सम्भव है। अन्यथा यह अशक्य होगा। शास्त्रकारों ने द्वितीय (धन) और सप्तम (भार्या) इन दोनों भावों को मारक भाव की संज्ञा दी। अतः इसका पूर्ण रूप से विचार करना आवश्यक है। सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर भी यही सिद्ध होता है कि धन (द्वितीय) और भार्या (सप्तम) यह दोनों भाव यथार्थ में मारक भाव हैं। क्योंकि मनुष्य के उत्कर्ष व सुख के लिये धन और स्त्री यह दोनों साधन यद्यपि अत्यन्त आवश्यक हैं तथापि अन्त में मृत्यु समय व दुःख के ये ही मुख्य कारण बन वैठते हैं यह भी उतना ही सत्य है। कनक और कान्ता ने अपने मोहपाश में इस तरह व्याप्त कर रक्खा है कि प्रत्येक संसारिक मनुष्य चाहे वह ज्ञानी हो या अज्ञानी इनके मोहपाश में इतने गहरे ढंग से फँस जाता है कि उसे इन दोनों के मोह से मुक्त होना असम्भव हो जाता है। इस संसार में इन दोनों वहिनों की माया की जड़ इतनी गहरी है कि इन्होंने विरक्त मनुष्य को भी आकर्षित कर अपने कब्जे में रक्खा है। फिर साधारण मनुष्य के विषय में क्या कहा जा सकता है। इन दोनों वहनों की लीला अगाध, अगम्य और अद्‌भुत है। जिसका वर्णन करने के लिये एक स्वतंत्र ग्रन्थ ही निर्माण करना होगा तथापि यहाँ इनके विषय में दो शब्दों में लिखना आवश्यक है। जैसे :––

१––धन के प्राप्ति के लिये इस जगत में ऐसा भला या बुरा कौन सा कर्म है जिसे वह नहीं करना चाहता, चाहे वह पुण्य या पाप कर्म क्यों न हो।

२––धन प्राप्ति के लिये इस जगत में ऐसा कौन सा मार्ग है जिसे मनुष्य स्वीकार करना नहीं चाहता, चाहे वह सत् या कुमार्ग क्यों न हो।

३––धन प्राप्ति के लिये जगत में ऐसा कौन सा स्थान है जहाँ मनुष्य नहीं जाना चाहता, चाहे वह देश हो या विदेश।

४––धन प्राप्त के लिये इस संसार में ऐसा कौन सा योग्य व अयोग्य पात्र है जिसकी मर्जी से संपादन करने के लिये मनुष्य भरसक प्रयत्न नहीं करता चाहे वह उत्कृष्ट या निकृष्ट पुरुष क्यों न हो।

सारांश यह कि मनुष्य धन प्राप्ति के लिये चाहे जो कर्म हो, मार्ग हो, स्थान हो, या पात्र हो स्वीकार करने के लिये सदैव तत्पर हो जाता है इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि लक्ष्मी की शक्ति मनुष्य के शक्ति से कई गुने अधिक है जिसके कारण उसका प्रचण्ड प्रभाव प्रत्येक मनुष्य पर पड़कर वह उसका नम्र दास ही नहीं किन्तु गुलाम बन जाता है। इसी तरह स्त्री भी अवर्णनीय है।

वर्तमान युग में हमारे देश में १—सौ में नव्वे मुकदमें स्त्री के कारण से ही देश के फौजदारी अदालतों में चल रहे हैं। २—इंगलैण्ड व अन्य राज्याधिकारियों ने स्त्री के मोहपाश में फंस कर अपने राज्य व सार्वभौम पद व सुखों को तिलांजलि दी यह सर्वश्रुत है। ३—इच्छित स्त्री की प्राप्ति व उससे विवाह न होने के कारण सैकड़ों नौजवानों ने जलसमाधि ले ली और प्रतिदिन ले रहे हैं। ४—स्त्री के मोहजाल में फंसकर सैकड़ों ने फांसी के तख्ते पर लटकने की प्रतिज्ञा की। ५—स्त्री के मोहजाल में पड़कर सैकड़ों नहीं हजारों एवं लाखों व्यक्ति जन्म देनेवाले माता-पिता को वेसहाय कर दूर कर देते हैं। ऐसे वहुत उदाहरण हैं। ६—स्त्री के मोहजाल में पड़ने के कारण दुर्जन लोग आप्तवर्ग लोगों के समान समझे जाते हैं और सज्जन लोग दुश्मन समझे जाते हैं। यह सर्वविदित है। स्त्री के प्रेमपाश में पड़कर अनेक समंजस लोगों की वुद्धि भ्रष्ट होकर वे अपने आयुष्य का सर्वनाश करते हुये दिखाई देते हैं।

५—ऐसे अनेक दुर्घटनाओं से यह सहज सिद्ध होता है कि कनक के समान कान्ता में भी एक अद्वितीय व अद्भुत शक्ति वास करती है कि जिसके प्रभाव से विद्वान् मनुष्य भी विचारशून्य होकर मूर्खों का शिरोमणि कहलाता है। तात्पर्य यह कि इन दोनों वहनों ने मनुष्य पर अपनी छाप इतने जोरों से जमाया है कि अधिकांश लोगों का इस दुनियां में नामों निशान गायव हो गया। इतना ही नहीं कई राष्ट्रों को अपनी कार्यक्षमता से वंचित होकर सदैव के लिये परतंत्रता की जंजीर में फँसाकर रक्खा है। इन कारणों से शास्त्रकारों ने कनक और कांता इन दोनों भावों को मारक भाव से सम्बोधित किया तो यह अनेक प्रगल्भ विचार एवं दूरदर्शिता का जीता-जागता उदाहरण है यह प्रत्येक समंजस मनुष्य को मान्य करना होगा। परन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि तृतीय पराक्रम और अष्टम आयुमर्यादा भाव के स्वामी पर द्वितीय और सप्तम (कनक व कान्ता) का प्रभाव अधिक न पड़कर उनपर वह ऐहिक व पारलौकिक विजय प्राप्त कर अपनी जीवनयात्रा शान्ति और सुख से व्यतीत करेगा। यह अनेक कर्मयोग व विद्वानों के जीवन चरित्र से सिद्ध हो चुका है जिनका स्मरण संसार से समंजस लोग प्रतिदिन कर रहे हैं।

१—लग्न—देह, रूप, शरीर, सिर, उदय	फारसी नाम—	अव्वलखाना
२—धन—अर्थ, नयन, कुटुम्ब, पितृधन, वाचा	,, ,,	जरखाना
३—तृतीय—पराक्रम, शौर्य, वंधु, भगिनी, कर्ण सहन	,, ,,	विरादरखाना
४—चतुर्थ—माता, वाहन, सुख, सुहृत	,, ,,	मादरखाना
५—पंचम—विद्या, वुद्धि, संतति, औरस पुत्र, स्मृति	,, ,,	अक़लखाना
६—षष्ठ—रोग, रिपु, मातृपक्ष, क्रोध, लोभ	,, ,,	दुश्मनखाना
७—सप्तम—स्त्री, पति, मद, काम, प्राण,	,, ,,	हमलखाना
८—अष्टम—क्लेश, विद्या, मृत्यु, आयुष्य	,, ,,	मौतखाना

९—नवम–भाग्य, धर्म तथा सुकृति फारसी नाम—तकदीरखाना
१०—दशम–कर्म व्यापार, उपजीविका, पिता, नौकरी, राज्याश्रय ,, ,, बादशाहीखाना
११—एकादश–लाभ, आय, मित्र प्राप्ति आदि ,, ,, आमदखाना
१२—द्वादश–हानि, खर्च, दुःख, क्षय, नाश ,, ,, खर्चखाना

द्वादश भावों से अनेक बातों का बोध व विचार

कुण्डली के प्रत्येक भाव अपने-अपने दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं और इन्हीं भावों के शुभ या अशुभ स्थिति, युति, दृष्टि के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को उसके आयुष्य में सदा सुख या दुःख भोगने का प्रसंग आता है यह सिद्ध हो चुका है। इन द्वादश भावों से नीचे लिखे हुये बातों का बोध होता है यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये तभी कुण्डली का फलित ठीक रीति से सम्भव है। जैसे :—

१—तनु स्थान—प्रथम स्थान—रूप-रंग, गुण-स्वभाव, मानसिक स्थिति, शरीर-सुख, आयुष्य, शरीर का बाधा, महत्वाकाँक्षा, इच्छा, मन का चंचलपन या स्थिरता, सत्यासत्य आचरण आदि।

२—धन स्थान—द्वितीय स्थान—मनुष्य की आर्थिक स्थिति, धनसंचय या नाश, प्रापंचिक सुख-दुख, कौटुम्बिक सुख-दुख, नेत्र, वाणी, वक्तृत्वशक्ति, गला, आप्तवर्ग का सुवर्ण-रत्नादि की प्राप्ति, पूर्वार्जित धन या जमीन लाभ, ऐश्वर्य, आर्थिक उन्नति या अवनति आदि।

३—सहज स्थान—तृतीय भाग—पराक्रम, साहस, महत्वाकांक्षा, भाई-बहन, नौकर का सुख-दुख, नजदीक का प्रवास, हस्ताक्षर, मित्रता, मीठा या खट्टा पदार्थ खाने की रुचि, औषधि, इच्छा आदि।

४—सुहृत स्थान—चतुर्थ भाव—मातृ सुख-दुख, माता का स्वभाव, स्थावर जायदाद, नौकर, वाहन सुख-दुख, पूर्वार्जित धन, गांव, मकान, भूमिगत लाभ, परोपकार के कार्य, मन की स्थिति, ऐश्वर्य, कीर्ति, आयुष्य का अन्तिम समय, सब प्रकार के दुःख या सुख का विचार आदि।

५—सुत स्थान—पंचम भाव—विद्या, बुद्धि, संतति से सुख-दुःख, संतति के वैभव गुण, रूप-रंग, स्वभाव, विद्यायोग, यांत्रिक विद्या, शास्त्रो में निपुणता, विद्वत्ता, राज-सम्मान, मंत्रसिद्धि, चातुर्यता, विचारशक्ति, लेखनशक्ति, ग्रन्थकर्ता, आकस्मिक धनलाभ, सट्टा, शर्यत, लाटरी आदि से लाभ व हानि, गर्भ, इच्छा आदि।

६—रिपु स्थान—षष्ठ भाव—मनःस्ताप, शत्रुपीड़ा, चोरी का भय व नुकसान, शारीरिक व प्रापंचिक पीड़ा, रोग, स्वजन–विरोध, अपमानकारक प्रसंग, मातृपक्ष से सुख या दुख आदि।

७—जाया स्थान—सप्तम भाव—पत्नी का रूप-रंग, गुण-स्वभाव, वृत्ति, प्रेम विचार पद्धति, एकपत्नी व्रत, भार्या से सुख या दुःख, आकस्मिक स्त्रीलाभ, व्यभिचार, परस्त्रीगमन व रति, भागीदारी का धन्धा, व्यापार से लाभ व हानि, गुमा हुआ धनलाभ, दीवानी मुकदमें, स्वतंत्र धन्धा, मूत्राशय, अंडाशय, धात्वाशय आदि।

८—मृत्यु स्थान—अष्टम भाव—लाभ, रिश्वत, लाटरी से आकस्मिक धनलाभ, विवाहित स्त्री से धन, मकान, जमीन, गांव आदि का लाभ, परस्त्री से धनलाभ, स्त्रीधन का वारिस हक्क, कौटुम्बिक कलह, मासिक चिन्ता, सर्पदंश, आयुष्य—मर्यादा, अपघात, अपमृत्यु, मृत्युसम पीड़ा, आत्महत्या, भयंकर संकट, शत्रुभय, गुह्य भाग के रोग आदि।

९—धर्म स्थान—नवम भाव—समुद्र पर्यटन, परदेश प्रवास व वास, वैदिक सामर्थ्य, धर्म पर श्रद्धा या अविश्वास, ईश्वरभक्ति, गुरुउपदेश, पुण्यकर्म, मंत्रसिद्धि, तीर्थयात्रा, धार्मिक वृत्ति सामर्थ्य, तप, औदार्य, दातृत्व, सुख सम्पन्न स्थिति, बड़े भाई का सुख-दुख, जंघा की दशा आदि।

१०—कर्म स्थान—दशम भाव—पिता का रूप-रंग, गुण-स्वभाव, मानसिक स्थिति, आयुष्य, उत्कर्ष, राजअनुकूलता, श्रेष्ठ अधिकार प्राप्ति, सत्ता अधिकारी, उपजीविका का साधन, राज्यमान्यता, राजा से सम्मान, पदवी प्राप्ति, नौकरी, व्यापार, धन्धा, प्रवास, आकाश वृतान्त का ज्ञान, लोगों पर छाप, कीर्ति, राज्यप्राप्ति, महत्व के कार्य में यशोपयश, ऐश्वर्य काल, घुटनों में पीड़ा आदि।

११—लाभ स्थान—एकादश स्थान—मित्र, भाई, जामाता, आप्तवर्ग, स्त्री आदि से सुख धनमान, वस्त्र, अलंकार, वाहन आदि से लाभ व सुख, समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति, कुटम्बियों का सुख, पोटरी की स्थिति, इच्छा, महत्वाकांक्षा आदि।

१२—व्यय स्थान—द्वादश भाव—सत्यासत्य कर्मों में धन का व्यय, शत्रु से हानि, ऋणग्रस्त स्थिति, धन का नाश, शारीरिक सुख-दुख, नेत्रपीड़ा, राजविरोधी राजदण्ड, कैद, अधिकार—भ्रष्टता, रोग, दुष्ट संगति, विश्वासघात, गुप्तशत्रु, अपघात, कलह, रिपुरोग से त्रास, द्रव्य व ऐश्वर्यनाश, चोरों से द्रव्यहानि, समाज में अपमान, मुकदमें में अपयश, मित्र के कारण द्रव्यनाश, अनेक प्रकार के दुःख, धन का नाश, पांव में पीड़ा आदि।

ऊपर के लिखे हुये द्वादश भावों के फलों से सुज्ञ पाठकों को यह ज्ञात होगा कि एक ही भाव से अनेक बातों का विचार किया जाता है किन्तु इसका उपयोग कुण्डली के भविष्य वर्तते समय करना अथवा न करना यह प्रत्येक व्यक्ति के बुद्धि, तर्क, स्मरण-शक्ति पर सर्वस्व अवलंबित है। तथापि कुण्डलियों के निरीक्षण व परीक्षण के पश्चात् यह ज्ञान किसी भी पाठकों के ध्यान में सहज आयेगा, इसमें सन्देह नहीं। सामान्यतः द्वादश भाव के फल ऊपर लिखे अनुसार हैं परन्तु इसका प्रत्यक्ष अनुभव

पाठकों को मिलने के लिये ग्रहों की स्थिति, युति, दृष्टि, भाव के स्वामी कारक ग्रह तथा गोचर ग्रह के स्थिति पर निर्भर है। इन सब बातों का विचार करने के पश्चात् भविष्य कथन पर किसी भी मनुष्य को भरोसा या विश्वास सहज होगा इसमें सन्देह नहीं।

द्वादश भाव के शुभाशुभ ग्रहों का सामान्य फल

तनुस्थान

शुभ ग्रह—शरीरसुख, आरोग्य, ऐश्वर्य, मानसिक शक्ति, ऊँचाई, रोगों का नाश, मितभाषी, भाग्यवृद्धि, शान्त स्वभाव, सुख व वैभव।

पाप ग्रह—रोग, शारीरिक पीड़ा, दुर्बुद्धि, आलसी, दुर्गुणी, गर्विष्ट।

धनस्थान

शुभ ग्रह—श्रीमान् कुल में जन्म, बड़ा कुटुम्ब, आप्त वर्ग पर प्रेम, वक्ता, द्रव्य-संचयी, भाग्यशाली।

पापग्रह—आप्त वर्ग से विरोध, द्रव्यनाश, कपटी, आपत्ति, मिथ्याभाषी, नेत्र-पीड़ा, दृष्टि विकार, वाणी में दोष, द्रव्य की कमतरता।

सहजस्थान

शुभ ग्रह—पराक्रमी, साहसी, कार्य में यश, उद्योग की उन्नति, विद्या की रुचि, उत्तम हस्ताक्षर, बंधु-भगिनि सुख, प्रवास में सुख व लाभ, धर्म पर श्रद्धा, मिष्ठान्न भोजनप्रिय व शत्रुनाश।

पापग्रह—कार्य में बांधा, प्रवास में संकट, तामसी स्वभाव, कलह, बन्धु. भगिनि व मित्र का सुख सामान्य आदि।

सुहृतस्थान

शुभ ग्रह—स्थावर संपत्ति, धन, जमीन, मकान, वाहन आदि की प्राप्ति, सुख, आराम, ऐश्वर्य, सन्तोषी मनःस्थिति, दयालु, यश, कीर्तिसुख की प्राप्ति, मातृ और वाहन सुख, कुलाभिमानी, प्रतिपालक आदि।

पापग्रह—मातृसुख से वंचित, भ्रष्ट वुद्धि, चिंताग्रस्त, संतति दुःख, कष्ट से कार्य-सिद्धि, वाहन से अपघात, संशयी मन, आप्तवर्ग से विरोध, चंचल स्वभाव, नौकर सुख-रहित आदि।

सुतस्थान

शुभ ग्रह—बुद्धिमान्, चतुर, राजदरबार में मान-सम्मान, गहन विषयों को सुलभ करने में प्रवीण, कुलदीपक, श्रेष्ठ अधिकारी, कान्तिवान्, संतति सुख, द्रव्य लाभ पूर्ण आदि।

पापग्रह—विद्या में अपयश, वृथाभिमानी, चिन्ताग्रस्त, भ्रष्टबुद्धि, संतति सुख से वंचित, चंचल वृत्ति, संततिनाश आदि ।

रिपुस्थान

शुभ ग्रह—स्वजनों से विरोध, अशक्त प्रकृति, शत्रुओं से हानि, उदार मन, परोपकारी, कार्य करने की उत्कण्ठा, लोगों को अनुकूल करने में प्रवीण, मातुल पक्ष का सुख आदि ।

पापग्रह—रोग से ग्रसित, तामसी, उग्र स्वभाव, धन का व्यय, गुप्तशत्रु से त्रास व हानि, स्वार्थी आदि ।

जायास्थान

शुभ ग्रह—गुणवान, रूपवान, सुस्वरूप भार्या, संसारदक्ष पतिव्रता स्त्री का सुख, उच्च कुल की स्त्री से विवाह, व्यापार में भागीदार से लाभ, दीवानी मामलों में यश, क्रय-विक्रय में कुशल, लेन-देन धन्धे में लाभ, प्रवास में सुख, वाद-विवाद में प्रवीण आदि ।

पापग्रह—संसार सुख की चिन्ता, स्त्री सुख से वंचित, स्त्रीसम्बन्धी कलह, प्रवास में कष्ट, व्यभिचारी, परस्त्रीरत, अदालती मामलों में अपयश, द्रव्यहानि, धन्धे में नुकसान, बहुभार्यायोग, स्त्री को अरिष्ट, अन्त में पश्चाताप व दुःख आदि ।

मृत्युस्थान

शुभ ग्रह—विवाह के पश्चात् स्त्री से स्थावर स्टेट की प्राप्ति, वारिस के नाते द्रव्यलाभ, स्त्री स्टेट पर अधिकारी के नाते द्रव्यलाभ, श्वसुर की सांपत्तिक स्थिति श्रेष्ठ, स्त्रीधनलाभ, आकस्मिक धनलाभ आदि ।

पापग्रह—परद्रव्यापहारी, कौटुम्बिक व राजकीय संकट, दारुण प्रसंग, धन्धे में हानि, गृहकलह, लोगों से वैमनस्य, मानहानि, अपकीर्ति, कर्ज बाजारी, व्यसनाधीन आदि ।

धर्मस्थान

शुभ ग्रह—भाग्य व ऐश्वर्य की प्राप्ति, दूर का प्रवास, नाना प्रकार के सुख, धर्म पर श्रद्धा, पुण्यकर्मी, कीर्तिमान्, स्वदेश में भाग्योदय, कुटुम्ब के श्रेष्ठ लोगों से सुख-प्राप्ति, कार्य में यश, बंधु, भगिनी, सुख अनुकूल ।

पापग्रह—प्रयत्न में अपयश, परदेश में भाग्योदय, आपत्ति, विरोध, वर्तमान परिस्थिति में सदा फेर-बदल, मन को सन्ताप, ऐश्वर्यहीन, बंधु भगिनी सुख से वंचित आदि ।

कर्मस्थान

शुभ ग्रह—उद्योगधन्धा नौकरी में अधिकार, मान-सम्मान, राजाश्रय, राजा व समाज में मान्यताप्राप्त, पदवीधर, महत्वपूर्ण कार्य में यश, श्रेष्ठ, सांपत्तिक स्थिति, समाज

का नेता, कार्यकुशल, स्वपराक्रम से धनलाभ, पिता सुख पूर्ण, सर्वप्रकार के वाहन-नौकर आदि पूर्ण सुख।

पापग्रह—पितृसुखनाश, धन्धे में फेर-बदल, अपकीर्ति, श्रेष्ठ अधिकारी से विरोध, उपजीविका के विषय में चिंता, नुकसान, हानि, सुखनाश, नीच स्थिति का प्राप्त होना, कष्ट, हानि आदि।

लाभस्थान

शुभ ग्रह—श्रेष्ठ अधिकार, उद्योगधन्धा, नौकरी से लाभ व सुख, प्रबल संपत्ति योग, राजा व श्रेष्ठ लोगों से मैत्री व लाभ, आप्तवर्ग, भाई, मित्र व नौकरसुख, धाड़सी, निश्चयी, आचारकार्यकुशल, संततिसुख, उच्च सत्वुद्धि, स्त्रीसुख, द्रव्य-प्राप्ति आदि।

पापग्रह—पाप-पुण्य को न डरते द्रव्य प्राप्ति करने वाला, ज्येष्ठ बन्धु को अनिष्ट, नौकरों से त्रास, कौटुम्बिक व मित्रसुखहीन, कलह, सामान्य भाग्य, संतति सुखहीन आदि।

व्ययस्थान

शुभ ग्रह—रोग-रिपु का नाश, सत्कार्य में द्रव्य का व्यय, संकट का निवारण, मानसिक व शारीरिक चिन्ता, परन्तु अन्त में पूर्ववत् स्थिति की प्राप्ति, अधिकार में विघ्न, मातुलपक्ष सुख आदि।

पापग्रह—बुरे कर्मों में द्रव्य का व्यय, फजूल खर्च, धनसम्बन्धी हानि, चिन्ता, अधिकार भ्रष्ट, ऋणग्रस्त स्थिति, शरीर पीड़ा, बीमारी, अधिकारी प्रतिकूल, अनेक संकट, शत्रु से हानि, कैद, राजदण्ड, आयुष्य को धोखा, अविचारी स्त्री आदि।

ऊपर लिखे हुये फल शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि युति के अनुसार कम या अधिक प्रमाण से मिलना सम्भव है। विशेषतः यह फल भाव के स्वामी व कारक ग्रहों के स्थिति पर अवलंबित है यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। शुभ ग्रह यदि अशुभ भाव में और अशुभ ग्रह शुभ भाव में स्थित हों तो उनके दृष्टि व युति का प्रभाव उन ग्रहों पर पड़कर फलित का मिलना सम्भव है। सारांश ग्रहों के अपेक्षा शुभाशुभ भाव व उनके स्वामी पर फलित निर्भर रहेगा यह भूलना न चाहिये। इस पर से स्थान महत्व की महिमा कितनी जबरदस्त है यह पाठकों को स्पष्ट विदित होगा, ऐसा हमारा मत है। ऊपर लिखे हुये फलित से सुज्ञ पाठकों के ध्यान में सहज आ सकता है कि कुण्डली के द्वादश भावों में शुभ या अशुभ ग्रहों के स्थिति पर मनुष्य को शुभ या अशुभ फल मिलना निश्चित है। किन्तु इन भावों में ग्रह यदि स्थित हों तो वे बली, मध्यम बली और निर्बली किस तरह कहलावेंगे इसका विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। जैसे :—

द्वादश भाव व ग्रहों के सामान्य नियम

बली ग्रह

१—शुभ ग्रह यदि केन्द्र व त्रिकोण भाव में स्थित हों तो वे बली अर्थात् बलवान ग्रह कहलाते हैं।

२—कोई भी ग्रह ३–११ भाव में बलवान समझे जाते हैं परन्तु पराक्रम व लाभ के स्थान में सौम्य ग्रह के अपेक्षा क्रूर ग्रह अधिक योग्य समझे जाते हैं। कारण वे इन दो स्थानों के फल दिलाने के लिये अधिक बलवान समझे जाते हैं।

३—धनस्थान में शुभ ग्रहों का रहना अधिक लाभदायक समझा जाता है क्योंकि वे वहां बलवान समझे जाते हैं।

मध्यम बली

१—पंचम व नवम भाव में (त्रिकोण) यदि पापग्रह स्थित हों तो वे मध्यम बली कहलाते हैं।

निर्बली

१—शुक्र के सिवाय कोई ग्रह यदि ६–८–१२ भाव में स्थित हों तो उन्हें निर्बली कहते हैं।

२—कोई भी ग्रह यदि रवि या शत्रु ग्रह से युक्त हों तो वे निर्बली समझे जाते हैं। इसके सिवाय—

१—किसी भी स्थान (भाव) का स्वामी ग्रह अपने भाव से यदि १–४–५–७–९–१० भाव में स्थित हों तो वे उस भाव के शुभ फल देंगे।

२—गुरुग्रह का किसी भाव में स्थित होने से उस भाव का फल विशेष अशुभ नहीं माना जाता किन्तु जिस भाव पर उसकी ५–७–९ पूर्ण दृष्टि हो उस भाव का फल अधिक शुभ मिलना निश्चित है क्योंकि उसके शुभ दृष्टि में विशेष शक्ति है यह सर्वविदित है।

३—शनि (पापग्रह) जिस स्थान में हो उस स्थान को वह सुरक्षित रखता है। परन्तु उसके अशुभ दृष्टि के कारण जिस स्थान पर उसकी ३–७–१० पूर्ण दृष्टि पड़ती है उस स्थान का फल वह नाश करता है। अर्थात् गुरु और शनि यह दोनों ग्रहों के शुभ व अशुभ दृष्टि को, फल वर्तते समय विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये।

४—यदि किसी भी भाव में शुभ ग्रह यदि पाप ग्रह या शत्रु ग्रह से युक्त हो अथवा दृष्टि हो तो वे अशुभ फलदायी माने जाते हैं परन्तु अशुभ ग्रह यदि शुभ ग्रह से युक्त व दृष्टि हो तो वे शुभ फलदायी समझे जाते हैं चाहे वे शुभ या अशुभ ग्रह क्यों न हों।

५—कोई भी ग्रह यदि अपने राशि व भाव में स्थित हो तो उनके शुभाशुभ स्थिति के अनुसार उस भाव का और उनके शुभाशुभ दृष्टिफल का ऊँचा मिलना स्वाभाविक है।

६—ग्रह यदि परस्पर के राशि और भाव में स्थित हों तो उस भाव का फल पूर्णरूप से मिलना निश्चित है।

७—किसी भी भाव में ग्रह न हो या उनकी दृष्टि न हो तो उस भाव का फल उस भाव में जो राशि स्थित हो उस राशि के गुण, धर्म, स्वभाव के अनुसार मिलना निश्चित है।

८—राशि के फल के अपेक्षा भाव और ग्रहों के दृष्टि का फल अधिक बलवत्तर माना जाता है।

ऊपर लिखे हुये भावों के व ग्रहों के सामान्य नियमों पर विचार करने से पाठकों को यह ज्ञात होगा कि ग्रहों के गुण के अपेक्षा वे जिस भाव में स्थित हों उस भाव के शुभ या अशुभ स्थिति के अनुसार फल मिला करता है। अतः फलित वर्तते समय स्थान के माहात्म्य का विचार विशेषरूप से करना योग्य होगा यह निर्विवाद है।

भावकारक ग्रह

फलित वर्तते समय ग्रहों के भाव कारकत्व का प्रभाव पाठकों को ध्यान में अवश्य रहना चाहिये, इस हेतु यहां इस विषय पर संक्षिप्त मे वर्णन करना हम आवश्यक समझते हैं। जैसे :—

"सूर्यो १ गुरुः २ कुजः ३ सोमो ४ गुरु ५ र्भौमो ६ सितः ७ शनिः ८।
गुरु ९ श्चन्द्रसुतो १० जीवो ११ मन्दश्च १२ भावकारकाः॥" (पराशर)

अर्थात्—

१—लग्न भाव का कारक ग्रह रवि।
२—धन भाव का कारक ग्रह गुरु।
३—सहज भाव का कारक ग्रह मंगल।
४—सुहृत भाव का कारक ग्रह चन्द्र।
५—सुत भाव का कारक ग्रह गुरु।
६—रिपु भाव का कारक ग्रह मंगल।
७—जाया भाव का कारक ग्रह शुक्र।
८—मृत्यु भाव का कारक ग्रह शनि।
९—भाग्य धर्म भाव का कारक ग्रह गुरु।
१०—कर्म भाव का कारक ग्रह बुध।
११—लाभ भाव का कारक ग्रह गुरु।
१२—व्यय भाव का कारक ग्रह शनि।

फलित का विचार जिस तरह प्रत्येक भाव से करना उचित है उसी तरह उसका विचार, भाव के कारक ग्रहों के आधार पर करने से फलादेश अधिकांश रूप से सत्य सिद्ध होगा है। जैसे :— तृतीय भाव से बन्धु, भगिनी का विचार किया जाता है, वैसे उस स्थान का कारक ग्रह मंगल है। अतः फलित वर्तते समय जन्म-

कुण्डली में मंगल के स्थिति का विचार करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त भाव कारकत्व का विचार दूसरे रीति से भी किया जाता है। जैसे :— रवि यह पितृकारक, चन्द्र—मातृकारक, मंगल बन्धुकारक, बुध मातुलपक्षकारक, गुरु संततिकारक, शुक्र स्त्रीकारक, शनि मृत्यु व व्ययकारक कहलाता है, यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। ऊपर लिखे हुए नियम के अनुसार माता का विचार जैसे चतुर्थ स्थान से करते हैं वैसे चन्द्र से या चन्द्र से चतुर्थ स्थान पर रहने वाले ग्रहों का विचार करना चाहिये।

स्थानगत ग्रहों का विफलत्व

दूसरे भाव में मंगल, चतुर्थ में बुध, पंचम में गुरु, षष्ठ में शुक्र, सप्तम में रवि, शनि युक्त चन्द्रमा हो या अन्य किसी भाव में हो तो ये ग्रह योग्य फल देने के लिये असमर्थ कहलाते हैं। यह ध्यान में हमेशा रखना चाहिये।

ग्रहों के भावस्थ बल

१—प्रथम	स्थानमें	शनि	बलवान और	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, हर्षित
२—द्वितीय	,,	गुरु	,, ,,	रवि, मंगल, हीनबल वाले।
३—तृतीय	,,	मंगल	,, ,,	चन्द्र हर्षित।
४—चतुर्थ	,,	सूर्य	,, ,,	,, ,,
५—पंचम	,,	शुक्र	,, ,,	मंगल, शनि हीन बल वाले।
६—षष्ठ	,,	बुध	,, ,,	मंगल हर्षित।
७—सप्तम	,,	चन्द्र	,, ,,	शुक्र हर्षित व मंगल, शनि हीन बलवाले
८—अष्टम	,,	शनि	,, ,,	होता है।

९—मंगल व गुरु नवम स्थान में बलवान होता है और सूर्य हर्षित।
१०—दशम स्थान में मंगल बलवान और शुक्र, रवि हर्षित।
११—एकादश स्थान में सूर्य बलवान और गुरु हर्षित।
१२—द्वादश स्थान में शुक्र बलवान और शनि हर्षित।

बलवान, हर्षित और हीन बलीग्रह का फल अत्यन्त शुभ, मध्यम बली और अशुभ मिलेगा यह ध्यान में रखना चाहिये। साधारणतः प्रथम भाव में बुध हो तो यश व बल की वृद्धि करता है। द्वितीय भाव में गुरु, संपत्तिदायक होता है। तृतीय भाव में शुक्र, शुभ फलदायक। चतुर्थ भाव में चन्द्र बलवान व शुक्र शुभ फलदायक। पंचम भाव में गुरु सम्पत्तिदायक। षष्ठ भाव में शुक्र शुभफलदाई। सप्तम भाव में शनि बलवान। अष्टम भाव में गुरु बलवान। नवम भाव में गुरु शुक्र शुभफलदायी। दशम भाव में रवि बलवान। एकादश भाव में मंगल सुखदायक, गुरु संपत्तिदायक व राहु बलदायक और द्वादश भाव में शुक्र बलवान रहता है। तथापि द्वितीय भाव में मंगल, चतुर्थ भाव में बुध, पंचम में गुरु, षष्ठ में शुक्र व सप्तम में शनि विकल ग्रह कहलाते हैं। फलादेश वर्तते समय इनका विचार बड़े विचारपूर्वक करने से फलित की सत्यता पर

अङ्गों का विश्वास पूर्णरूप से होगा। कुण्डली के चतुर्थ भाव में बुध, पंचम भाव में गुरु और षष्ठ भाव में शुक्र हो तो मनुष्य को सुख की प्राप्ति निःसंदेह होगी परन्तु अष्टम भाव का शनि दुःखदायक कहलाता है।

द्वादशभाव के स्वामी का द्वादश भावस्थितफल

भाव के ईश (स्वामी) को भावेश कहते हैं। इन भावेशों के प्रत्येक भाव में स्थित होने पर जो फल मिलता है उसका विचार कुण्डली का फलित वर्तते समय अवश्य ध्यान में रखना चाहिये यह आवश्यक है। जैसे :—

लग्नेश फल विचार—लग्नेश यदि लग्न में स्थित हो तो मुनष्य कुलदीपक, रूपवान, सुदृढ़ शरीर व आत्मविश्वासी होता है और स्वपराक्रम से भाग्य का उदय करता है।

लग्नेश—द्वितीय स्थान में हो तो वह कुटुंब का सुख भोगने वाला, धनसंग्रही, देन-लेन व्यवहार में कुशल व सुख से अन्न भक्षण करने वाला होता है।

लग्नेश—तृतीय स्थान में हो तो वह पराक्रमी, साहसी, आग्रही, बंधु से दूर न रहने वाला, स्वतंत्रता से अपनी कर्तवगारी दिखाने वाला होता है।

लग्नेश—चतुर्थ स्थान में हो तो उसे उत्तम वाहनसुख, घर का नेता, खेती, मकान की प्राप्ति, आप्तवर्ग पर प्रेम करने वाला व सुख भोगने वाला होता है।

लग्नेश—पंचम भाव में हो तो पिता को पूर्ण यशप्राप्ति, धनवान, विद्वान, उपासना मार्ग में प्रवीण, संतति पर प्रेम करने वाला, मित्रों का मनोरंजन करने वाला होता है।

लग्नेश—षष्ठ भाव में हो तो वह रोगी व व्यंग शरीर का, शरीर सुख से वंचित, ईमानदार, नौकररहित व आचार, कर्त्तव्यगार होते हुये उसे इच्छानुसार यश व प्रसिद्धि नहीं मिलती।

लग्नेश—सप्तम भाव में हो तो वह वाद-विवाद का शौकीन, परदेश में भाग्योदय, प्रवासी, दूसरे के दाम पर उद्योग-धन्धा करने वाला व विषय लंपट होता है। साथ ही लग्नेश शुभ ग्रह से युक्त सप्तम भाव में हो तो उसका विवाह उच्चकुल के लड़की से होता है।

लग्नेश—यदि अष्टम भाव में हो तो शरीर सुख से वंचित, कष्ट से आयुष्य का क्रमण, बलहीन, सट्टा, शर्यंत, द्यूत आदि मार्ग से गुप्त धन प्राप्त करने वाला होता है।

लग्नेश—यदि नवम भाव में हो तो वह भाग्यवान, कीर्तिमान, धर्माभिमानी, दैविक शक्ति वाला, सन्तसमागमी, तीर्थयात्रा करने वाला व परोपकारी होता है।

लग्नेश—यदि दशम भाव में हो तो राज कार्य में भाग लेने वाला, कर्तव-गार, कीर्तिमान, सार्वजनिक कार्य में रुचि रखने वाला व अधिकार-सम्पन्न होता है।

लग्नेश—यदि एकादश भाव में हो तो उसे धन की पूर्ण प्राप्ति, उत्तम मित्र व अकल्पित लाभ होता है।

लग्नेश—यदि द्वादश भाव में हो तो उसका मन सदा उदास, प्रयत्न में अपयश, व्यवहार में आपत्ति, हाथ में पैसा टिकता नहीं व कर्ज फिरता नहीं।

द्वितीयेश फल विचार

द्वितीयेश—लग्न में स्थित हो तो विना प्रयत्न किये कुटुम्ब सुख व साधन लाभ, परन्तु द्वितीयेश ग्रह यदि क्रूर हो या लग्नेश शत्रु ग्रह हो तो कुटुम्ब व द्रव्यचिन्ता एवं कुटुम्ब की जवाबदारी उस पर पूर्णरूप से आती है। द्वितीयेश, तृतीयेश से युक्त होकर लग्न भाव में हो तो भाई के धन का लाभ; सारांश जिस भावेश से युक्त हो लग्न में स्थित हो तो उस भाव के स्वामी से धन का लाभ प्राप्त होगा।

द्वितीयेश—द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक धनलाभ, धन के लेन-देन में लाभ, कौटुम्बिक सुख, उत्तम पदार्थ का भोजन, कई लोगों का उदर-पोषण व पितृ धन का लाभ मिलता है।

द्वितीयेश—तृतीय भाव में हो तो द्रव्य प्राप्ति करने वाला, भाइयों को सुखी रखने वाला, द्रव्यार्जन हेतु घोर प्रयत्न कर यश पाने वाला होता है।

द्वितीयेश—चतुर्थ भाव में हो तो स्थावर स्टेट की प्राप्ति व संपत्ति का उपभोग लेने वाला होता है।

द्वितीयेश—पंचम भाव में हो तो भर धर द्रव्य प्राप्ति, सन्तान के लिये पूर्ण धन संचय, विद्याव्यसनी, मित्रकार्य में धन का खर्च होता है।

द्वितीयेश—षष्ठ भाव में हो तो विरोधी लोगों से धन सम्बन्ध से झगड़े, बखेड़े, धननाश, नौकर से सदा धन का नाश व संकट की प्राप्ति।

द्वितीयेश—सप्तम भाव में हो तो भागीदार या प्रतिपक्षी को सबक सिखाने के लिये खर्च एवं आराम विषय-वासना तृप्त करने के लिये अधिकांश धन का खर्च हो व बहुत थोड़ी रकम पास रहती है।

द्वितीयेश—अष्टम भाव में हो तो अधिक मेहनत, थोड़ा लाभ, धननाश, कुटुम्ब के नित्य खर्च की चिन्ता व कष्ट।

द्वितीयेश—नवम में हो तो धर्म व सार्वजनिक कार्य में धन का खर्च, रिश्तेदारों को खुश रखने हेतु व स्वतः घर में मंगल कार्य निमित्त द्रव्य का व्यय होगा।

द्वितीयेश—दशम भाव में हो तो साहूकारी धन्धा करने व मान सम्मान पाने वाला, राजकरण में धन व्यय करने वाला व पितृभक्त होता है।

द्वितीयेश—एकादश में हो तो सांपत्तिक लाभ अधिक प्रमाण पर मिलना निश्चित है।

द्वितीयेश—द्वादश में हो तो व्यसन में धन का खर्च, कई बड़े व्यवहार में नुकसान, राजदण्ड, कैद, द्रव्यनाश होना निश्चित है।

तृतीयेश फल विचार

तृतीयेश—लग्न में हो तो साहसी स्वभाव का, तकरारी, महत्वाकांक्षी, छोटे भाइयों को सुख व कीर्तिमान हुआ करता हैं।

तृतीयेश—द्वितीय भाव में हो तो भाइयों के लिये धन का व्यय, भाइयों के लिये वैमनस्य व अन्त में धन का व्यर्थ व्यय होगा।

तृतीयेश—तृतीय में हो तो साहस, हट्टी, स्वतंत्र वृत्ति, लश्करी दिलवाला होकर छोटे भाई को सुख मिलेगा।

तृतीयेश—चतुर्थ में हो तो आप्तवर्ग के आपत्ति का निवारण करने के लिये पराक्रम दिखाना पड़ता है। मकान बांधना, खेती व घर गृहस्थी के कामों में यश की प्राप्ति।

तृतीयेश—पंचम में हो तो संतति, पराक्रमी, ईश्वर प्राप्ति के लिये प्रयत्न।

तृतीयेश—षष्ठ में हो तो पराक्रमहीन, शत्रु के चक्कर में आने वाला व भाइयों से शत्रुता।

तृतीयेश—सप्तम में हो तो प्रतिपक्षियों पर छाप, भागीदारों में विजय, प्रवास, उसके पराक्रम से स्त्रियां खुश रहेंगी।

तृतीयेश—अष्टम में हो तो पराक्रम में अपयश व बन्धुसुखहीन।

तृतीयेश—नवम में हो तो पराक्रमी, परदेशगमन, तीर्थयात्रा, कीर्तिलाभ, सत्कीर्ति।

तृतीयेश—दशम में हो तो सार्वजनिक कार्य में पराक्रम व यश, राजदरबार में मान।

तृतीयेश—एकादश में हो तो स्वपराक्रम से लाभ, अनेक प्रसंग में इनाम की प्राप्ति, मित्र सुख व ऐश्वर्य प्राप्ति।

तृतीयेश—द्वादश में हो तो इष्टकार्य में अपयश, बेचैनी व वृथा खर्च, दुर्गुणी होगा। तृतीयेश व चतुर्थेश मंगल से युक्त हो तो छोटे भाइयों कों सुख, किन्तु अन्य ग्रहों से युक्त हो तो बन्धुहीन होगा तृतीयेश रवि से युक्त हो तो वह वीर पुरुष, चन्द्र से युक्त हो तो धैर्यवान, मंगल से युक्त हो तो क्रोधी व दुष्ट, बुध से युक्त हो तो सात्विक वृत्ति, गुरु से युक्त हो तो धैर्यशील व शास्त्रज्ञ, शुक्र से युक्त हो तो कामातुर, शनि से युक्त हो तो जड़स्वभाव, राहू से युक्त हो तो डरपोक व केतु से युक्त होने पर हृदय विकार से त्रस्त होता है।

चतुर्थेश फल विचार

चतुर्थेश—यदि लग्न में हो तो मातृसुख, स्टेट प्राप्ति व वाहन सुख मिलेगा।

चतुर्थेश—यदि द्वितीय भाव में हो तो धनसंग्रह, साहूकारी, कुटुम्ब व आप्तवर्ग सुख।

चतुर्थेश--यदि तृतीय भाव में हो तो स्टेट प्राप्ति के लिये धन का खर्चा, थोड़ा द्रव्य पास रहेगा।

चतुर्थेश--यदि चतुर्थ भाव में हो तो विद्या में प्रवीण, वाहन सौख्य, ऐशो-आराम, मकान की प्राप्ति, बाग-बगीचा, खेती-पशु के पालन से लाभ।

चतुर्थेश--यदि पंचम भाव में हो तो श्रीमन्त, मातृभक्त, संतति के लिये स्थावर स्टेट की व्यवस्था।

चतुर्थेश--यदि षष्ठ में हो तो पशु से अपघात, स्थावर स्टेट रहित, हमेशा सुख के लिये चिन्तित, गृहसौख्यरहित।

चतुर्थेश--यदि सप्तम भाव में हो तो धान्य व जानवरों के व्यापार से लाभ, शीघ्र विवाह योग।

चतुर्थेश--अष्टम में हो तो शरीर सुखरहित, भाग्यहीनता, मातृसुख कम, भूमिगत धनलाभ, साम्पत्तिक स्थिति संतोषजनक।

चतुर्थेश--यदि नवम में हो तो वाहन सुख, स्टेट के लेन-देन में नुकसान, आप्त-वर्ग से विरोध, रहने के लिये सुन्दर मकान की प्राप्ति।

चतुर्थेश--यदि दशम में हो तो पितृभक्त, राजा से मान सन्मान, खेतीप्रिय, धनकी प्राप्ति।

चतुर्थेश--यदि एकादश में हो तो चतुर्थ भाव का अल्पप्रभावकर फल मिलेगा।

चतुर्थेश--यदि द्वादश में हो तो परदेशवास व दूसरों के घर में वास्तव्य, खेती बाड़ी के लिये धन का खर्च।

पंचमेश फल विचार

पंचमेश--लग्न में हो तो मनुष्य विद्वान, संततियुक्त, विद्या व्यसनी।

पंचमेश--द्वितीय में हो तो मनुष्य को उपजीविका का साधन, लौकिक की वृद्धि व धनलाभ।

पंचमेश--तृतीय में हो तो परोपकारी, ईश्वरभक्त, पुण्यकर्मी, वाद-विवाद में यश, विद्या में प्रथम श्रेणी का प्रवीण।

पंचमेश--चतुर्थ में हो तो स्थावर स्टेट का लाभ व धनवान।

पंचमेश--पंचम में हो तो उत्तम संतति सुख, विद्याभ्यास में प्रगति, उपासना मार्ग का अवलंबन करने वाला।

पंचमेश--षष्ठ में हो तो विद्या-संपादन करने में आपत्ति, शत्रु से त्रास, विद्या के कारण मत्सरी लोगों से त्रास, वैद्यक-विद्या के लिये रुचि।

पंचमेश--सप्तम में हो तो संततिसुख प्राप्ति, व्यापार, वकील, उपदेशक, वाद-विवाद में प्रवीण, स्त्री के मर्जी से चलनेवाला होगा।

पंचमेश—अष्टम में हो तो संतति से कष्ट, विद्या से विशेष सुख की अप्राप्ति।

पंचमेश—नवम में हो तो ग्रन्थकार, तत्ववेत्ता, न्यायी, धार्मिक, उपदेशक, समाज सुधारक व विद्या से ही भाग्य की वृद्धि।

पंचमेश—यदि दशम में हो तो संगीत कला में कुशल, चतुर, नौकरी पेशा से धनलाभ।

पंचमेश—एकादश में हो तो उत्तम संतति सुख, बुद्धिमान्, विद्वान, मित्रों का प्रिय।

पंचमेश—द्वादश में हो तो दुर्व्यसनी, व अनेक संकटों से युक्त, विद्या का दुरुपयोग।

षष्ठेश फल विचार

षष्ठेश—लग्न में हो तो शरीर कष्ट, लोगों से शत्रुत्व परन्तु उन पर विजय प्राप्त करने वाला, राहू-केतू से युक्त हो तो शरीर में व्रण पीड़ा।

षष्ठेश—द्वितीय में हो तो पितृ स्टेट के सम्बन्ध से तकरार व मुकदमे, पुत्रों को धन से लाभ, तकरारी, कौटुम्बिक झगड़े।

षष्ठेश—तृतीय में हो तो परस्वाधीन, बन्धुप्रेमरहित, दूसरे को त्रास, नामी रोग।

षष्ठेश—चतुर्थ में हो तो नौकर का वेईमान होना, स्थावर स्टेट सम्बन्ध के झगड़े, अपमान व पशु से अपघात।

षष्ठेश—पंचम में हो तो संतति सुख से वंचित, समाधानरहित, मित्र व संपत्ति का सुख कम, आयुष्य में भयंकर त्रास।

षष्ठेश—षष्ठ में हो तो सुदृढ़ शरीर परंतु सदैव त्रास युक्त, आयुष्य-क्रमण लड़ाई-करार, कलह नित्य परन्तु कभी-कभी विजय प्राप्ति।

षष्ठेश—सप्तम में हो तो भागीदारी में टंटे, स्त्री के आप्तवर्ग से धोखा व त्रास, स्त्री सम्वन्ध से तकरार।

षष्ठेश—अष्टम में हो तो कौटुम्विक सुखहीन, वारस हक सम्वन्ध से तंटे, खराब प्रकृति, नित्य शरीर त्रास।

षष्ठेश—नवम में हो तो भाग्योदय में वारंवार आपत्ति व अपकीर्ति।

षष्ठेश—दशम में हो तो सार्वजनिक काम में झगड़े व वखेड़े, गुप्त शत्रु से सदा त्रास, अधिकार चलाने में अनेक आपत्ति।

षष्ठेश—एकादश में हो तो लाभ कम व मित्र शत्रु होंगे। धन प्राप्ति होने पर भी धन का व्यय।

षष्ठेश—द्वादश में हो तो दुर्व्यसनी, राजकीय संकट भोगने वाला।

सप्तमेश फल विचार

सप्तमेश—लग्न में हो तो तीव्र विषय-वासना, स्त्री संबंधी तकरार, चंचल, प्रवासी, स्वतंत्र मन वाला ।

सप्तमेश—द्वितीय में हो तो स्त्री से धन प्राप्ति, उत्तम व्यापार, भागीदारी से धन का लाभ, कुटुम्ब पर पूर्ण प्रेम ।

सप्तमेश—तृतीय में हो तो स्त्री के कारण भाई से विभक्त, क्रोधी-स्वभाव, कर्त्तव्य-गार ।

सप्तमेश—चतुर्थ में हो तो स्थावर स्टेट लाभ, सद्गुणी व उत्तम संसार करने वाली चतुर स्त्रीलाभ ।

सप्तमेश—पंचम में हो तो स्त्री व संततिहीन, देवता उपासना वाला, सर्व सुख प्राप्ति ।

सप्तमेश—षष्ठ में हो तो शादी में विघ्न, स्त्री सब तकरार का कारण, शुक्र से युक्त हो तो पत्नी बांझ रहेगी ।

सप्तमेश—सप्तम में हो तो इच्छित स्त्री से विवाह, आज्ञाधारक स्त्री, विषय-वासना ।

सप्तमेश—अष्टम में हो तो स्त्रीसुखरहित ।

सप्तमेश—नवम में हो तो स्त्री भाग्योदय का मूलकारण, घर में धार्मिक विधि का प्रावल्य, उद्योग सम्बन्ध से दूरदेश प्रवास ।

सप्तमेश—दशम से हो तो स्वतंत्र धन्धा, दीर्घोद्योगी, सार्वजनिक काम में स्त्री की विशेष सहायता ।

सप्तमेश—यदि एकादश में हो तो स्त्री-संतति सुख, भागीदारी में लाभ, मित्र सुख, हस्त-कलाकौशल से धन की प्राप्ति ।

सप्तमेश—यदि एकादश में हो तो लड़ाई में अपयश, स्त्री संबंध से त्रास, दुर्व्यसन में अधिक खरचा ।

सप्तमेश शुक्र से युक्त पाप राशि अथवा शुक्र राशि में हो तो वह कामासक्त होता है। लग्नेश व षष्टेश में पाप ग्रह से युक्त होने पर वह कामासक्त होता है ।

विवाह—सप्तमेश जिस राशि में हो उसके त्रिकोण भाव में गुरु होने पर । २—सप्तमेश शुक्र से युक्त होते ही उसके दशा काल में विवाह होगा । ३—सप्तमेश से युक्त होने वाले ग्रह अथवा सप्तमेश के दशाकाल में विवाह होगा । ४—लग्नेश जिस राशि में हो उसके राशि स्वामी के द्वितीय भाव में गुरु हो तो विवाह । ५—सप्तमेश या शुक्र जिस जिस राशि में हो उस राशि में प्रवेश होते विवाह होगा ।

अष्टमेश फल विचार

अष्टमेश—लग्न में हो तो शरीर सुख मिलना कठिन है। कौटुम्बिक धन सम्बन्धी दु:ख हमेश मिलता रहेगा।

अष्टमेश—द्वितीय में हो तो वारिस किंवा इनाम से धन का लाभ तथा वह मनुष्य लालची, रिश्वत लेने वाला होगा।

अष्टमेश—तृतीय में हो तो बुरे मार्ग से कारवाई करेगा।

अष्टमेश—चतुर्थ में हो तो प्रयत्न बिना घर और खेती का लाभ मिलता है।

अष्टमेश—पंचम में हो तो भूत-प्रेत, पिशाच-साधन में चित जाता है। जुगार में प्रवीण व संतति दुर्गणी होते हैं।

अष्टमेश—षष्ठ में हो तो लोगों को उपद्रव, त्रास देने वाला व चोर होगा।

अष्टमेश—सप्तम में हो तो दुर्व्यसनी व खर्चीला, शरीर सुखरहित, गुप्त कारस्तानी व संकट में पड़ता है।

अष्टमेश—अष्टम में हो तो दीर्घायुषी होता है।

अष्टमेश—नवम में हो तो लोगों का विश्वासपात्र होगा। वड़े स्टेटों का देख-रेख करेगा।

अष्टमेश—दशम में हो तो राजा से धनलाभ, सार्वजनिक कार्य में धनप्राप्ति।

अष्टमेश—एकादश में हो तो आरम्भ का आयुष्य कष्टदायक, किन्तु उतरार्ध में सुख, मित्र द्वारा धन लाभ, इनामों की प्राप्ति।

अष्टमेश—यदि द्वादश में हो तो बुरे कर्म में पैसा का व्यय, दिवालिया होगा।

नवमेश फल विचार

नवमेश—लग्न में हो तो धार्मिक कर्मों का शौकीन व भाग्य उसके पास आप चल कर आता है।

नवमेश—यदि द्वितीय में हो तो मनुष्य वहुत प्रेमी स्वभाव का व कुटुम्ब को प्रिय होगा।

नवमेश—यदि तृतीय हो तो पराक्रम से प्रसिद्ध हो, भाईयों को सुखावह होगा।

नवमेश—चतुर्थ हो तो खेती-बाग व बगीचा-मकान प्राप्त करें व श्रीमान् की तरह आयुष्य क्रमण करेगा।

नवमेश—पंचम में हो तो स्थावर मिलकियत का भोग, पवित्र आचरण, ईश्वर-भक्त, ग्रन्थकर्ता, विद्या व भाग्यसाध्य होगा।

नवमेश—षष्ठ में हो तो हमेशा शत्रु के फन्दे में पड़कर भाग्योदय न होगा।

नवमेश—सप्तम में हो तो विवाह के पश्चात् भाग्य का उदय, स्त्री के कारण भाग्योदय, उत्तम व्यापार व परदेश में कीर्ति प्राप्त।

नवमेश—अष्टम में हो तो अघोर प्रयत्न से भी भाग्योदय न होगा। मानसिक कष्ट व लोगों में अपकीर्ति होगी।

नवमेश—नवम में हो तो पुण्यवान्, स्वधर्म में निष्ठा, यश व भाग्य सदैव साथ देता रहेगा।

नवमेश—दशम में हो तो राजकीय मान-सम्मान प्राप्ति व धुरन्धर राजकारणी।

नवमेश—एकादश में हो तो विपुल धन की प्राप्ति होती है।

नवमेश—द्वादश में हो तो भाग्योदय के पीछे पड़ने से अपकीर्ति व दारिद्र हाथ लगेगा।

दशमेश फल विचार

दशमेश—यदि लग्न में हो तो दीर्घोद्योगी, व स्वपराक्रम से भाग्योदय प्राप्ति।

दशमेश—यदि द्वितीय में हो तो उत्तम कुटुम्ब सुख व सरकारी काम से भाग्योदय।

दशमेश—यदि तृतीय में हो तो दीर्घोद्योगी, कर्त्तव्यगार, स्वतंत्र व श्रेष्ट व्यापारी।

दशमेश—यदि चतुर्थ में हो तो स्थावर मिलकियत व गृहसौख्य उत्तम, वैभव का पूरा सुख प्राप्त करेगा।

दशमेश—पंचम में हो तो विद्वान, मुन्सदी व उपदेशक।

दशमेश—षष्ठ में हो तो सार्वजनिक कार्य में शत्रु से झगड़ा व समय का वृथा व्यय।

दशमेश—सप्तम में हो तो परदेश में भाग्योदय, व्यापार-उद्योग, भागीदारी, धन्धे में बहुत धन की प्राप्ति।

दशमेश—अष्टम में हो तो घोर कष्ट मिल कर मनोरथ पूर्ण न होगा।

दशमेश—नवम में हो तो यज्ञ-याग व धर्म करने वाला, सदाचरणी, पितृभक्त, स्वतंत्र धन्धा कर भाग्य का पूर्ण उदय करने वाला।

दशमेश—दशम में हो तो राज्यमान्यता प्राप्त व सम्मान मिलाने वाला, व्यापार धन्धे में कुशल होगा।

दशमेश—एकादश में हो तो दूसरे की नौकरी कर काफी द्रव्य प्राप्त करेगा।

दशमेश—द्वादश में हो तो हमेशा सांपत्तिक समस्या का त्रास, राजकीय संकट व ऐसे लोगों को बड़े धन्धे में न पड़ना ही उत्तम है।

एकादशेश फल विचार

एकादशेश—लग्न में हो तो धनवान व मित्रवान होगा।

एकादशेश—द्वितीय में हो तो संपत्तिवान व पैसा का देन-लेन करने वाला।

एकादशेश—तृतीय में हो तो स्वतंत्र, धनवान व भाइयों पर प्रेम करने वाला।

एकादशेश—चतुर्थ में हो तो मातृभक्त, मकान निर्माणकर्ता, स्थावर स्टेट का लाभ होगा।

एकादशेश—पंचम में हो तो विद्या, सन्तति-सुख उत्तम, ईश्वर भक्ति प्राप्ति।

एकादशेश—षष्ठ में हो तो शत्रु से लाभ का नाश, मित्र भी शत्रु होते हैं। पास धन न रहेगा। मामा से लाभ।

एकादशेश—सप्तम में हो तो स्त्री व भागीदार से भाग्य का उदय होगा।

एकादशेश—अष्टम भाव में हो तो परिश्रम के विना धन का लाभ, वेवारिस स्टेट का मिलना, गुप्त धन की प्राप्ति किन्तु मन सदा उदास रहेगा।

एकादशेश—नवम भाव में हो तो वड़े-वड़े लाभ के प्रसंग आते हैं।

एकादशेश—दशम भाव में हो तो व्यापार व उद्योग से धन की प्राप्ति, निर्धनता दूर होती है।

एकादशेश—यदि एकादश भाव में हो तो मित्रों से सहायता व अनेक प्रकार के लाभ, संतति सुख पूर्ण मिलता है।

एकादशेश—यदि द्वादश में हो तो हमेशा पैसे की अड़चन वनी रहेगी।

द्वादशेश फल विचार

द्वादशेश—लग्न में हो तो मनुष्य वहुत खर्चिक, मितभाषी, द्रव्य का खर्च मूर्खता-पूर्वक करता है।

द्वादशेश—यदि द्वितीय में हो तो कुटुम्व के कारण कर्जदार होता है।

द्वादशेश—यदि तृतीय में हो तो भाइयों के जवावदारी के कारण कुमार्ग से पैसा प्राप्त करने के तरफ चित्त जाकर खर्चा होता है।

द्वादशेश—यदि चतुर्थ में हो तो स्थावर स्टेट का नाश, आप्त वर्ग से दगा-धोखा।

द्वादशेश—पंचम में हो तो विद्या का अपव्यय, संतति धन नष्ट करने वाले होते हैं।

द्वादशेश—षष्ठ में हो तो नौकर, शत्रु, चोर आदि से भयंकर नुकसान, दरिद्रता से काल क्रमण।

द्वादशेश—सप्तम में हो तो अदालती मामलों में धन का व्यय, स्त्री के कारण धन का व्यय क्योंकि स्त्री ऐशोआरामतलब व चैनी रहेगी।

द्वादशेश—अष्टम में हो तो दुर्व्यसन में धन का नाश तथा अविचार से नुकसान।

द्वादशेश—नवम में हो तो तीर्थयात्रा, धर्मकृत्य, प्रवास व आप्तवर्ग के कई कर्जों की पूर्ति करने के लिये धन का व्यय होगा।

द्वादशेश—दशम में हो तो आर्थिक नुकसान, धन्धा के निमित्त खर्च के अन्दाज में गलती आदि कष्ट।

द्वादशेश—एकादश में हो तो मित्रों के कारण अनेक संकटों का सामना करना होगा।

द्वादशेश--यदि द्वादश में हो तो सौख्य नाश, बुरे व्यसन व मूर्खता से धन का व्यय ।

योग भावेश योग फल विचार

जन्मकुण्डली के द्वादश भाव में जो राशि-स्थिति हो उस राशि के स्वामी को भावेश (भाव ईश) कहते हैं । फलादेश की कल्पना जिस भाव से की जाती है, उस भाव के स्वामी का विचार अवश्य करना चाहिये । परन्तु किसी भी भाव में ग्रह यदि स्थित हो, बलिष्ट होवे तो उस भाव का फल उस भाव के स्वामी पर नहीं वरना उस ग्रह पर ही निर्भर रहेगा । यह ध्यान में रखने योग्य है । कुण्डली का कोई भी भाव बुध, गुरु, शुक्र व भावेश से युक्त या दृष्ट होकर पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त न हो तो उस भाव का फल शुभ मिलेगा । भावेश स्वतः के नीचराशि, शत्रु राशि या ६-८-१२ भाव में हो तो उस भाव का फल कभी शुभ न मिलेगा । परन्तु कोई भी भावाधिपति उच्च, मूल त्रिकोण, स्वगृह या मित्र राशि से युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव का फल शुभ मिलेगा । जैसे :- १-२-५-९-११ भाव में बुध, शुक्र स्थित हो तो मनुष्य को वेदान्त विषय की रुचि होगी । २-५ या ११ भाव में ज्यादे ग्रह हो तो वह कारस्थानी होगा । ३-९ भाव में चन्द्र-गुरु हो तो वह वकील होगा । ४-परस्पर बुध, मंगल की सप्तम दृष्टि हो तो वह इन्जिनियर होगा । ५-दूसरे-तीसरे भाव में रवि, चन्द्र, बुध हों तो वह गणितज्ञ होगा । ६-१-७ भाव व विशेषतः ३-९ भाव में चन्द्र-मंगल सिंह लग्न के कुण्डली में हो तो वह उत्तम गणितज्ञ होगा । ७-मिथुन लग्न में शुभ ग्रह हो तो वह शास्त्री पण्डित होगा ।

कोई भी दो भाव के स्वामी एक-एक के राशि में स्थित हो तो उसे अन्योन्य सम्बन्ध कहते हैं । जैसे :--लग्नेश लाभ भाव में और लाभेश लग्न भाव में हों तो उसे ही अन्योन्याश्रय योग कहते हैं । पाठकों के लाभार्थ उदाहरण रूप में इसका वर्णन संक्षिप्त में करना उचित होगा ।

उदाहरणार्थ :--

१--लग्नेश द्वितीय भाव में व द्वितीयेश लग्न में हो तो मनुष्य को विना प्रयास के धन की प्राप्ति होती है और वह श्रीमान्, बुद्धिमान व पुण्यकर्मकर्ता होता है ।

२--लग्नेश तृतीयेश का अन्योन्य योग हो तो राज्यपूज्य, कुल को सुख देने वाला, बन्धु सुख पाने व देने वाला व मातृपक्ष सुख भोगने वाला होता है ।

३--लग्नेश व चतुर्थेश का अन्यान्य योग हो तो पितृभक्त, क्षमावान, राजभक्त, उपदेशक व स्वतंत्र विचार का पुरुष होता है ।

४—लग्नेश व पंचमेश योग—मनुष्य ज्ञानी, विद्वान, स्वच्छन्दी, कुल में प्रख्यात, अभिमानी, दत्तक पुत्र योग आना शक्य है।

५—लग्नेश व षष्ठेश योग—द्रव्यवान, संग्रही, निरोगी, द्रोही होगा।

६—लग्नेश व सप्तमेश योग—पितृभक्त, स्त्रीलंपट व शालक पर प्रेम करने वाला।

७—लग्नेश अष्टमेश योग—शूर, जुवाड़ी, चोर, राजा व लोगों से उसकी मृत्यु।

८—लग्नेश व नवमेश योग—प्रवासी, राजामान्य व धर्मशील होगा।

९—लग्नेश व दशमेश योग—गुरुभक्त व राजा के समान सम्पत्तिवान होगा।

१०—लग्नेश व एकादश योग—विद्वान्, राजा से मान्यता व दीर्घायु होगा।

११—लग्नेश व द्वदशेश योग—सब का शत्रु, कृपण, द्रव्य का नाश करने वाला।

इसके सिवाय जब दो भाव के स्वामी एक दूसरे से त्रिकोण योग करते हों तब वे मनुष्य को यश, कीर्ति व वैभव देते हैं। जब केन्द्र योग करते हों तब दोनों भाव के फल इच्छानुसार पूर्णरूप से नहीं मिलता परन्तु विपरीत परिस्थिति का सामना करने के लिये प्रबल शक्ति प्राप्त होती है। जब त्रिरेकादश योग करते हों तब लाभदायक व संपत्तिदायक फल देते हैं। जब द्विर्दादश योग करते हो तब दारिद्र व विपरीत परिस्थिति निर्माण करते हैं व जब षडाष्टक योग करते हों तब दुःख, कष्ट, शत्रुत्व व बिलंब फलदायी कहलाते हैं। इन योगों के अतिरिक्त माला योग का भी विचार करना आवश्यक है। जैसे :—जन्मकुण्डली के प्रथम भाव में मेष राशि स्थित है अर्थात् मेष लग्न की कुण्डली है। मेष राशि का स्वामी मंगल द्वितीय स्थान में, द्वितीय भाव का स्वामी शुक्र तृतीय भाव में तृतीय भाव का स्वामी बुध चतुर्थ भाव में, चतुर्थ भाव का स्वामी चन्द्र पंचम भाव में, इस तरह प्रत्येक भाव म राशि व भाव के स्वामी जन्मकुण्डली में स्थित हो तो उसे माल्रायोग कहते हैं। साथ ही यदि लग्न से अगले तीन भाव में सब ग्रह स्थित हों उसे यूप नाम का माला योग कहते हैं और मनुष्य दाता, यज्ञ और उद्योगकर्ता होता है। चतुर्थ भाव से अगले तीन भाव में सब ग्रह स्थित हों तो उसे (शर) नाम का माला योग कहते हैं। इसका फल मनुष्य तुरगाधिकारी शस्त्रों का कारखानादार व हिंसक होता है। सप्तम भाव से अगले तीन भाव में सब ग्रह स्थित हों उसे शक्ति माला योग कहते हैं। इसका फल मनुष्य नीच, आलसी, दुःखी व दरिद्री होता है। दशम भाव से अगले तीन भाव में सब ग्रह स्थित हों तो उसे दण्ड माला योग कहते हैं। फल—मनुष्य नीच वृत्ति का व किसी के भी प्रेम व विश्वास के पात्र नहीं होता। उसी तरह लग्न से सात भाव मे सब ग्रह स्थित हों उसें माला योग कहते हैं। फल इसका पानी से उत्पन्न होनेवाले पदार्थों पर वह अपनी उपजीविका निभाता है। चतुर्थ भाव से अगले सात भाव में सब ग्रह स्थित हों उसे कंठ-माला योग कहते हैं। फल-पहाड़ व जंगल में रहने वाला, क्रूर वृत्ति का मनुष्य होता है। सप्तम भाव से अगले

सात भाव में सब ग्रह स्थित होने से छत्र माला योग होता है। फल—आयुष्य के आरम्भ से वह अन्तिम समय तक सुखी व धनवान होता है। दशम से सात स्थान में सब ग्रह हो तो चाप माला योग कहलाता है। फल—विकट जगह रहना, चोरी का घन्धा करना, जंगली जाति के लोगों का सा स्वभाव होता है। केन्द्र के सिवाय भी स्थान से सात स्थान में सब ग्रह स्थित हों तो उसे अर्धचन्द्र योग कहते हैं। फल—मनुष्य अनेक प्रकारका सुख भोगता है। किसी भी स्थान से अगले सात स्थान में ग्रह होने से वीणा योग कहलाता है। फल—मनुष्य गायन-वादन व नर्तन आदि का शौकीन होता है। कोई भी स्थान से सब ग्रह छ स्थान में हों तो उसे दामिनी योग कहते हैं। फल—विद्वान व परोपकारी होता है। सारांश जन्मकुण्डली में ग्रहों के स्थिति के अनुसार ऊपर लिखे हुए योगों अर्थात् १—यूप, २—शर, ३—शक्ति, ४—दण्ड, ५—नौ, ६—कूट, ७—छत्र, ८—चाप, ९—अर्धचन्द्र, १०—वीणा ११—दामिनी का फलित वर्तते समय इनका विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

ग्रहों के भावगत फलादेश

रवि फलादेश

लग्न (प्रथम) भाव में रवि हो तो मनुष्य नेत्र रोगी, आलसी, संतति के कारण सदा चिंतित, भाइयों से विरोध, वात-पित्त प्रकृति, अशक्त शरीर, राज्यमान्य, पराक्रमी होगा। इस भाव में सिंह राशि का रवि हो तो उदारकुल, शीलवान किन्तु लोभी, २—६—१० राशि का रवि दुराग्रही, गर्विष्ट, ३—७—११ राशि का रवि न्यायी, उदार, शास्त्रप्रिय, धन राशि का हो तो कुटुम्ब व जायदाद के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है। ४—८—१२ राशि का हो तो व्यसनी होगा। उम्र के १५ वें वर्ष शरीर पीड़ा होगा।

२—द्वितीय भाव में रवि—मनुष्य को खर्चिक, उदार, मुख-नेत्र रोगी, कर्जदार कुटुम्ब व स्त्री से हमेशा त्रास, स्त्री की अशक्ति प्रकृति, शत्रु को जीतने व अनुकूल करने वाला, बड़ी आवाज, पिता, काका, राजदरवार से धनलाभ, चतुष्पाद सुख, उम्र के १७ वें वर्ष संपत्ति व पशु का नाश।

३—तृतीय भाव का रवि—मनुष्य को शूर, पराक्रमी बनाता है। उदार स्वभाव, धन-सम्पन्न होने के कारण प्रख्यात होगा। तीक्ष्ण बुद्धि, उत्तम शरीर, बन्धु सुख बहुत कम, शास्त्रीय विषय की रुचि, दृढ़निश्चयी, उद्योगी, प्रवासप्रिय, खुले भाव से कार्य करने की प्रवृत्ति, घोड़े के सवारी का शौक, युद्ध-विद्या में प्रीति, उम्र के २७ वें वर्ष धन की प्राप्ति।

४—चतुर्थ भाव का रवि—मनुष्य को पितृधनहीन, मानहानि, बन्धु-भगिनी सुख-रहित, किन्तु उच्च या शुभ ग्रह युक्त व दृष्टि का रवि उतार उम्र में राजप्रिय व धनवान करता है। जमीन-जायदाद, मकान का सुख प्राप्ति, मातृसुख कम, हमेशा चिन्ता में मग्न रखता है। १४ वें वर्ष की आयु में कलह-पीड़ा।

५—पंचम भाव का रवि—चंचल बुद्धि, प्रवास का शौकीन, नाटक कला के प्रति प्रेम, उदार स्वभाव, सट्टा, शर्यत, लाटरी, व्यापार में धनलाभ, धर्म पर श्रद्धा न रहे कपटी, विलासी, स्वजन से क्रूर व्यवहार, संतति के लिये अनिष्ट, कन्या संतति अधिक, गुरु से युक्त या जलराशि का हो तो साधारण संतति सुख, आयु के ९ वें वर्ष पिता का नाश।

६—षष्ट स्थान का रवि—स्वाभिमानी, राजपूज्य, शूर, कामासक्त, प्रख्यात, संपत्तिवान, वैद्यकशास्त्रप्रिय, नौकरी से लाभ, आचार-बुद्धि, आप्तशी का हितेच्छु, आनंदी, प्रदीप्त जठराग्नि, स्पष्ट वक्ता होने के कारण अनेक शत्रु होते हैं। निरोगी शरीर, माता का सुख पूर्ण। इस भाव में दूषित रवि हो तो रोगी, आयुष्य कम, दीर्घ काल टिकने वाले रोग से त्रस्त, २–८–११ राशि का हो व पीड़ित हो तो कण्ठ रोग, दमा, हृदयरोग, कटिरोग, ३–६–१२ राशि में रवि पीड़ित हो तो कफ, क्षय, आम्लविकार, ४–७–१० में पीड़ित हो तो संधिवात, पेटविकार। इस स्थान का रवि ३ रे वर्ष सुखदायक होता है।

७—सप्तमभाव का रवि—क्रोधी, स्त्री सुख रहित, विरह अवस्था में वहुत काल क्रमण होना, प्रामाणिक निष्कपटी, उत्तम भागीदारों से लाभ, स्त्री के काबू में रहने वाला, ज्यादा वोलने वाला, सभा व संग्राम में यश मिलाने वाला, देशान्तर में भाग्योदय, यांत्रिक शक्ति से लाभ, आयु के मध्य में विवाह, सूर्य पीड़ित हो तो लग्न होने में विघ्न। इस भावका रवि २४ वें वर्ष धनलाभ व स्त्री सुख देता है।

८—अष्टमभाव का रवि—असन्तुष्ट हृदय, क्लेशयुक्त शरीर, आप्त वर्ग से अपमानित, आयु के तीसरे वर्ष मृत्यु सम पीड़ा, आयु के ३० से ३३ वर्ष तक अपमृत्यु भय, स्त्री का नाश, पति पत्नी बीमार रहेगें। क्रोधी स्वभाव, त्यागी, चञ्चल, कलह प्रिय, जीर्णवस्त्र धारण करने वाला, कम पुत्र, नेत्र विकार, आप्त वर्ग से धोखा, लोहघात, क्षय रोग, वन्धन, अज्ञात वास, राजदण्ड से मरण, आयु के ३४ वें वर्ष स्त्री का नाश।

९—नवम भाव का रवि—मातृ, पितृ, गुरु से द्वेषी, परधर्म स्वीकारी। संतति युक्त, आयु के प्रथम भाग में रोगी, पश्चात् धनवान, दीर्घायुषी, गम्भीर वृत्ति. .—१ राशि का रवि प्रवास में धन प्राप्ति, स्थावर स्टेट लाभ, कायदा कानून का ज्ञाता, शास्त्रीय ज्ञानकी रुचि, इस स्थान में रवि स्वग्रह, उच्च, शुभ ग्रह युक्त हो त. उत्तम भाग्यवृद्धि कारक समझा जाता है। आयु के १०वें वर्ष तीर्थ यात्रा व धर्म कृत्यका लाभ।

१०—दशम भाव का रवि—मनुष्यको पितृ सुख व धन लाभ होगा, सुस्वभाव के कारण उसे सन्मित्र व कीर्तिकी प्राप्ति, राजा समान ऐश्वर्य, सात्विक बुद्धि, लेखन कौशलता, सरकारी नौकरी में अधिकार लाभ, कलाकौशल के प्रति प्रीति, वृषभ राशि का रवि हो तो खेती के ओर लक्ष्य, कर्क राशि का हो तो जलपर्यंटन से लाभ, १–५

सूर्य

ग्रहाणामादिरादित्यो, लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसंभूतां, पीडां हरतु मे रविः ॥ १ ॥

चन्द्रमा

रोहिणीशः सुधामूर्तिः, सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥ २ ॥

राशि का रवि हो तो हिंसक व शिकार में निपुण, १९वें वर्ष में परदेश गमन और ३० वर्ष के आयु में भाग्योदय।

११—एकादश भाव का रवि–विपुल संपत्ति, स्त्री व नौकर सुख, पराक्रमी, बुद्धिमान, धर्मशील जितेन्द्रिय, शत्रु पर विजय, पुत्र सुख कम, ऊँचे कुल के मिल मालिक, राजा या धनिक लोगों का खासगी, कारभारी, उत्तम विद्या, सुन्दर स्त्री, उत्तम पदार्थ का भोक्ता, गायन वादन प्रिय, गुप्त सलाहकार, ईमानदारी के कारण अधिकार प्राप्ति। इस स्थान में रवि दूषित हो तो अनिष्ट फल। २४ वें वर्ष पुत्र लाभ।

१२—द्वादशभाव का रवि–पितृ सुखहीन, द्रव्यहीन, दरिद्री व संकट, पीड़ित रवि हो अधिकारी से त्रास, बन्धन योग, स्वदेशत्याग, धननाश किन्तु शुभ व उच्च का रवि हो तो जेल अस्पताल वर्ग से लाभ, प्रवास, वन्धु वियोग, कुक्षिरोग, शनि युक्त रविचन्द्र हो तो दिवालिया होगा। आयु के ३२ वें वर्ष भारी हानि।

चन्द्र फलादेश

१—प्रथम भाव में चन्द्र हो तो–स्त्री प्रिय, विलासी, चंचल, सज्जन, डरपोक, झगड़ा झन्झट मिटाने में प्रवीण, वृषभ का चन्द्र या कर्क का चन्द्र हो तो गम्भीर, भाग्य-शाली वैभव युक्त, १–५–९ राशि का चन्द्र धाड़सी, उतावला, ३–६–९–११ व ७ का शास्त्रज्ञ विद्वान, ४–१२ राशि का हो तो लोकप्रिय, मायालू, खेती की रुचि, ८ राशिका हो तो व्यसनी, नीच, ५–६ राशि का चन्द्र नेत्र रोग, आयु के २७ वें वर्ष रोग पीड़ा।

२—द्वितीय भाव में चन्द्र हो तो–मर्मज्ञ, धनवान, विपयी. विद्या प्रिय, उत्तम वाचाशक्ति, कौटुम्बिक सुख, द्रव्य संचयी, चन्द्र यदि वुध से दृष्ट हो तो पितृ धन लाम रहित, परदेश गमन से लाभ, अनिश्चित धन स्थिति। ८–१० राशि का चन्द्र हमेशा नुकसान के प्रसंग, शुभ वस्तु से धन लाभ, स्त्री वर्ग से धन प्राप्ति, चन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो वैद्यक विद्या में प्रवीण, खर्चिक, आयु के २७ वर्ष में धनलाभ।

३—तृतीय भाव का चन्द्र–सात्विक वृत्ति, वन्धु प्रिय, धनवान, कनिष्ट वन्धु पर प्रेम, वलवान, प्रवासी, विद्वान, गूढ़ विपय का ज्ञान, प्रवास से लाभ, कुशल लेखक, लहरी, उम्र के तीसरे वर्ष से सुख, २७ से ३० वर्ष तक प्रवास व सुख प्राप्ति, हिंसक। नीच राशि का चन्द्र हो तो कर्णरोगी, कृपण, तकरारी, धर्म की ओर प्रवृत्ति। शुभ राशि में हो तो काव्य प्रेमी, पांचवें वर्ष वन्धु लाभ।

४—चतुर्थ भाव का चन्द्र हो तो–सुखी, राजाश्रयी, कृषि व जल से लाभ, खेती से विशेष लाभ, खदान के काम में लाभ, कीर्तिमान्, विवाह के पश्चात् भाग्योदय, स्त्री धन प्राप्ति, चतुष्पाद प्राणी से सुख, उत्तम मातृसुख, पापभीरू, स्त्रियों को मोहित करने वाला, राजघराने से देनगी रूपका लाभ, चन्द्रमंगल का अशुभ योग हो तो अधिक

भोजन प्रिय, शुक्र से युक्त हो तो व्यसनी व नीच लोगों की संगति, संतति सुख में आपत्ति, २२ वें में पुत्र लाभ।

५—पंचम भाव का चन्द्र हो तो—लक्ष्मीवान्, भाग्यशाली, पठनशक्ति, सन्मान युक्त, मंत्र विद्या की रुचि, दयालु, आनन्दी, स्वछन्दी, चैनी, ललित कला प्रिय व आर्थिक लाभ, भाग्यवान संतति वाला, वृषभ या कर्क राशि का चन्द्र कन्या सन्तति अधिक, लाटरी सट्टा से लाभ। विद्या, वस्त्र, अन्न का प्रेमी, धन मीन राशि का चन्द्र हो तो धर्म पर श्रद्धा, धर्म पर पूजा अर्चा करने वाला, प्रवास प्रेमी, आप्त वर्ग अनुकूल, शनि की दृष्टि हो तो ठग, हँसने वाला, दूसरों को फसाने वाला, ६ वें वर्ष अग्नि से पीड़ा।

६—षष्ट भाव का चन्द्र हो तो—मन्द बुद्धि, रुपहीन, खर्च करने वाला, नौकर से त्रास, क्षीण व पापग्रह दूषित चन्द्र अल्पायु, पूर्ण व शुक्ल पक्ष का चन्द्र दीर्घायुषी, अधिक शत्रु, मैथुनासक्त, आलसी, मन्दाग्नि युक्त वातकफ रोग, ३-६-९-१२ राशिका चन्द्र हो तो कफ विकार, वृषभ का चन्द्र कण्ठ रोग, वृश्चिक का चन्द्र ववासीर रोग, शुक्र से युक्त हो तो व्यसनी, वन्धु वर्ग से विरोध, स्त्री के लिये धन का व्यय, न्याय कार्य में अपयश, वलवान चन्द्र नौकरी में उन्नति, ६ वें वर्ष में अंग पीड़ा।

७—सप्तम भाव का चन्द्र हो तो—दयालु, प्रवासी, स्त्रीवशी, वाणिज्य से उपजीविका का साधन, मिष्टान्न प्रिय, सुखी, सुप्रसिद्ध। वुध गुरु से युक्त हो तो जमीनदार, स्त्री-पुत्र युक्त, शनि से युक्त हो तो पुर्नविवाह या ज्यादा उम्र वाली पत्नी। १-४-७-१० राशि का चन्द्र प्रवासी, २-९-११-१२ का चन्द्र व्यवहार दक्ष स्त्री प्राप्ति, ईर्ष्यायुक्त व कामासक्त, राजमान्यता, अल्प आयु में विवाह २४ वर्ष में होगा।

८—अष्टम भाव का चन्द्र हो तो—अनेक रोगों से पीड़ित, परद्रव्य हरणकी प्रीति, शरीर सुख कम, शुभ सम्वन्धित हो तो भागीदारी में वहुत लाभ, देश त्याग, दुराग्रही, दयारहित, शुक्र मंगल से पीड़ित हो तो आकस्मिक अपमृत्यु वा जलमें डूव जाने से मरण, माता की अकाल मृत्यु, गुरु से युक्त हो तो योगाभ्यासी, ३२ वें वर्ष में जल से अपघात का डर।

९—नवम भाव का चन्द्र हो तो—पितृ सेवा रत, उत्तम पुत्र लाभ, सत्कर्म में धन का व्यय, ऐश्वर्यवान्, साधु सन्तों का आश्रित, कीर्तिमान्, शुक्र से युक्त हो तो कुटिल स्त्री व सापत्न मातृवाला, नौकरी पेशा, कायदे शीर उद्योग, मुद्रण कला, भागीदारी, परदेश में व्यापार से लाभ, २० वर्ष में तीर्थ यात्रा व २४वें वर्ष से भाग्योदय।

१०—दशमभाव का चन्द्र हो तो—धनधान्य युक्त आनन्दी, शृंगार के मोहक वस्तुओं के व्यापार का व्यापारी, सन्तोषी, कल्याण कारण, कुल में श्रेष्ठ व सज्जन, सार्वजनिक कार्य में यश, राजदरवार के कार्य में प्रवीण व उदय पाने वाला, धनी स्त्री से आश्रय, रानी का खासगी कारभारी, पदवी प्राप्त करने वाला, चन्द्र यदि दोषी हो तो श्वास विकार, रोग दुर्भागी, निरुद्योगी, अपमानित, चर राशि के चन्द्र में धन्धे में

अस्थिर, मंगल से युक्त हो तो बहुत नुकसान, शनि से युक्त हो तो धन्धे में अनेक आपत्ति, आयु के २४वें वर्ष व ४३ वर्ष में धन लाभ।

११—ग्यारहवें भाव का चन्द्र हो तो—धनवान, शुभ राशि में संतति अधिक संख्या में, स्त्रियों से बारम्बार लाभ, ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण, स्थिर धर्मवृत्ति, सन्तान, आप्त वर्ग, नौकर का सुख, उत्तम संसार सुख, सार्वजनिक कार्यका नेता, इतिहासज्ञ, परन्तु चन्द्र यदि नीच व हीन बली हो तो लफंगे लोगों से मित्रता, अपकीर्ति, समाज में अपमानित, आप्त वर्ग से पीड़ा व सन्तति सुख रहित, १६ वें वर्ष धन प्राप्ति व २७ वें वर्ष में सम्मान।

१२—बारहवें भाव में चन्द्र हो तो—परदेश वास, गुप्त विद्या की रुचि, एकान्त वास प्रिय, तपस्वी, त्यागी, वैद्यक व्यवसायी, मंगल कार्य एवं उत्सव में धन का खर्च करने की प्रवृत्ति, ४–६–१२ राशि का चन्द्र हो तो सट्टेबाज, साहसी, राजयोगी, स्त्री का भोक्ता, ज्ञानी व मांत्रिक बनाता है। शीत विकार पीड़ा। पीड़ित चन्द्र हो तो क्रोधी, निर्धन नीच लोगों की संगति, हलके विचार व बुद्धि वाला, व्यंग शरीर एवं आलसी बनाता है। सूर्य मंगल से पीड़ित हो तो राजा से द्रव्यका हरण, गृह कलही, नेत्र रोगी, जुआ में धन का नाश, बारम्बार राजदण्ड, कैद। यदि चन्द्र ८–१० राशिका हो तो ठग, लुच्चा। द्वादश चन्द्र से उम्र के तीसरे वर्ष में नुकसान व ४५वें वर्ष में जल से अपघात।

मंगल फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—क्रूर, दुष्ट, साहसी, रक्त पित्त रोग, गुल्म प्लीहा रोग, लश्करी वृत्ति। रवि शनि से युक्त हो तो मातृद्वेषी। शनि से युक्त हो तो तामसी व मातृद्वेषी। रवि से युक्त हो तो साहसी, शूर, क्रोधी, कठोर। बचपन में दरिद्री, मलिन, आलसी, चुगुलखोर, कृश शरीर, पापी, सुख रहित, स्त्री सुख वंचित, असंतुष्ट, मेष का मंगल हो तो आरक्त नेत्र, वृषभ का मंगल हो तो आँखों में चीपड़, मिथुन का मंगल हो तो क्रूर दृष्टि, कर्क, सिंह, कन्या का मंगल हो तो तिमिर योग, तुला का मंगल हो तो वक्र दृष्टि, वृश्चिक का मंगल हो तो आँखें बड़ी, धन का मंगल हो तो नेत्र रोगी, मकर का मंगल हो तो दूर दृष्टि, कुम्भ का मंगल हो तो बुरे नजर का, मीन का मंगल हो तो स्पष्ट दृष्टि, स्वधर्म प्रेम रहित। ४-१२ राशि का हो तो चैनी, नशेबाज, व्यभिचारी, पाँचवें वर्ष मृत्यु सम पीड़ा।

२—द्वितीय भाव में हो तो—खदान में काम या खेती करनेवाला, दुष्टजन से संपत्ति नाश, नेत्र, दन्त रोग, पशु से पीड़ा, पैसे के संबंध से अविश्वास, चन्द्र युक्त हो तो पैसा बहुत मिलेगा। कुटुम्बियों से उदास, अग्नि बाधा से त्रास, गरम पदार्थ खाने की वृत्ति, तकरारी, इमारती काम, यंत्र सामग्री, पशू का व्यापार, वैद्यकी से द्रव्य लाभ, नववें वर्ष व्याधि और बारहवें वर्ष धन हानि।

३—तृतीय भाव में हो तो—पराक्रमी, श्रेष्ठ कवि, शत्रु को पराभव करनेवाला, लड़ाई के काम में प्रवीण, वन्धु सौख्य रहित, कनिष्ट बंधु को त्रास, हमेशा प्रवास करने की इच्छा, पीड़ित मंगल से मानसिक त्रास व पागलपन, राजा से मान, धनसुख रहित, तेरहवें वर्ष मातृ सुख में कष्टमय स्थिति निर्माण करता है।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—स्त्री वश, आप्तजन हीन, मातृ सुख वहुत कम, वाहन से पीड़ा, सदा रोगी, चिंताग्रस्त, कृश शरीर व दुखी, चोरों का भय, रहने के घर में अग्नि से जलने का प्रसंग, वृद्धापकाली वेहाल, अकस्मात् मृत्यु, स्त्री सौख्य न मिलना, धन व मीन का हो तो शुभ मुसाफिरी में धन लाभ, १-८-१० राशि का हो तो भूमि व वाहन लाभ, तुला राशि में उत्तम फल, ८ वें वर्ष में वन्धु नाश।

५—पाँचवें भाव में हो तो—शरीर कष्ट, पुत्र चिन्ता, राजदण्ड, अग्नि से भय, मूर्खों की संगति, देशांतर में कुटुम्ब सह रहनेवाला, क्रूर, चपल, स्त्री का गर्भपात या प्रसूती रोग, गुरु से शुभ योग हो तो चैनी, व्यभिचारी, जुआड़ी, ऐशोआरामी, विद्या में आपत्ति, प्रवासी, पाँचवें वर्ष में वन्धु नाश व ६ वें वर्ष अग्नि भय।

६—षष्ट भाव में हो तो—स्टेट, कीर्ति प्राप्ति, निष्कटी, पण्डितों की मैत्री, शुभ संवंध हो तो झूठे नौकर, ठग, अग्नि अपघात, युद्ध से मरण, मातृ सुख नाश, क्रोधी, निडर, ववासीर रोगी, २-५-८-११ राशि का हो तो हृदय, कण्ठ, मूत्र रोग, १-४-७-१० का हो तो अग्नि भय, नौकर से हानि, ४-१२ राशि में हो तो व्यभिचारी नीचकर्मी, २४ वें में पुत्र लाभ।

७—सप्तम भाव में हो तो–भागीदार से अनवन, वैवाहिक सुखहीन, कुटुम्व से अलग रहने का प्रसंग, ४-१२ राशि में खराब वृत्ति की पत्नी, १-८-१० राशि का वैवाहिक सुख नाश व विवाह का पुनः न होना। शुक्र चन्द्र से युक्त हो तो व्यभिचारीं, शत्रु उत्पन्न, अदालती काम में अपयश, चन्द्र से शुभ योग हो तो द्यूत, युद्ध, शर्यत, सट्टा से लाभ, १६ वें वर्ष अग्नि भय व २७ वें वर्ष स्त्री नाश।

८—अष्टम भाव में हो तो—धनी व नेता, खर्चिक, नेत्र रोगी, शस्त्र से भय, अग्नि भय, मृत धन लाभ, मंगल क्षीण हो तो विष खाने से मृत्यु, गुह्य रोग, ववासीर, रक्त स्राव, स्त्री सुख नाश, मित्रों का शत्रु होना, विवाह होने पर लाभ परन्तु वचत शून्य। २२ वें वर्ष विपत्ति, २५ वें वर्ष मृत्यु सम पीड़ा।

९—नवम भाव में हो तो—झूठ बोलनेवाला, शंका खोर, हट्टी, कड़ा स्वभाव, ईर्ष्याखोर, पिता सुखहीन, स्वपराक्रम से कुल में प्रसिद्ध, शंकर देवता उपासक, दूषित मंगल हो तो रोगी, द्वेषी, पापी, भाग्यहीन, वृथाभिमानी, बुध युक्त हो तो सदा उदासीन, धर्म रहित। शुभ ग्रह से युक्त हो तो द्रव्य प्राप्ति, सुशील, पुण्यकर्मी, प्रवीण शिकारी, राजा से मान प्राप्ति, तीव्र बुद्धि, इसके वलावल के अनुसार ऊँचे पद की प्राप्ति, १-५-९ राशि का उद्धत। ३-७-११ राशि का वेकायदा से कार्य करनेवाला, २-६-८-१०-१२

मंगल
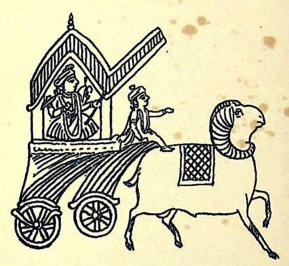
भूमिपुत्रो महातेजा, जगतां भयकृत्सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च, पीडां हरतु मे कुजः॥ ३॥

बुध
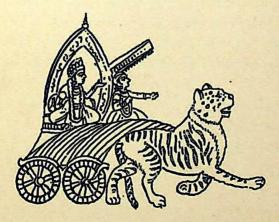
उत्पातरूपो जगतां, चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः॥ ४॥

राशि का हो तो सामान्यतः उत्तम । भाग्य में पीड़ित मंगल हो तो प्रवास में अपघात का भय । १४ वें वर्ष में पिता का नाश व २८ वें वर्ष भाग्योदय ।

१०—दशम भाव में हो तो—कुल दीपक, पराक्रमी, विजयी, स्त्रियों के चित्त हरनेवाला, स्थावर स्टेट पर निर्वाह करनेवाला, तेजस्वी, क्रोधी, लश्करी वृत्ति, काम को पूर्ण कर छोड़नेवाला, गुरुजनों पर प्रेम । १-८-१० राशि का हो तो धैर्यवान्, जनसेवक, प्रतापी, अग्नि व शस्त्र के व्यापार से उदर निर्वाह, धाड़ी व्यापार से धन लाभ, उतावला, लोभी, कठिन कार्य करने की वृत्ति, पीड़ित मंगल हो तो लहरी, व्यसनी, अधिकार हानि, २६ या २८ वर्ष में शस्त्र से डर ।

११—एकादश भाव में हो तो—राजयोग १-२-६-८-९-१० राशि में हो, शुभ दृष्ट हो सांपत्तिक लाभ, मित्रों से सहायता, शुभ दृष्ट यदि न हो तो मित्रों से वैमनस्य, तकरार, सामाजिक कार्य में वितण्डावाद दूषित मंगल हो तो बुरे लोगों के संगति से नुकसान, संतति नाश, स्थावर स्टेट लाभ, शत्रुनाश, राजकृपा, उदार वृत्ति, हमेशा अनेक प्रकार के लाभ, २४ वें वर्ष में लक्ष्मी की प्राप्ति ।

१२—द्वादश भाव में हो तो—अधिकार योग भंग, परधन लोभी, विलासी हंसमुख, हमेशा भटकनेवाला, परस्त्री सक्त, उद्योगशील, द्रव्य संचय व स्त्री सुख रहित, गुरु की धर्म भाव पर दृष्टि न हो तो स्वधर्म प्रेम रहित, कर्जदार, दुःखी, व्यसनी, ४-१२ राशि का मंगल हो तो दुर्व्यसनी, लोगों से विशेष मित्रता । शुक्र का शुभ योग हो तो यही फल मिलता है, उच्चपद से अधःपद पर गिरनेवाला, राजदण्ड भोगनेवाला, सदा अनिष्ट फलदायी । १५ वें वर्ष द्रव्य हरण, ४५ वर्ष में भारी हानि ।

बुध फलादेश

प्रथम भाव में हो तो—सबका प्रेमी, पण्डित, विचारी, धर्माभिमानी, त्यागी, लेखक व प्रकाशक, गणितज्ञ, काव्य, वैद्यक विद्याव्यासंगी, गंभीर सद्गुणों का आगार, मधुरभाषी, शान्त स्वभाव, जिस राशि में हो उसके गुण का पूर्ण अनुभव मिलेगा । २-१० राशि में हो तो हट्टी व कपटी, ३-६-७-११ का तीव्र बुद्धि व वक्तृत्व शक्ति उत्तम, ८ राशि का हो तो रसायनशास्त्र व वैद्यक धन्धे में प्रवीण, दसवें वर्ष कीर्ति को बढ़ाता है ।

२—द्वितीय भाव मे हो तो—अच्छा वक्ता, संपत्तिवान् दलाली व सलाहगार, लेखन व प्रकाशन से धनलाभ, संग्रह में धन, प्रवासी, पापभीरू, साधु वृत्ति, स्वतः के प्रयत्न से धन प्राप्त करने वाला, विद्याव्यासंगी, अच्छे पदार्थों का भोक्ता, कुटुम्ब में सबको प्रिय, बुध शुभ सम्बन्धित हो तो वकीली व अध्ययन काम में प्रवीण, ३६वें वर्ष अकस्मात् धनलाभ, २६वें वर्ष धन हानि ।

३—तृतीय भाव में हो तो—साहसी, सौख्यहीन, कुशल लोकहित कर्ता, मिथुन का बुध हो तो ग्रन्थ लेखन व प्रकाशन व्यवसाय में कीर्ति व्यापारी, लोगों की मित्रता, बन्धु

से सहायता, गूढ़ विद्या व ज्योतिष का व्यासंग, विषयी किन्तु त्याग शील, गहरे दिलका, प्रवास से धनलाभ, सुन्दर वस्तु का संग्रही, १२वें वर्ष में धन का लाभ होता है।

४—चतुर्थभाव में हो तो–चञ्चल स्वभाव, संपत्तिवान्, पण्डित, बन्धु सुख रहित, अनेक स्त्रियों का भोक्ता, लज्जा हीन, जमीन जुमला व्यापार में यश व धन प्राप्ति, वाहन सुख, संगीत व गायन प्रेमी, स्त्रियों को आभूषण दे प्रेम संपादन करने वाला, ३–६ राशि का हो तो उत्तरार्ध आयुष्य में लाभ व विजय प्राप्ति, तीव्र स्मरण शक्ति, शनि से अशुभ योग हो तो विश्वासघाती व चोरी से त्रास। २२वें वरस पुत्र लाभ।

५—पंचम भाव में हो तो–गायन वादन कला में प्रवीण, स्त्री पुत्र सुख उत्तम, देव ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा, उपासक, मांत्रिक, जादू टोना विद्या में प्रवीण, द्रव्यवान्, राजमंत्री, सलाहगार, लोगों को अपने बुद्धि से चकित करने वाला, संतति सुखपूर्ण, पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो संतति पागल होगें, जुवारी व व्यसनी होगा। शनि से युक्त हो तो एक ही संतति, वाद विवाद में प्रवीण, सन्तोषी, आयु के प्रथम पुत्र से सुख रहित, व्यभिचारी परन्तु वैभव प्राप्त, २६वें वर्ष मातृकष्ट।

६—षष्ट भाव में हो तो–आत्मसंयमी, मातृसुख, व्यवहार चतुर, नाभि प्रदेश में व्रण, स्वजन से वैर, आलसी, दुष्ट स्वभाव, क्षय व श्वास रोगी, मानसिक व्याधि, नौकरों से त्रास, लेखन व मुद्रण कला से धन लाभ, मंगल शुक्र शनियुक्त हो तो स्त्रियों के पीछे पागल होता है। आत्महत्या भी कर बैठे। वैद्यक शास्त्रोक्त भोजनकी ओर वृत्ति। ३ रे वर्ष शस्त्र पीड़ा, व ३६वें वर्ष शत्रु भय।

७—सप्तम भाव में हो तो–बलवान बुध यदि हो तो विद्वान, स्त्री व भागीदार का लाभ, विनोदी, बहुत संतति युक्त, उदित बुध हो तो अनेक स्त्रियों का लाभ, गुरु से युक्त व दृष्ट हो तो सुशील, वैभववाला, सत्य प्रिय, उत्तम संतति व पराक्रमी, व्यापारी, जुगार, प्रभाव से धनलाभ, उत्तम लेखन कला में प्रवीण, १७ या २२ वर्ष में विवाह योग।

८—अष्टमभाव में हो तो—संतति कम, नम्र, अतिथि सत्कारी, व धनी सत्ताधिकारी, श्रम के विना द्रव्य प्राप्ति, पवित्र आचरणी, शत्रुओं का पराभव करने वाला, परदेश में ख्याती, व्यापार में निपुण, आध्यात्मिक विद्या की रुचि। १४वें वर्ष में द्रव्य हानि।

९—नवम में हो तो–विद्वान, धनवान, कृतिकला में प्रवीण, धर्मनिष्ठ, स्त्री पुत्रादि का सुख पूर्ण, सन्मार्ग से धन प्राप्ति, सत्पुरुषों की सेवा से लाभ, शास्त्रज्ञ, संशोधन के नाते परदेश का प्रवास, उत्तम प्रवास वर्णन का लेखक, प्राचीन धर्माभिमानी, परोपकारी, नौकरों का सुख, कुलको शोभा लाने वाला। १९ वें वर्ष मातृसुख का नाश व ३२वें वर्ष भाग्योदय।

१०—दशम भाव में हो तो–वेदाध्ययनी, ज्ञानी, सत्कर्मा, लोकप्रिय, सज्जनों के संगत में रहने वाला, तीव्र बुद्धि, अनेक प्रकार के धन्धे में प्रवीण, विनोदी, भाषण प्रिय,

लेखन कला में प्रवीण, दलाली कार्य में धन प्राप्ति, पापग्रह से युक्त हो तो इसके विपरीत फल मिलेगा। मंगल से युक्त हो तो गप्पबाजी में प्रवीण, साधारणतः शुभ संबंधित बुध गुरुजन के प्रति आदर, व्यापार में लाभ, १६ या २९ वर्ष में धन लाभ।

११—एकादश भाव में हो तो—शिल्पकला, ज्योतिष, सामुद्रिक गूढ शास्त्र का व्यासंग, लेखन कला से लाभ, राजकृपा से लाभ, इष्टहेतु की सिद्धी, स्त्री सुख आजन्म, गायन कला की रुचि, प्रचण्ड विद्वत्ता का गौरव, मानसिक उन्नति, अनिश्चित प्राप्ति, बुध यदि पीड़ित हो तो पत्र व्यवहार से गैर समझ। कुल में प्रख्यात, कन्या संतति अधिक, ४१वें वर्षमें भारी लाभ।

१२—द्वादश भाव में हो तो—वर्तमान पत्र व जाहिर सभा में अपकीर्ति, अनिष्ट बातें, बुध पीड़ित हो तो बहुत खराब मानसिक त्रास, दूसरे के कहने पर विश्वास कर हमेशा धोखा खाता है। पर धन का अभिलाषी, शुभ संबंधित हो तो उपासना व गूढ शास्त्र का अध्ययन में यशस्वी, २२ वें वर्ष धननाश व ४४वें वर्ष स्त्रीनाश।

गुरु फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—आयुष्यवान्, धनवान्, न्यायी, समतोल व शांतिप्रिय स्वभाव, राजकृपा पूर्ण, कर्क राशि हो व पीड़ित हो तो आहार में आसक्ति, धनराशि का पीडित हो तो शर्यत व द्यूत का फंद, मीन का हो तो रतिमान, विद्या व्यासंगी, कुल में श्रेष्ठ, निर्लोभी, ऊँचे दिल वाला, ईश्वर भक्त, श्रीमान्। १–५–९ राशि का हो तो स्वाभिमानी, धैर्यवान्, मित्र सुख, २–६–१० राशि का हो तो गर्विष्ट, स्वार्थी, ४–८–१२ का ज्ञैनी खर्चिक। ८ वें वर्ष में सन्मान मिलता है।

२—द्वितीय भाव में हो तो—संपत्तिवान्, सुग्रास भोजनप्रिय, वक्ता, हुकुमत करने वाला, भाग्य की वृद्धि, आनन्दी, कुटुम्ब सुख, अधिकार योग प्राप्ति, स्वप्रयत्न से धन उपार्जन करने वाला। पापग्रह से दूषित हो तो कर्जदार, स्त्री सुख में विघ्न। २७ वें वर्ष भार्या सुख व राजमान्यता प्राप्त होगा।

३—तृतीय भाव में हो तो—पराक्रमी, स्त्रीवश, पड़ोसी व मित्रसुख, स्वतः विशेष पराक्रम न करते भाग्य वृद्धि, ग्रन्थ पठन में मग्न, तीर्थयात्रा करने वाला, पीड़ित गुरु से बन्धु सुख कम, मंगल से पीड़ित हो तो परिस्थिति में अनेक बाधा। २०वें वर्ष विद्या व मित्र लाभ।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—कीर्तिमान, भाग्यवान्, स्वदेश में पूज्यमान, शान्त भाव से विजय प्राप्ति, आयुष्य के अन्तिम समय सुख, जमीन जुमला साम्पत्तिक लाभ, परमेश्वर चिन्तन में मृत्यु, परदेश में भाग्योदय, पीड़ित हो तो मातृपक्ष के लोगों की पीड़ा, ऐश्वर्य प्राप्त होने पर भी चिन्ता कायम। बलवान गुरु हो तो पिता की स्थिति उत्तम, २२ वें वर्ष बन्धु व मित्र से लाभ व सुख।

५—पंचम भाव में हो तो—सत्पुत्र सुख, विद्वत्ता, भाग्योदय, वैभव प्राप्ति, नवमभाव में पाप ग्रह हो तो संतति शोक, मंत्र विद्या में प्रवीण, लेखनअध्ययन प्रिय, पीड़ित गुरु हो तो जुआड़ी, प्रयत्न से फल मिलते समय विघ्न, मकर राशि का गुरु हो तो नास्तिक, ५ या ७ वें वर्ष माता को कष्ट।

६—षष्ट भाव में हो तो—कामासक्त, बलहीन, शत्रुओं से जीतने वाला, स्थूलदेही, परदेश में भटकना, निरोगी, वैद्यकी, धन्धों के लिये पौषक, नौकरी से भाग्योदय, वाहनसुख, लाटरी, सट्टा, शर्यत, कागज के व्मापार की ओर चित, मातुल पक्ष सुख रहित, विद्या प्राप्ति में विघ्न, स्त्री बुद्धि के कारण स्वकुल का विरोधी, धन-हानि, ४० वें वर्ष में शत्रु भय।

७—सप्तम भाव में हो तो सुन्दर व सदगुणी, स्त्री लाभ, गुरु व पिता से द्वेषभाव, सदाचारी, श्रेष्ठ लोगों की नित्य संगति करने वाला, उत्तम जगह प्रवास करने वाला, स्वजाति कर्मनिष्ट, विवाह से भाग्योदय, कोर्ट कचहरी के काम में यश, पिता से श्रेष्ठ पद पर पहुँचने वाला, राजवैभवशाली, तीर्थयात्रा व सुन्दर वस्तु का भोगी, विद्वान लोगों में मान सम्मान, शनि से दूषित हो तो शादी देर से होगी और शरीर सुख पूरा न मिलेगा। पीड़ित गुरु हो तो स्त्री लंपट व कर्जदार, अल्प आयु में विवाह व शीघ्र भाग्योदय का आरम्भ होता :

८—अष्टमभाव में हो तो—योग साधन के लिये अनुकुल, पचनक्रिया विकार व बुखार से पीड़ा, सांपत्तिक स्थिति असन्तोपजनक, दीन, आलसी, दुःखी, उदासीन, व वैरागी लोगों का सहवास। बलवान गुरु हो तो मृत धन प्राप्ति, विना आश्रय के संपत्ति प्राप्ति, पीड़ित गुरु हो तो क्लेशकर आयुष्य। ३१ वें वर्ष रोग भय उत्पन्न।

९—नवभाव में हो तो—धार्मिक वृत्ति, विश्वासपात्र, विद्वान लोगों में गौरव प्राप्त, कायदा पण्डित, गणित व अध्यात्म विषय में प्रवीण, परदेश में भाग्योदय, तीर्थ यात्रा करने वाला, देश सेवक, थोड़ा आलसी, गुरु हीन बली होने पर भी दुष्कर्म न करने वाला, १६ वर्ष से भाग्योदय ३३ वर्ष में पूर्ण उन्नति, ज्योतिष व धर्म शास्त्र के प्रति रुचि, श्रद्धावान, स्वसंस्कृतिसंरक्षक, उत्तम तर्कबुद्धि, वक्तृत्वशक्ति के गुण से प्रतिपक्षी पर विजय प्राप्त करने वाला, पुत्र सुख उत्तम, १—२—३—५—६—७—८—९ राशि में हो तो शुभ फल जमीन का प्रवास, ४—१०—१२ का गुरु जलप्रवास, १५ वें वर्ष में पिता पर संकट।

१०—दशम भाव में हो तो—विद्वान, उदार चरित, धर्मनिष्ट, शत्रु पर विजय पाने वाला, इष्ट हेतु साध्य करने वाला, कीर्ति, भाग्य, सम्मान प्राप्ति, श्रेष्ठ अधिकार की प्राप्ति, पवित्र वर्तन, राजदरबार, व्यापार, धर्मसंस्था, न्यायशास्त्र में ख्याति प्राप्ति-कर स्वकुल का उदय करने वाला सार्वजनिक कार्यकर्ता, स्वतः के पुत्र से सुखहीन,

गुरु

देवमन्त्री विशालाक्षः, सदा लोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसंपूर्णः, पीडां हरतु मे गुरुः ॥ ५ ॥

शुक्र

दैत्यमन्त्री गुरूस्तेषां, प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च, पीडां हरतु मे भृगुः ॥ ६ ॥

प्रवास योग, पितृनाश। दशम गुरु १०वें वर्ष से आयुष्य भर लाभदायक व २९वें वर्ष में श्रेष्ठ लाभ।

११—एकादश भाव में हो तो—सर्व ग्रह लाभदायक, उत्तम मित्र प्राप्ति व फ़ायदा, सज्जनों का आश्रय, दाता, राजकृपा, कला कुशल, वाहनादि सुख, सर्वतः सम्मान पाने वाला, श्रेष्ठजनों का स्नेही, उत्तम संतति-सुख, पुत्र जन्म होने पर भाग्योदय का आरम्भ, पांच पुत्र प्राप्ति, तीक्ष्ण वुद्धि, रत्नहर्त्ता, घोड़े आदि चतुष्पाद प्राणी का पारखी, चतुष्पाद प्राणी से सुख, मूल्यवान् वस्तुओं से भरा हुआ खजाना सदैव पास रहना, अष्टावधानी, अन्तर्ज्ञानी, समय सूचक, २–५–११ राशि का गर्विष्ट, १–४–७–१० राशि का साहसी कर्मप्रिय। ३–६–९–१२ धार्मिक वृत्ति, २४वें वर्ष में धन का लाभ।

१२—द्वादश भाव का हो तो—वितंडावादी, नास्तिक, चपल, भटकने वाला, दुष्ट व मत्सरी, दान धर्म कम, धन का व्यर्थ व्यय, पास द्रव्य रहना कठिन, शक्ति के बाहर व्यापार करने का स्वभाव, आप्तवर्ग से मान सहित, प्राचीन प्रथा का अनुयायी, विवाह के विषय में अनेक संकट, ३०वें वर्ष मित्रों की मदद से भाग्योदय, देशत्याग, अज्ञातवास, एकान्तवास का लाभ, धर्मी व परोपकारी, ६–८–१० राशि का वहुत नुकसान।

शुक्र फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—ललित कला प्रवीण, रंगेल, सुन्दर शरीर, रति द्वारा सुखी, सुपुत्र प्राप्ति, विद्वान, हुन्नरी, कार्य में मग्न, परकीय भाषा का ज्ञानी, खुद के जगह व संसार के प्रति विशेष प्रेम, मधुरभाषी, गुरु से युक्त हो तो काम-वासना उसे बुरे मार्ग में जाने के लिये प्रवृत नहीं कर सकती, शरीर मोहक, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि से युक्त हो तो रति सुख में ज्यादा आसक्त, डरपोक स्वभाव, राज-मान्य, दीर्घायु, २–३–७–११–१२ राशि में हो तो उत्तम फल, १–६–८–१० राशि में हो तो अशुभ फल, ४–८ राशि का मंगल से दृष्ट हो तो व्यभिचार व दुर्व्यसन की ओर प्रवृत्ति, शरीर स्वास्थ्य की परवाह न करते चैन करने की प्रवृत्ति।

२—द्वितीय भाव में हो तो—कुटुम्ब के स्त्री वर्ग पर प्रेम, धन्धे में लाभ, जड़ जवाहिरात का संग्रही व स्त्रियों को आभूषण देने वाला, काव्यगायन में प्रवीण, चाँदी, रुई, दूध, रत्न, विलासी वस्तुओं का क्रय-विक्रय करने वाला, सुन्दर स्त्री-सन्तान, अधिक कृश शरीर। विद्या के बल धन का लाभ, स्थावर स्टेट का उपभोगी, रवि से युक्त हो तो नेत्र पीड़ा। नीच राशि का हो तो कर्ज युक्त, शनि से युक्त हो तो धन संचय व खट्टे पदार्थ का प्रिय भक्षक, ६०वें वर्ष अच्छा लाभ।

३—तृतीय भाव में हो तो—शरीर कृश, नेत्र रोगी, कृपण, आलसी, बन्धुप्रेमी, रिश्तेदारों व पड़ोसी से सुख, आनन्दी, पत्र द्वारा विवाह योग, गाना-बजाना, चित्रकला की रुचि। पापग्रह युक्त हो तो क्रोधी, अधिक बोलने वाला, स्त्रियों से पराजित, भगिनी

व सुत का प्रेम, मधुरभाषी, बन्धु सुखयुक्त, भगिनी को श्रीमान् पति का लाभ, आरम्भ शूर अवसान, घातकी, साहसी, रंगेल, तीर्थयात्रा करने वाला, २०वें वर्ष यश व सुख प्राप्ति।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—आनन्दी वृत्ति, धनाढ्य, न्यायी, बुद्धिमान, पण्डित, मितभाषी, व्यभिचारी, स्त्री वश, वाचाल, विलासी, विलास के लिये विलासी पेय पीने वाला, स्त्रीप्रेमी, मातृभक्त, वाहन सुख, जनता से मान पाने वाला, कपास, चाँदी, हीरे का व्यापारी, स्थावर स्टेट लाभ। पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो ऊपर लिखा हुआ फल विलम्ब से मिलेगा। मंगल से युक्त होने के कारण मकान भी साहूकार के कब्जे में जावेगा। बन्धु सुख व ४२वें वर्ष से सुख।

५—पंचम भाव में हो तो—गाना-बजाना, नाच-तमाशा, विषय लोलुप, आज्ञाकारी पुत्र, लेखन सट्टा, जागीर से लाभ, राजदरबार का सलाहगार, लड़कियों का उत्तम स्थल में विवाह, सज्जन जामाता, स्त्रियों का प्रेमी, नेता, स्वधन का उपभोगी, तंत्र-मंत्र-भूत-पिशाच विद्या, जादू-टोना का छन्द, देवी उपासक, सन्तोषी, शत्रु पर विजय, वैद्य, कायदे का पण्डित। पांचवें वर्ष पिता को लाभ।

६—षष्ठ भाव में हो तो—नौकरी से सुख, कर्क राशि का या मंगल से युक्त हो तो विषयासक्ति के कारण खराब प्रकृति, मूत्राशय व गुह्य रोग, श्रृंगारप्रिय परन्तु स्त्रियों का प्रेमरहित, जुआ में लाभ, शुक्र पीड़ित हो तो वैभव नष्ट, स्त्री सुख के लिये अनिष्ट, नीच लोगों की संगति, ४१वें वर्ष शस्त्र व शत्रुओं से मृत्यु का योग।

७—सप्तमभाव में हो तो—दैववान, धनवान, पुत्रवान, आनन्दी, क्रीडा सक्त, परदेशवासी, दूसरों को मोहजाल में फसाने में प्रवीण, राजकीय कार्य में यशस्वी, शुभ व विलासी वस्तुओं का व्यापारी, कुटुम्ब में उदय पानेवाला, दूसरों के तंत्र से भाग्य-वृद्धि। शुक्र पीड़ित हो तो सब तरह से खराबी, स्त्री चिन्तन में काल का व्यय, विवाह में देरी, ८-१० राशि का हो तो व्यभिचारी, २१वें वर्ष स्त्री प्राप्ति।

८—अष्टम भाव में हो तो—अभिमानी, कटुभाषी, स्त्री धन सुख रहित, शुभ सम्बन्धित हो तो विवाह या मृत्यु पत्र से लाभ, भागीदार से लाभ, खर्चीले स्वभाव की स्त्री, प्रसन्न चित्त, राजमान्य, भोला स्वभाव, स्त्री-पुत्र की सदैव चिन्ता, दीर्घायुषी, बलवान, शुद्ध आचरण, चतुष्पाद प्राणी का सुख, सन्तोष वृत्ति, मतलबी, अचानक धनलाभ, २-७-१२ राशि का हो तो उत्तम संपत्तिलाभ, क्षीण शरीर, स्त्री व धन-रहित, तकरारी, असन्तोषी, मूत्राशय रोगी, जलप्रवास में कष्ट, शत्रु अधिक। चौथे व अपमृत्यु न हुई हो तो ७१ वर्ष के आयु में मृत्यु।

९—नवम भाव में हो तो—आनन्दी मुद्रा, आप्तवर्ग सुख, तीर्थयात्रा लाभ, धनवान, स्त्री-पुत्र सुख, वैभवशाली, विद्वान, स्वकष्ट से धन प्राप्त, देवभक्त, व्याज सट्टा का धन्धा, उत्तम नागरिक, बन्धु सुख, मातृभक्त, स्त्री अभिलाषी, पत्नी के आस-

जनों से धन प्राप्ति, जलप्रवासी, लेखक व ग्रन्थ प्रकाशक, शुक्र पीड़ित हो तो धर्मान्तिर, भाग्य व धनहीन। २५वें वर्ष में भाग्योदय।

१०—दशम भाव में हो—खेती व स्त्री से धन का लाभ, भाग्यप्राप्ति, राज्यमान्यता, स्नान-ध्यान, दान-पूजा, अरचा से आध्यात्मिक उन्नति। अधिक प्रमाण पर वैभव प्राप्ति, जिसका उपभोग सन्तान को मिलेगा। दीर्घायु योग, क्रय-विक्रय उद्योग में लाभ, उत्तम ऐश्वर्य अधिकार, सम्मान, विवाह के पश्चात् भाग्योदय, ज्योतिष, चित्रकला, काव्यसंगी, रवि-चन्द्र की दृष्टि हो तो अनेक पदवी की प्राप्ति, २७वें वर्ष शस्त्र भय।

११—एकादश भाव में हो तो—पूर्ण सुखी, अनेक प्रकार से लाभ, सत्यभाषी, ऐश्वर्य की प्राप्ति, राजमान्यता, मूल्यवान् वस्तु की प्राप्ति और संग्रह, स्त्रियों के प्रिय वस्तु से फायदा, प्रेमालु स्वभाव, नौकर-चाकर का लाभ, संतति व बंधु पर प्रेम, परभाषा सीखने की प्रवृत्ति, नकल करने वाला, कायदे पंडित, प्रजापक्ष से सम्मान पाने-वाला, रवि से शुभ योग करता हो तो राजकारण से लाभ, चन्द्र के शुभ योग से मित्र द्वारा सम्पत्ति लाभ। २४वें वर्ष में लक्ष्मी की प्राप्ति।

१२—द्वादश भाव में हो तो—लौकिक वित्त, पिता का नाश, मंगल शनि से पीड़ित हो तो अपकीर्ति, संसार दुःख, स्त्रियों के कारण धन का व्यय परन्तु स्त्री सुख रहित, बलवान शुक्र हो तो चुतष्पाद से सुख। आलसी, स्वच्छन्दी, मनसोक्त आच-रण व बन्धु सुखहीन, रवि-मंगल से युक्त हो तो नेत्र पीड़ा, प्रयत्न करने पर भी पास द्रव्य रहना अशक्य, ऋणग्रस्त, जल्द विवाह व बहुभार्या योग। ४५ वें वर्ष में धन हानि योग।

शनि फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—आलसी, व्याधिग्रस्त, अविश्वासी, स्वार्थी, ढोंगी, कृपण, तकरारी, वातरोगी, मलिन, डरपोक, उदासीन, नाक में व्यंग, मित्र व बन्धु सुख कम, मत्सरी स्वभाव। मेषराशि का शनि हो तो काला वर्ण, वृषभ राशि का हो तो मिश्रित, मिथुन राशि का हो दीर्घ काय, कर्क राशि का हो तो श्वास रोगी, सिंह राशि का हो तो कफ-पित्त रोगी, कन्या राशि का हो तो पित्त रोगी, तुला राशि का हो तो गौर वर्ण, वृश्चिक राशि का हो तो मजबूत अस्थि, धन का हो तो कड़े नख, मकर का हो तो कृश, कुम्भ का हो तो दांत बड़े, मीन का हो तो लम्बे बाहू, ७-१०-११ राशि का हो तो वैभव प्राप्त, ९ व १२ राशि का हो तो विद्वत्ता व अधिकार प्राप्ति, सरल वृत्ति, ७-८ राशि अनिष्ट फल, दारिद्र व चिन्ता युक्त। वृश्चिक राशि का शनि अशुभ सम्बन्धित हो तो कावेबाज़, द्वेषी, विश्वासहीन। कन्या राशि का शनि अशुभ संबंधित हो तो संशयी, चोर, कन्जूस। तुला राशि का अशुभ संबंधित लग्न का शनि—बड़ा धैर्यवान्, आरम्भ में दुखी व अन्त में सुखी। ५वें वर्ष अनिष्ट फल।

२—द्वितीय भाव का शनि हो तो—बहुत कम किन्तु कायदा से बोलना, पिता के स्टेट का उपभोग करने वाला, उच्च का शनि सुखप्राप्ति, काट कसरी स्वभाव, गहरी बुद्धि, मित-भाषी, दीर्घप्रयत्न परन्तु लाभ कम, सुग्रास भोजन से वंचित, लोगों के सम्पत्ति का भोग लेनेवाला, पैसा मिलने पर भी असन्तुष्टि, कुटुम्ब व वन्धु से त्रास, औषधि तैयार करना, लकड़ी का व्यापार, यंत्रों से हलकी चीजें वनाना, नेत्ररोग, द्विभार्या योग, वहुत संतति परन्तु संतति सुखरहित, लाचारी दिखाकर कार्य साधक। १२वें वर्ष धन हानि।

३—तृतीय भाव में हो तो—अकल्पित भाग्योदय, पुत्र व गृह सुख, शत्रुपक्ष में फूट डालकर उन्हें जीतने में प्रवीण, राजकृपा, शनि शुभ स्थिति का हो तो गम्भीर, शान्त, विचारशील वन्धु किन्तु भगिनि का विशेष सुख प्राप्ति, उदार स्वभाव, कई लोग संरक्षण में हो आश्रित वन वैठते हैं। ७-१०-११ का शनि भाग्योदय। नीच राशि का हो तो रिश्तेदार वन्धु से वेबनाव। कनिष्ठ बन्धु का नाश, उदास मन, मलिन वृत्ति, कर्णरोग, प्रयत्न करने पर भी भाग्य का उदय न पाने वाला। रवि मंगल से युक्त हो तो वन्धु-नाश। मंगल से युक्त हो तो गुस्सैल स्वभाव, दूसरों को मारने की इच्छा, साहसी स्वभाव से कार्य सिद्धि, शत्रु का पराजय, १३वें वर्ष बन्धु सुख प्राप्ति।

४—शनि चतुर्थ भाव में हो तो—कपटी, माता को त्रास देने वाला, आचारहीन, स्त्रीसुखहीन, क्रूर, शीघ्रकोपी, शुभग्रहयुक्त व दृष्ट हो तो जमीन-जुमला, स्थावर स्टेट प्राप्त, खदान का काम, उतार उम्र में सुख, संन्यासी वृत्ति, अशुभ संबंधित हो तो माता-पिता की मृत्यु, गृहसुखहीन, स्थावर स्टेट का नाश, शनि वक्री हो तो कोई आजन्म का रोग, वाहन सुख नष्ट. ८वें वर्ष वन्धु का नाश।

५—पंचम भाव में हो तो—दीर्घायुषी, धर्मशील, चपल, उन्मत्त व शत्रु पर विजय, कुटिल, मुत्सद्दी, कारस्थान रचयिता, स्त्री-पुत्र का सुख कम, शुभ स्थिति शनि का हो तो स्थावर स्टेट का लाभ, सार्वजनिक संस्था के वरिष्ठो का स्नेह प्राप्त करने के लिये अनुकूल। स्वगृही या उच्च का शनि हो तो संतति सुख, नौकरी में यश, उत्तम स्त्री-सुख, व्यापार में लाभ। नीच का शनि हो तो गुप्त रोग, हृदय रोग, डूब कर या गिरने से मृत्यु, व्यवहार में अपयश। पीड़ित शनि हो तो बुद्धिहीन, उन्माद रोगी, दरिद्री, कामासक्त, पिशाच विद्या का प्रेम, पाँचवें वर्ष बन्धु नाश, ६८वें वर्ष अग्नि पीड़ा।

६—षष्ठ भाव में हो तो—विषयासक्त, शत्रु व मत्सरी लोगों से त्रास पाने वाला, साधारण द्रव्य लाभ, बड़े लोगों से मित्रता, चतुराई से शत्रु का पराजय करने में प्रवीण, स्वधर्म व स्वदेश के प्रति प्रेम। शुभ स्थिति का शनि हो तो नीचे काम करने वाले लोग खुश, अकल्पित कल्पना से शत्रु पर मात देने वाला, आजन्म शत्रु से त्रास, दीर्घायु आघात से भी जीते रहने का सामर्थ्य। २-५-८ राशि का हो तो हृदय रोग, कण्ठ रोग, मूत्राशय विकार। ३-६-९-१२ राशि का हो तो क्षय व संधिवात रोग, किसी भी प्रकार के भोजन से सदा असन्तुष्ट, नौकर से नुकसान, अफीम के रोजगार से लाभ। २४वें वर्ष पुत्र लाभ।

शनि

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो, विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा, पीडां हरतु मे शनिः ॥ ७ ॥

राहु

महाशिरा महावक्रो, दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनूश्चोर्ध्वकेशश्च, पीडां हरतु मे तमः ॥ ८ ॥

७—सप्तम भाव में हो तो—मूर्खों का शिरोमणि, बुरे मित्रों से घिरा हुआ, स्त्री से दुःख, विवाह देर से होना, स्त्री विरह, ३–६–९ राशि का अनेक विवाह प्रसंग, दूषित शनि हो तो व्यसनी व निंदित लोगों से मैत्री, विवाह सुख कम, कोर्ट कचहरी आदि के काम में अपयश, व्यवहार में आपत्ति, स्त्री-मित्र से लाभ न पाने वाला, मित्रों से कपट कर स्वतः हानि पाने वाला, लोभी, निरुत्साही, सदैव सुख की चिन्ता, झूठ बोलने वाला, पराधीन, शुभ संबंधित हो तो शत्रु पर विजय, जुगार या स्त्री के आप्त वर्ग से धनलाभ, कायदा के काम में यश। २७ वर्ष में स्त्री नाश।

८—अष्टम भाव में हो तो—धनहीन, क्रोधित, डरपोक, खराब नजर, झूठे लोगों में प्रिय, सज्जन लोगों का सहवास कम। उसे रक्तवात कष्ट, भगंदर, संग्रहणी, पाण्डुरोग, प्रमेह, संधिवात विकार, व्यसनी लोगों के संगति से पीड़ा, नेत्र रोगी, दुखी, चौर्यकर्मी, व्रण पीड़ित, अरण्यपशू से पीड़ा। दयाहीन, विश्वासघातकी, गूढ़ विषय का व्यासंग, वृद्धावस्था, ईश्वर चिन्ता, २५वें वर्ष में गडान्तर योग।

९—नवम भाव में हो तो—पराक्रमी, धनवान, राजद्रोही, घूस लेनेवाला, दूसरों को धोखा देकर धन कमाने वाला, धर्महीन, जलप्रवास से त्रास, स्त्री आप्त वर्ग से बड़ी हानि, पीड़ित शनि हो तो कन्जूस, स्वार्थी, मत्सरी, दूसरों के दिल में चोट पहुंचानेवाला, भाषण करने की वृत्ति, स्त्री सुख कम, ढोंगी, पितृ कीर्ति को कलंक लगाने वाला, मित्र-रहित, कामी, भाग्यहीन। इस भाव में शनि शुभ हो तो इसके समान दूसरा पुण्यात्मा नहीं। शास्त्र तत्वज्ञान, वेदान्त विषय की रुचि, पवित्र आचरण, संन्यास वृत्ति, पूर्व-जन्म का योगभ्रष्ट यह मनुष्य भाग्यकाल आते ही वैभव के शिखर पर चढ़ता है। सद्‌गुरु की कृपा से आस्तिक बनता व पुण्यकर्म करते मृत्यु पाता है। ३६वें वर्ष भाग्योदय।

१०—दशम भाव में हो तो—मनुष्य अल्पज्ञ होते हुए भी भाग्य का उदय होगा, कुल में श्रेष्ठ होगा, राजा समान सुख पावेगा, बड़ा अधिकार प्राप्त होगा। कलाकौशल में प्रतिरुचि, अनेक मित्र होंगे। विद्वान, धनवान, शूर, न्यायाधीश, राजमंत्री, अनेक लोगों पर हुकूमत, नेता, राजयोगी, दीर्घोद्योगी, नाच-गाने का शौकीन, खेती से लाभ, नम्र स्वभाव का, स्वपराक्रम से उदय पाने वाला, ३-७-१०-११ राशि का हो तो शुभ फल अधिक प्रमाण से मिलेगा। परन्तु यह ऐश्वर्य मृत्युकाल तक टिकना कठिन है। परन्तु शनि दूषित हो तो अधिकार से अधःपात, सुख के पश्चात् दुःख। अशुभ शनि हो तो मातृ-पितृनाश, पितृधन सुख का पूरा उपभोग न मिलेगा, शत्रु का भय, मंगल युक्त हो तो प्रमेह, मधुमेह से पीड़ा, श्रम बहुत, लाभ थोड़ा। यांत्रिक चमड़ा के कारखाने के उद्योग से लाभ, २६वें वर्ष शस्त्र से भय।

११—एकादश भाव मे हो तो—राजा से द्रव्य मिलाने वाला, तेजस्वी, भोगी, शत्रु पर विजय, शुद्ध अन्तःकरण, नीतिमान्, कष्टरहित व अच्छे जगह रहने वाला ७-१०-११ राशि का हो तो भारी लोभी हो। आयु का उत्तरार्ध सुख से व्यतीत होगा, पास पैसा

रहता है व स्त्रियों के उपयोगी पदार्थ में लाभ होता है। वह वैभवी, स्थिर-स्वभाव, निरोगी, शिल्पशास्त्रज्ञ परन्तु संतति सुख कम। शनि दूषित हो तो वन्ध्या स्त्री या संतति न रहे, लफंगे मित्र की संगति व उन पर विश्वास करने पर वह फंसता है। जुआ में अपयश, सांपत्तिक हानि के कारण पास से गया पैसा मिलना बहुत कठिन। २४वें वर्ष पूर्ण धन लाभ।

१२—द्वादश भाव में हो तो—आप्त सुख रहित, ठग, मूर्ख, निर्धन, मन्दबुद्धि, निष्ठुर, आलसी, ऋणग्रस्त, वैराग्यशील, दरिद्री, लोगों को फायदा देने वाला परन्तु स्वयं धनरहित आप्त वर्ग उसके शत्रु व उसके प्रगति में कठिनाई लाने वाले, बलिष्ठ शनि हो तो यज्ञकर्ता, सार्वजनिक कार्य में प्रबल इच्छा, शनि शुभ संबंधित हो तो परोपकारी, योगाभ्यासी व लौकिक मिलाने वाला, दूरदृष्टि से धन संग्रह, अशुभ शनि हो तो नीच लोगों से अपमान, हानि। ४५वें वर्ष धनहानि।

राहु फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—कष्टी, आलसी, मूर्ख, स्वार्थी, अधर्मी, बहुत बोलना, साहसी, स्त्रियों के जरिये काम साधने वाला, अनेक स्त्रियां होने पर संसार सुख रहित, घर में कलह, मस्तकशूल व्यथा, कामासक्त। १-२-३-६-११ राशि में दीर्घायु, सिंह राशि में श्रीमान्, ३-६-११ में नौकरी में यश, तीव्र बुद्धि वैभव, कुम्भ राशि का ऊंचा एकान्त, कायम की व्याधि। पांचवें वर्ष में अरिष्ट उत्पन्न।

२—द्वितीय भाव में हो तो—बहुत बडबड करने वाला, धननाश, चोरी की और चित्त, हलका मन, हमेशा दुःख पाने वाला, घर के लोगों का सदा विरोध, कृपण, असत्य वचनी, धर्न के लिये परदेश में भटकने वाला। ३-६-११ राशि का हो तो कुटुम्ब व सम्पत्तिप्राप्ति, सुखप्राप्ति। सिंह राशि का हो तो तपश्चर्या से धनप्राप्ति।

३—तृतीय भाव में हो तो—पराक्रमी, बन्धु सुखहीन, अधिक शत्रु का होना, सुख व विलास प्राप्त, राजमान्य, बलवान, यशस्वी, बड़े-बड़े ऊंचे पद प्राप्त करने में प्रवीण, पिशाचभय रहित। ३-५-६-११ राशि का हो तो विशेष तेजस्वी, अशुभ हो तो दरिद्री, कर्णरोगी, पराक्रमी होकर भी अपयशी।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—गृहसुख नाश, स्वजन व मित्रसुखरहित, विषधारी प्राणी से अपघात, चुगुलखोर, मातृसुख हीन, मूर्खता से वाद-विवाद करने में प्रवीण, साहसी स्वभाव, प्रवासी, स्त्रीसुखहीन, ३६ वर्ष से ५३ वर्ष की आयु तक उत्कर्ष।

५—पंचम भाव में हो तो—संतति सुखहीन, प्रथम पुत्र व्याधिग्रस्त, एक न एक संतति सदैव रोगी, स्त्री चिंतित, कम वेतन पर नौकरी से निर्वाह, पराक्रम के दृष्टि से लाभ कम, अस्वस्थ चित्त, विद्यार्जन में अड़चनें, धर्म की ओर इच्छा होते हुये यशप्राप्ति न मिलना।

६—षष्ठ भाव में हो तो—शुभ हो तो शत्रु का पराभव, विरोधी लोग सदा भयभीत रहेंगे। नीच लोगों के सहवास से कार्यों की साधना, धनलाभ, पशु, सुख-ऐश्वर्य, पुत्र, पराक्रम बुद्धि, उदारता, दीर्घ आयुष्य प्राप्ति, गम्भीर कावेवाज पर लोगों को पता न लगने देने वाला, परस्त्री प्रेमवशी, पीड़ित राहू हो तो नित्य परस्त्री समागम।

७—सप्तम भाव में हो तो—आयु के १०-१२ या १६वें वर्ष गंडान्तर अशुभ हो तो मृत्यु, स्त्रीरोग से पत्नी सदैव पीड़ित, कुरूप व लड़ने वाली प्राप्ति, गर्विष्ट रोगी, कुटिल पापकर्मी, वन्धु विरोधी, असन्तोषी, मधुमेह रोगी, शुभ हो तो सुन्दर स्त्री का लाभ, प्रवास से लाभ व जूआ से धनलाभ।

८—अष्टम भाव में हो तो—धनवान, राजमान्य, कीर्तिवान्, परिश्रम से भाग्य प्राप्त, अशुभ राहू हो तो क्लेश, अपवाद, चौर्यकर्मप्रिय, निष्ठुर, गुह्यरोग, उदररोग, धर्मान्तर करने वाला, स्वजन से दूर रहने वाला, दुरभिमानी, व्यभिचारी, दरिद्री।

९—नवम भाव में हो तो—१-२-३-४-६-११ राशि का हो तो भ्रमणशील, कई लोगों का पालन-पोषण करने वाला, धनाढ्य, सुन्दर अलंकार धारण करने वाला, पराक्रमी, दयाशील, तीर्थक्षेत्र व देवता में धार्मिक वृत्ति, प्रसिद्धि पाने वाला, वन्धुप्रेमी, जाति का अभिमानी, माता-पिता भक्त, स्त्री के तंत्र से चलने वाला, वन्धुप्रेमी, राहू दूषित हो तो पितृनिन्दा, स्वधर्मनिन्दा, चुगुलखोर, अल्प आप्त सुख, शत्रु से भयभीत, प्रवासी, दरिद्री, राजपीड़ा, स्त्री के सम्बन्ध से त्रास पाने वाला, कर्तव्यशून्य, धर्मान्तर करने वाला।

१०—दशम भाव में हो तो—बुद्धिमान, रणोत्साही, पितृसुख हीन, वाहनसुख, शत्रु पर विजय, नीच लोगों का उद्योग में सदा संबंध, पराक्रम का वर्ग, युद्धप्रिय, नाटक, कविता पर रुचि, बलाढ्य लोगों की सहायता, स्थावर स्टेट, उपभोगी, राजवैभव लाभ, कभी-कभी राजा का सल्लागार, व्यापार चातुर्यता, संपत्ति का अभाव न पाने वाला शुभ राहू से यह मिलेगा। दूषित राहू हो तो चोरी करना, लोभी, सुखहीन, दुष्ट वातपीड़ा युक्त, स्वजनों का द्वेषी, चिन्तातुर, चंचलबुद्धि, प्रवासी, स्त्री के मर्जी से चलने वाला।

११—एकादश भाव में हो तो—निरोगी शरीर, स्वाभिमानी, धूर्त, ऐश्वर्यवान् स्त्री सुख, विद्वान्, विनोदी, शास्त्राभ्यासी, लज्जायुक्त, वाद-विवाद में विजय, इन्द्रिय संयमी, परदेश में भाग्योदय, राजकीय मान सम्मान प्राप्त, वस्त्र-अलंकार प्राप्ति, मनोरथ की सिद्धि, परन्तु अशुभ राहू हो तो निर्लज्ज, दूसरों का धन लूटना, वन्धु को फँसाने वाला, ऋणग्रस्त, वेकार, बहिरा, अल्पसंतति सुख, उद्योगहीन।

१२—द्वादश भाव में हो तो—उत्तम संसारी, कन्जूस, दीन वृत्ति। राहू शुभ हो तो द्रव्यप्राप्ति, कुल का नाम ऊंचा करने वाला, साधुवृत्ति पसन्द, परोपकारी, वाहन सुख,

शत्रु पर विजय यह फल मिलेगा और यदि अशुभ राहू हो तो चोर कर्मी, स्त्रीरहित, सुखहीन, अपयशी, शेखीखोर, क्रूर, कर्जदार, कर्महीन, शूल रोगी, व्यंग शरीर व पांव में जख्म ।

केतु फलादेश

१—प्रथम भाव में हो तो—रोगी, चिन्तातुर, कृश शरीर, विषबाधा से त्रास, कमर में पीड़ा, स्वकीय से लड़ने वाला, लोभी, कंजूस, भ्रमिष्ट, दुर्जन संगति से त्रास, गिरने के कारण अपघात, बन्धु सुख रहित, स्त्री के विषय में चिन्ता, परन्तु केतु शुभ हो या कुम्भ राशि का हो तो सन्तति सुख व सम्पत्ति सुख, ४-१२ राशि का हो व गुरु से दृष्ट हो तो उत्तम शुभ फल मिलेगा ।

२—द्वितीय भाव में हो तो—मुखरोगी, सब जग का विरोधी, कुटुम्ब प्रेमहीन, राजभय, असत्यभाषी, अस्पष्ट भाषण, दूसरों को भाषण से दुःख पहुँचाने वाला परन्तु शुभ राशि या गुरु-शुक्र से युक्त हो तो बहुत सुख प्राप्ति, धनधान्य का कर्म करने वाला, कुटुम्ब में कर्माचरणी, वैराग्य वृत्ति ।

३—तृतीय भाव में हो तो—गुणी, धनवान, शत्रु नाश करने में समर्थ, पराक्रमी, शास्त्रज्ञानप्रेमी, वाद-विवाद का प्रेम, उदार, धैर्यशाली, दानशील, लोकप्रिय, भाग्यशाली, बन्धुसुख, भागीदार से लाभ, स्त्रीसुख पूर्ण, तीर्थयात्री, पराक्रमी, अशुभ केतु हो तो बहिरापन, हृदय रोग, कर्ण रोग, तकरारी, उदासीन, अपयशी व दुखी, प्रवास में आपत्ति, मीन राशि का हो तो अध्यात्म विद्या में प्रगति ।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—बन्धुसुखहीन, दूसरों का दोष देखने वाला, अल्प मातृ सुख, मित्रवर्ग से अपमान, झूठ बोलने का आरोप, पितृधन नाश, अशुभ हो तो धननाश, देशांतर, सापत्न माता से त्रास, विषबाधा, अशक्तता, बन्धु व गोत्रजन नाश, केतु शुभ हो तो शूर, सत्यवादी, मितभाषी, धनधान्य युक्त, सुखी, दीर्घायुषी, माता-पिता सुख, मित्रसौख्य, वाहनसुख, स्थावर मिलकियत के सम्बन्ध से उदासीन ।

५—पंचम भाव में हो तो—लफंगा, पानी से डरने वाला, डरपोक, रोगी, दरिद्री, उदासीन, कष्ट पाने वाला, धर्माचरणी, पुत्र दुख, राजभय, तंटे-बखेड़े, मातृनाश, थोड़ी सन्तति परन्तु अधिक कन्या संतति, खूब खरचा, कपटी, मत्सरी, उदर रोगी । शुभ केतु हो तो वैराग्यशील, वेदान्त विषय का प्रेमी, मठाधीश होने का प्रसंग, तीर्थयात्रा करने की प्रबल प्रवृत्ति, देशान्तर वास, उपासक, मंत्र-तंत्रादि विद्या का प्रेमी, नौकरी से आजन्म लाभ, धन्धे में सदा फेरफार ।

५—षष्ठ भाव में हो तो—उदार, बन्धुप्रिय, विद्याव्यासंगी, कीर्ति से संपादन, बड़ा अधिकारप्राप्त, साधुजन सहवास, शत्रु भयभीत होने वाले व न टिकने वाले, मातुल पक्ष सुख हीन, निरोगी, पशु सुख, लोगों से मानप्राप्ति, पितृधन प्राप्ति, मंगल

केतु

अनेकरूपवर्णैश्च, शतशोऽथ सहस्रशः ।
उत्पातरूपो जगतां, पीडां हरतु मे शिखी ॥ ९ ॥

रवेः सप्तसहस्राणि, चन्द्रस्यैकादशैव तु ।
कुजे दशसहस्राणि, बुधे चतुःसहस्रकम् ॥ १० ॥

एकोनविंशतिर्जीवे, शुक्रे षोडश एव च ।
त्रयोविंशति मन्दस्य, राहोरष्टादश स्मृतम् ॥
केतोः सप्तसहस्राणि, इत्येतज्जपसंख्यया ॥ ११ ॥

से शुभ योग हो तो दूसरों को तुच्छ समझने वाला, सर्वज्ञ होने का पराक्रम का वर्ग, भारी साहसी काम में यश। केतु पीड़ित हो तो प्रदीप्त जठराग्नि, झूठा घमण्ड, विनाकारण भटकने वाला, माया दिखाकर लोगों को फंसाने वाला।

७—सप्तम भाव में हो तो—व्यग्र चित्त, स्त्री सुख रहित, चोरी की तकलीफ, मूर्ख, गुणहीन स्त्री, बुध से युक्त हो तो देर से विवाह, व्यभिचार कर्म, नीच जाति व विधवा स्त्री से सम्बन्ध व प्रेम परन्तु धन व वृश्चिक राशि का हो तो सदैव द्रव्यलाभ किन्तु सदा चिन्तायुक्त, गुरु से युक्त हो तो उत्तम गृह-सुख प्राप्त।

८—अष्टम भाव में हो तो—परद्रव्य व स्त्रीरत, लोभी स्वभाव, वाहनभय, पाप जल्द बाहर आता है, नेत्रविकार, परन्तु १-२-३-४-६-८ राशि का हो तो भारी लाभ, रवि से युक्त हो तो प्रवास से लाभ, वाहन धन्धे से लाभ।

९—नवम भाव में हो तो—क्रोधी, द्वेषी, धर्महीन, निन्दक, सुख की इच्छा अधिक व नीच लोगों से सहवास प्राप्त, बन्धुसुखरहित, वाहुपीड़ा, पितृद्वेषी। शनि मिथुन राशि युक्त हो तो अत्यन्त खराब स्थिति, परधर्मियों से भाग्य की वृद्धि, राजमंत्री यदि शुभ केतु हो, शुभ केतु दृष्टयुक्त हो तो बलवान, कृपालु, दानशील, बुद्धिमान। मीन का गुरु से युक्त हो तो धर्माचरणी।

१०—दशमभाव में हो तो—बुद्धिमान, आत्मज्ञानी, दूसरो पर प्रेम करने वाला, शूर, प्रतापी, कफ प्रकृति, दुर्जनों को भी आश्रय देनेवाला, शुभ सम्बन्धित हो तो भारी लाभ। १-२-६-८ राशि का हो तो शत्रुनाश। मिथुन का हो तो वैभव-च्युत, कन्या का हो तो सुखदुख सामान्य, १-४-६-१० राशि का हो तो प्रवास ज्यादा। अशुभ हो तो दुर्भाग्य, वाहन से अपघात, पितृ सुख नाश व पिता का सदा अपमान।

११—एकादश भाव में हो तो—पराक्रमी, समाधान वृत्ति, सत्कर्मी, लोगों पर प्रेम करने वाला, अशुभ हो तो गुह्य रोग, सन्ततिहीन, मित्रों से वारम्वार त्रास।

१२—द्वादश भाव में हो तो—दुर्गुणी, पूर्वार्जित धन खोने वाला, चंचल, दुष्टकृत्य में धन का व्यय, गुह्यरोगी, ऋणग्रस्त, शुक्र चन्द्र से युक्त हो तो व्यभिचारी, लेकिन बुध-गुरु से सम्बन्धित हो तो सत्कृत्य की ओर खर्च, व्यापार में लाभ, साधुवृत्ति, सत्कर्मी।

प्रजापति फलादेश

१—प्रथम स्थान में हो तो—लहरी, चंचल, विचित्र स्वभाव, विश्वास न रखने लायक, ऊंचा शरीर, लोकाचार के विपरीत वर्तन, कभी शान्त, कभी उच्छृंखल, धैर्य से कार्य करने की वृत्ति। गुरु से युक्त हो तो समाज सुधारक के लिये उत्तम, १-५-९ राशि में मंगल से दृष्ट हो तो शस्त्रक्रिया, रसायन प्रयोग, युद्धकला, यंत्रों के कार्य में उत्कर्ष, साहसी, ज्योतिषी, युद्धप्रिय होगा। मंगल शनि से दूषित हो तो १-५-९ राशि

का होकर १-६-७-८-१२ स्थान में हो तो वाष्प यन्त्र व शस्त्रक्रिया के काम में पड़ना अनुचित है। २-६-७ राशि का हो तो विश्वासघाती, मत्सरी, कामवश ढोंगी, ३-६-११ राशि में शुभ फल अर्थात् विद्वान, तत्वज्ञानप्रिय, गूढ़शास्त्र का अभ्यासी, स्वाभिमानी, गर्विष्ट, ४-७-१२ राशि में व्यसनी, लफंगा, नीच लोगों का सहवास, व्यभिचारी होगा।

२—द्वितीय भाव में हो तो—कौटुम्बिक खर्च की चिंता, वचत में पैसा न रहना, पितृस्टेट का उपभोग न मिलना, अनिश्चित संपत्ति की स्थिति, शुभ स्थित हो तो सरकारी नौकरी, रेलवे, वाष्प यन्त्र, सामुद्रिक व ज्योतिष विद्या से धन प्राप्ति, नेत्रपीड़ा, ४-८-१२ राशि में हो तो आंखों से पानी बहना।

३—तृतीय भाव में हो तो—भाई व पड़ोसी सुखहीन, शास्त्रीय विषय की प्रीति, शुभ संबंधित हो तो ग्रन्थ लेखन-प्रकाशन, प्रवास, हस्तकला से लाभ, युद्ध कला में चतुर, स्वतंत्र वृत्ति, दूषित हो तो सब प्रकार का त्रास, प्रवास में अपघात, स्वैर बुद्धि से नुकसान।

४—चतुर्थ भाव में हो तो—बारबार रहने का घर बदलना, स्थावर स्टेट में झगड़ा बखेड़ा, मां-बाप से अलग रहने का प्रसंग, पीड़ित हर्शल से वृद्धावस्था में त्रास, सांपत्तिक कठिनाई, अर्धांग वायु समान दीर्घरोग, वारम्बार अपघात, इस भाव में जन्म समय हर्षल हो तो उसका भाग्योदय दूर स्थल में रहने से होगा।

५—पंचम भाव में हो तो—संतति को त्रास या न होना, विचित्र शरीर व स्वभाव के संतति। अशुभ से सम्बन्धित हो तो भयङ्कर आर्थिक हानि, शृङ्गार व सट्टेबाजी में तंग, विलक्षण प्रेम व्यवहार, लोगों की परवाह न करने वाला, ४-८-१२ राशि में हो तो बुरा अनिष्ट फल।

६—षष्ठ भाव में हो तो—इस भाव में जो ग्रह या राशि हो उसके अनुसार रोग की वृद्धि। अपस्मार, ऊँचे जगह से गिरना, पिशाचबाधा, निष्कारण संशय, चमत्कारिक रोग, द्रव्यचिन्ता, विचित्र नौकर के गलती के कारण बिना कारण दण्ड भरने का प्रसंग परन्तु वह शुभ हो तो ग्रह व राशि के अनुसार उद्योग धन्धे में लाभ।

७—सप्तम भाव में हो तो—विवाह में विलम्ब, विवाह जम कर होते-होते विघ्न आता व दूसरे स्थल से विवाह जमना, लहरी, हठी स्वभाव की स्त्री, भागीदार से न पटना व पट भी गया तो लाभ कम, नैतिक विजय की प्राप्ति, नये लोगों से पहचान हो लाभ होना, स्त्री विरह में काल-क्रमण करना, सार्वजनिक कार्य में अधिकार की जगह स्वीकार न करना उत्तम होगा। परकीय लोगों से सम्बन्ध रहना उत्तम होगा।

८—अष्टम भाव में हो तो—आकस्मिक मृत्यु, यंत्र से अपघात, कौटुम्बिक विषय में सदैव द्रव्यचिन्ता, अदालती मामले में अपयश, मित्रों से दगाबाजी, वारस हक्क से

मिलने वाले स्टेट या धन में अनेक आपत्ति, विवाह के पश्चात् सांपत्तिक आपत्ति अधिक, परलोक चिन्तन ।

९—नवम भाव में हो तो—दूर का प्रवास, शास्त्र का परिचय, पत्नी के विषय में आप्तवर्ग से त्रास, गुप्त विद्या सीखना, नया संशोधन, आध्यात्म व तत्वज्ञान विद्या का व्यासंग, धार्मिक आचार में सुधार करने की प्रबल इच्छा । शुभ व बलवान हर्शल हो तो उद्योग धन्धा में भाग्य प्राप्ति ।

१०—दशम भाव में हो तो—लोकप्रसिद्ध, राजकारण में विशेष अंग लेने की इच्छा, स्वतंत्र बुद्धि, लहरी, धैर्य से कार्य पूर्ण करने की कुशलता, माता-पिता से विभक्त, क्षण में कीर्ति के शिखर पर व क्षण में अधःपात, बड़े लोगों का आश्रय, सरकारी मत का विरोध ।

११—एकादश भाव में हो तो—लहरी, मित्र लोग का सहवास, अचानक द्रव्य लाभ, मनोरथ भंग, दोस्तों के कारण कई आपत्ति, रवि-चन्द्र-गुरु-शुक्र से सम्बन्धित हो तो श्रीमान् लोगों का आश्रय व कीर्ति । गुरु से युक्त हर्शल द्रव्य लाभ की हानि, विद्या अपूर्ण व संतति को कष्ट ।

१२—द्वादश भाव में हो तो—पैसे की तंगी, दूषित हो तो चोरों की संगति, स्वकीय लोगों का त्याग हद्द पार, राजदण्ड, धर्मार्थ संस्था के आश्रय में निर्वाह, मंगल से दूषित हो तो—जन्म भर भाग्य का उदय अशक्य, हर्शल बलवान हो तो गुप्तकार स्थान से उच्च अधिकारी को फँसाने में प्रवीण ।

वरुण (नेपच्यून) फलादेश

१—प्रथम भाव—स्वाभिमानी, हुशियार, गहरे विचारवाला, मत्सरी, कपड़ों का शौक, मनोविकार के आधीन, समुद्र प्रवास की प्रीति, अशुभ नेपच्यून हो—पानी से डर, गलत औषधि लेने से मृत्यु, किसी भी विचार में सदा मग्न ।

२—द्वितीय भाव—शुभ हो तो—बड़े उद्योग धंदे, जादू टोना से द्रव्य लाभ । अशुभ हो तो—आर्थिक स्थिती खराब, अव्यवस्थित, चोरी व लुचपना से द्रव्यनाश, पितृधन प्राप्ति या स्टेट आपत्ति ।

३—तृतीय भाव—मानसिक प्रगल्भता में तीक्ष्ण बुद्धि, उत्तम लेखक, जलप्रवास, अध्यात्म विद्या का प्रेम, बंधु सुख से वंचित । अशुभ हो तो—आप्तवर्ग व पड़ोसी से धोका, लेखन कार्य में विघ्न ।

४—चतुर्थ भाव—मातृ सुख नष्ट, स्थावर स्टेट के कार्य में विघ्न, प्रेम के मनुष्य के पहिले मृत्यु होने के कारण उद्वेगावस्था में मृत्यु । रवि-चंद्र से युक्त हो—शरीर प्रकृति खराब, पिशाच बाधा, शुभ युक्त हो—गुप्त शास्त्र व कला प्राप्ति, द्रव्य संचय ।

५—पंचम भाव—विद्याव्यासंगी, उत्तम संशोधक, अंत तक न टिकनेवाले मित्र, वहुप्रसव राशि में संतति वहुत। अशुभ हो तो दिवाला निकलना, चैनी, व्यभिचारी, व्यसनी।

६—षष्ठ भाव—व्याधि में अचूक औषधि की योजना कठिन, उदरव गुह्य रोगी, बुध-शुक्र से अशुभयुक्त हो तो दुराचरणी, व्यभिचार योग, सांसर्गिक रोग, काम करने-वाले से धोका, दूसरे के सेवा में रत, पशु पोषण, किसी के कार्य में स्वयं काम करने की प्रवृत्ति।

७—सप्तम भाव—व्यंग स्त्री प्राप्ति, गुप्त विवाह परंतु अनेक आपत्ति उपस्थित, विश्वासघातकी, भागीदार, शुक्र से युक्त हो तो गुप्त शत्रु उत्पन्न, वेकार के झगड़े, विषयवासना, चरित्र के सम्वन्ध में शंका।

८—अष्टम भाव में हो—पीड़ित हो तो डूवने से मृत्यु, मृत्युपत्र वारिस प्राप्ति के विषय में अनेक वाधा, समाधियोग का साधक व उसी में उसका अन्त, कौटुम्बिक खर्च सम्वन्धी चिन्ता सदैव।

९—नवम भाव में हो तो—अध्यात्म शास्त्र व गूढ़ विद्या के प्रति प्रेम, पूर्वजन्म का योगभ्रष्ट व शास्त्र अध्ययन के कारण इस जन्म में शास्त्र के पारंगत, स्वल्प दृष्टि से अनेक वातों का ज्ञान, कथा व कविता में सुज्ञ, ललितकला का प्रेमी, अशुभ हो तो कायदे के कार्य में त्रास, जलप्रवास अपघात, स्त्री के आप्तवर्ग से त्रास, शुभ हो तो जलप्रवास व नवीन प्रदेश देखने की प्रवल इच्छा।

१०—दशम भाव में हो तो—वलवान हो तो वड़े-वड़े कम्पनी के कार्य में भाग लेने का योग, जल सम्वन्धी धन्धे, संगीत, चित्रकला, कवित्वशक्ति की लौकिक प्राप्ति, अशुभ हो तो गृहकलह, अपयश, गुप्तत्रास, मानभंग, मातृ-पितृ सुख नाश, व्यसनी, लफंगा, उसका अन्त खराव परिस्थिति में होगा।

११—एकादश भाव में हो तो—एकादश भाव में शुभ सम्वन्ध यदि चन्द्र से हो तो अन्तर्ज्ञान व दिव्य दृष्टि की प्राप्ति, मित्र-पड़ोसी, पहिचान के लोगों से ऊँचा-नीचा प्रसंग का सदैव मिलना, व्यंग शरीर लोगों से मित्रता, गुप्त कारस्थान में अपयश।

१२—द्वादश भाव में हो तो अस्पताल, जेल, गूढ़ विषय संशोधन करने के खाते से द्रव्य लाभ, आयु लोगों के उपयोग में व्यतीत करने की वृत्ति, विश्वासघात, व्यभिचारी वृत्ति, निंद्यकार्य, कैद, दण्ड से वार वार पीड़ा।

प्रजापति हर्शल ग्रह विचार

इस नये ग्रह का शोध इंग्लैण्ड देश के प्रसिद्ध विद्वान, प्रचण्ड संशोधक, दूर्बीन निर्माता व खगोलवेत्ता मिस्टर विलियम हर्शल ने अपने दूर्बीन यंत्र के सहायता से तारीख १३–३–१६८७ ई० को १० वजे रात्रि में किया। इन्हें इङ्गलैण्ड के राजा तीसरे

जार्ज का पूर्ण आश्रय प्राप्त था। अतः वे चाहते थे कि इस ग्रह का नाम जार्ज रक्खा जावे, किन्तु अनेक देश के खगोलवेत्ताओं के इच्छानुसार शोधक के नाम से ही ग्रह का नाम होना आवश्यक समझा। इसलिये इस ग्रह का नाम हर्शल रखा गया। साथ ही ग्रीक देवताओं के नाम से अन्य ग्रह प्रसिद्ध हैं इसलिये इस नवीन ग्रह का नाम भी वैसा रक्खा जाना चाहिये यह इच्छा व्यक्त की गयी। यह ग्रह शनि के कक्षा के ऊपर होने के कारण व सब देवों में युरेनस वृद्ध देवता हैं अतः इसका नाम यूरेनस रखा गया। इसे अन्य देशों के लोगों ने (संशोधकों ने) मान्यता दी।

इसी उत्पत्ति को स्वीकार कर हमारे देश के पूज्य ज्योतिषज्ञ के० जनार्दनवाला जी मोलक महोदय ने यूरेनस गुरु (ज्यूपीटर) का पिता महामति है और हमारा प्रजापति नवो ग्रहों का पितामह है अतएव इस ग्रह को प्रजापति नाम दिया। यह ग्रह सूर्य से १७७ करोड़ मील दूर है। इसका व्यास लगभग ३२००० मील है और आकार पृथ्वी से ६४ गुना अधिक बड़ा है। इस ग्रह के आस-पास चार उपग्रह हैं और यह ग्रह साधारणतः अन्य ग्रहों की भांति पश्चिम से पूर्व तरफ न फिरने, पूर्व से पश्चिम तरफ उलटे फिरते हैं। इसे सूर्य की प्रदक्षिणा करने के लिये लगभग ८४ वर्ष का समय लगता है अर्थात् एक राशि में करीबन ७ वर्ष रहता है। वर्तमान समय के आध्यात्मिक शास्त्र की प्रगति मनुष्य के कुण्डली में विलक्षण व तत्वज्ञान की रुचि का कारण हर्शल ग्रह ही है, ऐसा अनेक ज्योतिषयों का मत है।

इसका स्वक्षेत्र (घर) कुम्भ राशि माना गया है और वृश्चिक राशि को उच्च राशि मानते हैं। यह ग्रह ३-७-११ वायु राशि में विशेष बलवान रहता है। अग्नि राशि १-५-९ का हो तो कुशाग्र बुद्धि, महत्वाकांक्षी, हठी, किसी संकट की परवा न करने वाला साहसी होता है। जलराशि ४-८-१२ में हो तो कभी दुराग्रही व दुष्ट स्वभाव का होगा। इस ग्रह का मुख्य धर्म आकस्मिक वार्ता उत्पन्न करने का है और यह राशि फल के अपेक्षा स्थान फल अधिक देता है ऐसा अनुभवी लोग कहते हैं। इसका प्रभाव मेस्मरिज्म समान चमत्कारी व गुप्त विद्या जानने वाले के जगह ज्यादा रहता है।

द्वादश भावगत हर्शल का फल

१—तनुभाव में हो तो—वह मनुष्य विचित्र स्वभाव का होता है। धनी, हट्टी, ढोंगी, दुराचारी, गम्भीर बुद्धि, स्वच्छन्दी, वाचाल, रंगीला, स्वाभिमानी, स्वतंत्र विचार वाला, उतावला, सदा असन्तुष्ट, मन में जो आवे वही करने वाला, लड़ाकू, किसी का विश्वास न करने वाला, निर्लज्ज, कुटुम्बियों से न पटने वाला, बोलने के अनुसार आचरण न करने वाला, विश्वासहीन, हलके काम के लिये मित्र से विरोध करने वाला, कुटुम्ब व इष्टमित्रों से अलग रहने वाला होता है।

२—धन भाव में हो तो—आकस्मिक लाभ या हानि, अनिश्चित सांपत्तिक स्थिति, व द्रव्य की सदा अड़चन, उपन्यास व ज्योतिषज्ञान का लेखक, कुटुम्ब में अकस्मात मृत्यु। इस स्थान में रवि, मंगल, शनि, राहु व पापग्रह से युक्त या अशुभ योग हो तो प्लेग, कालरा बीमारी से अनेक लोगों का अकस्मात मृत्यु होना सम्भव है। धन स्थान में हर्शल हो तो वह स्त्री का मारक ग्रह समझा जाता है।

३—सहज भाव—बन्धु, भगिनी से त्रास पाने वाला, ज्योतिष व गुप्त विद्या का प्रेमी, नवीन वस्तु खरीदने का शौकीन, अनिश्चित स्वभाव, प्रवासी, इष्ट मित्रों से त्रास, स्वतंत्र विचार व आचार वाला, बंधु-भगिनी की अकस्मात मृत्यु अल्प समय में होवे।

४—सुख भाव में हो—माता-पिता से विरोध व सुखहीन, स्थावर स्टेट संबंधी विवाद, सन्ताप व झगड़ा, वृद्धावस्था में दुःख व संकट, आकस्मिक मृत्यु व ऐसे समय पास पैसा न रहे। शुभ राशि में हर्शल हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वृद्धावस्था सुख से व्यतीत होगी। रवि-चन्द्र से युक्त हो तो माता-पिता की आकस्मिक मृत्यु,चतुर्थ या दशम में रवि-चन्द्र-शनि या मंगल शनि का योग हो तो दोनों की अकस्मात मृत्यु होगी।

५—सुत भाव में हो तो—संततिहीन, यदि होवे तो अल्पायुषी होंगे, संततिसुख से सदा वंचित, सट्टा, शर्यत, लाटरी, जुआ में सदा हानि, चैनी, खिलाड़ी, कामी, नाटकी, भविष्य की वार्ता कहने की ओर प्रीति, बंधु व मित्र सुखहीन व उनका अकस्मात मरण होना।

६—रिपु भाव में हो तो—नौकर व मजदूर वर्ग से त्रास, अविश्वासी नौकर से हानि, मामा-मामी, काकी की अकस्मात मृत्यु होने का सम्भव हो। अस्वस्थ प्रकृति और डाक्टर-वैद्य के ध्यान में रोग न आ सके। मज्जातन्तु रोग होवे।

७—जाया भाव में हो तो—पत्नी सुख से वंचित रहे, पति-पत्नी में सदा वाद-विवाद होवे। लड़ाई झगड़ा होना, स्त्री विरह, निर्दयी, क्रोधी, व्यभिचारी हो। अदालती मामले में अपयश, परन्तु जिसके सप्तम भाव में हर्शल हो उसी से विवाह व व्यवहार करने से लाभ अन्यथा विवाह के पश्चात् अल्प समय में विघ्न, मृगी की बीमारी, क्षय रोग का भय, स्त्री की अस्थिर वुद्धि, अकस्मात मृत्यु, पापग्रह या राशि से युक्त हो तो यह अशुभ फल निश्चय रूप से मिलेगा किन्तु शुभ राशि व ग्रह से युक्त हो व दृष्ट हो तो अल्प रूप में यह फल मिलेगा।

८—मृत्यु भाव में हो तो—सांपत्तिक अड़चनें, मृत मनुष्य के संबंध से संपत्ति मिलने से कई अड़चनें उत्पन्न होवें। पापग्रह से युक्त हो तो आत्महत्या करने की प्रवृत्ति होवे। सांपत्तिक वुरी स्थिति, मृत्यु के पश्चात् इस स्थिति की चिन्ता वनी रहे कि आगे कैसा होगा। खाते पीते, वात करते, दीवाल से दव कर, ऊपर से गिर कर, चलते-चलते, सर्प काट लेने एवं हृदयक्रिया वन्द हो जाने से मृत्यु होवे। इस ग्रह का धर्म

अकस्मात दुर्घटना उत्पन्न करने की ओर अधिकतः रहता है। लग्न या चन्द्र से आठवें भाव में हर्शल होने से अकस्मात मृत्यु।

९—भाग्य भाव में हो तो—चमत्कारिक गुप्त विद्या या ज्योतिष की ओर विशेष प्रेम, उत्तम कल्पनाशक्ति, शास्त्रीय लेखक व व्यवसायी होवे व यश मिलावे, निश्चयी, हट्टी, दुराग्रही, ससुराल के सदस्यों से कोई विशेष प्रेम न हो।

१०—कर्म भाव में हो तो—उन्नति के शिखर पर चढ़ा कर उसे अवनति के स्थिति में ला गिराता है। पिता की मृत्यु, क्षय, अपघात, अपस्मार, अर्धांग वायु रोग आकस्मिक होवे। नौकरी या धन्धा का वारम्वार वदलना, लोकापवाद, निन्दा, अपकीर्ति, इष्ट-मित्रों से त्रास, स्वतंत्र व निश्चयी स्वभाव, वरिष्ठ अधिकारी से सदा मतभेद व प्रवास का योग।

११—लाभ स्थान में हो तो—अचानक लाभ, गुप्त विद्या के तज्ञों से मित्रता, मित्र से मदद मिले। परिचित मनुष्य से दुःख व नुकसान। अपरिचित सज्जन से अधिक लाभ, स्त्री को गर्भपात रोग, सन्तान सुख कम मिलेगा।

१२—व्यय भाव में हो तो—मत्सरी, द्वेषी, चंचल मन और ठग शत्रु से अधिक भय वना रहे। मंगल से यदि युक्त हो या अशुभ सम्वन्ध करता हो तो चोर, वदमाश, लफंगे मनुष्यों से विशेषकर दूर रहना उत्तम होगा अन्यथा धनहानि होना निश्चित जानना। शरीर में पीड़ा, विश्वासघात, दण्ड, कैद, भारी धनहानि, दूर की सफर होवे। गुप्त कृत्यों से लाभ, शयन सुखहीन, विचित्र संकट, मामी, मामा, काका की अकस्मात मृत्यु होवे।

द्वादश राशिगत हर्शल का फल

१—मेष राशि—ऊँचा, सुडौल, मजबूत, कुछ काला या लाल वर्ण का शरीर, अभिमानी, महत्वाकांक्षी, शीघ्र कोपी।

२—वृषभ राशि—मजबूत नेत्र, केश व रंग काला, स्थूलदेही, क्रोधी, वृथाभिमानी, कामी, घातकी, घूस खाने वाला, चैनी व आनन्दी स्वभाव वाला मनुष्य होता है।

३—मिथुन राशि—साधारण सुडौल शरीर, न ऊँचा न नीचा, न दुवला न पुष्ट, जल्दी चलनेवाला, होशियार, शास्त्रीय विषय का शौकीन, लहरी, उदार, उत्तम कल्पना वाला मनुष्य होता है।

४—कर्क राशि—ठिगड़ा शरीर, पुष्ट देह, गर्विष्ठ, व्यसनासक्त, मादक पदार्थ का शौक, लहरी, वेमुरव्वत, क्रोधी, किसी के कब्जे में न रहने वाला, सन्तापी स्वभाव का मनुष्य होगा।

५—सिंह राशि—ऊँचा शरीर, चौड़ी छाती, मजबूत वाहु, जल्द चलनेवाला, उदार, वल का घमण्डी, वहादुर वातों का शौकीन, वड़े दिल का मनुष्य होता है।

६—कन्या राशि–लहरी स्वभाव, गुप्त व शास्त्रीय बातें जानने का शौकीन, व्यवहारशून्य, हलका स्वभाव, किन्तु अभ्यासी विद्वान, छोटे अवयव वाला, नवीन वस्तुओं का शौक करने वाला मनुष्य होता है।

७—तुला राशि–ऊँचा शरीर, मजबूत देह, बलवान, गोल चेहरा, उद्योगी, मानी, शीघ्रकोपी, महत्वाकांक्षी, चमत्कारिक और आनन्दी वृत्ति का मनुष्य होता है।

८—वृश्चिक राशि–मजबूत देह, काला वर्ण, नेत्र-केश काले, कपटी, वाचाल, लफंगा, मत्सरी विद्या-चालचलन का मनुष्य होगा।

९—धन राशि–लम्बा, ऊँचा शरीर, खुले दिल का उदार स्वभाव, कसरत व बहादुरी खेलों का शौकीन, ऊँचा माथा और आराम भोगने वाला मनुष्य होता है।

१०—मकर राशि–मध्यम शरीर आकार, गर्विष्ट व गम्भीर स्वभाव, ऊँचा माथा, गर्दन लम्बी, काले केश वाला मनुष्य होगा।

११—कुम्भ राशि–सुस्वभावी, गुप्त विद्या का प्रेमी, लहरी स्वभाव, सुन्दर रूप, मध्यम आकार, शास्त्रीय विषय का शौकीन मनुष्य होता है।

१२—मीन राशि–बेडौल शरीर, तिरछा चलने वाला व चलने में दोष, कपटी स्वभाव, आलसी, उदासीन व लोगों को अप्रिय मनुष्य होता है।

हर्शल के शुभाशुभ दृष्टि-सम्बन्ध का फल

१—रवि–रवि हर्षल का शुभ दृष्टि सम्बन्ध जन्मकुण्डली में यदि हो तो दूसरे लोगों से अधिक लाभ। सार्वजनिक सभा, सोसाईटी, संस्था, सरकारी नौकरी के काम में यश। यह योग बड़े अधिकारियों के जन्म कुण्डली में प्रायः देखने में आता है।

अशुभ दृष्टि होने पर अनेक संकट, बलिष्ठ शत्रू, रेलवे कम्पनी व सार्वजनिक संस्था के कार्य में अपयश, नुकसान व निराशा होना निश्चित है। यह योग लग्न, धन, दशम भाव में हो तो अधिक अशुभ समझना चाहिये।

२—चन्द्र–शुभ दृष्टि चन्द्र हर्शल की दृष्टि हो तो विवाह के पश्चात् वह व्यभिचारी होते हुये भी स्वतः के स्त्री पर प्रेम करेगा। १–३–९–१० भाव में यह योग हो तो वह दूर का प्रवासी होगा व गुप्त विद्या जानने का अभिलाषी होगा। अशुभ दृष्टि होने पर बार-बार स्थान बदलता है। मातृ-पितृ सुख अल्प, विवाह के पश्चात् बुरे सोहबत में पड़कर पति-पत्नी का परस्पर वैमनस्य उत्पन्न हो एक दूसरे से वे अलग रहते हैं।

३—मंगल–शुभ दृष्टि मंगल हर्षल का सम्बन्ध हो तो मनुष्य क्रोधी, हट्टी परन्तु स्वाभिमानी, शूर, उदार, शस्त्र क्रिया, फौजी काम में बहादुर होगा व कीर्ति प्राप्त होगी। अशुभ दृष्टि मंगल हर्शल की युति व अशुभ दृष्टि हो तो मत्सरी, कठोर,

खनशी, चोरी में प्रवीण होकर जेल होगा, अपघात व आकस्मिक बातें उत्पन्न होने का भय, उपरोक्त फल १—३—९—१०—१२ भाव में होने से मिलेगा। सप्तम भाव में हो तो पति-पत्नी का वियोग, स्त्री की मृत्यु या उसे मार डालने का प्रसंग आवेगा। अदालती व भागीदारी काम के लिये यह योग अशुभ माना गया है।

बुध—शुभ दृष्टि हो, बुध: हर्शल की युति या दृष्टि सम्वन्ध लग्न में हो तो वह विद्वान्, वक्ता, व्याख्यान देने का प्रेमी, कई कलाओं में प्रवीण, कीर्तिवान् होगा। ३ तथा ९ भाव में हो तो वह ज्योतिष या गुप्तविद्या जानने का प्रेमी, विचित्र स्वभाव, लोगों का कटाक्ष, कर्क या मीन राशि का हो तो मतलवी, ढोंगी व जवान का हलका होगा। उसके बातों व कृत्यों पर विश्वास करने योग्य न होगा। अशुभ दृष्टि, विद्या का कठोर लहरी, दूसरों के लिये कामों में दोष देखने वाला होगा। मातृभाषा का स्वाभिमानी, परन्तु उस पर लोगों का सदैव कटाक्ष रहेगा। सार्वजनिक कार्य में अपयश मिलेगा व आगे आना कठिन होगा।

गुरु—शुभ दृष्टि हो तो अकस्मात् वहुत लाभ, संपत्ति का लाभ, २—८ भाव में हो तो व्यापार में यश, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति, धार्मिक कार्य करने की प्रवृत्ति होगी। अशुभ दृष्टि होने पर स्थावर स्टेट के सम्बन्ध से विवाद हो, दीवानी दावे में नुकसान, रोजगार-धन्धे के लिये प्रतिकूल, नौकरी से उदरनिर्वाह का मार्ग उत्तम होगा।

शुक्र—शुभ दृष्टि होने पर स्त्रियों का अधिक शौकीन, उन्हें मोहित करने की कला में प्रवीण, गायन में प्रवीण व अनेक वाद्य में कुशल-चतुर व अनेक कलाओं का ज्ञाता, अशुभ दृष्टि होने पर विवाह का निश्चय होना व वार-वार विगड़ना, ऐश-आरामी, चैनी होने के कारण नीच जाति के स्त्री के प्रेमपाश में पड़कर संपत्ति खोने-वाला होगा। स्त्री प्रेम करने वाली नहीं मिलेगी।

शनि—शुभ दृष्टि होने पर शनि हर्षल का सम्वन्ध विशेष लाभदायक नहीं किन्तु बुरा फल न मिलेगा, इच्छाशक्ति प्रवल रहेगी। अशुभ दृष्टि—युति या दृष्टि से अधिक खराव परिणाम मन में उत्पन्न होगा। जिस राशि में युति हो उस राशि के अनुसार शरीर के उसी भाग में पीड़ा या व्यंग होगा। १—२ स्थानों में यह परिणाम विशेषरूप से मिलेगा।

प्रथम भाव में यह युति व दृष्टि हो तो चंचल मन, द्वेषी, घूसखोर करनेवाला होगा।

द्वितीय भाव में यह युति व दृष्टि हो तो द्रव्य सम्वन्ध से नुकसान, दरिद्र दशा में आयु समाप्त।

तृतीय भाव में—बन्धु को पीड़ा, हानि व बन्धुनाश, ज्योतिष व गुप्तविद्या का प्रेमी।

चतुर्थ भाव में—७—१०—११ राशि के सिवाय अन्य राशि का योग, आयुष्य के उत्तरकाल में दुःख व दारिद्र से काल का क्रमण होगा।

पंचम भाव में हो तो—सन्तान की हानि होगी।

षष्ठ भाव में हो तो—भयंकर व दुष्ट पीड़ा कई समय तक भोगना पड़े, बेईमान नौकर मिलेंगे।

सप्तम भाव में हो तो—व्यापार में नुकसान, दीवानी के मामलों में अपयश, दिवालिया होना, वैवाहिक सुखहीन, कोर्ट में दावे उपस्थित।

अष्टम भाव में हो तो—ससुराल से स्त्रीधन का न मिलना और अकस्मात् मृत्यु होवे।

नवम भाव में हो तो—शास्त्रीय विषयों का ज्ञाता, मानसिक उन्नति, पूर्ण धार्मिक, श्रद्धा कम।

दशम भाव में हो तो—अल्प आयु में पिता की मृत्यु, सरकारी काम में नुकसान व नाश, कैद व जेल जाने का प्रसंग, अपकीर्ति अधिक।

एकादश भाव में हो तो—मित्रों से त्रास व नुकसान।

द्वादश भाव में हो तो—गुप्त शत्रु से द्वेष, चोरी व राजभय।

हर्शल नेपच्यून का शुभ दृष्टि सम्बन्ध

हर्षल नेपच्यून का शुभ दृष्टि सम्बन्ध जन्म कुण्डली में यदि होवे तो वह मनुष्य कला-कुशल, वेदान्त, गुप्तशास्त्र या वार्ता का शोधक होता है। अशुभ युतियां या दृष्टि सम्बन्ध का फल उपरोक्त फल के विपरीत समझना। जन्मकुण्डली में स्थान, राशि, ग्रहों की युति, शुभाशुभद राशि व भाव आदि का समस्त विचारपूर्वक देश, काल, जाति-कुल स्वभाव, ध्यान में रखते हुए फलित वर्तने से उपर लिये हुए फल का मिलना सम्भव होगा। यह अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिये।

बरुण-नेपच्यून-ग्रहविचार

सुप्रसिद्ध संशोधक विद्वान, दूर्बीन निर्माणकर्ता, खगोलवेत्ता मिस्टर विलियम हर्शल ने प्रजापति (हर्शल) का शोध १३–३–१७८७ में करने के पश्चात् उन्हें इसका अनेक बार वेध लेने व इसका व्यास, प्रदक्षिणा काल, भूमण्डल से अन्तर आदि निश्चित करने में कई वर्ष व्यतीत करने पड़े। अन्त में ई० सन् १८२० में निश्चित की हुई कक्षा के भ्रमण में अन्तर पड़ने लगा व यह शंका आने लगी कि इस ग्रह के कक्षा के आगे और भी कोई दूसरा ग्रह होना प्रतीत हो रहा है कि जिसके कारण हर्शल के गति, कालादि में फेरफार आता है। अतः केम्ब्रिज के खगोलवेत्ता अडेम व फ्रान्स के खगोल-वेत्ता मास्युअर लेव्हीअर ने गणित कर बर्लिन के डाक्टर गाल को लिखा कि आप तारीख २३–९–१८४६ को कुंभ राशि के २६वें अंश का वेध कर देखिये व हर्शल के गति में जो अंतर आता है इसका कारण क्या है, इस पर विचार लिखिये। तदनुसार डाक्टर गाल ने ठीक समय पर वेध कर देखा तो एक नियमित स्थान पर नेपच्यून ग्रह का शोध तारीख २३–९–१८४६ को किया।

यह ग्रह सूर्यमण्डल से २७७ कोटि मील दूर, पृथ्वी से ३० गुने अन्तर पर है और इसका व्यास ३४।। हजार मील का है। इसका आकार पृथ्वी से ८३ गुने बड़ा होकर सूर्य की प्रदक्षिणा करने के लिये १६५ वर्ष का समय लगता है। इन ग्रहों के नामकरण के विषय में अनेक संशोधकों से वार्तालाप होने के पश्चात् यह निश्चित किया गया कि ग्रीक पुराण में ज्यूपीटर का पिता सेटर्न माना गया है। अतः शनि के कक्षा के ऊपर रहने वाले ग्रह को शनि का पिता अर्थात् गुरु का पितामह माना गया। सब देवों में वृद्ध देवता युरेनस है, अतः हर्शल का नाम यूरेनस दिया जाना निश्चय किया गया। यूरेनस के आगे जब दूसरा ग्रह का शोध लगा तब हर्शल के बाद शोध लगे हुए ग्रह का नाम (नेपच्यून) रक्खा गया क्योंकि ग्रीक पुराण में नेपच्यून नाम का जल का देवता माना है।

हमारे देश के सुप्रसिद्ध ज्योतिषज्ञ कैलाशवासी जनार्दन बालाजी मोडक के मतानुसार प्रजापति सबका पितामह है। अतएव हर्शल का नाम प्रजापति रक्खा गया व वरुण भी हमारे जल का ही देवता है अतः इन दोनों नवीन ग्रह (हर्शल व नेपच्यून) का नाम प्रजापति व वरुण रखा क्योंकि उपरोक्त संस्कृत नामकरण के अनुसार प्रजापति से वरुण यह प्राचीन व श्रेष्ठ है। इसी कारण इनका संस्कृत नाम प्रजापति व वरुण रक्खा गया व इसे महाराष्ट्र पंचांगों में लिखा जाना आरम्भ हुआ। फलित पर कै० शं० बा० दीक्षित जैसे आकाशस्थ ग्रहतज्ञ धुरन्धर ज्योतिषज्ञ ने अपने मराठी भाषा के ग्रन्थ में इसका सम्पूर्ण वर्णन किया जो सर्वविदित है। फलित ज्योतिष के दृष्टि से इन ग्रहों का विचार उनके नाम पर से व गुणधर्मानुसार किये जाने पर यह सिद्ध होता है कि जिस देवता के नाम से यह ग्रह पहचाने जाते हैं, उनके गुण पुराणों में वर्णन किया है और उनके गुण पूर्णरूप से मिलते हैं यह एक बड़े आश्चर्य की बात है। नेपच्यून स्वग्रह माना गया है। हर्शल प्रजापति वायु राशि में और नेपच्यून वरुण जलराशि में अधिक बलवान समझे जाते हैं। इस ग्रह को कर्क व मीन राशि विशेष प्रिय है।

नेपच्यून का द्वादश राशिगत लग्न फल

मेष लग्न—युक्तिवान्, कवि, चालाक मनुष्य होगा।
वृषभ लग्न—उद्योगी, कलाकुशल, कारीगर होगा।
मिथुन लग्न—शोधक, विद्वान, सूज्ञ व आनन्दी होगा।
कर्क लग्न—अस्थिर, अस्वस्थ, दयालु होगा।
सिंह लग्न—लेखक, ऐतिहासिक प्रेम, साहसी मनुष्य होगा।
कन्या लग्न—शान्तिप्रिय, हुनरी, गूढ़ार्थी मनुष्य होगा।
तुला लग्न—नम्र, विषयी, शुद्धसंकल्प मनुष्य होगा।
वृश्चिक लग्न—ऊँचे विचार, ठग व अभिमानी मनुष्य होगा।

धन लग्न—दयालु, कल्पक, प्रेरणा वाला मनुष्य होगा।

मकर लग्न—स्वार्थी, लुच्चा, खाऊ, योजक मनुष्य होगा।

कुम्भ लग्न—दयालु, उदारमन, ईश्वरभक्त मनुष्य होगा।

मीन लग्न—पशुप्रिय, दयालु, अव्यवस्थित।

द्वादश भावगत नेपच्यून का फल

१—लग्न—प्रथम भाव—आध्यात्मिक विचार व ज्ञान, शुद्ध संकल्प, अन्तर्ज्ञान, संगीतप्रिय, मायालू, शुद्ध मन का, कलाकुशल मनुष्य होगा।

२—द्वितीय भाव—अनाथालय, अस्पताल, जहाज, पागलखाना, गुप्तचर आदि संस्था में नौकर होकर धनलाभ, धनाढ्य होगा। पापग्रह से पीड़ित हो तो अविचारी, व्यापार में हानि, अधिक व्यय करने वाला होगा।

३—तृतीय भाव—धार्मिक विचार जानने की वृत्ति, गुप्त शस्त्र, कहानी-कथा लेखक, जलप्रवासी, कविता का प्रेम, प्रवास में त्रास वाला होगा।

४—चतुर्थ भाव—मकान, खदान, जमीन, खेती सम्बन्ध से द्रव्य की हानि, लग्न से या रवि, चन्द्र से अशुभ दृष्टि सम्वन्ध हो तो प्रकृति के लिये हानिकारक, सौतेली माता का होना, बन्धन या देशांतर में मृत्यु। शुभ दृष्टि हो तो सम्पत्ति लाभ करने वाला होगा।

५—पंचम भाव—संतति द्वारा हानि, प्रेम की वृत्ति तीव्र, पुत्र संतति अधिक, पीड़ित हो तो प्रेम कार्य में फँसना, शुभ हो तो अकल्पित वैभव प्राप्त कराता है।

६—षष्ठ भाव—उन्नति में विघ्न, नौकर द्वारा हानि, पराधीनता, बुरा स्वास्थ्य, आलस्य, न मिटने वाले रोग, व्यभिचार का काम करना, शुभ हो तो शुभफल मिलता है।

७—सप्तम भाव—अशुभ हो तो स्त्री वियोग, द्विभार्यायोग, अपकीर्ति, व्यभिचार कराता है। आशाओं का निराशा कराना। शुभ हो तो भाग्यहीन होने पर भी उसे भाग्यवान बनाता है।

८—अष्टम भाव—अशुभ हो तो स्त्री धन द्वारा हानि, त्रास, मरने वाले मनुष्य के स्थावर स्टेट की हानि। शुभ हो तो उपरोक्त बातों में कुछ लाभ, योग ध्यान समाधि।

९—नवम भाव—जल या स्थल का प्रवास, धर्म की ओर वृत्ति, भविष्यसूचक, स्वयं यदि अशुभ हो तो मंत्रीपक्ष के मनुष्यों द्वारा धनहानि व कष्ट देता है।

१०—दशम भाव—निन्दा, कलंक, अपयश, कटुम्ब से कष्ट व अलग रहने का प्रसंग लाता है। माता-पिता से वियोग व अवनति। शुभ दृष्टि हो तो माता-पिता में से किसी एक की संपत्ति प्राप्ति, जल सम्वन्धी धन्धे से धन प्राप्त कराता है।

११—एकादश भाव—अस्थिर स्वभाव के मित्र व उनसे हानि व त्रास, थोड़े दिन टिकने वाली स्त्री से प्रेम का योग लाता है।

१२—द्वादश भाव—शुभ हो तो तंत्रमंत्र प्रयोगों से, गुप्त कार्यों से धन लाभ व विजय प्राप्ति, अशुभ हो तो गुप्त शत्रु से भय, कपट, दुःख, प्रपंच, लोकनिन्दा, ठगना, वन्धन, भय उत्पन्न कराता है।

द्वादश राशिगत नेपच्यून का फल

१—मेष—दया, धर्म, दान, उदारता, अपने वल पर विश्वास, हिम्मत, सब कामों में आगे वढ़ने वाला, सुन्दर शरीर, मध्यम कद वाला होता है।

२—वृषभ—शुभ हो तो उद्योग व धन का उत्तम लाभ, अन्यथा निर्वल समझना, सौंदर्यता की ओर प्रीति की वृत्ति, वड़ा व्यभिचारी वनाता है। गम्भीर, आनन्दी, सुशील व मित्रता करने योग्य बनाता है।

३—मिथुन—कल्पनाशक्ति व ज्ञान को प्रवल कराता, संगीतप्रिय, उत्तम मानसिक शक्ति, सुन्दर, चालाक, दयालु व बन्धुप्रेम बढ़ाता है।

४—कर्क—धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति, मातृसुख का दृढ सम्बन्ध व लाभ, दयालु, प्रेमवृत्ति, सुन्दर उत्तम शरीर सुखवाला होता है। पाप दृष्ट हो तो भूतवाधा का अनुभव मिलेगा।

५—सिंह—शुद्धहृदय, उदार, परोपकारी, दयालु, खेल-तमाशे का शौकीन। अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध हो तो संगीत, नाटक, चित्रकला, कविता का शौकीन।

६—कन्या—शुभ हो तो ओषधि के धन्धे या लेखक होने से द्रव्य लाभ, अन्य शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो विलक्षण बुद्धि वाला होगा।

७—तुला—सुन्दर शरीर, कान्तिवान, चालाक, संगीतज्ञ, चित्रकला प्रिय, प्रेमविवाह, मित्रता से दूसरों को आकर्षण करने वाला सुखी रहता है व भाग्य का उदय कराता है।

८—वृश्चिक—दयालु, ऐश-आरामी, विवाह से या दत्तक वनने से धनलाभ, भागीदारी से धनप्राप्ति, मजवूत शरीर वाला होगा।

९—धन—ऐश व आराम, प्रवास, धार्मिक विचार, कविताप्रिय, योगसम्बन्धी ज्ञान, भविष्यवार्ता प्रिय, ईश्वरी प्रेरणा वाला मनुष्य होता है।

१०—मकर—पिता व कुटुंबियों से दुःख। शुभ हो तो उत्तम धन लाभ की प्राप्ति, संगीत, उद्योग-धन्धा, मिल के धन्धे में श्रेष्ठ कहलाता है।

११—कुम्भ—प्रेमविवाह, मित्रता के योग्य व उत्तम सुख की प्राप्ति वाला, परन्तु यदि पाप दृष्टि व युक्त हो तो उपरोक्त वस्तु व उपाय से दुःख व निंदा, शुभ सम्बन्धित हो तो योगज्ञान, उदार, दया, सुशील होना निश्चित है।

१२—मीन—उदार गृहरक्षक, दयालु, दूसरों के सहायता से लाभ होता है और स्वयं दान-धर्म की ओर चित्त रखता है। अशुभ हो तो शरीर व उद्योग में हानि कराता है।

ग्रहों से नेपच्यून के शुभाशुभ दृष्टिसम्बन्ध का फल

१—रवि—नेपच्यून से शुभ दृष्टि युक्त हो तो—स्वच्छता, सुन्दरता, हास्य, विलास, प्रेम इच्छा वृत्ति, नेपच्यून सम्बन्धी धन्धों में प्रगति के लिये अति उत्तम है। प्रवास, वैभव, मौज, नाट्य, सुख-आनन्द-गृहसौख्य को बढ़ाता है। दूसरों से सम्पत्ति प्राप्त कराता हैं। धार्मिक वृत्ति, वैभव, भाग्य प्रदान करता है। भ्रातृप्रेम, प्रेम वृत्ति, आकर्षण-शक्ति, गुप्तयोजना के लिये शुभ है।

अशुभ दृष्टि हो तो व्यवसाय में वाधा, लोकनिन्दा, अपकीर्ति, वरिष्ठ अधिकारी की अपकृपा, अस्थिर मनोवृत्ति, प्रयत्न में असफलता, भाग्यहीन, खराब शरीर स्वास्थ्य, पहचाने या अपरिचित लोगों से धोखा मिलना आदि।

२—चन्द्र—चन्द्र नेपच्यून से शुभ दृष्टि योग होने से सन्तान सुख, माता से लाभ, संगीत, चित्रकला की प्रीति, अध्यात्म ज्ञान व योगाभ्यास में विजय, दया, स्नेह; कवित्व-शक्ति प्रदान करता है। दुःखी मनुष्य के साथ बड़े प्रेम से बरताव करता है।

अशुभ दृष्टि फल—स्त्रियों द्वारा भाग्यहानि, अपकीर्ति, लोकनिन्दा, गुप्त शत्रु भय, व्यभिचारी, स्वतंत्रता में विघ्न, खाने-पीने का शौकीन।

३—मंगल—मंगल नेपच्यून का शुभ दृष्टि योग जल से सम्वन्ध रखने वाले मनुष्य के लिये उत्तम है। नजदीक के लोगों से प्रीति बढ़ाता है। सूर्य, चन्द्र, बुध की शुभ दृष्टि उत्तम है, कार्य में सफलता देती है। चन्द्र-बुध की शुभ दृष्टि हो तो चित्रकला में प्रवीण करता है।

अशुभ दृष्टिफल—अभिमानी, नीच लोगों की संगति, तकरार का प्रसंग।

४—बुध—बुध से नेपच्यून का संयोग या शुभदृष्टि हो तो बुद्धिशाली, युक्तिवाला, गान-विद्या, दैवी शक्ति की ओर मन का झुकाव, शुद्ध मन प्रदान करता है। समुद्र यात्रा करने की विशेष प्रीति मन में उत्पन्न करता है, व्यायाम करने की प्रीति।

अशुभ योग या दृष्टि या युति—भाई व नौकरों से त्रास, उद्योग में हानि, भाग्यहीन, वारम्वार विचारों का वदलना, लोकनिन्दा, अपकीर्ति लाता है।

५—गुरु—गुरु नेपच्यून का शुभ दृष्टि योग द्रव्य प्राप्ति के लिये उत्तम, सदाचारी, प्रेमवृत्ति, शुद्धसंकल्प, मान-प्रतिष्ठा, उदारता, दयालु बनाता है। अन्य ग्रहों का शुभ योग हो तो धर्म सम्वन्धी सूक्ष्म बुद्धि व विचार देता है। लोगों को उपयोगी, धन के लिये अच्छा है।

अशुभ दृष्टि—उपरोक्त फलों का विपरीत अनुभव मिलना निश्चित है।

६—शुक्र—शुक्र नेपच्यून का संयोग या शुभ दृष्टि मन में दया प्रेम बढ़ाता है, बिना स्वार्थ के प्रेम व वृत्तियों को सुधारता है। यह वैराग्य कारक है।

अशुभ दृष्टि योग—प्रेम में निराशा, शिथिलता, अपकीर्ति, निन्दा, व्यभिचार, अस्थिर धन, अविचारी पत्नी, भागीदार विश्वासघातकी, जहरीले वस्तुओं से सावधान रहना चाहिये।

७—शनि—शनि नेपच्यून का शुभ योग विचारों को शुद्ध करता, गंभीरता व अन्तंज्ञान प्रदान कर शत्रु का नाश करता, ज्ञानी व साधारण व्यवसाय वालों को लाभदायक, जल के व्यवसाय में द्रव्य लाभ, वृद्ध व गम्भीर मनुष्य के सहवास का प्रेम, मिलकीयत वारिस धन सम्बन्ध में उत्तम, दृढ व निश्चयी वनाता है।

अशुभ दृष्टि योग—मिलकीयत व धन की हानि, कलह, अवकृपा, अपकीर्ति, भय, त्रास, हानि कराता है।

हर्शल—हर्शल नेपच्यून शुभ दृष्टियोग—व्यवसायियों से प्रेम, गुप्त व दैवीशक्ति, धन्धे में प्रीति व लाभ उत्पन्न कराता है।

अशुभ दृष्टि—उपरोक्त फल में त्रास, हानि, उपाधि उत्पन्न कराता है। धार्मिक विचारों की वृद्धि परन्तु स्वभाव में अकस्मात फेर-वदल लाता है।

जन्मकालीन ग्रह से व विशेषतः १—२—१०—११ भाव के स्वामी से गोचर के शुभ ग्रह जब भ्रमण कर युक्त होते हैं उस समय वह यश-संपत्ति इच्छित फलदायी व भाग्य की वृद्धि करता है। वैसा ही ३—५—९ स्थान व इनके स्वामी से गोचर के शुभ ग्रह जब भ्रमण करते हैं तब वह काल लाभदायक व सुख से व्यतीत होता है। परन्तु पापग्रह भ्रमण करते हों तो बीमारी, द्रव्यनाश, अपमान, चिन्ता, स्त्री पीड़ा, कलह, ऋणग्रस्त स्थिति, व्यापार, नौकरी में शत्रुत्व उत्पन्न कर हीन स्थिति निर्माण करते हैं। १—४—५—९—१० स्थान के स्वामी से अशुभ योग करते हो तो भयंकर नुकसान मिलना निश्चित है।

रवि, चन्द्र लग्न व अष्टम के स्वामी से मंगल, राहू, शनि, हर्शल केन्द्र षड़ाष्टक योग करे तब शारीरिक पीड़ा, रोग की वृद्धि, अशक्तता, रक्तनाश, दृष्टिदोष, मस्तिष्क में पीड़ा, नवज्वर इन्फ्ल्युन्जा, अर्धांग वायु, सन्धिवात, बवासीर, अपचन से क्लेश मिलता है, यह योग १—८ के स्वामी से हो तो मृत्यु का प्रसंग आना भी सम्भव है।

२—४—५—९—११ भाव से या उनके स्वामी से मंगल, शनि, राहू, हर्शल ग्रह का केन्द्र या पडाष्टक योग होते ही सांपत्तिक हानि, धन्धा व नौकरी में विकट प्रसंग, पैसे की तंगाई, ऋणग्रस्त स्थिति, द्रव्य हानि, अपयश, अपमान के प्रसंग उत्पन्न होते हैं।

३—६—१२ स्थान के स्वामी से पापग्रहों का अशुभ योग होता हो तो विद्या व उद्योग में अपयश, अस्थिर बुद्धि, विश्वासघात, संतति को कष्ट, स्त्री को पीड़ा मिलेगी। १० भाव से या उसके स्वामी से यह योग हो तो धन्धा का अन्त होना निश्चित है व चालू धन्धा व नौकरी में अनेक आपत्ति, कारखाने वालों को नौकरों या मजदूरों से बेवनाव व हड़ताल से भयंकर द्रव्य हानि होगी।

सप्तम भाव या उसके स्वामी से शनि, हर्शल का अशुभ केन्द्र व षडाष्टक योग होता हो तो स्त्री को भयंकर कष्ट, शरीर पीड़ा, गर्भिणी हो तो प्रसव समय भयंकर कष्ट होगा इसमें सन्देह नहीं।

ऊपर लिखे हुये भावों में शुभ या अशुभ ग्रह हों परन्तु वे त्रिकोण या त्रिरेकादशयोग करते हों तो शुभ फलदायी समझना, १–५–१० या २–५–९ इन भावों से त्रिकोण योग करते हों तो अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिये। यह योग १–४–५–९–१०–११ स्थान से होता हो तो सम्पत्ति, संतति, स्थावर स्टेट वगैरह से अप्रतिम सुख प्राप्ति होती है।

कारक ग्रह

जगत में मनुष्य प्राणी का सुख, दुःख जिन ग्रहों के प्रभाव पर सर्वस्व निर्भर है उनके कर्त्ता ग्रहों को कारक ग्रह कहते हैं। प्रत्येक ग्रह का कार्य व फल भिन्न है। वे इन घटनाओं पर अपना अधिकार रखते हैं। अतः प्रथम यह जानना आवश्यक है कि वे किस कार्य के कारक अथवा अधिकारी ग्रह हैं। प्रत्येक ग्रह का प्रभाव व सुख नीचे लिखे अनुसार व फलित वर्तते समय इसका विचार करना आवश्यक है। जैसे :—–

रवि–पितृ, ज्येष्ठ वन्धु व शरीर सुख, मन की रुचि, वैद्यकविद्या, राजकार्य, नजदीक का प्रवास, अधिकारी व श्रीमान् लोगों से मित्रता, राजसम्मान, राजविद्या, श्रेष्ठ अधिकार, नौकरी, राज्याधिकारी वर्ग, राजमण्डल प्रसिद्ध नेता, राष्ट्र के कर्णधार, लोकमान्यता, संस्थाओं के कर्णधार, जागीरदार, दीवानपद, श्रेष्ठ दरजे के श्रीमान् होना आदि, का कारक ग्रह है।

चन्द्र–मातृ सुख, सौंदर्य व यश प्राप्ति, ज्योतिष विद्या की रुचि, जलप्रवास, मन-बुद्धि स्वाथ्य, राजैश्वर्य, संपत्ति, सुगन्धी वस्तुओं का शौक, वाहन द्रव्य संचय, धन्धे में प्रगति, सुख, जनता में प्रजापक्ष, सामान्य लोग व प्रजा के नेताओं की मनःस्थिति तथा स्त्री आदि का कारक ग्रह है।

मंगल–लघुभ्राता सुख, पराक्रम, शौर्य, धैर्य, साहस, अभिमान, शत्रु, कीर्ति, बुद्धि के आचार कार्य, धनुर्विद्या, युद्ध नेतृत्व, औदार्य, धातुविद्या, रक्तपात, आपरेशन, शस्त्रक्रिया, सेनापति, स्वाभिमानी, कर्त्तव्यगार, युद्ध, लड़ाई, अग्नि, प्रलय, शारीरिक सामर्थ्य का घमण्ड, दावेदार आदि का कारक ग्रह है।

बुध–सौख्य, बुद्धि, विद्या, वक्तृत्व शक्ति, मित्र सुख, मनःशान्ति, संपत्ति, स्वतंत्र धन्धा, व्यापार, वाणी व लेखनकला, वेदान्त विषय रुचि, कलाकौशल, ज्योतिषविद्या का ज्ञान, गणितशास्त्र, लोकानुकूलता, वक्ता, ग्रन्थकार, लेखक, संपादक, मुद्रक व प्रकाशक, परराष्ट्रीय मंत्री, सराफे का धन्धा, वकालत आदि का कारक ग्रह है।

गुरु–संतति, संपत्ति, अधिकार, ज्ञान, मंत्रविद्या, ऐश्वर्य, राजसम्मान, वेदान्त ज्ञान, धर्माभिमानी, ग्रंथकर्ता, स्थिर बुद्धि, परोपकारी, राजकारण वाहन, धर्मगुरु, संस्कृत

व्याकरण अधिकारी, न्यायाधीश, वकील, श्रीमान्, व्यापारी, पेढी का मालिक, दीवान, जागीरदार, सोने का व्यापारी, लेन-देन धन्धा, शान्ति, व्यवस्थाप्रिय आदि का कारक है।

शुक्र—स्त्री व प्रापंचिक सुख, गायन-वादनकलाप्रिय, प्राचीन संस्कृति का अभिमानी, कवित्व सौंदर्य का भोक्ता, विषयी, सुगंधित वस्तु शौकीन, द्रव्य लाभ, यांत्रिक विद्या, राजाश्रय, स्वतंत्र धन्धा, राज कारभार का ज्ञानी, अलंकार, साहित्यप्रेमी, वाहनादि सुख, हीरे-मोती आदि, शैयर-सट्टा, ऐश, आराम, कपास का व्यापारी, देश की संपत्ति आदि का कारक ग्रह है।

शनि—लोभ, मोह, घातकर्म, दुष्ट बुद्धि, आयुष्य, रोगी, सरकारी आरोप, राजदण्ड, कैद, उद्योग हानि, दासत्व, कायदे पण्डित, नीचविद्या, खेती, खनिज पदार्थ, मजदूर वर्ग, कष्ट, गुप्त वातें, नौकरी, पराधीनता, कारस्थानी, छापेखाने का मालिक, अशिक्षित वर्ग आदि का कारक ग्रह है।

राहू—गारुढ़ी विद्या, आकस्मिक घटना, भूतवाधा, राजछत्र, अरुचि, सम्मान, आजा का सुख आदि का कारक ग्रह है।

केतु—आजी का सुख, तंत्र-मंत्र, गुप्तविद्या, एक तंत्री विचार, मंत्रसिद्धि के प्रयत्न आदि का कारक है।

ऊपर लिखे हुये फलादेश के अनुसार यदि अधिकार का विचार करना हो तो जन्म कुण्डली में रवि के स्थिति का विचार प्रथम करना चाहिये क्योंकि इसके शुभाशुभ स्थिति पर लग्नेश व दशमेश का फल निर्भर है। स्त्री व प्रापंचिक सुख के विषय को सप्तम स्थान के ग्रह या सप्तेमेश के शुभाशुभ स्थिति पर नहीं, किन्तु इस सुख का दाता ग्रह शुक्र है इसका प्रथम विचार करना आवश्यक है। विद्या, संपत्ति का निर्णय के लिये उन ग्रहों के स्थान के साथ ही गुरु के शुभाशुभ स्थिति और उसके दृष्टि का विचार करना प्रथम ही चाहिये। आर्थिक सुख का विचार केवल धन स्थान या उसके स्वामी धनेश व लाभेश के साथ चन्द्र-शुक्र का विचार करना अत्यावश्यक है। दुःख, संकट, रोग, आयुष्य आदि का कारक ग्रह शनि है। अतः शनि के शुभाशुभ स्थिति, दृष्टि, उच्च-नीच राशि, अंशयुती आदि का विचार करना बहुत जरूरी है। अन्यथा इच्छित फल का मिलना असम्भव होगा। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रश्न का विचार करते समय केवल उस भाव के ग्रह स्वामी से ही विचार किया जाता है। किन्तु उस प्रश्न के कारक ग्रह, ग्रहों की युति, शुभाशुभ स्थिति योग, दृष्टि आदि के करने से इच्छित फल मिलना सम्भव होगा। अतः कारक ग्रह के ज्ञान बिना फलित वर्तना, यानी एक पैर पर मार्ग भ्रमण करने के समान समझा जायेगा और फलित के प्रति प्रश्न कर्ता के मन में शंका उपस्थित होना स्वभाविक समझा जायेगा।

ग्रहों के अनुभवसिद्ध गुण धर्म स्वभाव

प्रत्येक ग्रह के गुण धर्म स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं। अतः भविष्य कथन का फलित

वर्तते समय सर्वप्रथम इनके गुणों से परचित होना परम आवश्यक है। जो नीचे लिखे अनुसार हैं :—

१—रवि–स्पष्टवक्ता, धीरोदात्त, गहरे दिल का, वैद्यकविद्या में रुचि, गम्भीर चेहरा, लोगों पर अपनी छाप जमाने वाला, समाजअनुकूल, यशस्वी, परोपकारी, शत्रु व विरोधी को पराभूत करनेवाला, दातृत्व शक्ति वाला, उदार, कठोर वचन, परन्तु परिणामी हितकर कहने वाला, स्वार्थत्यागी, मर्मज्ञ, ऐहिक सुख में उदासीन, स्थिर स्वभाव, दूरदर्शी, साफ व्यवहार, अनुकरणीय वर्तने वाला, सुधारणाप्रिय।

२—चन्द्र—चैनी, चंचल, ऐश-आरामी, द्रव्याभिलाषी, उतावला, शेखीबाज, स्त्रीलोलुप, कर्त्तव्यहीन, धन्धा के विषय में बेफिक्र, फजूल का आत्मविश्वास, स्वार्थी, अस्थिर मन, गोलमाल व्यवहार, मृदुभाषी, सौम्य वर्ताव, दिलदार, उच्छृंखल, अनियमित, अविश्वासी।

३—मंगल—क्रूर व तेज स्वभाव, हठी, सनकी, हिम्मती, मौके पर हार न खाने वाला, दीर्घोद्योगी, युक्ति से दूसरों को लड़ाकर कार्य साध्य करनेवाला, दिलदार, खर्चिक, बेफिक्र, धर्महीन, खुला व्यवहार, सत्य भाषणप्रिय, भविष्य की अपेक्षा वर्तमान काल को अधिक महत्व देने वाला, कार्यकुशल किन्तु अनियमित, निष्कपटी, मित्रता योग, आचार भ्रष्ट सुधारणा, मदवादी।

४—बुध—सुस्वरूपी, हास्यवदनी, विनोदी, प्रफुल्लित, वाक्पटु, स्पष्ट व्यवहार, आनन्दी, उत्साही, धूर्त, वाहन का शौकीन, नौकर का सुख, समय पर धोखा देनेवाला, चैनी, सौम्य स्वभाव, शान्त परन्तु अहंकारयुक्त, कुटुम्ब के प्रति उदासीन, पैसे के विषय में विचित्र व्यवहार, उद्योग में निमग्न व आतुर लोगों को बेफिकरी दिखानेवाला, प्रत्येक धन्धे का ज्ञान परन्तु किसी में प्रवीण न होना, अध्यात्म विषय प्रेमी, कारभारी, शास्त्रीय विषयों की रुचि वाला किन्तु हृदय का भाव दूसरों को मालूम न होने देनेवाला, कष्टसाध्य धोखे का कार्य करने वाला।

५—गुरु—गुणसम्पन्न शान्त स्वभाव, वेदान्त शास्त्र निपुण, विद्वान्, परोपकारप्रिय, सत्कर्मी–आचरणी, बुद्धिमान, सत्याभिमानी, संकटग्रस्त, दूसरे के कष्ट को अपना समझ कर मदद करने वाला, कोमल दिल, शुद्ध अन्तःकरण, मृदुभाषी, गुणी, सब को प्रिय, राज्यदरवार में मान व प्रतिष्ठा, सत्य के लिये कष्ट सहन कर प्रसंग पर विजय प्राप्त करने वाला, उदार वुद्धि, धर्मशील, ईश्वर भक्त, नेक सलाह देने वाला, अनीति के मार्ग से दूर रहने वाला।

६—शुक्र–गायन, वादन, संगीत, काव्य, कलाकौशलप्रिय, अच्छे पदार्थ का संग्रही, स्वच्छताप्रिय व उत्तम पोशाक वाला, अस्थिर मन, स्वार्थी, स्त्रीलोलुप, गुप्तकर्मी, प्रापंचिक वातों में निमग्न, धर्म पर श्रद्धा, व्यसनी लोगों से मित्रता, परस्त्रीरत, स्त्रियों को प्रिय, पापबुद्धि, अविचारी, फजूलखर्ची, स्वतंत्र व्यापार में यश प्राप्ति।

७--शनि-धूर्त, दुष्टबुद्धि, दुर्बल मन, आलसी, मन्द बुद्धि, उद्योगरहित, कलहप्रिय, वन्धु सुखहीन, विरोधात्मक आन्दोलन का पुरस्कर्ता । मर्मभेदी बातें करना । असन्तुष्ट, उद्योग में अपयश, व्यसनी, स्त्रीलोलुप, पाप-पुण्य के प्रति निडर, दुराचरणी, समाज के हितकार्य में विघ्न लाने वाला, स्वार्थप्रिय, परदोष ढूढ़ने में तेज, परद्रव्य हरण करने में प्रवीण, अविचारी, द्रव्य की तृष्णा अधिक ।

८–९--राहु, केतु-कार्यसाधक, अल्पभाषी, प्रचण्ड कल्पना शक्ति, महत्वाकांक्षी, होशियार, राजकार्य और व्यवसाय में निमग्न, उद्योगरत, साधक-बाधक उपायों का सोचने वाला, एकमार्गी, क्लिष्ट व गूढ विद्या की प्राप्ति करने वाला, शान्त व स्थिर स्वभाव, सयुक्तिक-भाषणप्रिय, स्वार्थी, स्पष्टवक्ता, परदुख में उदासीन, परोपकारी वादाविवाद कुशल, उत्साही, समाज कार्यप्रिय, मित्रता योग्य, धर्माभिमानी ।

ऊपर लिखे हुये गुणों में, विरोधी भाव युक्त गुणों का वर्णन है ।

जैसे--स्वार्थी, परोपकारी । अत: पाठकों के मन में शंका आना स्वाभाविक है, परन्तु यह विरोधी गुण ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति, युति, दृष्टि योग आदि पर पूर्ण निर्भर हैं, इसलिए ऊपर लिखे हुये गुण ग्रहों के अवस्थानुसार कम या अधिक प्रमाण पर मिलेगा यह अवश्य ध्यान में रखने योग्य है । शुभ ग्रहों के नीच स्थिति से अशुभ फल व अशुभ ग्रहों की उच्च स्थिति से शुभ फल मिलना सम्भव है और यह निर्विवाद है ।

ग्रहों से रोग निदान-ज्ञान

सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने सर्वप्रथम आकाशस्थ ग्रहों को निर्माण किया तत्पश्चात् यह सृष्टि निर्माण की । आकाशस्थ ग्रहों का परिणाम पृथ्वी के प्रत्येक प्राणी पर पड़ता है यह निर्विवाद है परन्तु अन्य प्राणियों के अपेक्षा मनुष्य प्राणी सर्वश्रेष्ठ होने के कारण उसने यह जानने का घोर प्रयत्न किया कि जगत् के कल्याण के लिये ज्योतिष शास्त्र द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया जाय कि ये ग्रह अपना गुण-धर्म, रूप-रंग, स्वभाव आदि शिशुपिण्ड पर गर्भावास अवस्था से ही दिखाते हैं तब जन्म होने से मरण समय तक इनका प्रभाव शुभ और अशुभ यदि मनुष्य प्राणी पर नित्य पड़ता हो तो इसमें कोई आश्चर्य नही । इन्हीं ग्रहों के शुभाशुभ भाव के कारण, इस जगत में नाना प्रकार के रूप-रंग, गुण-स्वभाव दिखायी पड़ते हैं । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य का व रोग का होना यह भी ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति पर अवलंबित है । अतः किन ग्रहों से कौन से रोग उत्पन्न होते हैं इसका ज्ञान प्रत्येक समंजस मनुष्य को होना अत्यन्त आवश्यक है । उसका वर्णन संक्षिप्त में यहां पाठकों के लाभार्थ करना हम आवश्यक समझते हैं । शारीरिक रोगों के उत्पत्ति का मुख्य कारण वैद्यकशास्त्र में कफ, वात, पित्त इन तीन विकारों का कम या अधिक होना प्रमाण पर वर्णित है और इसी आधार पर प्रवीण

वैद्य नाड़ी परीक्षा करते ही अपना निदान निश्चित करते हैं। उसी तरह इन त्रिविकारों की उत्पत्ति का कारण ज्योतिष शास्त्र के आधार पर से ही किया गया है। प्रवीण ज्योतिषी इन विकारों का निदान बिना नाड़ी परीक्षा के केवल जन्म-कुण्डली के अवलोकन से कर सकते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं परन्तु उसका वर्णन यहां करना वृथा है। प्रवीण वैद्य वैद्यकशास्त्र के अनुसार रोग का निदान रोगी के जिह्वा, नेत्र, त्वचा, मल-मूत्र व नाड़ी आदि अष्टविधि के आधार पर करते हैं उसी तरह प्रवीण ज्योतिषी, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोगी को न देखते हुये भी केवल उसकी जन्म कुण्डली के भाव, राशि, लग्न, ग्रह, युति आदि का रोग निदान, शरीर के किस भाव पर विशेष रूप से पड़ता है यह सहज मालूम करता है। जैसे :—

कफ—गुरु, चन्द्र।	वातकफात्मक—चन्द्र, शुक्र।
वात—श० रा० के० ने०।	त्रिदोषात्मक—बुध, हर्शल।
पित्त—सूर्य, मंगल।	द्वन्दज दोष—ग्रहानुसार।

रोगों की उत्पत्ति विशेषत: अशुभ ग्रहों के होने से, कुण्डली के द्वादश भाव से शरीर के किस भाव में पीड़ा या रोग होना निश्चित है यह नीचे लिखे अनुसार हैं। जैसे —

प्रथम भाव से—मुख, दांत, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा।
द्वितीय भाव से—दाहिने नेत्र में।
तृतीय भाव से—कान, गर्दन, हाथ में।
चतुर्थ भाव से—पेट, खांदा।
पंचम भाव से—कमर के ऊपर का भाग व जांघ।
षष्ठ भाव से—दाहिना पांव व गुह्य भाग।
सप्तम भाव से—नाभी, पेट का मध्य भाग।
अष्टम भाव से—बायाँ पांव व गुह्य भाग।
नवम भाव से—कमर के उपर का भाग।
दशम भाव से—पेट खादा।
एकादश भाव से—बाँया हाथ, कान, गर्दन।
द्वादश भाव से—वायीं आंख, पैर का तलुवा।

ऊपर लिखे हुये द्वादश भाव में से किसी भी भाव में यदि पापग्रह स्थित हो या उन ग्रहों की युति, प्रतियुति, शुभाशुभ योग, दृष्टि आदि अवलोकन कर शरीर के उसी भाग में रोग, पीड़ा होना निश्चित किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रथम भाव से वैद्य, चतुर्थ भाव से औषध, षष्ठ भाव से रोग और दशम भाव से रोग का साध्य व असाध्य होना भी निश्चित किया जाता है। जन्म कुण्डली में ४-७-८-१२ भाव में यदि चन्द्र स्थित हो तो यह योग रोगी और

वैद्य दोनों के लिये यशप्रद नहीं है ऐसा कहा जाता है। लग्नाधिपति यदि शुभ ग्रह हो तो वैद्य के लिये शुभ–यशप्रद समझा गया है। परन्तु उसके औषध से रोगी को लाभ होने के लिये रोगी का चतुर्थ भाव का स्वामी शुभ ग्रह होना या शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट होना आवश्यक है। पापग्रह गोचर–भ्रमण करते हुए यदि २–६–८ १२ भाव पर से भ्रमण करते हों अथवा इन ग्रहों की इन स्थानों पर युति, दृष्टि योगादि करते हों वो इनकी महादशा और अन्तर्दशा इसी समय चालू हो तो अशुभ फल का मिलना निश्चित समझना चाहिये। सारांश यह कि प्रवीण वैद्य भी बिना नाड़ी परीक्षा किये रोग का कारण नहीं बता सकता, परन्तु प्रवीण ज्योतिषी केवल रोगी के जन्म कुण्डली को देखते ही शारीरिक रोग का वर्णन, स्थान आदि पूर्णतया बता सकता है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि हमारे पूर्वजों ने ज्योतिषशास्त्र को सब शास्त्रों में प्रथम स्थान दे उसको गौरव दिया। यह सचमुच में स्तुत्य है इसे प्रत्येक समंजस मनुष्य को मानना होगा।

प्राचीन समय में बहुत से समंजस लोगों को विशेषतः वैद्यों को ज्योतिषशास्त्र का साधारण ज्ञान रहा करता था व इसके आधार पर शुभ दिन को रोगी की परीक्षा कर औषधि देना आरम्भ किया करते थे और ईश्वर उन्हें उनके उपचार में पूर्ण यश भी देता था किन्तु वर्तमान समय में इस शास्त्र का लोप होने व अंग्रेजी दवाईयों का प्रचार डाक्टरों के द्वारा अधिक होने के कारण आयुर्वेद–औषधियों का उपचार नहीं के बराबर हो गया है। अतः हमारे आयुर्वेदाचार्यों को इस शास्त्र का ज्ञान न रहा व उन्हें अपने कार्य में यश प्राप्त करना कठिन हो गया है व उन्हें आंग्ल विद्याविभूषित डाक्टरों पर विजय मिलना असंभव सम्भव हो गया है अन्यथा आयुर्वेद–औषधि की श्रेष्ठता का परिचय इस देश के निवासियों को सदैव मिलता रहता इसमें सन्देह नहीं। मनुष्य के जीवन-मरण जैसे विकट प्रसंगों पर इस शास्त्र का सच्चा उपयोग करने का अधिकार आयुर्वेद ज्ञाताओं को ही है। परन्तु अत्यन्त खेद से कहना पड़ता है कि पाश्चात्य देशों में मेडिकल एस्ट्रालाजीकल कालेजों द्वारा विद्यार्थियों को वैद्यक सिखाने के वर्ग होते हुए, हमारे देश के आयुर्वेदाचार्यों तथा शिक्षा विभाग के श्रेष्ठ अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र व वैद्यकशास्त्र इन दोनों का सम्बन्ध इतना घनिष्ट है कि हमारे देश के आयुर्वेदाचार्य यदि ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर लें तो उन्हें अपने प्रयत्न में अवश्य ही यश मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य के जन्म कुण्डली में जो ग्रह अनिष्ट फलदायी हो और वह जन्म समय जितने अंश का हो उतने अंश में गोचर ग्रह (पाप) युक्त या दृष्ट करें उसी समय से अशुभ फल मिलना तथा रोग का होना आरम्भ होता है परन्तु किस ग्रह से कौन से रोग उत्पन्न होते हैं उसका परिणाम शरीर पर कितना बुरा होगा यह प्रथम जानना आवश्यक है। जैसेः—

रवि—हृदय का भाग, मस्तक व मुख के पास दुःख, खून का बहाव, नेत्रपीड़ा, दृष्टि दोष, हृदय का रोग, मूर्छा, बुखार, पित्त, पीठ व पैरों में दर्द, व्यंग ।

चन्द्र—पेट में विकार, छाती में दर्द, जलोदर, सर्दी का बुखार, स्त्री रोग–प्रदर की वीमारी, आर्तव दोष, अपस्मार, मृगी की वीमारी, सहन शक्ति ।

मंगल—रक्तनाश, फोड़े-फुन्सी, खाज, नाक का रोग, मधुर गुह्यरोग, चीरफाड़, रक्तदोष आदि अंडवृद्धि, व्रणरोग, अग्निपीड़ा ।

बुध—मस्तिष्क विकार, गला व गर्दन में पीड़ा, गण्डमाला, मज्जातन्तु की दुर्व्यवस्था, वाणीदोष, मानसिक व्यथा, सिर का दर्द आदि गुह्यरोग ।

गुरु—लीह्वर की वीमारी, रक्तसंचय, दन्तरोग, घाव आदि, गुल्मरोग ।

शुक्र—वीर्य दोष, गर्मी, बाधी, मूत्ररोग, मधुमेह की बीमारी आदि ।

शनि—सन्धिवात, अर्धांग वायु, क्षयरोग, खांसी, बद्धकोष्ठ, दमा, दाढ़ दर्द, अपचन, वातविकार, दीर्घकाल रोग आदि ।

राहू—दैवी, गोचर, अपस्मार, प्रेत-पिशाच बाधा, अरुचि, दुष्ट विचार व आत्म-हत्या करने की प्रवृत्ति ।

केतु—देवीमाता, शत्रु का कपट, नीचजाति से पीड़ा आदि ।

शरीर में जिस धातु का अधिपति जो ग्रह हो उसका जप, होम, दान आदि करने से रोग, भय, दुःख से मनुष्य मुक्त हो जाता है व यश, सुख, बल की प्राप्ति हो सकती है ।

उच्च ग्रह हो तो जागरूक, मित्रगृही–स्वप्नवत्; नीच व शत्रु गृही सुप्त कहलाते हैं ।

१—शीर्षोदय राशि ग्रह–दशा के आरम्भ में फलप्रद समझे जाते हैं ।
२—पृष्ठोदय राशि ग्रह–दशा के अन्त में फलप्रद समझे जाते हैं ।
३—उभयोदय राशि ग्रह–सदा फलप्रद समझे जाते हैं ।

१—लग्न का स्वामी पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो गुह्य विकार का सम्भव है ।

२—राशि (चन्द्र) से मंगल, शनि, राहू, केतु युक्त हो तो हृदय रोग, शरीर में पीड़ा, स्त्री को कष्ट, वन्धु सुख में विघ्न होना सम्भव है ।

३—सारांश किसी भी प्रश्न का विचार करते समय, भाव, राशि ग्रह, दृष्टि, युति ग्रहांश, शुभाशुभ स्थिति का विचार कर फलित वर्तने से यथार्थ फल का मिलना सम्भव है । जैसे तृतीय भाव से गला, कान आदि का बोध होता है इस भाव से नीच राशि का गुरु भ्रमण करता हो तो कफ व कर्णशूल की व्यथा होना सम्भव है ।

४—नीच राशि का शनि यदि भ्रमण करता हो तो दाहिने ओर की छाती, गला, कान में वात पीड़ा से दुख मिलना सम्भव होगा ।

५—दुःख का प्रमाण कम या अधिक होना अथवा न होना यह जन्म राशि ग्रह, शनि व गोचर ग्रह व उनके शुभाशुभ युति व दृष्टि पर सर्वस्व निर्भर है यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये ।

औषधि तैयार करने के लिये शुभ नक्षत्र व दिन

नीचे लिखे हुए नक्षत्र, वार, योग औषधि तैयार करने के लिए शुभ माने गये हैं—

नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुनर्वसू, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण धनिष्ठा, शततारका व रेवती।

वार—रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार।

अमृतसिद्धियोग पर रस क्रिया-अवलेह, आसव वगैरह तैयार करना चाहिए। सर्वार्थसिद्धियोग पर चूर्ण आदि तैयार करना शुभ है।

अश्विनी, पुनर्वसू, पुष्य, हस्त, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका नक्षत्र, रविवार या बुधवार के दिन तेल, घृत, गोली, पाक, वटी आदि तैयार करना शुभ माना गया है।

आपरेशन, चीरफाड़ के लिये ऊपर लिखे हुये नक्षत्र, रविवार, मंगलवार व गुरुवार के रोज शुभ माने गये हैं।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि लग्न भाव से वैद्य, द्वितीय भाव से औषधि और सप्तम भाव से व्याधि का विचार करना उत्तम समझा गया है अतः यह तीनों भाव यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो रोग का नाश होता है।

विशिष्ट औषधि उपचार आरम्भ करने के लिये—मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा व शततारका नक्षत्र तथा रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र के रोज व रिक्ता-अमारहित तिथी को औषधि आरम्भ करने से रोगी को अवश्य लाभ होगा।

औषधि लेते समय तीन वार नीचे लिखे हुये मंत्र को कह कर औषधि लेना यह प्राचीन पद्धति है जिसके वल पर रोगी को लाभ होना निश्चित है।

"अच्युतानंतगोविन्दनामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्तु सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥"

औषधि सेवन करने के लिये ३—६—९—१२ राशि के लग्न होना आवश्यक है। परन्तु लग्न में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र में से कोई भी एक ग्रह का होना और ७—८—१२ भाव में कोई भी ग्रह का न होना व जन्म नक्षत्र वर्ज्य करना भी आवश्यक है।

रोग नष्ट होने पर स्नान करने के लिये—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृग, आर्द्रा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र व रिक्ता तिथि उत्तम माने गये हैं।

चर राशि लग्न, रवि, मंगल, बुध, गुरु, शनिवार में व १—४—५—७—९—१०—११ भाव में अशुभग्रह का होना प्रशस्त माना गया है।

रोग सम्बन्धी विशेष विचार

१२—भ०, आ०, म० पूर्वा, हस्त, स्वा०, ज्ये०, मूल, पूर्वाषाढ़ा, शततारका व उत्तराभाद्रपदा, इन नक्षत्रों पर ज्वरादि व्याधि उत्पन्न होवे तो मृत्यु भय निवारण के लिये यथा विधि शान्ति कराना उत्तम व लाभप्रद होगा।

१३—विशाखा व श्रवण–नक्षत्र में उत्पन्न हुये रोग की पीड़ा क्रमशः १६ दिन व ९ दिन रहेगी, यह जानना।

१४—धर्मसिन्धु ग्रन्थ के अनुसार आ०, पुष्य, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न हुई व्याधि भी प्राणनाशक हो सकती है। अतः उसकी शान्ति कराना लाभदायक होगा।

१५—भ, कृ, आ, आ, म, वि, मूल इस नक्षत्र पर सर्पादि विषधारी प्राणी का दंश हुआ हो तो मृत्यु भय होना सम्भव है। नियोजित उपाय शीघ्र ही करना चाहिये।

जन्मकुण्डली से रोग निदान

१—जन्मकुण्डली में चन्द्रमा के द्वितीय और द्वादश भाव में शनि या मंगल हो अथवा इन स्थानों में पाप राशि हो तो यक्ष्मा की बीमारी होना सम्भव है।

२—रवि या केतु लग्न में ३–५–९ राशि के हों और सप्तम भाव में चन्द्र, राहु हो तो चेहरे पर दाग या रोग होना सम्भव है।

३—रवि, राहू ४–८–१०–१२ राशि के अष्टम भाव में हो तो सर्पदंश होगा। परन्तु यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो दुरुस्त होगा और पापग्रह की दृष्टि हो तो उसकी मृत्यु समझना।

४—रवि या केतु ३–६–७ राशि के अष्टम भाव में हो और मंगल या शनि की इस भाव पर दृष्टि हो तो बवासीर की बीमारी होना निश्चित समझना।

५—शनि, राहू या शनि, राहू, रवि, गुरु चतुर्थ भाव में हो तो वात व्याधि होना सम्भव है।

६—अष्टम भाव में शनि या मंगल हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो काला ज्वर, टाईफाईड या इन्फ्ल्युएन्जा ज्वर होगा।

७—अष्टम भाव में शुक्र, राहू हो और केतु ४–७–८–१०–११–१२ राशि का हो व उसकी दृष्टि हो तो दमा, खाँसी की बीमारी होगी।

८—अष्टमभाव में चन्द्र, शुक्र, राहू हो तो वीर्यक्षय का रोग होगा।

स्पष्ट ग्रह अथवा ग्रहांक

फलित शास्त्र या भविष्य कथन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को आगामी संकटों से जागृत करना व उसे पापग्रहों के अशुभ फल एवं परिणामों से सावधान करना है। ऐसे प्रसंग को टालने व हटाने के लिये प्रत्येक मनुष्य को निश्चित समय का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है और यह ज्ञान जन्मकालीन ग्रहों के अंशात्मक बल मालूम हुये बिना होना असम्भव है अर्थात् ग्रहों के शुभ या अशुभ शक्ति का ज्ञान हुये बिना किसी भी मनुष्य के ध्यान में आना अशक्य है। प्रत्येक ग्रह ३० अंश के होते हैं और वे प्रत्येक राशि में ३० अंश भुक्त करने के पश्चात् अगले राशि में प्रवेश करते हैं। जन्म समय प्रत्येक

ग्रह जिस राशि में स्थित दिखाई देते हों उस राशि के ३० अंश में से वे कितने अंश भ्रमण कर चुके और बाकी कितने अंश भ्रमण करना है यह जानना, यानि ग्रहों के गति-स्थिति का पूर्णज्ञान अंशात्मक रूप से प्राप्त करना है और इसे ही ग्रहों का स्पष्ट करना कहते हैं। दूसरे दृष्टि से विचार करने पर यह ज्ञात होगा कि ग्रहों का प्रभाव व वजन का प्रमाण कितना है। इसके ज्ञान को ही स्पष्ट ग्रह या ग्रहांश कहते हैं। जैसे मान लो कि, किसी मनुष्य को सोने के खदान में एक सोने का टुकड़ा मिला, किन्तु उसका यथार्थ वजन मालूम करने के लिये उसे पानी व अग्नि से शुद्ध करना अत्यन्त आवश्यक है। उसी तरह आकाशस्थ ग्रहों का प्रभाव व वजन जानने के लिये उन्हें गणित द्वारा शुद्ध कर उनका भुक्त व भोग्य अंशों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है और इसे ही ग्रहों का स्पष्ट करना या ग्रहों के अंश जानना कहते हैं क्योंकि इन्हीं अंशों के द्वारा उनका फल मिलना अथवा न मिलना निर्भर है। कारण यह है कि ग्रहों के बाल, कुमार, युवा, वृद्ध व मृत ऐसी पांच अवस्थाएँ होती हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि जन्म समय वे किस अवस्था के ग्रह हैं और उनके अवस्था के अनुसार ही फल मिलना सम्भव है। जैसे ग्रह जन्म समय सम राशि, अर्थात् २–४–६–८–१०–१२ राशि में स्थित हो तो उनके अवस्था का ज्ञान नीचे लिखे हुये अंश से किया जाता है :—

१—एक से छः अंश तक का ग्रह बाल्यावस्था।

२—सात से बारह अंश तक का ग्रह कुमारावस्था।

३—तेरह से अट्ठारह अंश तक का युवावस्था।

४—उन्नीस से चौबीस अंश तक का वृद्धावस्था और

५—पच्चीस से तीस अंश तक का मृतावस्था कहते हैं। इसी तरह यदि जन्म समय ग्रह विषम राशि अर्थात् १–३–५–७–९–११ राशि में स्थित हो तो उनकी अवस्था नीचे लिखे अनुसार निश्चित की गयी है। जैसे :—

१ से ६ अंश तक वह मृतावस्था का ग्रह कहलाता है।

७ से १२ अंश तक वह वृद्धावस्था का ग्रह कहलाता है।

१३ से १८ अंश तक वह युवावस्था का ग्रह कहलाता है।

१९ से २४ अंश तक वह कुमार अवस्था का ग्रह कहलाता है।

२५ से ३० अंश तक वह बाल्यावस्था का ग्रह कहलाता है।

ग्रहों का फल कुमार अवस्था से वृद्धावस्था तक ही मिलना सम्भव है यह प्रत्येक समंजस मनुष्य को मालूम होना स्वाभाविक है। हमारे लिखने की आवश्यकता नहीं। उच्च या नीच राशि के ग्रह जिस तरह शुभ या अशुभ फल देते हैं उसी तरह उच्च या नीच अंश के ग्रह अपना शुभाशुभ फल देने में समर्थ होते हैं। यह स्पष्ट करने की रीति सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त व ग्रहलाघव आदि ग्रन्थों में वर्णित है। परन्तु इन ग्रन्थों का दीर्घकाल का अध्ययन गुरुकृपा के बिना सुलभ होना दुर्लभ है। अतः इस

सम्बन्ध में यहां पाठकों के लाभार्थ संक्षिप्त में उदाहरण रूप से करना हम उचित समझते हैं। मान लो कि किसी बालक का जन्म विक्रम सम्वत् १९९०, शके १८४५ ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, रविवार, पुनर्वसु नक्षत्र, ४७ घटी १३ पल, (७ घं०–२० मिनट) सूर्यास्त के पश्चात् जन्म इष्ट घटी ३४ पल ५० पर हुआ तो उस दिन के ग्रह किस तरह से स्पष्ट करना चाहिये ?

रवि ग्रह स्पष्ट करने की रीति

जन्म दिन शुक्ल पक्ष, चतुर्थी व समय ३४ घटी ५० पल का है। अतः ४ दिन ३४ घटी ५० पल आया। अमावास्या के दिन सूर्य की गति ५७ कला ३० विकला है, इसे उससे गुणा करके ६० से भाग देने पर जो उत्तर आवे उसे अमावास्या के स्पष्ट रवि में जोड़ देने से चतुर्थी के दिन का रवि स्पष्ट होगा। जैसे :—

४ दिन ३४ घटी ५० पल में ५७ कला का गुणा किया तो
२२८   १९३८   २८५० इसमें ६० से भाग देकर अंश, कला, विकला बना लो। जैसे :—

६०) २८५० (४७
२४०
४५०
४२०
३०

१९३८
४७
६०) १९८५ (३३
१८०
१८५
१८०
५ विकला

२२८
३३
६०) २६१ (४ अंश
२४०
२१ कला

उत्तर ४ अंश २१ कला ५ विकला

४ दिन ३४ घटी ५० पल में ३० का गुणा किया तो—
१२०   १०२०   १५०० में ६० का भाग दिया

६०) १५०० (२५
१२०
३००
३००
×

१०२०
२५
६०) १०४५ (१७
६०
४४५
४२०
२५

१२०
१७
६०) १३७ (२ कला
१२०
१७ विकला

४ अंश २१ कला ५ विकला
\+   २ कला १७ विकला

४ अंश २३ कला २२ विकला उत्तर, जन्म दिन चतुर्थी के रवि का स्पष्ट अंश, कला और विकला आया। इसे अमावास्या के दिन के स्पष्ट रवि के अंश, कला, विकला में जोड़ने से स्पष्ट रवि सिद्ध हुआ। अमावास्या के दिन स्पष्ट रवि १ राशि, ९ अंश, २९ कला, २० विकला पंचाङ्ग में दिया है। उसमें चतुर्थी तक के अंश, कला, विकला को जोड़ देने से अर्थात् १ राशि, १३ अंश, ५२ कला, ४२ विकला निकला। इस पद्धति से स्पष्ट करने पर रवि सिद्ध हुआ। इसके सिवाय दूसरी रीति और भी है; जैसे :—

अमावास्या से जन्मदिन चतुर्थी तक दिन घटी, पल के पल बनाकर उसे सूर्य के गति, कला, विकला से गुणा करो और गुणनफल को ६० से भाग देने के पश्चात् जो अंश, कला, विकला उत्तर में आवे उसे अमावास्या के राशि, अंश, कला, विकला में जोड़ दो। उत्तर स्पष्ट रवि आवेगा।

उदाहरणार्थ :—

४ दिन ३४ घटी ५० पल के पल बनाओ।

४ गुणे ६० बराबर २४०+३४ बराबर २७४ गुणे ६० बराबर १६४४०+५० बराबर १६४९० पल।

सूर्य की गति ५७ कला, ३० विकला बाद ५७ गुणे ६० बराबर ३४२०+३० बराबर ३४५० पल।

३६०० पल ÷ १६४९० गुणे ३४५० पल

```
३६००) ५६८९०५०० (१५८०२
      ३६००
      ────
      २०८९०                    ६०) १५८०२ (२६३
      १८०००                        १२०
      ─────                        ───
      २८९०५                        ३८०
      २८८००                        ३६०
      ─────                        ───
      १०५००                        २०२
       ७२००                        १८०
      ─────                        ───
       ३३००                         २२   विकला।

              ६०) २६३ (४ अंश
                  २४०
                  ───
                   २३  कला
```

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन स्पष्ट रवि	१	९	२९	२०
चतुर्थी जन्मदिन का स्पष्ट रवि +	०	४	२३	२२
उत्तर स्पष्ट रवि जन्म समय तक	१	१३	५२	४२

चन्द्र ग्रह स्पष्ट करने की रीति

पंचाङ्ग में दिये हुये आखिरी कोष्टक का अवलोकन करने से पाठकों को यह सहज ज्ञात होगा कि जन्मदिन चन्द्र ३० घटी, ५७ पल के उपरान्त कर्क राशि में प्रवेश करता है और जन्म समय ३४ घटी, ५० पल है अर्थात् जन्म समय तक ३ घटी ५३ पल भुक्त हो चुका था। चन्द्र कर्क राशि में जन्म दिन २९ घटी, ३ पल रविवार को था। सोमवार को ६० घटी आई और मंगलवार को कुल ५४ घटी, २९ पल के पश्चात् सिंह राशि में प्रवेश करेगा। अतः कर्क राशि में चन्द्र कितने घटी व पल रहेगा। यह प्रथम जानना चाहिये।

रविवार	२९ घटी ३ पल
सोमवार	६० घटी
मंगलवार	५४ घटी २९ पल
	१४३ घटी ३२ पल
	६० का गुणा किया
	८५८०
	३२
	८६१२ पल

जन्म समय चन्द्र भुक्त ३ घटी ५३ पल
६० का गुणा किया
१८०
५३
२३३ पल

चन्द्र ८६१२ पल में ३० अंश भ्रमण करता है तो २३३ पल में कितने अंश भ्रमण करेगा?

=३० गुणे २३३÷८६१२
=६९९०÷८६१२

८६१२) ६९९० (० अंश
६० का गुणा किया
४१९४०० (४८ कला
३४४४८
७४९२०
६८८९६
६०२४ में ६० का गुणा किया
६०
३६१४४० (४१ विकला
३४४४८
१६९६०
८६१२
४३४८

उत्तर—चन्द्र स्पष्ट ० अंश ४८ कला ४१ विकला आया।

जन्म समय का स्पष्ट चन्द्र ३ राशि, ० अंश, ४८ कला, ४१ विकला।

मंगल ग्रह स्पष्ट करने की रीति

पहली रीति :—

४ दिन ३४ घटी ५० पल — जन्म दिन व समय मंगल की गति १९ कला, २६ विकला हैं इसलिये पहले १९ से गुणा किया

४ दिन	३४ घटी	५० पल
		× १९
७६	६४६	९५०
११	१५	
८७	६६१	

६०) ८७ (१ अंश
६०
२७ कला

६०) ६६१ (११
६०
६१
६०
१ वि०

६०) ९५० (१५
६०
३५०
३००
५०

अर्थात् १ अंश, २७ कला, १ विकला
\+ ० अंश, १ कला, ५९ विकला
१ अंश, २९ कला, ० विकला

४ दिन,	३४ घटी,	५० पल
× २६	२६	२६ विकला
१०४	८८४	१३००
१५	२१	
११९	९०५	

६०) ११९ (१ कला
६०
५९ विकला

६०) १३०० (२१
१२०
१००
६०
४०

६०) ९०५ (१५
६०
३०५
३००
५

उत्तर—० अंश, १ कला, ५९ विकला।

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन मंगल	४	१४	३५	३२
व चतुर्थी को आया	०	१	२९	०
उत्तर मंगल स्पष्ट	४	१६	४	३२

दूसरी रीति

अमावास्या से जन्म दिन तक घटी, पल के पल बनाओ।

४ दिन ३४ घटी ५० पल

६० का गुणा किया

२४०

३४

२७४

६० से गुणा किया

१६४४०

५०

१६४९०

मंगल की भ्रमण गति १९ कला २६ विकला

६०

११४०

२६

११६६ पल

१६४९० में ११६६ का गुणा किया तो गुणनफल हुआ १९२२७३४० ÷ ३६००

३६००) १९२२७३४० (५३४०
१८०००
१२२७३
१०८००
१४७३४
१४४००
३३४०

६०) ५३४० (८९
४८०
५४०
५४०
×

६०) ८९ (१
६०
२९ कला

	राशि	अंश	कला	विकला
जन्म समय मंगल स्पष्ट अमावास्या तक	४	१४	३५	३२
चतुर्थी जन्म दिन तक मंगल स्पष्ट	०	१	२९	०
मंगल स्पष्ट	४	१६	४	३२

बुध ग्रह स्पष्ट करने की रीति

बुध की गति   ११३ कला   ८ विकला
अमावास्या से चतुर्थी तक   ×   ४ दिन

४५२ कला   ३२ विकला

६०) ४५२ (७ कला
४२०
३२
६० का गुणा किया
१९२० (३२ विकला
१८०
१२०
१२०
×

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन बुध स्पष्ट	१	७	१५	१८
चतुर्थी के दिन तक बुध स्पष्ट	+ ०	०	७	३२
स्पष्ट बुध ग्रह	१	७	२२	५०

गुरु ग्रह स्पष्ट करने की रीति

	कला	विकला
गुरु ग्रह की गति	२	३६
	×	४ गुणा किया
	८	१४४

६०) १४४ (२ कला
१२०
२४ विकला

८ कला   ० विकला
\+ २ कला   २४ विकला

१० कला   २४ विकला

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन स्पष्ट गुरु	४	२३	४२	३२
चतुर्थी के दिन का स्पष्ट गुरु	+	०	१०	२४
स्पष्ट गुरु	४	२३	५२	५६

शुक्र ग्रह स्पष्ट करने की रीति

	कला	विकला
शुक्र ग्रह की गति	७४	२९
	×	४ का गुणा किया
	२९६	११६

६०) ११६ (१ कला
६०
५६ विकला

६०) २९६ (४ अंश
२४०
५६ कला

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन स्पष्ट शुक्र	१	१९	११	५५
चतुर्थी के दिन का स्पष्ट शुक्र +	०	४	५६	५६

जन्म दिन तक का शुक्र ग्रह स्पष्ट १ राशि २४ अंश, ८ कला, ५१ विकला।

जन्म दिन शनि ग्रह वक्र गति से आगे नहीं जाते या उसी राशि में स्थित नहीं रहते किंतु पिछले राशि में वक्री हो भ्रमण करते हैं। अतः वक्री ग्रह को स्पष्ट करने की रीति साधारणतः ऊपर लिखे हुये ग्रहों से भिन्न है। जन्म चतुर्थी का है अतः साधारण गति से मार्ग क्रमण करने वाले ग्रहों के कला, विकला को जोड़ना और वक्री ग्रह हो तो घटाना पड़ता है। राहू व केतु यह दोनों ग्रह अपना मार्ग उलटे गति से यानी मीन राशि से मेष राशि तक क्रमण करते हैं। इसलिये इन्हें स्पष्ट करने की रीति वक्री ग्रहों के अनुसार दिये हुए रीति से करना चाहिये।

शनि ग्रह स्पष्ट करने की रीति

	कला	विकला
वक्री शनि की गति	०	११
	×	४ का गुणा किया
		४४

	राशि	अंश	कला	विकला
अमावास्या के दिन स्पष्ट शनि	९	२०	३	३५
घटाओ ... ... —	०	०	०	४४
स्पष्ट वक्री शनि ग्रह	९	२०	२	५१

राहू ग्रह स्पष्ट करने की रीति

	कला	विकला
राहू की गति	३	११
	×	४
	१२	४४

	राशि	अंश	कला	विकला	
स्पष्ट राहू अमावास्या के दिन	१०	१०	२५	७	
		—	१२	४४	घटाया
जन्म के दिन स्पष्ट राहू	१०	१०	१२	२३	

केतु ग्रह स्पष्ट करने की रीति

	कला	विकला
केतु ग्रह की गति	३	११
	×	४
	१२	४४

	राशि	अंश	कला	विकला
जन्म दिन अमावस्या का स्पष्ट केतु	४	१०	२५	७
घटाओ —	०	०	१२	४४
स्पष्ट केतु जन्म दिन	४	१०	१२	२३

स्पष्ट ग्रह साधन

	रवि	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	वक्री शनि	वक्री राहू	वक्री केतु
राशि	१	३	४	१	४	१	९	१०	४
अंश	१३	०	१६	७	२३	२४	२०	१०	१०
कला	५२	४८	४	२२	५२	८	२	१२	१२
विकला	४२	४१	३२	५०	५६	५१	५१	२३	२३

जन्म दिन रवि वृषभ राशि में, १३ अंश, ५२ कला, ४२ विकला भुक्त कर गया। अतः जन्म कुण्डली में यह वृष राशि में स्थित लिखा है, इसी तरह अन्य ग्रह भी लिखे गये। जैसे :—
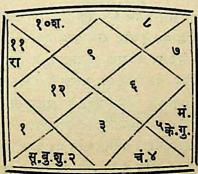
जन्म कुण्डली में ग्रह इस रीति से लिखे जाते हैं यह स्मरण रहे।

ग्रह स्पष्ट करते समय सुज्ञ पाठकों को गुणा व भाग करने का अधिक श्रम न करना पड़े इस हेतु उन्हें प्रथम यह ध्यान में लाना चाहिये कि जन्म दिन पूर्णिमा या अमावस्या से कितने दूर पर है। यदि जन्म शुक्ल पक्ष ८ का हो तो अमावास्या के दिन के स्पष्ट ग्रहों में, जो पंचाङ्ग में लिखा हो, जोड़ देने से अधिक गणित किये बिना स्पष्ट ग्रह का सिद्ध करना सरल होगा, किन्तु जन्म दिन ९ का हो तो प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के स्पष्ट ग्रह से घटाते ही ग्रह स्पष्ट किया जा सकता है। परन्तु ग्रह वक्री हो तो पिछले पक्ष के स्पष्ट ग्रहों के गति व स्थिति में घटाना ही चाहिये, क्योंकि वे पिछले राशि के कितने समीप पहुँच चुके यह सिद्ध करना है। पिछले पक्ष के ग्रहों के गति व राश्यन्तर, वक्री ग्रह आदि का ज्ञान कर लेना आवश्यक है अन्यथा ग्रहों का स्पष्ट करना कठिन होगा। यहां पर यह सदैव के लिये ध्यान में रखना चाहिये कि सूर्य व चन्द्र कभी वक्र गति से भ्रमण नहीं करते।

ग्रहों के अंश से सूक्ष्म फलित ज्ञान

आकाशस्थ ग्रह एक क्षण भी विश्रान्ति नहीं लेते, अपनी गति व मार्ग से नित्य भ्रमण करते रहते हैं यह सर्वश्रुत है व नियोजित समय पर प्रत्येक ग्रह नक्षत्र व राशि में भ्रमण करते हुए दूसरे नक्षत्र राशि में प्रवेश करते हैं। जन्म समय ३० अंशों में से कितने अंश भ्रमण कर चुके व कितने अंश भ्रमण करना वाकी है यह गणितशास्त्र के आधार से प्रकट किया जा सकता है और इन्ही अंशों पर ग्रहों के अवस्थानुसार मनुष्य को आजन्म फल मिलता है—यह इस शास्त्र से सिद्ध हो चुका है। जिसके कारण प्रत्येक व्यक्ति को शुभ व अशुभ फल कम व अधिक प्रमाण पर आजन्म मिला करता है यह भी अनुभव से सिद्ध हो चुका है। अर्थात् जन्मकालीन ग्रह जितने अंश पर उदित हो उतने ही अंश पर गोचर ग्रह अपना मार्ग भ्रमण करते हुए जब पहुँचते हैं तभी वे अपने शुभाशुभ युति, स्थिति, अवस्था, दृष्टि के अनुसार शुभ या अशुभ फल देने के लिये समर्थ होते हैं यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। अन्यथा एक राशि से दूसरे राशि में प्रवेश करते ही अपना शुभाशुभ फल देने के लिये वे असमर्थ रहते हैं क्योंकि जन्म होने के पूर्व वे जितने अंश भ्रमण कर चुके हों उसका फल मिलना अशक्य है। मान लो कि राम की जन्म राशि मेष है और जन्म समय गुरु २० अंश का है, तो क्या राशि से गुरु पांचवां (अर्थात् सिंह का जो शुभ कहलाता है) सिंह राशि में प्रवेश करते ही अपना शुभ फल देने के लिये समर्थवान् हो सकता है ? अर्थात् नहीं। क्योंकि ग्रहों का पहिला, दूसरा आदि होना यह केवल ग्रहों के भ्रमण गति पर नहीं किन्तु उनके अंशात्मक वल व अवस्था पर अवलम्वित है यह ज्योतिषज्ञों ने मान्य किया है। इसलिये गुरु जव २० अंश का सिंह राशि में प्रवेश करने पर पाया जायगा तभी उसका शुभ फल सिंह के २० अंश से कन्या राशि के १९ अंश पर पहुँचने तक अपना शुभ फल देगा।

चाहे व स्थूल दृष्टि में कन्या राशि में प्रवेश कर छठवां क्यों न दीखता हो। गुरु वृषभ राशि के १९ अंश पहुँचने तक पहला व इसी प्रकार सिंह राशि के २० अंश पहुंचने पर पांचवां कहलायेगा। यह स्मरण रहे कि सूक्ष्म व स्थल दृष्टि में यह भयंकर अन्तर होने के कारण ग्रहों का राश्यन्तर होते ही उनके शुभाशुभत्व के विषय में फलित वर्तने से भविष्य का फल अशुद्ध पाया जाना या न मिलना स्वाभाविक है, यह नित्य ध्यान में रखना आवश्यक है। इसे ध्यान में न रखते हुये यदि भविष्यवक्ता के प्रति अज्ञजन फलित के सत्यता पर अपना अविश्वास व्यक्त करे तो इसका दोष उन पर न होकर ज्योतिषज्ञों पर है ऐसा कहना उचित होगा। इसके सिवाय दूसरे दृष्टि से विचार करने से ही सुज्ञ पाठकों को यह मान्य करना होगा कि ग्रहों के राश्यन्तर होते हुए ही फल मिलना असम्भव है। जैसे क्षणभर के लिये मान लिया जाय कि ग्रह यह मनुष्य है। भाव यह शहर है, अंश यह निवास स्थान है, नक्षत्र मोहल्ला है और शुभाशुभ राशि यह भला या बुरे स्वभाव का नौकर है। तो क्या एक शहर से दूसरे शहर के लिये प्रयाण करने या उस शहर के सीमा पर पहुंचने से ही यह कह सकते हैं कि वह अपने घर पहुँच गया? अर्थात् नहीं। जब तक वह अपने निवास स्थान में न पहुँचे ऐसा मानना योग्य न होगा। इसी तरह स्थूल दृष्टि से विचार करने से ही फलित का विचार करना उचित न होगा। ग्रहों के शुभाशुभ फलित कथन करने के पूर्व प्रथम जन्म लग्न व दूसरे जन्मराशि (चन्द्र) के अंशात्मक स्थिति, युति आदि का विचार करने के पश्चात् ही फलित वर्तना उचित समझा जायगा। तात्पर्य, सूक्ष्म फलित वर्तने के लिये ग्रहों के अंश का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है यह स्पष्ट सिद्ध होता है क्योंकि अंशों पर ही फलित की सत्यता निर्भर है।

काल का सूक्ष्म विभाग

आर्यपद्धति के अनुसार

६० प्रतिकला का	१ विकला
६० विकला का	१ कला
६० कला का	१ अंश
१३ अंश २० कला का	१ नक्षत्र
२। नक्षत्र या ३० अंश का	१ राशि
१२ राशि या २७ नक्षत्र का	१ चन्द्रादि ग्रह

आंग्ल-पद्धति के अनुसार

६० विपल का	१ पल	या २४ सेकेन्ड
२॥ पल का		१ मिनट

६० पल का	१ घटिका	२४ मिनट
२ घटिका	१ मूहुर्त	
२॥ घटिका		१ घण्टा
३।। मुहूर्त या ७॥ घटिका	१ प्रहर	३ घण्टे
८ पहर ३० मुहुर्त ६० घटिका	१ दिन	२४ घण्टे
१५ दिन या १५ तिथि	१ पक्ष	
२ पक्ष ३० तिथि	१ मास ३० दिन या ३१ दिन का एक मास	
३०–३१ दिन	१ सौर मास।	
२९॥ दिन	१ चान्द्र मास।	
२ मास का	१ ऋतु	
३ ऋतु ६ मास	१ अयन	
६ ऋतु १२ मास २ अयन	१ सौर वर्ष, १२ मास का एक वर्ष	
३६५ दिन १५ घटी २३ पल का	१ सौर वर्ष	
३५४ दिन ३६० तिथि १२ मास	१ चान्द्र वर्ष	

जन्म-कुण्डली

जन्म कुण्डली यह प्रत्येक मनुष्य के रूप, रंग, गुण, स्वभाव, आयु, सुख-दुःख आदि का एक नकशा है, जिसके द्वारा उसके रूप, रंग, विद्या, हानि, लाभ, माता, पिता, बन्धु, भगिनी, पत्नी, धन, भाग्य, उपजीविका साधन आदि के सुख-दुःख का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है किन्तु जन्म समय व जन्म कुण्डली ठीक होने पर ही यह मिलना सम्भव है। ज्योतिषशास्त्र के आधार पर मनुष्य के जन्म समय से प्रत्येक अंग अर्थात् सताईस नक्षत्र, बारह राशि, नव ग्रह, सत्ताईस योग, ग्यारह करण, बारह मास, दो पक्ष, छः ऋतु, दो अयन और वर्षादि के सुख-दुःखादि के ठीक समय का ज्ञान, शास्त्रज्ञ को निश्चत रूप से अध्ययन करके फलित वर्तने का एक मुख्य साधन है। कई आंग्लविद्यापंडितों का कहना है कि पूर्वजन्म के कर्मों का सम्बन्ध वर्तमान आयुष्य में होना तथा आकाशस्थ ग्रहों का

पृथ्वी के चराचर वस्तु या प्राणियों पर प्रभाव होना केवल भ्रम व लोगों को दिशाभूल करना है। परन्तु सूक्ष्म रीति से विचार करने पर प्रत्येक समंजस मनुष्य के ध्यान में सहज आ सकता है कि जिस तरह प्रत्येक मनुष्य एक मकान छोड़कर दूसरे मकान में जाते समय अपना पुराना या नया मालमत्ता भविष्य में उपयोग के लिये अपने साथ ही सदैव ले जाया करता है, उसी तरह जीव एक देह (घर) छोड़ते समय व दूसरा देह धारण करने के पूर्व, वह अपने शुभाशुभ कर्मों का फल वर्तमान जन्म में अपने उपयोग के लिये अपने साथ ही लाकर इस पृथ्वी पर जन्म पाता है और पूर्वजन्म कृत पाप-पुण्य कर्मों के फल भोगने के लिये वह जन्म लेता है, चाहे उसका जन्म राजकुल में या निर्धन कुल में हो इससे प्रयोजन नहीं। उसे उसके आयुष्य में, पूर्व जन्ममें किये हुये पाप-पुण्य कर्मों के अनुसार सुख-दुःख आदि मिलता है। यह ध्रुव सत्य है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं अन्यथा अनाथ बालक को राज्यपद प्राप्त होना व राजकुमार को दारिद्रय भोगने का कारण किसी भी समंजस मनुष्य के ध्यान में नहीं आ सकता। क्षणभर के लिये ज्योतिष-शास्त्र पर कटाक्ष करनेवाले आंग्लविद्या-विभूषित पंडितों का कहना सत्य है यह मान भी लिया जाय तो यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह अपने पूर्वजन्म कृत कर्मों के फल को किसके पास, कितने समय के लिये व कहाँ रख छोड़ता है, तथा उसके पाप-पुण्य कर्मों के फल को कौन व कब भोगता है और वह इस पृथ्वी पर किस आधार से जन्म पाता है एवं उसके जन्म लेने का प्रयोजन ही क्या है ? हमारे मत से फलप्राप्ति के बाद जिस तरह लता, वृक्ष स्वयं सूखकर मर जाते हैं उसी तरह भोग का फल चाहे भला हो या बुरा शुभाशुभ कर्म स्वयं सूखकर मिट जाते हैं। अर्थात् कर्म का फल भोगने से ही मिटता है यह स्पष्ट सिद्ध होता है। तात्पर्य यह है कि पूर्वजन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्मों के फल और वर्तमान आयुष्य में पाप-पुण्य से होनेवाले कर्मों का पूर्ण ज्ञान, धर्म पर विश्वास होना अथवा न होना और सुख-दुःख आदि का निश्चित ज्ञान जन्म कुण्डली से ही ज्ञात होता है। यह सर्वविदित व मान्य है। अतः प्रत्येक मनुष्य को आयुष्य का प्रवास आरम्भ करने के पूर्व अपने जन्म कुण्डली के आधार पर भविष्य का ज्ञान ज्योतिषशास्त्र के फलित विभाग द्वारा होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे वह प्रयत्नशील हो अधिक गहरे पानी में न बढ़ने पावे। सांसारिक परिस्थिति की अपेक्षा आकाशस्थ ग्रहस्थिति अत्यन्त सत्य व प्रभावशाली है। यह हमारे पूर्वजों के लिखने पर ही नहीं किन्तु पाश्चात्य देश के प्रखर विद्वान, व उच्चकोटि के ज्योतिषियों ने अपने दूरदर्शक यंत्रों द्वारा आकास्थ ग्रहों को वर्षों तक अवलोकन कर यह सिद्ध कर दिखाया व मान्य किया है कि आर्यों का प्राचीन ज्योतिषशास्त्र पूर्णरूप से सत्य है और इसी आधार पर इंग्लैण्ड व अमेरिका आदि देशों के राज्यकर्ताओं ने इस शास्त्र का ज्ञान स्कूल व कालेजों के जरिये भावी पीढ़ी को देना आरम्भ किया है। इसी कारण ज्योतिषशास्त्र ने

अन्य शास्त्रों से अग्रस्थान प्राप्त किया है यह हम पहले लिख चुके हैं व इस पर अविश्वास करना किसी भी सुज्ञ व समंजस मनुष्य को शोभा नहीं देता।

मुख्यत: कुण्डली चार प्रकार की होती है। १—जन्म समय की लग्नकुण्डली, २—जन्म-राशि कुण्डली, ३—वर्तमान वर्ष कुण्डली ४—प्रश्न कुण्डली। जन्म कुण्डली के अन्तर्गत अनेक प्रकार के प्रश्नों पर विचार करने के लिये सूक्ष्म कुण्डलीयाँ भी हैं! जैसे:—होरा, द्रेष्काण, तृतीयांश, सप्तमांश, नवमांश और भाव चलित जिसके आधार पर अत्यन्त सूक्ष्म विचार किया जाता है। परन्तु यह कई विद्वानों का अनुभव है कि इन सब कुण्डलियों में जन्म कुण्डली सबमें मुख्य व प्रभावशाली है और उसे गणित द्वारा सिद्ध कर फलित वर्तने से अधिकांश सन्तोष मिल सकता है। विद्वज्जनों का कहना है कि—शहर में पानी नहीं, आसपास पानी नहीं, फिर फसल सोलह आने कहां से होवे। कुछ वर्षों के पश्चात् कुण्डली का सूक्ष्म निरीक्षण व परीक्षण करने से सुज्ञ पाठकों के ध्यान में सहज आ सकता है कि जन्म कुण्डली द्वारा अनेक प्रश्नों का विचार किया जाता है तथापि इन चार कुण्डलियों का संक्षिप्त वर्णन करना आवश्यक है। जैसे :—

१—मनुष्य के जन्म समय आकाशस्थ ग्रहों के गति व स्थिति आदि दर्शाने वाली कुण्डली को जन्म कुण्डली कहते हैं।

२—मनुष्य के जन्म समय चन्द्र जिस राशि में स्थित हो उसे लग्न (प्रथम) स्थान में लिख कर क्रम से दूसरी राशि व दूसरे ग्रह जिस कुण्डली में लिखे जाते हैं या रहते हैं उसे चन्द्र या राशि कुण्डली कहते हैं।

३—जन्म वर्ष आरम्भ होने के दिन व समय पर एक वर्ष के लिये ग्रहों की स्थिति दर्शाने वाली कुण्डली को वर्ष कुण्डली कहते हैं।

४—किसी भी समय किसी प्रश्न का उत्तर उक्त समय के ग्रहों के स्थिति व गति के अनुसार दर्शाने वाली कुण्डली को प्रश्न कुण्डली कहते हैं।

जन्म कुण्डली (लग्न) से मनुष्य के रूप, रंग आदि द्वादश भावों के गुणों का सुख-दुख मिलना ज्ञात होता है किन्तु राशि (चन्द्र) कुण्डली से मन की स्थिति, सन्तुष्ट या असन्तुष्ट, हर्ष या विषाद का होना ज्ञात होता है। प्रत्येक ग्रह अपने शुभ या अशुभ फल, चन्द्र पृथ्वी से समीप होने के कारण उसके द्वारा ही दिया करते हैं। अत: अन्य ग्रहों के शुभाशुभत्व का ज्ञान, ध्यान में सहज ही आ सके इस हेतु यह राशि कुण्डली जन्म-पत्रिका में लिखने की प्रथा है जो योग्य भी है। जन्म कुण्डली की विशेषता अर्थात् वह उच्च, मध्यम या नीच है यह जानने के लिये दीर्घ प्रयत्न, निरीक्षण, परीक्षण व मनन के पश्चात् ही इसका ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

भुक्त पल

हम पहले लिख चुके हैं कि सूर्य प्रत्येक राशि में एक मास स्थित रहने के पश्चात् वह अगले राशि में भ्रमण करता है। परन्तु वह प्रतिदिन द्वादश राशि में किस गति से भ्रमण करता है यह सर्वप्रथम जानना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसी गति पर जन्म समय उसके जिस राशि में वह स्थित हो उसके भुक्त व भोग्य घटी, पल का ज्ञान हो सकता है।

चरखण्ड-संस्कृत-लंकोदय : चरखण्ड ४०-३२-१३ :

इष्ट स्थानीय पलभा ४

राशि	कुल पल	घटी	पल	प्रतिदिन के भुक्त पल
मेष	२७८—४०=२३८	३	५८	८ पल
वृषभ	२९९—३२=२६७	४	२७	९ पल
मिथुन	३२३—१३=३१०	५	१०	१० पल
कर्क	३२३+१३=३३६	५	३६	११ पल
सिंह	२९९+३२=३३१	५	३१	११ पल
कन्या	२७८+४०=३१८	५	१८	११ पल
तुला	२७८+४०=३१८	५	१८	११ पल
वृश्चिक	२९९+३२=३३१	५	३१	११ पल
धन	३२३+१३=३३६	५	३६	११ पल
मकर	३२३—१३=३१०	५	१०	१० पल
कुम्भ	२९९—३२=२६७	४	२७	९ पल
मीन	२७०—४०=२३८	३	५८	८ पल

शास्त्रकारों ने सूर्य के प्रत्येक राशि में भ्रमण गति का स्थूल प्रमाण लंकोदय अर्थात् लंका के उदय समय से निश्चित किया है और वर्तमान समय में प्रचलित है। लग्न का अंक साध्य करना यह सूर्य के राश्यन्तर व गति पर सर्वस्व अवलंबित है। अतः लग्न निश्चित करते समय प्रथम यह ध्यान में लाना चाहिये कि वह जन्म दिन किस राशि में स्थित है और वह कितने दिन राशि व गति के अनुसार भुक्त कर चुका है। यह ज्ञात करने के पश्चात् उक्त दिनों को सूर्य के प्रतिदिन के भुक्त पल उसी राशि के समक्ष लिखा है, उससे गुणा कर ६० से भाग देने पर घटी पल सिद्ध होगा और यह जन्म समय तक सूर्य ने भुक्त किया, यह समझना चाहिये और घटी पल घटाने के पश्चात् शेष रहे यह सूर्य को भोगना बाकी है, यह समझा जायगा। तत्पश्चात् जन्म समय व सूर्य का उदय कब हुआ यह ध्यान में लाना चाहिये। सूर्योदय से जन्म समय तक जितने घण्टे व मिनट आते हों उसे २॥ घटी से गुणा कर घटी, पल बनाओ। उत्तर में यही जन्म समय की इष्ट घटी समझना चाहिये परन्तु जन्म कुण्डली के लग्न साधन के

लिये सूर्य के भोग्य घटी, पल के नीचे क्रम से अगले राशियों को इस क्रम से लिखो कि जन्म इष्ट घटी के अंक से मिल सके क्योंकि वह राशि का अंक जन्मलग्न समझा जाता है और उसे प्रथम भाव में लिखना चाहिये जिसे लग्न कहते हैं।

लग्नसाधन की स्थूल रीति

मान लो कि किसी वालक का जन्म विक्रमी सम्वत् १९९० शके १८५५ के ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी, रविवार, ४१ घटी, ९ पल, पुनर्वसु नक्षत्र, ४७ घटी, १३ पल, अंग्रेजी तारीख २८-५-३३ को रात्रि समय ७ वज कर २० मिनट पर हुआ तो उसकी जन्म इष्ट घटी कितनी है यह निकालो ? जन्म तारीख को स्टैन्डर्ड टाईम के अनुसार सूर्य का उदय प्रातःकाल ५ वजकर २४ मिनट पर होता है और वालक का जन्म सायंकाल ७ वजकर २० मिनट पर होता है तो रवि उदय से जन्म समय तक के कितने घण्टे व मिनट हुये यह प्रथम देखकर इसे २॥ घटी से गुणा करो। जिसे:—

जन्म समय तक   १३ घण्टे   ५६ मिनट
× २॥   २॥ से गुणा किया
३२—३०   १४०
६०)१४० (२ घटी
१२०
२० पल

३२ घटी ३० पल
+२ घटी २० पल जोड़ा गया।
३४ घटी ५० पल

उत्तर—जन्म इष्ट घटी ३४—५० पल।

जन्म समय सूर्य वृषभ राशि में १४-५-३३ को प्रवेश करता है व जन्म तारीख २८-५-३३ ई० है। अतः सूर्य के प्रवेश दिन से जन्म दिन तक के कितने दिन आते हैं यह निकालो।

उत्तर आया—१५ दिन। सूर्य वृषभ राशि में प्रतिदिन ९ पल के गति से भुक्त करता है इसलिये इन दिनों को ९ से गुणा कर व ६० से भाग करो। जो उत्तर आवे उसे वृषभ राशि के घटी, पल से घटाने के पश्चात् जो शेष रहे वह वृषभ राशि का भोग्य घटी, पल हुआ। अब जन्म इष्ट घटी ३४-५० पल है इसलिये नीचे लिखे क्रम से अन्य राशि के घटी, पल को जोड़ करते हुए, जन्म इष्ट घटी के अंक तक लिखो और जिस राशि का घटी पल होगा वही राशि का अंक बालक का लग्न अंक समझना चाहिये। जैसे :—

१५ दिन गुणे ९ पल=१३५÷६० उत्तर २-१५ पल, भुक्तपल।

सूर्य वृषभ राशि में ४ घटी २७ पल स्थित रहता है इसलिये—

४ घटी २७ पल में
२ घटी १५ पल घटाने से

२ घटी १२ पल शेष भोग्य सिद्ध हुआ।

वृषभ सूर्य	२	१२ पल
मिथुन	५	१० पल
कर्क	५	३६ पल
सिंह	५	३१ पल
कन्या	५	१८ पल
तुला	५	१८ पल
वृश्चिक	५	३१ पल
धन		१४ पल

कुल ३४—५० पल अर्थात् धन राशि के ० घटी, १४ पल भुक्त होने पर तारीख २८-५-३३ को जन्म हुआ व इसलिये जन्मकुण्डली के प्रथम भाव या लग्न में धन (९) का अंक लिखने के पश्चात् अगले अंक क्रम से द्वादश भाव में लिखे जाना स्वाभाविक है।

जन्म-लग्न कुण्डली
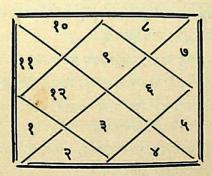
इस तरह जन्मकुण्डली तैयार करने के पश्चात् जन्म दिन व समय तक ग्रह पंचाङ्ग में जिस राशि में लिखे हो उसे उन्हीं राशियों के अंक में लिखने से जन्मकुण्डली पूर्ण सिद्ध हुई, यह समझना चाहिये।

लग्न कुण्डली
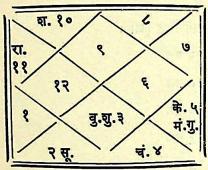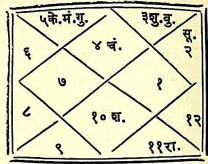
राशि कुण्डली

पंचाङ्ग के आखिरी कोष्टक में चन्द्र कर्क राशि में स्थित हुए लिखा है। अतः जन्म दिन चन्द्र कर्क राशि में प्रवेश किया हुआ स्पष्ट है इसलिये चन्द्र (राशि) कुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में लिखने से राशि कुण्डली तैयार हुई, यह समझना चाहिये।

द्वादश लग्न फल

जन्म कुण्डली के बारह भाव में बारह राशि स्थित किये जाते हैं यह हम पहले लिख चुके हैं व प्रथम भाव में जो राशि लिखी जाती है उसे लग्न कहते हैं। प्रत्येक लग्न के फल भिन्न हैं और वह नीचे लिखे अनुसार हैं। जैसे :—

१—मेष लग्न—इस लग्न में जन्म लिया हुआ पुरुष प्रचण्ड अभिमानी, गुणवान, क्रोधी, मित्र विरोधी, दुष्टसंगति वाला, अपने पराक्रम से यश प्राप्त करने वाला व अत्यन्त रोषयुक्त होता है।

२—वृषभलग्न—बहुत गुणवान, धन से पूर्ण, रणधीर, शूरवीर, शान्तचित्त, प्रियवचन बोलनेवाला, गुरुजनों का भक्त होता है।

३—मिथुन लग्न—भोगी, श्रेष्ठ, बहुत पुत्र व मित्रवाला, गुप्त बात को गुप्त रखने वाला, धनवान, सुशील और राजा समान उसकी स्थिति होती है।

४—कर्क लग्न—साधुजनों का भक्त, नम्र स्वभाव, निरंतर उदार चित्त, दानशील, जलविहार का प्रेमी व मिष्ठान भोजन करने वाला होता है।

५—सिंह लग्न—दुर्बल शरीर, महापराक्रमी, भोगी. थोड़े पुत्रों वाला, अल्प भोजन करनेवाला, बुद्धिमान व अभिमानी होता है।

६—कन्या लग्न—उत्तम ज्ञानी, गुणी, बल व भलाई से युक्त, हमेशा प्रसन्नचित्त, नित्य लक्ष्मी प्राप्त करनेवाला होता है।

७—तुला लग्न—अधिक गुणी, धनलाभयुक्त, व्यापार कार्य में अति निपुण, उसके घर में लक्ष्मी नित्य वास करती है और वह अपने कुल का श्रेष्ठ व भूषण होता है।

८—वृश्चिक लग्न—अनेक विद्या में निपुण, सदा कलहप्रिय, शूरवीर वृत्ति का होता है।

९—धन लग्न—सत्यवादी, राजा का सेवक, बुद्धिमान, दूसरों के मन की बात जानने में निपुण, ज्ञानवान, धनुर्विद्या में निपुण व कलाकुशल होता है।

१०—मकर लग्न—कठोर मनवाला, जो मन में आवे वह काम करनेवाला, शठ, बहुत सन्तान युक्त, अति चतुर होते हुए बहुत लोभी होता है।

११—कुम्भ लग्न—चंचल स्वभाववाला, अतिकामी, लोगों से मित्रता रखनेवाला, दम्भी और धान्य से युक्त होता है।

१२—मीन लग्न—बहुत चतुर, अल्पकामी, उत्तम रत्न-आभूषण धारण करनेवाला चंचल, धूर्त, शिल्पशास्त्र में निपुण होता हैं।

ऊपर लिखे हुये फल शुभ ग्रहों के युति योगादि पर अवलंबित हैं अन्यथा यदि लग्न भाव पर पापग्रहों की युति व दृष्टि हो अथवा लग्न निर्बली हो तो यह फल कम प्रमाण पर मिलेगा। यह स्मरण रखना चाहिये।

सूक्ष्म लग्न साधन रीति

लग्न सिद्ध करने के लिये सूर्य के उदय समय का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है यह स्पष्ट है किन्तु पूर्व से पश्चिम के शहरों में भिन्न भिन्न समय पर सूर्योदय होना सम्भव है। ऐसे स्थिति में सूर्योदय का समय शुद्ध निश्चित ज्ञान के सिवाय, शुद्ध जन्म लग्न का मिलना भी अशक्य है। इस स्थिति में नीचे लिखे हुये रीति का उपयोग करने से सूर्योदय का शुद्ध समय मालूम करना चाहिये।

लंकोदय राशि के पलात्मक उदय

मेष	२७८ पल,	कर्क	३२३ पल,	तुला	२७८ पल,	मकर	३२३ पल,
वृषभ	२९९ पल,	सिंह	२९९ पल,	वृश्चिक	२९९ पल,	कुम्भ	२९९ पल,
मिथुन	३२३ पल,	कन्या	२७८ पल,	धन	३२३ पल,	मीन	२७८ पल,

जिस स्थान का सूर्योदय निश्चित करना हो उस शहर के पलभा पर से चरखण्ड तैयार कर ऊपर दिये हुये तीन राशि में से घटाओ और कर्क से कन्या राशि के पलों में जोड़ो जिससे किसी भी शहर के सूर्योदय का पलात्मक उदय का ज्ञान होगा व तुला से धनराशि के पलों में जोड़ने और मकर से मीन राशि के पलों में घटाने से द्वादश राशि का पलात्मक रवि उदय समय मालूम किया जा सकता है।

पलभा जानने की रीति

मुख्य शहरों का पलभा अनेक ज्योतिष ग्रन्थों में दिया जाता है व उसके अवलोकन करने से उस शहर का पलभा जानना सुलभ होगा किन्तु जिस शहर के पलभा जानने

की पाठकों को इच्छा हो तो उन्हें नीचे लिखे हुये मार्ग का अवलम्बन करना उचित होगा। जैसे :—

सूर्य मेष राशि में जिस दिन प्रवेश करता है उस दिन ठीक मध्याह्न समय चौरस जमीन पर १२ अंगुल लकड़ी का शंकु ठोको और उसके छाया को अंगुली से नापने के पश्चात् जो नाप आवे वह उस शहर का पलभा समझना चाहिये। इस तरह पलभा मालूम करने के पश्चात् उसे चरखण्ड के पल से गुणा करो और गुणनफल को मेष से मिथुन राशि के पलों में से घटाने और कर्क से कन्या राशि के चरखण्ड पलों में जोड़ने से प्रति राशि का पल सिद्ध हो सकता है। जैसे :—किसी शहर का पलभा ४ आया तो उसे नीचे लिखे अनुसार गुणा करो—

पलभा	पलभा	पलभा
४ गुणे १० चरखण्ड	४ गुणे ८	४ गुणे १० चरखण्ड
=४० मेष	=३२ वृषभ	=४०

चरखण्ड के आखिरी अंक को ३ से भाग देने पर उत्तर १३-२० आया इसे नीचे लिखे रीति से घटाओ और जोड़ो—

	लंकोदय चरखंड		घ०	प०	प्रति दिन का पल
मेष	२७८ पल—४०	२३८÷६०	३	५८	८ पल
वृषभ	२९९ पल—३२	२६७÷६०	४	२७	९ पल
मिथुन	३२३ पल—१३	३१०÷६०	५	१०	१० पल
कर्क	३२३ पल+१३	३३६÷६०	५	३६	११ पल
सिंह	२९९ पल+३२	३३१÷६०	५	३१	११ पल
कन्या	२७८+४०	३१८÷६०	५	१८	११ पल
तुला	२७८+४०	३१८÷६०	५	१८	११ पल
वृश्चिक	२९९+३२	३३१÷६०	५	३१	११ पल
धन	३२३+१३	३३६÷६०	५	३६	११ पल
मकर	३२३—१३	३१०÷६०	५	१०	१० पल
कुम्भ	२९९—३२	२६७÷६०	४	२७	९ पल
मीन	२७८—४०	२३८÷६०	३	५८	८ पल

द्वादश राशियों के पलात्मक उदय इस तरह मालुम किये जाने पर इसे ही शुद्ध राश्युदय समझना चाहिये।

मेषादि द्वादश लग्न के लक्षण व फल

जन्म कुण्डली के प्रथम भाव या लग्न में यदि केवल राशि हो और कोई ग्रह न हो तो उनका फल नीचे लिखे अनुसार मिलना निश्चित है। जैसे :—

मेष लग्न—कृश शरीर, छोटे कद का, पुराणमताभिमानी परन्तु आचरण में कमतरता, गोल चेहरा, बोलने में प्रवीण, सुन्दर, भूरी आंखें, बहुत बाल, वातविकार, उष्ण प्रकृति, कौटुम्बिक सुख कम, वृथाभिमानी, कठोरभाषी, द्रव्यहानि के प्रसंग, अस्थिर मन, चंचल, दीर्घोद्योगी परन्तु अपयश, क्रोधी, धन्धा में फेरफार करने की वृत्ति, लोग प्रतिकूल।

वृषभ लग्न—स्थूलदेही, गौर वर्ण, काले नेत्र, चैनी, शान्त स्वभाव, विचारी, कम बोलनेवाला, सांसारिक बातों में निमग्न, गम्भीर चेहरा, शीत प्रकृति, अल्प संतोषी, राज्याश्रित, अनिश्चित उत्कर्ष, स्वतंत्र व्यवसाय का इच्छुक, परिस्थिति सदा फेर-बदल, द्रव्य लाभ, द्रव्य संचयी, वेदान्तप्रिय, ईश्वर भक्त, सत्याभिमानी।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, अशक्त प्रकृति, भूरे नेत्र, लम्बा चेहरा, अल्प बाल, विद्वान, तीक्ष्ण विचार व आचार, कल्पना व बुद्धि-गूढ़तत्त्वों का शोधक, पोशाकप्रिय, सर्वोपरि अपनी छाप माननेवाला, शूर, अभिमानी, वादविवाद में यश प्राप्ति, शास्त्रीय विचारवाला, स्वतंत्र धन्धे में निपुण, उद्योगी, द्रव्यवान, खर्चिक किन्तु आर्थिक संकटों से मुक्त।

कर्क लग्न—स्थूल शरीर, गोल, सुन्दर गौर वर्णवाला, अवयव व स्नायु मजबूत, भव्य चेहरा, बहुत बाल, निःस्वार्थी, दूरदर्शी, सत्यप्रिय, वाक्पटु, लेखक, जागृत कर्त्तव्य बुद्धि, परिश्रमी, भाषण और कृति में समानता, अनुकरणीय, लोकहितवादी, लोकनायक, संकटों को न माननेवाला, श्रेष्ठ अधिकारसम्पन्न, ऊँचे दिल का, लोगों का मित्र, ऐहिक सुख के प्रति उदासीन, स्वार्थी साधु, स्त्रीप्रिय।

सिंह लग्न—भव्य शरीर, रक्त वर्ण, दीर्घ अवयव, गोल लाल नेत्र, कम बाल, चौड़ा चेहरा, मत्सरी, अविचारी, अस्थिर मन, किसी को न माननेवाला, राजवैभव, राजसभा के लोगों का मित्र, विचित्र मनः स्थिति, कठोर भाषी परन्तु परिणाम में हित सिद्ध कर देनेवाला।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्य देह, ऊँचा, गौर वर्ण, चंचल वृत्ति, गोल चेहरा, भड़क-बाज पोशाक, सुन्दर चेहरा, थोड़े बाल, मत्सरी, स्वार्थी, पापबुद्धि, दुष्टजनों की संगत, द्रव्य संबंध में अविश्वासी, स्त्रीप्रिय।

तुला लग्न—साधारण प्रकृति, भव्य मस्तक, गोल लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, गौर वर्ण, तीक्ष्ण बुद्धि, रोगी, स्त्री अभिलाषी, स्वार्थी, लोलुप किन्तु परहित के लिये कष्ट उठानेवाला, व्यापार में निपुण, वाहनों का परीक्षक, प्रत्येक बातों को तौल कर बोलनेवाला।

वृश्चिक लग्न—ऊँचा, कृश किन्तु मजबूत शरीर, कड़े बाल, भूरे नेत्र, धूर्त, कोती गर्दन, मतलबी, कपटी, अल्प विद्या, धाड़सी, स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान चाहने-

वाला, देखने में सीधा, कार्यसाधु, मायालु, भाषण व्यवहारकुशल, लोकमत अनूकूल करने में प्रवीण, महत्वाकांक्षी, सत्यासत्य की परवाह न करनेवाला, किसी पर भरोसा न करनेवाला, धूर्त, चाणक्ष, उष्ण प्रकृति, स्वतंत्र विचारवाला।

धनु लग्न–स्थूल शरीर, ऊंचा मस्तक, लम्बी नाक, साधारण ऊंचाई, लाल गौर वर्ण, शान्त व स्थिर स्वभाव, द्रव्य अभाव से दुःखी, उद्योग में यश कमाई, विद्वान्, अभ्यासी, स्थिर बुद्धि, डरपोक, अव्यवस्थित, झगड़ों से दूर रहने वाला, प्रापंचिक, अल्प सुख।

मकर लग्न–कृश शरीर, लम्बा मुख, काले नेत्र, द्वेषी, मूर्ख, आलसी, महत्वाकांक्षी, अल्प प्रयत्न, गहरे दिल का, विचारहीन, वात विकार, कम कूवत, स्वार्थी, सामान्य द्रव्य प्राप्ति, स्वार्थ साधक, व्यसनी।

कुम्भ लग्न–साधारण कृश शरीर, मध्यम गोरा, चंचल, भूरे नेत्र, थोड़े बाल, देखने में शान्त परन्तु धूर्त, चपटा चेहरा, आपमतलबी, मितभाषी, परावलम्बी, उदार, पूर्ण विद्या, शास्त्रीय विषय की रुचि, मान-सम्मानप्रिय।

मीन लग्न–स्थूलदेही, गौर वर्ण, अशक्त प्रकृति, लम्बा चेहरा, उदार, गम्भीर, धर्म-प्रिय, परोपकारी, दयालु, सत्याभिमानी, साधक-बाधक बातों में प्रवीण, आचार-विचार का मेल, द्रव्याभिलाषी, लोकहित कम, खर्चिक, कीर्तिवान्, धन्धे में यशस्वी व प्रसिद्ध लोगों में मान-सम्मान पानेवाला।

द्वादश लग्न का फल संक्षिप्त में ऊपर लिखे अनुसार वर्णन किया है किन्तु लग्न में यदि ग्रह स्थित हो अथवा ग्रहों की दृष्टि व युति हो तो उस ग्रह के शुभाशुभ गुण धर्म स्वभावानुसार ऊपर लिखे हुये फल में फेर-बदल होना निश्चित है क्योंकि ग्रह मालिक व राशि नौकर समझा जाता है। अतः ग्रहों के रहते राशि का फल स्वतंत्र तौर से मिलना सम्भव नहीं, परन्तु राशि के स्वामी से स्थित ग्रहों के मित्रत्व व शत्रुत्व पर बहुत अंश से फल मिलना सम्भव है। जन्म लग्न व नवांश से शरीर का आकार, रूप, रंग, आंख, नाक, चेहरा, मस्तक, बुद्धि, स्वभाव, मानसिक स्थिति आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। परन्तु लग्न फल वर्तते समय शुभाशुभ ग्रहों के दृष्टि, युति, भाव, राशि आदि का विचार कर फलित वर्तने से यथार्थ फलित का अनुभव मिलना सम्भव होगा। लग्न में रवि से शनि तक सप्त ग्रह में जो ग्रहस्थिति हो उसका फल नीचे लिखे अनुसार मिलेगा। यह ध्यान में रखना चाहिये।

१—लग्न में रवि–मध्यम ऊंचा शरीर, लाल गौर वर्ण, तामसी, धाड़सी, उत्साही, पित्त प्रकृति, कम बोलनेवाला।

२—लग्न में चन्द्र–रूपवान, गोरा वर्ण, सुन्दर शरीर, मितभाषी, तेज आंखें, चंचल स्वभाव, दुबला-पतला शरीर, कफ-वात-पित्त प्रकृति, स्त्रियों को प्रिय।

३—लग्न में मंगल—कृश शरीर, लाल वर्ण नेत्र, चेहरे पर माता के दाग, धैर्यवान्, उदार, चंचल स्वभाव, क्रूर दृष्टि, उग्र स्वभाव, तामसी, क्रोधी।

४—लग्न में बुध—प्रसन्नमुख, विनोदी भाषण, मजवूत शरीर व बुद्धिमान, बोलने में प्रवीण, पिंगल नेत्र, कफ-वात-पित्त प्रकृति।

५—लग्न में गुरु—गोरा स्थूल देही, लम्बी नाक, ऊंचा मस्तक, गोल नेत्र, सदाचारी, विद्वान, स्थिर चित्त, गम्भीर स्वभाव, ग्रन्थपठन प्रेमी।

६—लग्न में शुक्र—गोरा, कोमल सुन्दर शरीर, तेजस्वी कान्ति, पानीदार आंखें, घुंघरवाले बाल, ऐटवाज पोशाक का शौकीन, व्यवस्थित कारभारप्रिय, स्त्रीप्रिय व सुगन्धित पदार्थों का शौकीन।

७—लग्न में शनि—कृश शरीर, काला रंग, पीले नेत्र, मन्दबुद्धि, बलहीन, कृपण, आलसी, मितभाषी परन्तु क्रोधी, कड़े बाल, उत्साही व वात प्रकृति।

लग्न में राशि व ऊपर लिखे हुये ग्रह स्थित हों तो उनका फल ऊपर लिखे हुये अनुसार है किन्तु फल निर्णय करते समय शुभाशुभ दृष्टि आदि का विचार करना आवश्यक है।

जन्म ग्रह और गोचर ग्रह

आकाशस्थ ग्रह अपने मार्ग व गति से सदैव भ्रमण करते एक राशि से दूसरे राशि में प्रयाण करते हैं यह सर्वश्रुत है। जन्म समय जो ग्रह भ्रमण करते हुए जिस राशि में स्थित पाये जाते हैं उन्हें जन्मकालीन ग्रह कहते हैं और वर्तमान समय अपने गति से जिस राशि में भ्रमण करते हुये दीखते हों उन्हें गोचर ग्रह कहते हैं। जन्म ग्रहों के फल मनुष्य को आजन्म समय तक मिलता है परन्तु गोचर ग्रहों के फल, वे जितने समय तक जिस राशि में स्थित रहते हैं उतने ही काल तक मिलता है। वर्तमान समय गोचर ग्रहों के भ्रमण से शुभ बीतेगा अथवा नहीं यह उनकी स्थिति, दृष्टि व युति पर अवलम्बित है और इसे विचारपूर्वक ध्यान में लाने से इनका फल निश्चयपूर्वक मालूम हो सकता है। निर्णय करते समय जन्म और गोचर ग्रह दोनों शुभ राशि में शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो श्रेष्ठ फल, एक शुभ व दूसरा अशुभ ग्रह हो तो मध्यम फल और दोनों अशुभ हो तो अनिष्ट फल मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं। लग्नेश, धनेश, दशमेश व लाभेश १–२–१०–११ इन ग्रहों पर से जब गोचर ग्रह भ्रमण करते हैं तभी वे अपना शुभाशुभत्व फल देने के लिये समर्थ होते हैं। इसी तरह गोचर ग्रह जब ३–५–९–११ भाव में भ्रमण करते हैं तभी वे अपना शुभाशुभ फल देते हैं परन्तु मंगल और शनि यदि २–३–७–८ इन भावों के स्वामी होवें और इन्हीं स्थानों में हों अथवा १–४–५–९–१० इन भावों के स्वामी से अशुभ योग करते हों तो अनिष्ट फल निश्चित है, यह समझना चाहिये। पंचांग में प्रति पक्ष में जो कुण्डलियाँ लिखी जाती

हैं वे प्राय: पक्ष के अन्तिम दिन अर्थात् पूर्णिमा अथवा अमावस्या की हैं यह ध्यान में रखना चाहिये। जन्म राशि से जन्मगोचर ग्रह किस स्थान में स्थित होने से वे अपना शुभा-शुभ फल देते हैं यह नीचे लिखा जाता है। जैसे :—

१—जन्म राशि से जन्म या गोचर ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहू, केतु ३–६–११ भाव में स्थित हों तो पापग्रह शुभ फलदायी समझे जाते हैं क्योंकि पापग्रहों की दृष्टि अशुभ व स्थित होना शुभ समझा जाता है। कारण वे उस स्थान की रक्षा करते हैं और अन्य अशुभ ग्रहों के दृष्टि का अशुभ परिणाम उस भाव पर नहीं पड़ सकता। किन्तु रवि २–४–८–१२ भाव में मंगल १–२–४–७–८ भाव में और शनि–राहू १–२–४–८–१०–१२ भाव में हों तो उन्हें अशुभ फलदायी समझना चाहिये।

२—जन्म राशि से बुध का २–४–६–८–१०–११ भाव में रहना शुभ व ४–८–१२ भाव में रहना अशुभ माना गया है।

३—जन्मराशि से गुरु का २–५–७–९–११ स्थान में रहना शुभ और ६–८–१२ भाव में रहना अशुभ माना गया है।

४—जन्मराशि से शुक्र का १–२–३–४–५–९–११–१२ भाव में रहना शुभ और ७–१० भाव में रहना अशुभ माना गया है।

इन स्थानों के सिवाय ये ग्रह यदि अन्य स्थानों में स्थित हों तो उसका फल मिश्रित मिलेगा।

गोचर ग्रहों के फल समय

किसी भी राशि में गोचर ग्रह प्रवेश करने के पश्चात् वे प्रत्येक राशि में कितने काल तक स्थित रहते हैं और वे अपना शुभाशुभ फल देने के लिये किस समय सामर्थ्यवान् होते हैं यह नीचे लिखे अनुसार है। जैसे :—

ग्रह	स्थिति काल	फल देने का समय
रवि	१ महीना	प्रथम पांच दिन
चन्द्र	२। दिन	अन्तिम तीन घटी
मंगल	१॥ महीना	प्रथम आठ दिन
बुध	१ महीना	सर्वकाल
गुरु	१३ महीना	मध्यकाल के दो महिना
शुक्र	१ महीना	मध्य सात दिन
शनि	३० महीना	अन्तिम छ माह
राहू	१८ महीना	अन्तिम दो माह
केतु	१८ महीना	अन्तिम दो माह।

ग्रहों का द्वादश भावगत फल

किसी भी कुण्डली का फल निर्णय करने के लिये पाठकों को अधिक कष्ट न करना पड़े इस हेतु से सप्तग्रहों के दृष्टि, युति, आदि का फल उदाहरण रूप से संक्षिप्त में यहाँ लिखना आवश्यक प्रतीत हो रहा है ताकि उन्हें अधिक कष्ट व समय का अधिक व्यय करने का प्रसंग न आवे। आशा है कि इसका ज्ञान होने से सुज्ञ पाठकों को अवश्य लाभ होगा। जैसे :—

१—लग्न का स्वामी शुभ ग्रह होकर यदि केन्द्र १–४–७–१० भाव में स्वराशि, मित्र, उच्च, मूल त्रिकोण, राशि में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट न हो तो वह मनुष्य रूपवान, गुणवान, विद्वान, धनवान, निरोगी व सदा सुखी रहेगा।

२—लग्न स्थान पर यदि मंगल की दृष्टि हो अथवा पापग्रह से युक्त होकर लग्न भाव पर उसकी दृष्टि हो तो मनुष्य के चेहरे पर चेचक के दाग, फोड़ा के दाग होना आवश्यक समझा जाता है।

३—लग्न भाव में गुरु, या शुक्र स्थित हो अथवा उनकी दृष्टि हो तो वह निरोगी, रूपवान, शान्त स्वभाव, दूरदर्शी, स्थिर बुद्धि, पुण्यशील, दूसरों को प्रभावित करने वाला होगा।

४—लग्न में उच्च राशि व अंश का बुध, गुरु, शुक्र हो तो मनुष्य अतुल विद्या व धन प्राप्त करेगा।

५—लग्नेश यदि ६–८–१२ भाव में स्थित हो तो वह धनवान होने पर भी अंत में निर्धन होगा।

६—लग्न भाव में चन्द्र या शुक्र हो तो वह विलासी होकर धन का व्यय करेगा।

७—लग्न में तुलाराशि का शुक्र हो या मंगल की पूर्ण दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो वह दो स्त्री से विलास करेगा।

८—लग्न में बुध और सप्तम भाव में गुरु स्थित हो तो वह शान्त दिमाग, प्रसन्न-चित्त व हंसकर बोलनेवाला होगा।

९—उच्च राशि का ग्रह यदि केन्द्र में हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

१०—१-५-९-११ भाव के स्वामी उच्च राशि व अंश के होकर अपने भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य नाना प्रकार के सुख, ऐश्वर्य भोगते हुए श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त करेगा।

धन भाव

१—इस भाव में गुरु स्थित हो व उस पर शनि की दृष्टि हो तो वह मनुष्य श्रीमान् होगा।

२—इस भाव में उच्चराशि व अंश का गुरु, शुक्र हो व शनि की उन पर दृष्टि पड़ती हो तो भी वह मनुष्य श्रीमान् होगा।

३—उसी तरह यदि शनि स्थित हो व बुध, गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो वह श्रीमान् होगा।

४—इस राशि में मकर या कुम्भ राशि का बुध या मंगल हो और वे सूर्य से दृष्ट हो तो वह विनोदी व हंसनेवाला होगा।

५—इस भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों या एक-एक कर होवें और उन पर गुरु की दृष्टि न हो तो वह धनहीन होगा।

६—इस भाव में चन्द्र या बुध हो और उन पर शनि की दृष्टि हो तो वह साधारण धन प्राप्त करेगा।

७—इस भाव में रवि, मंगल, शुक्र हो तो धन नाश होगा।

८—इस भाव में चन्द्र या शुक्र पाप ग्रह से दृष्ट हो तो वह कामी और परस्त्री-रत होगा।

९—इस भाव में उच्च का रवि, बुध, गुरु या शनि हो तो मनुष्य अच्छा वक्ता होगा।

१०—इस भाव के राशि का स्वामी यदि १-४-७-१० अथवा ५-९ भाव में हो व गुरु से दृष्ट हो तो वह श्रीमान् होगा।

११—इस भाव का स्वामी गुरु हो और मंगल से युक्त हो तो वह धनवान होगा।

१२—इस भाव का स्वामी जहाँ पर स्थित हो व उस भाव का स्वामी यदि ६-८-१२ भाव में हो तो वाणी में दोष व्यक्त करेगा।

१३—धनेश शुक्र से युक्त व पापग्रह से दृष्ट होकर ६-८-१२ भाव में स्थित हो तो दाहिने आंख में दोष, दारिद्र योग व प्रापंचिक सुख कम मिलेगा।

१४—धनेश केन्द्र में व लाभेश त्रिकोण में स्थित होकर गुरु, शुक्र से दृष्ट हो तो उसे द्रव्य लाभ होगा।

१५—धनेश लाभ भाव मे व लाभेश धन भाव में स्थित हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

१६—धनेश व लाभेश युक्त होकर, पाप भाव में पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो वह आजन्म दरिद्री होगा।

१७—रवि, बुध, गुरु, शुक्र उच्च राशि या नीच राशि के हो तो कुटुम्ब ऊंचे, व नीच दरजे के होंगे किन्तु वह बड़े कुटुम्ब का सदस्य होगा।

१८—चन्द्र यदि धन राशि का हो तो मनुष्य विद्या, धर्मसम्पन्न हो, प्रवीण व गणितज्ञ होगा।

१९—बुध स्वराशि या मित्र राशि का हो तो वह हंसमुख, विनोदी, गणितज्ञ वा ज्योतिषज्ञ हो, गायन-वादनविद्या में निपुण होगा।

२०—मंगल यदि तृतीय भाव में हो तो वह नमकीन, खट्टे पदार्थ खाने का शौकीन होगा।

२१—धन भाव में गुरु हो तो वह विद्वान, शास्त्रज्ञ, कीर्तन करने व व्याख्यान देने में प्रवीण होगा।

२२—धन भाव में शुक्र हो तो मनुष्य मैथुनप्रिय, सुन्दर नेत्र, रत्नपारखी, संग्रही और शौकीन होगा।

२३—धनभाव में मंगल, शनि, राहु, केतु हो तो वह क्रोधी होगा।

२४—धनेश शुभ ग्रह होकर केन्द्र या त्रिकाण में हो तो वह विद्वान व धनवान होगा।

२५—धनभाव पर यदि रवि, मंगल, शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो वह धनहीन होगा।

२६—धन भाव में चन्द्र पर यदि बुध की दृष्टि हो तो वह धनवान होगा किन्तु बुध स्थित हो व चन्द्र की दृष्टि हो तो वह धनहीन होगा।

२७—सूर्य पंचमेश धन भाव में स्थित हो तो वह वेदान्ती होगा व सूर्य चतुर्थेश होकर धनभाव में स्थित हो तो वह उष्ण व खारे पदार्थ खाने का आदी होगा।

सहज भाव

१—तृतीय भाव में जितने अधिक शुभ ग्रह हों उतना ही अधिक मनुष्य दैवशाली, पराक्रमी व परोपकारी होगा।

२—इस भाव में मंगल हो तो कनिष्ठ बन्धु व भगिनी का होना कठिन है अथवा हो भी तो उनका सुख मिलना असम्भव समझना चाहिये। इसी तरह इस भाव पर यदि मंगल की दृष्टि भी हो तो यही फल मिलेगा।

३—इस भाव में चन्द्र, मंगल होवें तो मनुष्य बड़े युक्ति से धन प्राप्त करेगा तथा चन्द्र, गुरु से दृष्ट हो तो वह धनहीन होगा।

४—इस भाव में पाप ग्रह हो या तृतीयेश ६-८-१२ भाव में हो तो बन्धु सुख नाश जानना।

५—तृतीयेश शुभ ग्रह हो व यह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो बन्धु, भगिनि सुख पूर्णरूप से मिलेगा।

६—तृतीयेश धन भाव में और धनेश तृतीय भाव में हो अथवा ३-१० भाव के स्वामी होकर तृतीय भाव में हो तो वह स्वपराक्रम से धन प्राप्त करेगा।

७—तृतीयेश शुभ ग्रह होवे व इसी भाव में स्थित हो तो मनुष्य को उपजीविका आपसे आप बिना प्रयास से मिलेगी।

८—तृतीय भाव में विषम राशि हो तो वन्धु की संख्या अधिक व सम राशि हो तो भगिनी की संख्या अधिक होगी।

९—तृतीय भाव में मेष का रवि, केतु, सप्तम भाव में शनि, नवम में मंगल, राहू हो तो पत्नी, वन्धु, भगिनी का सुख नहीं मिलेगा। स्त्री की मृत्यु होना भी स्वाभाविक है।

१०—तृतीय भाव में शनि हो तो ज्येष्ठ वन्धु सुख, सूर्य हो तो कनिष्ट वन्धु सुख और मंगल हो तो दोनो के सुखों का नाश करता है।

११—तृतीयेश केन्द्र या त्रिकोण में हो व शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य वन्धु, भगिनि सुख प्राप्त कर, पराक्रमी व यशस्वी होगा।

१२—इस भाव में रवि हो तो ज्येष्ठ वन्धु, शनि हो तो कनिष्ठ वन्धु और मंगल हो तो दोनों को घातक होगा।

सुहृत् भाव

१—चतुर्थेश यदि केन्द्र, त्रिकोण, धन या लाभ भाव में हो तो सम्पत्तिवान होगा।

२—चतुर्थेश गुरु शुक्र से युक्त व दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो वह मनुष्य स्वपराक्रम से स्थावर स्टेट सम्पादन करेगा।

३—चतुर्थेश नवमेश से युक्त व गुरु से दृष्ट हो या मंगल एकादश भाव में और चन्द्र नवम भाव में हो तो वह राजपूज्य व इच्छित वाहन सुख प्राप्त करेगा।

४—चतुर्थेश चतुर्थ में हो व मंगल, गुरु से दृष्ट हो तो उसे मकान की प्राप्ति होगी।

५—चतुर्थेश शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो पूर्ण मातृ सुख मिलेगा।

६—इस भाव पर शनि की दृष्टि हो तो बचपन में ही मातृ सुख का नाश होगा व सौतेली माता का योग समझना।

सुत भाव

१—पंचमेश चतुर्थ भाव में हो तो प्रथम कन्या संतति का लाभ होगा।

२—लग्न या धन भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र पृथक व एकत्रित हो तो प्रथम पुत्र प्राप्त होगा।

३—पंचम भाव में जो राशि का अंक हो अथवा जितने शुभ ग्रह की दृष्टि हो उतनी ही सन्तति की संख्या होना व कभी-कभी दुगुनी होना सम्भव है। पुरुष ग्रह की दृष्टि से पुत्र की संख्या व स्त्री ग्रह के दृष्टि से कन्या के संख्या का विचार करना चाहिये।

४—इस भाव में कुम्भराशि का शनि यदि गुरु से दृष्ट हो तो पांच पुत्र और मकर का मंगल हो तो कन्या संतति सुख समझना चाहिये।

५—इस भाव में स्वगृह का गुरु हो तो पांच पुत्र होंगे।

६—शनि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो अथवा लाभ भाव में हो तो मनुष्य कायदाप्रिय व वकालत का धन्धा करेगा परन्तु यदि दशम भाव पर शनि की दृष्टि हो तो राज्यपद अधिकार प्राप्त करेगा।

७—वृश्चिक या मकर राशि का शनि केन्द्र १–४–७–१० अथवा १–२–३–९–११ भाव में हो व स्वराशि का हो या नवम भाव पर गुरु, चन्द्र की परस्पर दृष्टि हो तो वह मनुष्य वकील होगा।

८—बुध या शुक्र २–५–९–११ भाव में हो तो मनुष्य वेदान्ती होगा।

९—पंचम या एकादश भाव में अधिक ग्रह हों तो मनुष्य निर्धन कुल में जन्म पाकर भी वह विद्वान, श्रीमान, अधिकार युक्त व सर्व प्रकार से सुख सम्पन्न हो देश में प्रसिद्ध होकर ऐश्वर्य भोगेगा व उसे सरकार एवं जनता से मान व मान्यता प्राप्त होगी।

१०—बुध व शनि परस्पर सातवें भाव में हो तो वह इञ्जीनियर होगा।

११—मंगल केन्द्र में हो व गुरु की दृष्टि हो तो वह डाक्टरी का धन्धा करेगा।

१२—दूसरे या तीसरे भाव में रवि, चन्द्र, बुध हो तो वह गणितज्ञ होगा।

१३—लग्न में या मिथुन राशि में शुक्र हो तो वह शास्त्री कहलावेगा।

रिपु भाव

१—इस भाव में यदि शुभ ग्रह स्थित हो तो मनुष्य को मातुल पक्ष के सदस्यों का सुख प्राप्त होगा।

२—इस भाव में यदि पाप ग्रह स्थित हो तो वह रोग और रिपु (शत्रु) के व्याधि से सदैव बचेगा।

३—इस भाव में शुभ ग्रह स्थित हो तो मनुष्य के धन का व्यय सत्कार्य के लिये होगा।

४—यदि पाप ग्रह हो तो द्रव्य का व्यय अनहित कार्य में होगा।

जाया भाव

१—सप्तमेश उच्च राशि का इसी भाव में हो व शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो उसकी पत्नी धर्माचरणी, आज्ञाकारिणी व पतिव्रता होना निश्चित समझना।

२—सप्तमेश रवि, मंगल, चन्द्र, शुक्र या मंगल, शनि, राहू से युक्त व दृष्ट हो तो वह मनुष्य विधवा स्त्री से प्रेम व सहयोग कर व्यभिचारी होगा।

३—सप्तम भाव में जो राशि या ग्रह स्थित हो अथवा उसकी दृष्टि या युति हो उसके अनुसार स्त्री के रूप, रंग, गुण, धर्म, स्वभाव आदि का निश्चय करना चाहिये। शुभ ग्रह का शुभ फल व अशुभ ग्रह का अशुभ फल मिलना निश्चित है।

४—इस भाव पर मंगल की दृष्टि हो अथवा शुक्र स्थित होकर उस पर मंगल, शनि, राहू इनकी पृथक् या एकत्र दृष्टि हो तो मनुष्य व्यभिचारी होगा।

५—इस भाव में चन्द्र या शुक्र उच्च राशि का होकर पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, स्वगृह का होकर पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो अथवा शत्रु क्षेत्र का व नीच राशि का होकर पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होवे तो क्रमशः वह मनुष्य उच्चकुल के स्त्री, स्वजाति स्त्री अथवा अन्य या नीच जाति के स्त्री के प्रेमपाश में पड़कर रममाण होगा व व्यभिचार करेगा।

६—इस भाव में कर्क राशि का चन्द्र होकर वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उसका विवाह रूपवान, गुणवान, गौरवर्ण के स्त्री से होगा और पाप ग्रह की दृष्टि पड़ती हो तो उस स्त्री का अधिक प्रभाव पति पर पड़ेगा।

७—सप्तमेश लाभ भाव में स्थित हो और उस भाव पर चन्द्र, मंगल, शुक्र व शनि की दृष्टि हो तो वह परस्त्रीसंग करेगा।

८—सप्तम भाव में मिथुन का शुक्र हो तो मनुष्य कामी होगा।

९—किसी भाव में शुक्र हो और उसके द्वितीय व द्वादश स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो उसे नपुंसक योग कहते हैं।

१०—इस भाव पर मंगल की दृष्टि हो और स्त्री के कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल या शनि न हो तो प्रथम भार्या की मृत्यु होना निश्चित है और द्वितीय विवाह का योग आवेगा इसमें सन्देह नहीं है।

११—सप्तमेश नीचराशि का, शत्रु क्षेत्र का, वक्री, अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री सुख जिसके जिन्दे रहने पर भी मनुष्य को मिलना असम्भव है।

१२—सप्तम भाव में रवि पापग्रह से दृष्ट हो तो वन्ध्या स्त्री से, चंद्र हो तो स्वजाति के स्त्री से, मंगल हो तो रजस्वला स्त्री से, बुध हो तो वैश्य जाति के स्त्री से, गुरु व शुक्र हो तो ब्राह्मण जाति के स्त्री से व शनि, राहू, केतु हो तो नीच जाति के स्त्री से वह रममाण होगा।

१३—उक्त भाव में रवि हो तो स्त्री के स्तन कड़े व खड़े, मंगल हो तो छोटे, शनि-राहू हो तो लम्बे और शुभ ग्रह हो तो गोल व सुन्दर होंगे।

१४—उक्त भाव में मंगल या शनि अपने राशि में होकर अशुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट हो और शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री परपुरुषगामिनी होगी।

१५—उक्त भाव में शुक्र १ या ८ राशि का हो व मंगल से दृष्ट हो तो वह मनुष्य अत्यन्त कामी व विषयी होगा।

१६—उक्त भाव में शुक्र हो व रवि, मंगल, शनि यदि शुक्र से चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान में हो तो उसकी स्त्री जलकर मरेगी।

चु.ह.ज्यो.को. (उदाहरण कुं. सं.-5, ... देखिए। (सं.न ५२)

१७—चन्द्र से शनि सप्तम भाव में हो और मंगल से दृष्ट हो तो उसे पुनः विवाह का योग आवेगा।

१८—सप्तमेश जिस भाव में स्थित हो किन्तु वहाँ से १–४–७–८–१२ इन भावों में मंगल या पापग्रह हो तो मनुष्य को बहुभार्यायोग आना निश्चित है।

१९—उक्त भाव पर मंगल व गुरु दोनों की दृष्टि हो तो वह मनुष्य परस्त्रीसुख से पराङ्मुख होगा।

२०—सप्तमेश उच्चराशि का होकर अपने भाव पर उसकी दृष्टि हो व अशुभ ग्रह की भी दृष्टि हो तो वह सुन्दर स्त्रियों से रममाण होगा।

२१—इस भाव में चन्द्र या शुक्र, वृषभ या तुलाराशि का होकर वे शनि से युक्त या दृष्ट हो तो वहुस्त्रीलाभ समझना चाहिये।

२२—लग्न में कर्क राशि का चन्द्र, सप्तम में शुक्र और नवम भाव में गुरु हो तो वह स्त्री पतिव्रता होगी।

मृत्यु भाव

१—इस भाव पर यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य दीर्घायुषी होगा।

२—अष्टमेश व लग्नेश पापग्रह से युक्त व दृष्ट होकर अशुभ भाव में हों और शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो उसे अल्पायुषी समझना चाहिये।

३—लग्नेश निर्बली होकर ६–८–१२ भाव में हो और अष्टमेश केन्द्र में हो तो वह अल्पायुषी होगा।

४—अष्टम भाव में शुभ ग्रह और केन्द्र—त्रिकोण में अशुभ ग्रह स्थित हो तो वह अल्पायुषी होगा।

५—द्वितीय भाव में मंगल और सप्तम भाव में शनि हो तो बालक व माता को अरिष्ट समझना।

६—अष्टम भाव में जो राशि स्थित हो, शरीर के उसी भाग में पीड़ा होकर मनुष्य की मृत्यु होती है।

७—अष्टमेश पाप ग्रह होकर लग्न में स्थित हो तो मनुष्य के चेहरे पर चेचक के दाग रहेंगे।

धर्म (भाग्य) भाव

१—भाग्येश अपने भाव में हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसे भाग्यवान समझना।

२—भाग्येश गुरु यदि १–३–५ भाव में हो तो मनुष्य भाग्यशाली, सम्पत्तिवान् व विलासी होगा।

३—चन्द्र, मंगल या चन्द्र, शनि इस भाव में उच्च राशि के हों तो वह मनुष्य श्रेष्ठ अधिकारी, सलाहकार या मुख्यमंत्री हो बहुत धन प्राप्त करता है।

४—नवमेश, लग्नेश या धनेश केन्द्र में हो, लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य बहुगुणी व संपत्तिवान होगा।

५—नवम भाव में यदि पांच ग्रह शुभ स्थित हों तो मनुष्य श्रेष्ठ अधिकार व अपार संपत्ति प्राप्त करेगा।

६—उसी तरह पांच ग्रह यदि लग्न या चतुर्थ भाव में स्थित हों तो वह अपने कुल में कुलदीपक समझा जायगा।

७—नवम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य सुखी, कीर्तिवान और श्रीमान् होगा।

८—नवमेश दशम भाव में और दशमेश नवम भाव में हो तो पिता धनवान व कीर्तिमान होना चाहिये।

९—इस भाव में उच्च का पाप ग्रह हो और उस पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य का भाग्योदय पाप ग्रह के अंशकाल में आरम्भ होगा व सब प्रकार के सुख प्राप्त करेगा।

१०—भाग्यभाव में पाप ग्रह हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भाग्य उदय में अनेक बाधायें आवेंगी।

११—नवमेश ६–८–१२ भाव में हो तो उसे भाग्यहीन कहना चाहिये व पाप ग्रह की यदि नवमेश पर दृष्टि पड़ती हो तो अधिक अशुभ फल मिलना निश्चित है।

१२—चतुर्थेश नवम भाव में गुरु-शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो अनेक प्रकार से सम्पत्ति प्राप्त होगी।

१३—नवमेश केन्द्र में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह भाग्यवान समझा जाता है।

१४—नवमेश उच्च का होकर गुरु से युक्त हो, केन्द्र में शुक्र हो तो पिता का दीर्घायु होना निश्चित है।

१५—नवमेश धनभाव में और धनेश नवम भाव में हो तो मनुष्य के भाग्योदय का काल ३२ वर्ष से आरम्भ होगा।

१६—नवमेश तृतीयेश से युक्त हो, नीच राशि या अंश का हो अथवा निर्बली व अस्तंगत हो तो राजा का भी रंक होना सम्भव है।

१७—कुण्डली में रवि यदि ६–८–१२ भाव में हो, षष्ठेश पंचम भाव में, अष्टमेश नवम भाव में और द्वाददेश लग्न में स्थित हो तो बालक के जन्म होने के पूर्व पिता की मृत्यु होना सम्भव है।

१८—नवमेश व अष्टमेश शनि होकर उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, रवि अष्टम भाव में हो तो बालक के जन्म होने पर पहले वर्ष में पिता को अरिष्ट समझना।

१९—नवमेश नीच राशि का हो और व्ययेश नवम में हो तो तीसरे वर्ष या १६ वें वर्ष पिता को अरिष्टकारक जानना चाहिये।

२०—नवमेश नवम भाव में या उच्च राशि का हो और गुरु से दृष्ट हो तो ३६वें वर्ष मनुष्य के भाग्य का उदय होगा।

२१—नवमेश लग्न में, लग्नेश नवम में और गुरु सप्तम भाव में हो तो वाहन व सम्पत्ति का लाभ होगा।

२२—नवमेश की पूर्ण दृष्टि यदि नवम भाव पर हो तो उसका भाग्योदय स्वदेश में होगा।

२३—नवम भाव में मकर राशि का मंगल हो तो मनुष्य को सुखी व धनी समझना चाहिये।

कर्म भाव

१—दशमेश व लग्नेश युक्त होकर यदि केन्द्र या त्रिकोण में हों तो मनुष्य अपने पराक्रम से व्यापार व नौकरी में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर के धन कमाकर अनेक प्रकार के सुख भोगेगा।

२—तृतीय, पंचम, नवम व दशम भाव के स्वामी शुभ ग्रह हों, लग्नेश से युक्त होकर यदि केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित हों तो वह मनुष्य ज्ञानी व वेदान्ती होगा।

३—दशम भाव में बुध स्थित हो या स्वामी बुध हा हो तो मनुष्य व्यापारी होगा।

४—दशम भाव में रवि स्थित हो या स्वामी रवि ही हो तो मनुष्य बुद्धिमान, गुणवान, पुत्रवान व श्रीमान् होगा।

५—दशमेश लग्न में हो या लग्नेश से युक्त हो तो मनुष्य कवि होगा।

६—दशम भाव में मकर राशि का मंगल हो तो मनुष्य श्रेष्ठ अधिकारी, दैवशाली, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान् व मकान बनावेगा किन्तु नीच राशि का हो तो इसके विपरीत फल मिलेगा।

७—दशमेश व लग्नेश पाप ग्रह हो तो आप्तवर्ग को दुःख मिलेगा व दशमेश राहु से युक्त हो तो वह मूर्ख समझा जाता है।

८—दशमेश शुभ ग्रह होते हुए यदि मंगल या शनि से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य को सत्कार्य के लिये दण्ड या बन्धन होगा।

९—दशमेश लग्न में और लग्नेश दशमभाव में हो तो मनुष्य पराक्रमी व सुखी होगा।

१०—दशमेश गुरु, शुक्र, शनि से युक्त हो दशम भाव में होवे तो वह ज्ञानी होगा। दशम में गुरु हो तो गंगास्नान का लाभ होगा।

११—दशमेश व नवमेश परस्पर भाव में हो तो मनुष्य भाग्यवान होगा। दशमेश-लाभ भाव में व लाभेश दशम में हो तो मनुष्य को रत्नादि का लाभ होगा।

✓ १२—दशमेश दशम में हो तो वह सत्यप्रिय व एकवचनी होगा। दशमेश शनि हो या इस भाव पर शनि की दृष्टि हो तो मनुष्य कायदे में निपुण व वकील होगा। मंगल हो तो ऊँचा वैद्य या डाक्टर बनेगा।

१३—दशमेश लग्न में हो तो बालपन में रोगी, यौवन में भोगी व वृद्धकाल में योगी होगा।

१४—दशम भाव पर यदि पापग्रह की दृष्टि हो या युति हो तो उसे वरिष्ठ अधिकारी से कोई विशेष लाभ न होगा किन्तु विरोध होता रहेगा।

लाभ (आय) भाव

१—लाभेश शुभ ग्रह हो, लाभ भाव में होवे अथवा शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होवे तो मनुष्य सुशील, विद्वान, दयालु व संपत्तिवान होगा।

२—दशमेश, लग्नेश व अष्टमेश केन्द्र, त्रिकोण या लाभ में हो तो दीर्घायु होगा।

लाभेश, केन्द्र, त्रिकोण में हो तो वह श्रीमान् होगा। लाभेश लग्न में हो तो वह वक्ता होगा। धनेश व लाभेश परस्पर भाव में गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो ३६ वर्ष की आयु में भाग्य का उदय होगा।

३—लाभेश व लग्नेश परस्पर भाव में हो तो ३३ वर्ष की आयु में भाग्योदय शुरु होगा। धन भाव में चन्द्र व नवम भाव में शुक्र और लाभ भाव में गुरु हो तो वह मनुष्य बहुत धन प्राप्त करेगा।

४—लाभेश व तृतीयेश परस्पर भाव में हो तो धन प्राप्ति होगी।

५—लाभेश व अष्टमेश केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो तो मनुष्य दीर्घायु होगा।

६—लाभेश सूर्य हो अथवा उसकी पूर्ण दृष्टि हो तो उसे राजा से धन लाभ होगा।

७—लाभ भाव में चन्द्र या शुक्र हो या उनकी दृष्टि हो तो उसे सुन्दर स्त्री, बाग-बगीचा, स्थावर स्टेट, रत्न आदि का लाभ होगा।

८—लाभेश मंगल हो या मंगल-गुरु की दृष्टि हो तो उसे राजा से मान व धन प्राप्त होगा।

९—लाभेश बुध हो या इस भाव में बुध स्थित हो तो मनुष्य लेखन का व्यापार, छापाखाना या राज्याधिकार से धन लाभ करेगा।

१०—लाभ में गुरु हो या उसकी दृष्टि हो तो उसे धन-धान्य लाभ, सत्संग, मिष्ठान्न, नये वस्त्रादि प्राप्त होंगे।

११—लाभ में शनि हो या शनि की दृष्टि हो तो उसे वकीली धन्धे से धन प्राप्ति होगी परन्तु व्यभिचारी स्त्री से भी धन लाभ होना सम्भव है। चोरी, लांच, झूठे काम से भी धन लाभ होगा।

१२—लाभेश शुक्र या शुभ ग्रह होकर वह केन्द्र, त्रिकोण, लाभ भाव में हो तो उसे अच्छे व सन्मित्र से धन लाभ होगा।

व्यय भाव

१—इस भाव में शुभ ग्रह स्थित हो अथवा उनकी दृष्टि हो तो मनुष्य का धन सत्कार्य में खर्च होगा और वह कम खर्च हो शैय्या सुख भोगेगा।

२—इस भाव में अशुभ ग्रह हो या उनकी दृष्टि हो तो अशुभ कार्यों में धन का व्यय होगा। धनेश व्यय भाव में स्थित हो तो उसे पैसे की सदा तंगी रहेगी।

३—इस भाव में पापग्रह नीच का हो तो उसे आर्थिक कष्ट मिलेगा व ऋण-ग्रस्त रहेगा।

४—व्ययेश पाप ग्रह से युक्त अशुभ भाव में हो, उस पर शनि, राहू की दृष्टि होवे तो आर्थिक त्रास व देशान्तर वास होगा।

५—व्ययेश शुभ ग्रह होकर उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसे स्वेदेश में कीर्ति प्राप्त होगी।

६—इस भाव में मंगल, शनि, राहु हो व गुरु से दृष्ट न हो तो पाप कर्म से धन लाभ होगा।

७—लग्नेश व व्ययेश परस्पर भाव में हो शुभ ग्रह से दृष्ट होवे तो धन का व्यय सत्कार्य में होगा।

८—चतुर्थ भाव में बुध, पंचम में गुरु, द्वितीय में मंगल, छठवें में शुक्र, सप्तम में शनि-रवि युक्त हो तो वे योग्य फल देने के लिये असमर्थ समझे जाते हैं।

शनि की साढ़े साती

शनि प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष भ्रमण करने पर अगले राशि में भ्रमण करना आरम्भ करता है। इस तरह जन्म राशि के द्वादश भाव में जिस दिन वह प्रवेश करता हैं उसी दिन स्थूल मान से साढ़े साती शुरू हुई यह समझना चाहिये व उस राशि का भ्रमण ढाई वर्ष पूर्ण करके चन्द्र जिस राशि में स्थित हो उस राशि में प्रवेश करने पर दूसरा ढाई वर्ष का दूसरा चरण और चन्द्र के द्वितीय स्थान में प्रवेश करने पर तीसरा चरण तथा तृतीय स्थान में जब प्रवेश करना आरम्भ करता है तब ढाई वर्ष के गति से साढ़े सात वर्ष का भ्रमण पूरा करता है। इसलिये इसे साढ़े साती कहते हैं। अर्थात् जन्मकुण्डली में चन्द्र जिस राशि में स्थित हो उसके पहले, उसमें व दूसरे राशि में भ्रमण करता है इसे साढ़े साती कहते हैं। प्रत्येक राशि में शनि ढाई वर्ष की गति से बारह राशि का भ्रमण ३० वर्ष में पूरा करता है। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर सुज्ञ पाठकों को यह ज्ञात होगा कि जन्म समय चन्द्र जितने अंश हो उतने ही अंश पर अर्थात् प्रत्येक मास में एक अंश पूरा करते जब वह पहुँचता हो उसी दिन से शनि की साढ़े साती सूक्ष्म दृष्टि से आरम्भ हुई, ऐसा समझना चाहिये और इसी अंश पर पहुंचने पर शनि अपना शुभ या अशुभ फल देना आरम्भ करता है यह फलित वर्तने के समय ध्यान में अवश्य रखना चाहिये। स्थूल मान से शनि की साढ़े साती समाप्त होने पर वह जन्मराशि से तीसरे भाव में प्रयाण करते ही साढ़े साती समाप्त हुई ऐसा समझना गलत है परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से तीसरे भाव में प्रवेश करने के पश्चात् जब शनि का भ्रमण चन्द्र के अंश तक पहुँचने के पश्चात् साढ़े साती यथार्थ में समाप्त हुई ऐसा फलित के दृष्टि से समझना ही योग्य है। जैसे मानलो कि प्रभु रामचन्द्र की कर्क राशि है और जन्म समय चन्द्र २० अंश का है तब शनि मिथुन राशि में प्रवेश करने के पश्चात् जब २० अंश तक पहुंचे उसी दिन से साढ़े साती आरम्भ समझी जायगी कन्या राशि के २० अंश पर पहुंचने अर्थात् १ वर्ष आठ महीने के पश्चात् वह समाप्त हुई, ऐसा समझना उचित है। तात्पर्य मिथुन राशि का शनि १० महीने, कर्क राशि का ढाई वर्ष, सिंह राशि का २॥ वर्ष व कन्या राशि में १ वर्ष आठ महीना भ्रमण करने से साढ़े सात वर्ष हुए ऐसा समझना शास्त्र शुद्ध है। जन्म कुण्डली में शनि यदि अशुभ फलदाई हो और अपने साढ़े साती के काल में अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो चाहे वे जन्म गोचर ग्रह हो तो वह मनुष्य को इतना भयानक अशुभ फल देगा कि जिसका उसे आजन्म विस्मरण होना असम्भव है। भले ही वह नास्तिक मत का क्यों न हो परन्तु शनि की साढ़े साती आरम्भ होते ही अपने शुभ या अशुभ फल से उसके परिस्थिति में इतना भयंकर परिवर्तन निर्माण करता है कि अन्त में वह विश्वास करने के लिये बाध्य होता है।

मनुष्य के आयुष्य में ऐसे दो विकट प्रसंग आते है कि उसे आकाशस्थ ग्रहों के शुभाशुभत्व पर पूर्ण रूप से विश्वास प्रकट करना होता है और यह दो प्रसंग यानी एक शनि की साढ़े साती व दूसरे लड़की की शादी है। प्रत्येक पिता के हृदय में अपने लड़की के प्रति यह इच्छा होना स्वाभाविक है कि उसका विवाह सुविद, रूपवान, गुणवान, धनवान व भाग्यवान वर से हो और इस दिशा में भरसक प्रयत्न करने के पश्चात् यश प्राप्त करने पर जब लड़की को दुर्भाग्यवश वैधव्य प्राप्त होता है तब वह अपने प्रयत्न व इच्छा को वृथा व शक्तिहीन समझ कर भाग्य, दैव, नसीब, प्रारब्ध, तकदीर, ईश्वरीय इच्छा व पूर्वजन्म के अशुभ कर्मादि फल आदि शब्दों का आश्रय लेकर अपने मन का बोध कर लड़की के मन को समाधान देने का प्रयत्न करता है। इसके उलटे अत्यन्त कष्ट व गरीबी से आयुष्य क्रमण करनेवाले लोग जब वे अपने लड़की को स्वयं से कई गुने ऊंचे कुलोत्पन्न, लक्षाधीश, सुविद्य वर से विवाहित होने पर सुख व वैभव युक्त आयुष्य क्रमण करते हुये पाते हैं तब वे अपने विपरीत परिस्थिति व प्रयत्न पर विचार करके लड़की के भाग्य का विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वे केवल जन्म देने के अधिकारी हैं, कर्म देने के लिये नहीं जो कि किसी अदृश्य व अद्वितीय शक्ति या परमात्मा से उसके पूर्व जन्म के शुभ कर्मानुसार उसे प्राप्त हुई है जिसमें यह आचार शक्ति विद्यमान है। इसी तरह साढ़े साती के अशुभ काल में पहाड़ इतना ऊँचा प्रयत्न करने पर, राई समान अल्प फल मिलता है। परिस्थिति विपरीत होकर घोर प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं व राजा को भी एक क्षण में रंक बनाकर वह जब अपना प्रभाव मनुष्य को दिखाते हैं तब उसे आकाशस्थ ग्रहों में अद्वितीय व आचार शक्ति है यह मान्य करना पडता है। परन्तु शनि यदि शुभ हो तो वह अपने साढ़े साती के काल में निर्धन को धनी भी बना कर पर्वत के शिखर पर बिठाते हैं ऐसे कई उदाहरण हैं जिनका यहां उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

आकाशस्थ ग्रहों के सब ग्रहों में शनि ग्रह इतना प्रबल व शक्तिशाली है कि वह अपने शुभाशुभ का परिचय व प्रत्यक्ष प्रमाण मानवीय प्राणी को ही नहीं किन्तु ईश्वरीय विभूती, महर्षि, देवता व प्रतापी राजाओं को भी दिखाया है। इस सम्बन्ध के कुछ उदाहरण संक्षिप्त में लिखना हम आवश्यक समझते हैं। जैसे :—

शनि महाराज अपने साढ़े साती के काल में प्रभु श्री रामचन्द्रजी पर वनवास भोगने का दुर्धर प्रसंग लाये व महान प्रतापी, तपस्वी, विद्वान व ज्योतिषज्ञ राजा रावण को सीताहरण की दुर्बुद्धि दे उसे यमयातना भोगने को बाध्य किया। महान तपस्वी महर्षि श्री वशिष्ठजी के शतपुत्रों का नाश किया, भगवान श्रीकृष्णजी को स्यमन्तक का कलंक लगाया, पराक्रमी व सत्याभिमानी राजा विक्रम को असह्य शारीरिक दण्ड दे उस पर तेल घानी को चलाने का दुर्धर संकट लाया, अपने गुरु महाराज गुरु ग्रह (बृहस्पतिजी) को पल भर के लिये फांसी के तख्ते पर चढ़ाया, पाण्डवों को बनवास

दिया, कौरवों का नाश किया, स्वर्गसुख भोगने वाले राजा इन्द्र को त्राहि भगवान कहने लगाया, श्री शंकर भगवान को क्षणभर के लिये कैलाश में छिपने के लिये बाध्य किया। अपने पिता सूर्य भगवान को सारथी व अश्वसहित थोड़े समय के लिये अन्धा बनाया, ऐसे अनेक उदाहरण होते हुए यःकश्चित् मानवी प्राणी की कथा का क्या कहना है। अधिक आश्चर्य तो यह है कि शनि ग्रह अपना अशुभ फल दिखाने के पूर्व ही शूरों की शूरता, वीरों की वारता, अधिकारियों की सत्ता, विद्वानों की बुद्धिमत्ता, विचारवान् लोगों का मन, धनिकों का धन, संततिवानों के जन आदि को हरण कर अकल्पित भयानक परिस्थिति का निर्माण कर मनुष्य को इतना विचारशून्य कर देता है कि अन्त में उसे घोर संकट में डालकर जर्जर करते हुए राजदण्ड भोगने का भी प्रसंग लगाता है। इसके विपरीत यदि यह ग्रह शुभ फलदायी हो तो कभी शनि महाराज अपने साढ़े साती के काल में से सुख व ऐश्वर्य के शिखर पर चढ़ा, निर्धन को भारी प्रमाण पर धनवान बना, उसे हर प्रकार के सुख, ऐश्वर्य, संतति, आभूषण प्रदान कर एक श्रेष्ठ पुरुष बना देते हैं। यह देखते व जानते हुए जगत में ऐसा कौन पुरुष हो सकता है कि जो ग्रहों के इन विचित्र व अद्वितीय शक्ति पर अविश्वास व्यक्त करने का साहस दिखाने की चेष्टा करेगा ?

जन्म कुण्डली में शनि यदि नीच राशि, अंश, भाव व शत्रु राशि में अशुभ से युक्त व दृष्ट हो तो यह कपट, दुष्टता, विश्वासघात, परवशता और दास्यत्व आदि दुर्गुणों का केन्द्र स्थान बन बैठता है और स्वाभिमान का नाश कर स्वार्थपरायण हो जाता है। परन्तु यह ग्रह उच्च अंश, राशि, भाव, मित्र से युक्त व दृष्ट हो तो उच्च कोटि की सहनशीलता, सूक्ष्म विचार, तुलनात्मक बुद्धि, दूरदर्शीपन, निश्चयात्मकता, निष्पक्षता, तत्त्वज्ञान, संशोधन, शक्ति, न्याय आदि सदगुणों का केन्द्र स्थान बनकर नियम, कायदा, कर्तव्य बुद्धि का नम्रतापूर्वक पालन कर्ता बन जाता है व ऐसी स्थिति में वह श्रीमान् व गरीब, तज्ञ व अज्ञ आदि गुणों का भेदभाव न रख अपने गुणों से प्रत्येक सांसारिक मनुष्य के नेत्र पर जो मोह-माया के जाल से ढका है उसकी बुद्धि प्रज्वलित कर उस मनुष्य को आत्मोन्नति की दिशा दर्शाता है। यह एक महान लाभ ही संकटग्रस्त मनुष्य को मिलता है, यह उससे समझना चाहिये।

शनि ग्रह का धातु लोह है यह सर्वविदित है। लोहे के तीक्ष्ण हथियार से जैसे कारीगर पत्थर में देवता की मूर्ति तैयार कर उस मूर्ति का ध्यान व पूजन करने के लिए जनता के दिल में श्रद्धा की भावना प्रज्जवलित करता है वैसे ही शनि ग्रह मनुष्य के लिये घोर संकट निर्माण कर अन्त में वह उसे पूजनीय बना देता है अर्थात् पत्थर दिल वाले मनुष्य के हृदय में वह धर्महीन होते हुए धर्मरत, दरिद्री को श्रीमान्, पापी को पुण्यवान बना उसकी जीवनयात्रा सफल कर देता है

अतः ऐसे अपार शक्तिमय ग्रह के प्रति अशुभ होने पर भी अपनी श्रद्धा व्यक्त करना यह प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। संसार के मायाजाल में फँसे हुए मनुष्य को शनि ग्रह अपने तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से अशुभ फल जैसे मृत्युसम पीड़ा, संतति, संपत्ति, स्त्री का नाश कर उसे जागृत करता है और उसे धन, जन, स्त्री, आप्त वर्ग, ऐश्वर्य आदि से क्रमशः दूर करते-करते उसका ध्यान ईश्वर की ओर आकर्षित करने के लिये सहायता प्रदान करता है। दूसरे दृष्टि से विचार करने पर सुज्ञ पाठकों को यह ज्ञात होगा कि शनि सब ग्रहों में एक ही ऐसा ग्रह है जो कि ऐहिक सुख के पारमार्थिक सुख तथा स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ का सबक सिखा कर उसका भविष्य जीवन अधिक उज्वल करता है। तात्पर्य कांचन व कान्ता के मोहजाल में लिप्त हुए पुरुषों को क्रमशः जागृत करते हुए ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान व विश्वास उनके हृदय में उत्पन्न करने के लिये, यह ग्रह सब ग्रहों में अत्यन्त श्रेष्ठ है ऐसा प्रत्येक समंजस मनुष्य को मानना होगा। इस तरह शनि ग्रह मानवी जीवन को ऊँचा करने के लिए अपने अशुभ फल द्वारा ऊँचा कार्य करता है। दूसरी दृष्टि से विचार किया जाय तो यह मानना होगा कि जो धर्म कार्य और अटूट श्रद्धा धर्म ग्रन्थ व धर्मोपदेशक द्वारा अनादि काल तक मनुष्य के मन में उत्पन्न नहीं किया जा सकता उस कार्य को यह ग्रह पृथ्वी से कोट्यावधि मील दूर होते हुए अपने साढ़े साती के काल में एक ही क्षण में पूर्ण करने का सामर्थ्य रखता है और उसका वर्तमान व भावी आयुष्य भी अत्यन्त श्रेष्ठ बना देता है यह स्पष्ट सिद्ध होता है।

शनि ग्रह संकटग्रस्त स्थिति में मनुष्य को अपनी सद्बुद्धि कायम रख दुःख के तीक्ष्ण घावों को सहर्ष सहन करने की अद्वितीय शक्ति प्रदान करता है और ईश्वर को दोष न देते हुये अपने पूर्वजन्म के पाप कर्मों के फल भोगने के लिये उसने यह जन्म पाया है यह विवेक बुद्धि उसके मन में उत्पन्न कर उसे शान्त चित्त से भोगने के लिये धैर्य व शक्ति प्रदान करता है। पूर्वजन्म के पाप कर्मों का संचित फल नाश हो रहा है इस आनन्दित वृत्ति से दुःखों को सहन करना और काल-क्रमण करना यह श्रेष्ठ विचार इस ग्रह के द्वारा ही मनुष्य को प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं। सारांश जन्मतः या गोचर या साढ़े साती किसी के जन्म कुण्डली में अशुभ फलदायी हो तो इसका ज्ञान ज्योतिषज्ञों द्वारा पूर्व से ही प्राप्त कर उसके अशुभ फल को निष्फल करने के उद्देश्य से शास्त्रोक्त मंत्र, तन्त्र, उपवास, हनुमान प्रभुका दर्शन नित्य या शनिवार के दिन करना आवश्यक है। जिस ग्रह ने श्री भगवान रामचन्द्र प्रभु जैसे परम श्रेष्ठ भगवान को राज्याभिषेक का सुख न देते वनवास जाने का प्रसंग लाया ऐसे प्रचण्ड शक्तिशाली ग्रह की आराधना करना प्रत्येक समंजस मनुष्य का आद्य कर्त्तव्य है ऐसा हमारा व्यक्तिगत मत है। चाहे इसका विश्वास आकाशस्थ ग्रहों के शुभाशुभ परिणामों पर होवे अथवा न होवे इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। अन्यथा वह कष्ट का भागीदार होगा यह ऊपर लिखे हुए स्वयं देवता, तपस्वी, मुनि, प्रतापी राजा आदि के कष्टों से सिद्ध

होता है, अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। अतः ऐसे अशुभ किन्तु प्रभावशाली व श्रेष्ठ फलदायी ग्रह के प्रति मन में पूज्य बुद्धि होना व उसे आदर भाव से सोचना और उसका सदैव उपकार मानना यह प्रत्येक विचारशील व दूरदर्शी मनुष्य का परम धर्म है, ऐसा कहना अनुचित न होगा।

शनि की शुभाशुभ राशि व स्थान

१—जन्म कुण्डली में शनि यदि ६–८–१२ भाव में हो व अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होवे तो साढ़े साती का फल अशुभ मिलेगा।

२—चन्द्र कुण्डली में २ या १२ वें भाव में रवि, मंगल, राहु से युक्त होवे तो अशुभ फल मिलेगा।

३—चन्द्र यदि कुण्डली में निर्बली हो व शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो साढ़े साती का फल अशुभ मिलना निश्चित है।

४—चन्द्र यदि शत्रु या वृश्चिक राशि का हो व मंगल, राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होवे तो साढ़े साती के समय अशुभ फल मिलना अनिवार्य है।

५—चन्द्र के द्वितीय व द्वादश भाव में शुभ ग्रह हों अथवा उस पर इनकी दृष्टि हो तो साढ़े साती के काल में शुभ फल मिलेगा।

६—चन्द्र के २–१२ भाव में यदि कोई भी ग्रह न हो तो भी सामान्यतः शुभ फल मिलना निश्चित है।

७—चन्द्र जन्मकुण्डली में यदि बुध, गुरु, शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो शुभ फल मिलेगा।

८—चन्द्र जन्मकुण्डली में शनि से युक्त हो तो वह तामसी वृत्ति का होगा और मंगल से दृष्ट न हो तो शुभ फल मिलेगा।

राशिगत साढ़े साती का शुभाशुभ फल

शनि के साढ़े साती के काल में अर्थात् ७॥ वर्ष के काल में से कौन सा काल शुभ व अशुभ फलदायी है यह प्रथमतः जानना आवश्यक है, जैसे :—

१—मेष राशि का हो तो मीन राशि का पहिला २॥ वर्ष का काल शुभ, मध्यकाल २॥ वर्ष अत्यन्त अशुभ (मनुष्य व द्रव्य हानि) व २॥ वर्ष का काल साधारणतः शुभ फलदायी होगा।

२—वृषभ राशि—मेष राशि का २॥ वर्ष अशुभ, वृषभ राशिका २॥ वर्ष शुभ और मिथुन राशि का २॥ वर्ष द्रव्य प्राप्ति के लिये अनुकूल होगा।

३—मिथुन राशि—वृषभ राशि का २॥ वर्ष काल शुभ फल, मिथुन राशि का २॥ वर्ष अनुकूल व कर्क राशि का सामान्य फल देगा।

४—कर्क राशि–मिथुन राशि का २।। वर्ष शुभ, कर्क का २।। वर्ष शुभाशुभ, सिंह राशि का २।। वर्ष अशुभ।

५—सिंह राशि–कर्क राशि का २।। वर्ष अशुभ, सिंह राशि का २।। वर्ष अशुभ और कन्या राशि का २।। वर्ष शुभ।

६—कन्या राशि–सिंह राशि का २।। वर्ष अशुभ, कन्या राशि का २।। वर्ष शुभ, और तुला राशि का २।। वर्ष के काल में अकस्मात द्रव्य, स्थावर स्टेट लाभ, अनेक प्रकार के सुख व ऐश्वर्य का लाभ होगा।

७—तुला राशि–कन्या का २।। वर्ष शुभ, तुला का २।। वर्ष अत्यन्त श्रेष्ठ व वृश्चिक राशि का अत्यन्त अशुभ।

८—वृश्चिक राशि–तुलाराशि का २।। वर्ष अत्यन्त श्रेष्ठ, वृश्चिक का अनिष्ट फल व धन का २।। वर्ष सामान्य फल।

९—धन राशि–वृश्चिक का २।। वर्ष अशुभ, धन का शुभ और मकर राशि का २।। वर्ष साधारण फल।

१०—मकर राशि–धनराशि का शुभ फल, मकर का साधारण, कुंभ का उत्तम फल।

११—कुंभ राशि—मकर राशि का साधारण, कुंभ व मीन राशि का प्रत्येक २।। वर्ष शुभ फल मिलेगा।

१२—मीन राशि–कुंभ राशि का २।। वर्ष शुभ, मीन राशि का शुभ और मेष राशि का अशुभ फल मिलना निश्चित है।

ऊपर लिखे अनुसार जन्म कुण्डली के साढ़े साती का फल वर्तते समय शनि के स्वतः अंश, भाव, शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि, युति आदि का विचार करना आवश्यक है। यह सुज्ञ पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये। चन्द्र के साढ़े साती के अतिरिक्त लग्न व राशि का भी साढ़े साती के समय मनुष्य को शुभाशुभ फल मिलना निश्चित है। इसका विस्मरण न होने पावे। जन्म कुण्डली में यदि गुरु की पूर्ण दृष्टि शनि पर हो तो साढ़े साती का काल प्रायः शुभ फलदायी होता है। शनि के साढ़े साती के लिये सर्वसाधारण लोगों की समझ ऐसी वैठी है कि शनि की साढ़े साती यानी मौत की घड़ी ही नहीं किन्तु उससे भी वड़ी है क्योंकि मनुष्य को अपार कष्ट मिलना व द्रव्य की भयंकर हानि होना निश्चित है और उनका ऐसा समझना बहुधा यथार्थ भी है। किन्तु साढ़े साती जिस तरह अशुभ फलदायी है उसी तरह वह शुभ फलदायी भी कभी होती है। यह सज्जनों को ध्यान में रखना चाहिये। साढ़े साती का शुभाशुभ फल जन्म चन्द्र के अंश पर अवलम्बित है और उसी समय से शनि जब किसी भी राशि में प्रवेश करता हो, तभी से मिलना आरम्भ होता है। शनि की साढ़े साती आरम्भ होते समय यदि लाभेश जन्म कुण्डली में बलवान हो, शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और पाप ग्रह से दृष्ट न हो तो द्रव्य सम्बन्धी कोई आपत्ति उत्पन्न न होगी। इस काल का नियम जन्मस्थ व गोचर शनि से तथा गुरु, शुक्र, केतु, शुभ दृष्टि का विचार करने के उपरान्त फलित वर्तने से योग्यफल का मिलना सम्भव है, अन्यथा नहीं।

साढ़े साती के काल में जन्मस्थ चन्द्र व शनि किस भाव में स्थित होने से धन लाभ या धननाश फल मिलेगा यह सुज्ञ पाठकों के ध्यान में सहज में आ सके इस हेतु से उदाहरण के रूप में कुछ कुण्डलियों का यहाँ लिखना हम आवश्यक समझते हैं। जैसे :—
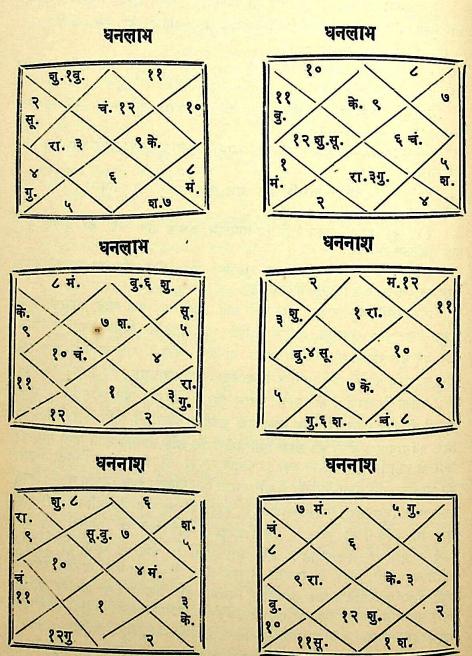
जन्म समय चन्द्र का अंशात्मक कोष्टक

प्रत्येक ग्रह राश्यन्तर होने पर, वे चन्द्र के अंश से युक्त होते ही अपना शुभ फल कितने समय के पश्चात् देने के लिये समर्थ होते हैं। यह नीचे दिए गये कोष्टक से ज्ञात होगा। जैसे :—

चन्द्र अंश	रवि, बुध शुक्र, दिन	मंगल दिन व मास	गुरु दि०, मा०, वर्ष			शनि मास, वर्ष			राहू—केतु वर्ष, मास, दिन		
१	१	१॥	१३	–	–	–	१	०	–	–	१८
२	२	३	२६	–	–	–	२	–	–	१	६
३	३	४॥	९	१	–	–	३	–	–	१	२४
४	४	६	२२	१	–	–	४	–	–	२	१२
५	५	७॥	५	२	–	–	५	–	–	३	–
६	६	९	१८	२	–	–	६	–	–	३	१८
७	७	१०॥	१	३	–	–	७	–	–	४	६
८	८	१२	१४	३	–	–	८	–	–	४	२४
९	९	१३॥	२७	३	–	–	९	–	–	५	१२
१०	१०	१५	१०	४	–	–	१०	–	–	६	–
११	११	१६॥	२३	४	–	–	११	–	–	६	१८
१२	१२	१८	६	५	–	–	–	१	–	७	६
१३	१३	१९॥	१९	५	–	–	१	१	–	७	२४
१४	१४	२१	२	६	–	–	२	१	–	८	१२
१५	१५	२२॥	१५	६	–	–	३	१	–	९	०
१६	१६	२४	२८	६	–	–	४	१	–	९	१८
१७	१७	२५॥	११	७	–	–	५	१	–	१०	६
१८	१८	२७	२४	७	–	–	६	१	–	१०	२४
१९	१९	२८॥	७	८	–	–	७	१	–	११	१२
२०	२०	३०	२०	८	–	–	८	१	१	–	–
२१	२१	३१॥	३	९	–	–	९	१	१	–	१८
२२	२२	३३	१६	९	–	–	१०	१	१	१	६
२३	२३	३४॥	२९	९	–	–	११	१	१	१	२४
२४	२४	३६	१२	१०	–	–	–	२	१	२	१२
२५	२५	३७॥	२५	१०	–	–	१	२	१	३	–
२६	२६	३९	८	११	–	–	२	२	१	३	१८
२७	२७	४०॥	२१	११	–	–	३	२	१	४	६
२८	२८	४२	४	०	१	–	४	२	१	४	२४
२९	२९	४३॥	१७	०	१	–	५	२	१	५	१२
३०	३०	४५	०	१	१	–	६	२	१	६	–

लग्न व रवि की साढ़े साती

जन्म कुण्डली में चन्द्र के द्वादश राशि भाव से द्वितीय भाव में शनि स्थित होते तक साढ़े साती आरम्भ हो समाप्त होती है। इसी तरह लग्न व सूर्य, जन्म कुण्डली में जिस भाव में स्थित हो उनके द्वादश और द्वितीय भाव में शनि के भ्रमण काल तक लग्न व सूर्य की साढ़े साती कहलाती है। मनुष्य को शनि ग्रह की साढ़े साती न होते हुए अनेक समय जो दुःख भोगने का प्रसंग आता है उसका मुख्य कारण लग्न व सूर्य की साढ़े साती है। चन्द्र के अगले व पिछले भाव में गोचर शनि के प्रवेश करते ही साढ़े साती का अशुभ फल मिलता है। उसी तरह लग्न व सूर्य ग्रह के द्वादश भाव व द्वितीय भाव में करते हुए मिलता है और इसे ही लग्न व सूर्य की साढ़े साती कहते हैं। इन दोनों साढ़े साती का फल नीचे लिखे अनुसार मिलता है।

१—लग्न के साढ़े साती के काल अर्थात् ७॥ वर्ष में शुभाशुभ ग्रहों के युति व दृष्टि के अनुसार शुभाशुभ फल अर्थात् शारीरिक सुख, आरोग्य, बीमारी, हानि-लाभ, यश-अपयश फल मिलना स्वाभाविक है उसी तरह—

२—सूर्य के साढ़े साती के काल में शनि का भ्रमण रहते तक उद्योग-धन्धा, अधिकार, मान-सम्मान, सुख-दुख, यश-अपयश प्रत्येक मनुष्य को मिलता है।

अशुभ ग्रहों के अनिष्ट फल नष्ट करने के शास्त्रोक्त उपाय

ज्योतिष यह त्रिकालदर्शी शास्त्र है और इसीलिये यह शास्त्र सब शास्त्र में श्रेष्ठ समझा गया है। इस शास्त्र ने अनादि काल से आज तक अपना श्रेष्ठत्व व प्रभुत्व जो आज तक कायम रक्खा है और वर्तमान में भी यह अपने देश की अपेक्षा पाश्चात्य देशों में प्रगति कर रहा है उसका मुख्य कारण केवल भविष्य-कथन ही नहीं किन्तु अनिष्ट ग्रहों के फल को नष्ट करने के उपायों पर भी निर्भर है। जिसका वर्णन इस शास्त्र में दिया है और अनादिकाल से आजतक इसका अनुभव अधिकांश लोगों को सदैव होता आ रहा है। हमारे अल्पमत से इस शास्त्र का सच्चा उपयोग केवल सुख व ऐश्वर्य की ऊँचाई नापने के लिये नहीं किन्तु दुःख व संकट की स्थिति की गहराई जानने का अधिक है। ताकि प्रत्येक मनुष्य को संकट काल आने के पूर्व ही सतर्क हो उनका प्रतिकार कर, उसे नष्ट करने का अवसर उसे मिल सके। यदि किसी सज्जन का इन शास्त्रोक्त निर्धारित उपायों पर विश्वास न होवे तो उनसे हमारा यह नम्र निवेदन है कि किसी भी शास्त्र या विषय में अविश्वास या अन्ध विश्वास करना यह समंजस मनुष्य को शोभा नहीं देता। प्रथम ज्ञान प्राप्त कर अनुभव करने से ही उसका ध्यान आकर्षण होना सम्भव है क्योंकि बिना ज्ञान के अनुभव मिलना और अनुभव के बिना विश्वास होना शक्य नहीं। द्वादश लग्न के मनुष्य को कौन-कौन से ग्रह शुभ, शुभाशुभ और अशुभ हैं यह हम पहले लिख चुके हैं व उनके अनिष्ट फलों को मिटाने या घटाने के उपायों से

ही उचित शुभफल मिलना सम्भव है। इन ग्रहों का शुभाशुभ फल उनके भ्रमणकाल, महादशा, अन्तर्दशा के काल में प्रत्येक मनुष्य को मिला करता है। अनिष्ट ग्रहों के अशुभ फल नष्ट करने के लिये शास्त्रकारों ने जप, तप, उपवास, पूजा आदि अनेक उपायों का वर्णन शास्त्रों में किया है उसे कार्यरूप में लाने से उचित फल अवश्य मिलता है। परन्तु वर्तमान परिस्थिति का विचार करते हुए कई सज्जन इन उपायों का अनुकरण करने के लिये असमर्थ दिखाई देते हैं। ऐसे सज्जन यदि अशुभ ग्रहों के अशुभ फल घटाने या मिटाने का प्रयत्न इन ग्रहों के असली (नकली नहीं) रत्न धारण करने से करेंगे तो हमारा यह विचार है कि उन्हें आयुष्य में संकट समय पर पश्चात्ताप करने का प्रसंग न आयेगा। शास्त्रकारों ने रत्नादि धारण करने की योजना किस आधार पर की है यह प्रथम जानना आवश्यक है।

हम यह पहले लिख चुके हैं कि सूर्य यह विश्व के ग्रहमाला का मुख्य कर्ता ग्रह है। सूर्य ही सृष्टि के अनेक प्रकार से पालक संहारक हैं कि जिनकी आराधना से ही मुक्ति प्राप्त होती है क्योंकि सूर्य प्रत्यक्ष ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र भगवान है। सूर्य से यह पृथ्वी ९३००५००० मील दूर है। वेद (अध्यात्मज्ञान) में इस विज्ञान का रूप वर्णित है। अघमर्षण मंत्र है कि (ऋतञ्च सत्यं चाभिद्धात्तपसोध्यजायत ततो रात्र्यजायत) अर्थात् ऋत से सत्य, सत्य से तप तथा तप से रात्रि उत्पन्न हुई। अध्यात्म में पृथ्वी का वर्णन नहीं किन्तु रात्रि का है। जब यह पृथ्वी उत्पन्न हुई उसी समय रात्रि का जन्म हुआ। पृथ्वी के उत्पन्न होते ही सूर्य की ओर आधी पृथ्वी पर दिन और दूसरी ओर आधी पृथ्वी पर रात्रि (अन्धेरा) हुई। आदित्य से पृथ्वी, जल देवता उत्पन्न हुए हैं। सूर्य की ज्योति जम कर पृथ्वी हो गयी और उसी सूर्य भगवान के प्रखर ज्योति के प्रभाव से उस पृथ्वी के गर्भ में अनेक रत्नादि, विविध रंग के उत्पन्न होते हैं। सूर्य अपनी सारी शक्ति अपने कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य को प्रदान करता है। सूर्य के तेज पुञ्ज से लाल, पीला, काला, नीला, हरा, सफ़ेद, नारंगी रंग उत्पन्न हुए हैं और उसने प्रत्येक ग्रह को पृथक-पृथक रंग से रंग दिया है जिसे पाश्चात्य देश के संशोधकों ने अपने दूरदर्शी यन्त्रों द्वारा प्रत्येक ग्रह का भिन्न-भिन्न रंग निश्चित रूप से पाया है। सूर्य यह आकर्षण शक्ति का केन्द्र व सात रंगों का उत्पादक होने के कारण, उसके आकर्षण शक्ति का प्रत्येक रंग का प्रभाव उसके तेजस्वी किरणों द्वारा इस पृथ्वी पर नित्य पड़ता है। इसी के प्रभाव से पृथ्वी पर भिन्न रंग की जमीन अर्थात् काली, पीली, नीली, सफेद, लाल, हरा, नारंगी मिट्टी दिखाई देती हैं। सूर्य के रंगीन किरणों के भूगर्भ तक पहुँचने वाले प्रभाव से पृथ्वी के गर्भ में विभिन्न रंग के रत्न उत्पन्न होते हैं और जो ग्रह अशुभ हो उसके रत्न को धारण करने से उसका अशुभ फल नष्ट होता है क्योंकि शास्त्रकारों व आधुनिक धुरन्धर विद्वानों का कहना है कि :—

ग्रह, रंग व रत्न के नाम

ग्रह	रंग	रत्न
रवि	लाल	माणिक
चन्द्र	सफेद	मोती
मंगल	फीका लाल	मूंगा
बुध	हरा	पन्ना
गुरु	पीला	पोखराज
शुक्र	गोरा	हीरा
शनि	काला	नीलम

अशुभ ग्रह अपने महादशा, अन्तंदशा आरम्भ होने के समय से अपना अशुभ फल अधिक प्रमाण पर देना आरम्भ करते हैं किन्तु ऐसे समय गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो फल सामान्य रूप से मिलेगा।

द्वादश लग्न कोष्टक

द्वादश लग्न में से प्रत्येक लग्न के मनुष्य को कौन ग्रह अनुकूल, शुभाशुभ, प्रतिकूल होते हैं यह नीचे लिखे अनुसार हैं—

ग्रह	शुभ ग्रह	शुभाशुभ ग्रह	अशुभ ग्रह	मारक ग्रह
१—मेष लग्न	र., चं., मं.	गु., श.	बु.	शुक्र
२—वृष लग्न	र., श.	चं., शु.	गु.	मंगल, बुध
३—मिथुन लग्न	बु.	सू., शु., श.	मं.	चन्द्र, गुरु
४—कर्क लग्न	चं., मं.	गुरु, बुध	शु.	सू., श.
५—सिंह लग्न	सू., मं	गुरु, शुक्र	चं.	चं., श.
६—कन्या लग्न	बु.	श.	सू., चं., मं.	शु., गु.
७—तुला लग्न	श., चं.	बु., शु.	सू., गुरु	मं.
८—वृश्चिक लग्न	सू., चं	श., मं.	बु.	गुरु, शुक्र
९—धन लग्न	सू., गु.	मं.	चं., शु.	बु., श.
१०—मकर लग्न	शु.	मं., बु.	सू., गु.	चं., श.
११—कुंभ लग्न	शु.	मं., बु	सू., चं.	सू., गु.
१२—मीन लग्न	चं., गुरु	—	सू., शु., श.	मं., बु.

मेष लग्न
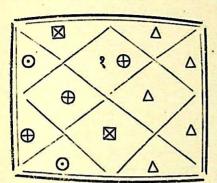
वृषभ लग्न
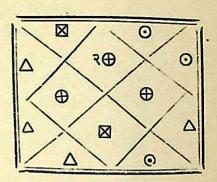
मिथुन लग्न
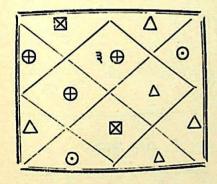
कर्क लग्न
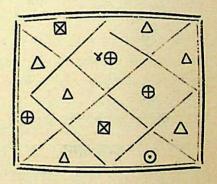
सिंह लग्न
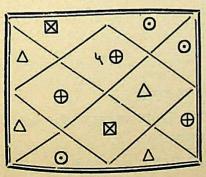
कन्या लग्न
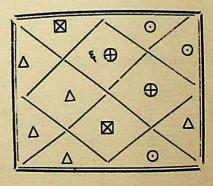
तुला लग्न
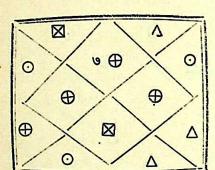
वृश्चिक लग्न
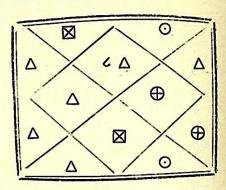
धन लग्न
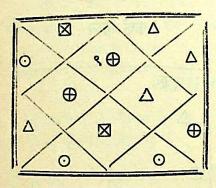
मकर लग्न
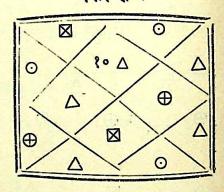
कुम्भ लग्न
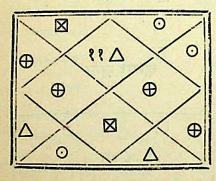
मीन लग्न
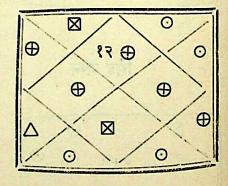
⊕ १. इन भावों के स्वामी शुभ फलदायी ग्रह कहलाते हैं।
△ २. इन भावों के स्वामी शुभ और अशुभ शुभाशुभ ग्रह कहलाते हैं।
⊠ ३. इन भावों के स्वामी मारक ग्रह कहलाते हैं।
⊙ ४. इन भावों के स्वामी अशुभ फलदायी या अशुभ ग्रह कहलाते हैं।

इसका विवरण पाठकों के लाभार्थ कुण्डलियों द्वारा पूर्ण रूप से दिया है जिसे अवलोकन करने से सूज्ञ पाठकों के ध्यान में सहज आ सकेगा।

भारतवर्ष में हजारों वर्ष पूर्व से यह दृढ़ विश्वास चला आता है कि ग्रहों के शुभ व अशुभ स्थिति के कारण जन्म व मृत्यु पर अखण्ड प्रभाव पड़ता है परन्तु ज्योतिष शास्त्र यह संस्कृत भाषा में लिखे जाने तथा इस भाषा का प्रायः लोप होने के कारण देश का सुशिक्षित अधिकांश समाज इस वेदवाणी से अपरिचित हो गया और उनका इस पर विश्वास दिनोंदिन कम होता जा रहा है। भारतवासियों की ऐसी शोचनीय हालत होने पर भी पाश्चात्य देश के तज्ञों का विश्वास इस शास्त्रके प्रति नित्य बढ़ता जा रहा है। उदाहरणार्थ :—

जेकोस्लोविया देश के नावे जामकी नगर के प्रधान चिकित्सक, संशोधक व विद्वद्रत्न डाक्टर यूने योनस ने जो गर्भपात कानून बनाने के विरोधी हैं उन्होंने पुराने ज्योतिषशास्त्र के आधार पर यह शोध कर दिखाया कि—नारी की गर्भधारण क्षमता चन्द्रमा की उसी स्थिति में जागृत होती है जिस स्थिति विशेष में उसका जन्म हुआ है। २—गर्भ धारण के समय चन्द्रग्रहण के अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति में नर या मादा बीज का विकास होता है। ३—गर्भाधान के समय निकटवर्ती अशुभ ग्रहों के आकर्षण शक्ति का प्रभाव यदि प्रतिकूल हो जावे तो उस गर्भ में विकृतियां पैदा हो जाती हैं। इन निष्कर्षों के विषय में लोगों का अविश्वास व भ्रम दूर करने के लिये डाक्टर पोनस ने अपना सिद्धान्त व्यवहार में सिद्ध करने के पश्चात् यह पाया जो कि ८७ प्रतिशत मामलों में पूर्णतः सही है। हंगेरी में बुडापेस्ट के एक प्रसिद्ध अस्पताल में डाक्टर कुटरेख ने इस प्रकार के परीक्षण करने पर यह निष्कर्ष प्रकाशित किया कि "८७ प्रतिशत मामलो में डाक्टर योनस के सिद्धान्त की परीक्षा की और यही सिद्ध हुआ।" ब्रिटेन और आस्ट्रिया के डाक्टरों ने डाक्टर योनस के मत का परीक्षण कर उसे सही पाया। डाक्टर बोनस के विचारों पर पश्चिम जर्मनी की बोखेनेड, हंगेरी की ओर्सजागविगल और जेकोस्लोविया के नीतरा नगर के डाक्टरों ने लड़का या लड़की का ज्ञान प्राप्त करने के हेतु एक खोजबीन संगठन तैयार किया जिसमें सात सौ विवाहित जोड़ों ने भाग लिया और वे पश्चिमी जर्मनी, हंगेरी, आस्ट्रिया, बुल्गेरिया, रुमानिया, युकोस्लांविया, लक्जेमबर्ग, हालेण्ड, कनाडा, और आस्ट्रेलिया के जोड़े थे। आजतक लोग इस बात को सन्देह के दृष्टि से देखते थे किन्तु वर्तमान शोध के फल स्वरूप अब वैज्ञानिक लोग इसमें दिलचस्पी गंभीरता से लेने लगे हैं। हंगेरी के परिमाणविक भौतिक विज्ञानके डाक्टर मागयार एन्द्रोंने उक्त प्रजनन सिद्धान्तों को सही सिद्ध कर दिखाया। सारांश यह कि इस सृष्टि में सूर्य और चन्द्र यह दो ग्रह मुख्य है जिनके प्रभाव से मनुष्य अपना जीवन प्रतिक्षण क्रमण करता है। इसी कारण से यह शास्त्र हमारे पूर्वजों के आदर को प्राप्त हुआ, क्योंकि ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्रों में श्रेष्ठ माना गया। ज्योतिष शास्त्रका जन्म भारत-

वर्ष में होते हुए हमारे देशवासियोंको इस महत्वपूर्ण व नित्योपयोगी शास्त्र के प्रति उदासीन रहना व पाश्चात्य देश के लोगों के संस्कृत भाषा का अध्ययन कर आकाशस्थ ग्रहों के संशोधन करते हुए अपना आयुष्य व्यतीत करना व अपने देशवासियों को लाभ देने का भरसक प्रयत्न कर नित्य नये शोध करते रहना यह कितने आश्चर्य की वात है इसका विचार सूज्ञ पाठक गण स्वयं कर सकते हैं। परन्तु हमारे देशके सूत्रधार व विशेषत: शिक्षा विभाग के अधिकारियों व महानुभावों का चित्त जब तक इस ओर आर्कषित नहीं होता तब तक इस शास्त्र का प्रचार व उसके उपयोग से अज्ञ जनों को लाभ मिलना असम्भव है। अत: इन आंग्लविद्या बिभूषित महानुभावों से हमारा नम्र निवेदन है कि अन्य विषयों के समान इस देववाणी व दूरदर्शी या त्रिकालदर्शी विद्या के विद्यार्थियों को इसके मनन व पठन करने का सुअवसर दें ताकि भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर वे अपना आयुष्य संकटग्रस्त अवस्था में भी शान्ति व धैर्यपूर्वक कार्य करते हुये, उस पर विजय प्राप्त कर सके।

ग्रह के महादशा का विचार

महादशा के मुख्य दो प्रकार प्रचलित हैं एक विंशोतरी और दूसरा अष्टोत्तरी। शास्त्रकारों ने मनुष्य के आयु मर्यादा का काल १२० वर्ष निश्चित कर विंशौंतरी महादशा का काल प्रचार में लाया, तदुपरान्त आयु का काल १०८ वर्ष होने के कारण अष्टोत्तरी महादशा का उपयोग करना आरम्भ हुआ। जन्म समय के नक्षत्र से ग्रहदशा का ज्ञान किसी भी मनुष्य को सहज में हो सकता है। नवग्रह के मुख्य दशा को महादशा कहते हैं और महादशा के अन्तर्गत नवग्रहों में जो समय निश्चित किया गया है उसे अंतर्दशा और अंतर्दशाके अन्तर्गत नवग्रहों में जो काल ज्योतिषियों ने निश्चित किया उसे विदशा कहते हैं। इसका पूर्ण विवेचन एक स्वतंत्र ग्रन्थ के बिना होना असम्भव है, तथापि सूज्ञ पाठकों के लाभार्थ जहां तक हो सके हम यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। हम पहले लिख चुके हैं कि—नक्षत्र २७, राशि १२ और ग्रह ९ है। अत: प्रत्येक ग्रह से तीन नक्षत्रों का विचार किया जाता है जो महादशा के कोष्टक से सहज ज्ञात होगा। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और इसका बोध साधारण मनुष्य को भी जन्म नाम के प्रथम अक्षर से ज्ञात हो सकता है अन्यथा जन्मराशि व ग्रहदशा का मालूम होना कठिन हैं। जैसे मान लो कि जन्म समय के घटी पल के अनुसार किसी मनुष्य का नाम रामचन्द्र रक्खा गया तो इस नाम के आद्य अक्षर से मनुष्य का जन्म नक्षत्र, चरण, राशि और जन्म समय से वर्तमान समय तक का ज्ञान हो सकता है। प्रथम अक्षर से यह स्पष्ट होता है कि चित्रा नक्षत्र का तृतीय चरण, तुलाराशि और मंगल महादशा में इस मनुष्य का जन्म होना चाहिये। परन्तु नक्षत्र के चरण का कितना काल भुक्त हो चुका व कितना भोगना बाकी है यह जानने के लिये सूक्ष्म गणित करना आवश्यक है। इसके सिवाय वर्तमान समय के ग्रह दशा का ज्ञान होना असम्भव है। नीचे लिखे हुये गणित से ग्रह दशा का भुक्त व

भोग्य काल कितना समाप्त होकर शेष है और यह शास्त्र कितने पूर्णावस्था के शिखर पर पहुँच चुका है व साथ ही फलित वतने के लिये शुद्ध गणित की कितनी आवश्यकता है यह पाठकों को सहज ज्ञात होगा।

जन्म समय महादशा जानने की रीति

मान लो कि किसी मनुष्य का जन्म सम्वत १९९० शके १८५५ के ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्थी, रविवार, पुनर्वसु नक्षत्र घ० ४७।१३ पल, जन्म इष्ट घटी ३४–५० पल पर हुआ तो जन्म समय किस ग्रह की महादशा होनी चाहिये। प्रथम यह जानना चाहिये कि पुनर्वसु नक्षत्र पूर्ण, कितने घटी पल, कब से कब तक था। पूर्व दिन शनिवार को आर्द्रा नक्षत्र कुल ४२ घटी २० पल था। इसके पश्चात् १७ घटी ४० पल पुनर्वसु नक्षत्र शनिवार को आरम्भ हो रविवार के दिन घटी ४७–१३ पल था। अतः कुल पुनर्वसु नक्षत्र ६४ घटी ५३ पल था। नक्षत्र के आरम्भ से जन्म समय तक वह कितना भुक्त हो चुका था तथा कितने घटी पल भोगना वाकी है? अर्थात् शनिवार के दिन पुनर्वसु नक्षत्र घटी १७।५० पल भुक्त हो चुका था और दूसरे दिन रविवार को वालक के जन्म तक
+३४।५० पल भुक्त हो चुका था। आगे कुल नक्षत्र व जन्म समय तक के नक्षत्र को
५२।४० ६० से गुणा कर पल वना लें।

कुल पुर्नवसु नक्षत्र	जन्म के समय तक कुल भुक्त पुर्नवसु नक्षत्र
६४ घटी ५३ पल	५२ घटी ४० पल
६० से गुणा किया	६० से गुणा किया
३८४० पल	३१२० पल
+५३ पल	+४० पल
३८९३ पल	३१६० पल

पुनर्वसु नक्षत्र महादशा के क्रम के अनुसार, गुरु महादशा का अंग समझा गया है और गुरु के महादशा का काल १६ वर्ष है। अतः त्रैराशिक के द्वारा यह सिद्ध करो कि गुरु महादशा कितनी भुक्त हो चुकी थी और कितना भुक्त होना शेष है।

पल		पल	वर्ष गुरु की महादशा
३८९३	÷	३१६०	गुणे १६=१२ वर्ष ११ महिने १७ दिन

			दिन	माह	वर्ष
गुरु महादशाकाल	१६ वर्ष—०—०	बालक की जन्मतारीख	२८	१२	१९४२
गुरु महादशा भुक्तकाल	१२ वर्ष–११–१७	आज की तारीख	२८	५	१९३३
	३–०–१३	की उम्र	०	७	९

अब निकालो कि वर्तमान समय किस ग्रह की महादशा चालू है और वर्तमान ग्रह दशा का फल शुभ मिलेगा अथवा नहीं।

जन्म समय गुरु महादशा का भोग्यकाल	३ वर्ष	० माह	१३ दिन
शनि महादशा में शनि का अन्तर्दशाकाल	३ वर्ष	० माह	३ दिन
शनि की महादशा में बुध का अन्तर्दशाकाल	२ वर्ष	८ माह	९ दिन
शनि की महादशा में केतु का अन्तर्दशाकाल,	० वर्ष	१० माह	५ दिन
वर्तमान आयु	९ वर्ष	७ माह	० दिन

वालक का उम्र आज दिन ९ वर्ष ७ माह ० दिन है व इस समय शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चालू है। यह सिद्ध हुआ कि इसके पश्चात् वर्तमान समय में इस ग्रह के फल का विचार जन्मकुण्डली के आधार पर करना होगा।

सूर्य महादशा ६ वर्ष				चन्द्र महादशा १० वर्ष			
कृत्तिका, उत्तरा फा०, उत्तराषाढ़ा				रोहिणी, हस्त, श्रवण			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन	ग्रह	वर्ष	माह	दिन
रवि	०	३	१८	चन्द्र	०	१०	०
चन्द्र	०	६	०	मंगल	०	७	०
मंगल	०	४	६	राहु	१	६	०
राहु	०	१०	२४	गुरु	१	४	०
गुरु	०	९	१८	शनि	१	७	०
शनि	०	११	१२	बुध	१	५	०
बुध	०	१०	६	केतु	०	७	०
केतु	०	४	६	शुक्र	१	८	०
शुक्र	१	०	०	रवि	०	६	०
कुल योग ६ वर्ष				कुल योग १० वर्ष			

मंगलकी महादशा ७ वर्ष				राहु की महादशा, १८ वर्ष			
मृग, चित्रा, धनिष्ठा				आर्द्रा, स्वाती, शततारका			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन	ग्रह	वर्ष	माह	दिन
मगल	०	४	२७	राहु	२	८	१२
राहु	१	०	१८	गुरु	२	४	२४
गुरु	०	११	६	शनि	२	१०	६
शनि	१	१	९	बुध	२	६	१८
बुध	०	११	२७	केतु	१	०	१८
केतु	०	४	२७	शुक्र	३	०	०
शुक्र	१	२	०	रवि	०	१०	२४
रवि	०	४	६	चन्द्र	१	६	०
चन्द्र	०	७	०	मंगल	१	०	१८
कुल योग ७ वर्ष				कुल योग १८ वर्ष			

गुरु महादशा १६ वर्ष			
पुन०, वि०, पूर्वा भाद्रपदा			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
वुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४
कुल योग १६ वर्ष			

शनि महादशा १९ वर्ष			
पुष्य, अनु०, उत्तरा भाद्रपदा			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन
शनि	३	०	३
वुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
रवि	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२
कुल योग १९ वर्ष			

वुध महादशा १७ वर्ष			
आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन
वुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
रवि	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९
कुल योग १७ वर्ष			

केतु महादशा ७ वर्ष			
मघा, मूल, अश्विनी			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
वुध	०	११	२७
कुल योग ७ वर्ष			

शुक्र महादशा २० वर्ष			
पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी			
ग्रह	वर्ष	माह	दिन
शुक्र	३	४	०
रवि	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
वुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

ग्रहों का साधारण क्रम रवि से शनि तक है यह सभी जानते हैं किन्तु विंशोत्तरी महादशा काल में ग्रहों का क्रम भिन्न है और वह रवि, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र इस क्रम से है।

ग्रह दशा फल

हम पहले लिख चुके हैं कि ग्रह शुभ और अशुभ दो प्रकार के हैं। इन ग्रहों के फल सामान्यतः किस तरह से मिला करते हैं यह प्रथम ध्यान में लाना चाहिये। शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, प्रापंचिक सुख आदि अनेक प्रकार के अनुभव मिलते हैं। अशुभ ग्रह दशा फल—लोकापवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, बीमारी, शरीर कष्ट, आप्त वर्ग के सदस्य की मृत्यु, वियोग, धन्धे में हानि इत्यादि। इस तरह साधारण ज्ञान के होने से मनुष्य को सन्तोष होना कठिन है। अतः प्रत्येक ग्रह के महादशा व अंतर्दशा का फल, भाव व राशिगत ग्रहों के स्थिति का विचार करने से मिलना सम्भव है। जैसे :—

रवि महादशा—भाव फल

लग्न में रवि—प्रवास, भ्रमण, देशांतर, रोग, अस्थिरता।

द्वितीय में रवि—नेत्र पीड़ा, द्रव्यनाश, बन्धु से त्रास, कष्ट, राजभय, वाग्दोष।

तृतीय में रवि—महत्त्वाकांक्षा, राजसन्मान, पराक्रम, अधिकार, महत्व के कार्य, बन्धुओं का त्रास।

चतुर्थ में रवि—माताको कष्ट, जमीन जुमला की चिंता, चोर व अग्नि भय, शस्त्र से पीड़ा।

पंचम में रवि—रक्त दोष, शरीर कष्ट, द्रव्य संचय, अस्थिर बुद्धि, मंत्र विद्या, संतति को कष्ट।

षष्ट में रवि—ज्वर, पिता से विरोध, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, शौर्यकार्य, शत्रुनाश।

सप्तम में रवि—शरीर कष्ट, गण्डान्तर, खाने-पीने का बुरा हाल, स्त्री का कष्ट, प्रापंचिक सुख में विघ्न।

अष्टम में रवि—नेत्र पीड़ा, ज्वर, उष्ण विकार, दुर्बल मन, शरीर यातना, उद्योग धन्धा के लिये अनिश्चित्।

नवम में रवि—दुष्ट व विपरीत बुद्धि, परमेश्वर के प्रति अश्रद्धा, धार्मिक कार्य में स्वजन से विरोध।

दशम में रवि—यश प्राप्ति, बड़े अधिकार प्राप्त, राजसन्मान, धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति, उद्योग धन्धा में प्रगति।

एकादश में रवि—विपुल द्रव्य लाभ, संतति को उत्तम नाना प्रकार से द्रव्य लाभ, व उन्नति।

द्वादश में रवि—द्रव्य नाश, ऋणग्रस्त स्थिति, कलह, शत्रुत्व, संकट, उद्योग में अपयश, पाँव में रोग, सर्व प्रकारकी चिंता।

राशि फल

मेष में रवि—कौटुम्बिक धन लाभ, गृह सौख्य, स्त्री पुत्रादि सुख, स्वधर्म के प्रति अभिमान व श्रद्धा, उच्च विचार, तीव्र बुद्धि, भारी महत्वाकांक्षा।

वृषभ में रवि—स्त्री व संतति को पीड़ा, मकान जायदाद की चिंता, हृदय रोग, द्रव्यनाश, विचित्र मानसिक स्थिति।

मिथुन में रवि—प्राचीन ग्रन्थों का आदर, बुद्धिमान्, द्रव्यवान्, होशियार, विद्या अभिमानी, वाचन पठन प्रिय, कवि।

कर्क में रवि—आप्त जन से बैर, स्त्री लोलुप, निष्कपटी परन्तु शीघ्र कोपी, राजाधिकारी व श्रेष्ठ कामगारों से मित्रता, अधिकार की इच्छा।

सिंह में रवि—पराक्रमी. धाड़सी, राजसन्मान, द्रव्ययोग, सवों पर प्रभुत्व।

कन्या में रवि—देव ब्राह्मण भक्त, वाहनसुख, भूमिलाभ, मधुरभाषी, स्त्रियों को प्रिय।

तुला में रवि—चोर व अग्नि से डर, नुकसान, स्त्री सम्वन्धी कष्ट, स्त्री व स्थावर स्टेट संपत्ति की बुरी स्थिति।

वृश्चिक में रवि—विषधारी जानवर या विष से धोखा, अग्नि व शस्त्रभय, माता पिता व आप्त वर्ग से अपमान।

धन में रवि—द्रव्य लाभ, ऐश्वर्य उत्कर्ष, स्त्री पुत्र सुख, गायन वादन प्रिय, राजसन्मान, स्वजातिका नेता, प्रापंचिक सुख।

मकर में रवि—दुःख, दगदग, अल्प सुख, प्रापंचिक निराशाजनक स्थिति, परावलम्वी।

कुम्भ में रवि—संपत्ति, संतति, स्त्री सम्बन्धी चिन्ता, मानसिक दुःख, हृदयरोग।

मीन में रवि—पित्तज्वर, रक्तदोष बाधा, द्रव्य दृष्टि प्रतिकूल, शरीर कष्ट।

चन्द्र महादशा—भाव फल

लग्न में चन्द्र—प्रापंचिकसुख में बाधा, शरीर कष्ट, सांपत्तिक दुर्धर स्थिति, मानसिक चंचलता, उद्योग में बाधा, निरुत्साह।

द्वितीय में चन्द्र—द्रव्य संचय, स्त्री पुत्रादि सुख, मिष्ठान्न प्राप्ति, ऐशोआराम, कौटुम्बिक सुख, पुण्य कर्म।

तृतीय में चन्द्र—प्रवास में लाभ, बन्धु वर्ग का उत्कर्ष, सुख प्राप्ति, स्थलान्तर, आभूषण प्राप्ति, लेखन कार्य में सम्मान प्राप्ति।

चतुर्थ में चन्द्र—स्थावर व वाहन सुख, स्त्री पुत्रादि सुख, अधिकार लाभ, कीर्ति, सार्वजनिक कार्य में प्रतिष्ठा, प्रापंचिक सुस्थिति ।

पंचम में चन्द्र—विद्या में यश, विद्वानों से मित्रता, अधिकार तरक्की, संतति प्रतिष्ठा में यश, संतति सुख, सब प्रकार से सुख प्राप्ति ।

षष्ट में चन्द्र—शत्रु भय, नुकसान, द्रव्यनाश, अपमान, संकट, राजकीय व प्रापंचिक पराधीनता, रोग, उद्योग में बाधा ।

सप्तम में चन्द्र—प्रवास, प्रसन्न चित्त, स्त्री सुख, व्यापार में लाभ, शत्रु से त्रास ।

अष्टम में चन्द्र—रोग, क्लेश, शरीर कष्ट, परदेश गमन, माताको कष्ट, भाग्य हानि, स्वजन से वैर, सांपत्तिक आपत्ति, शरीर कष्ट ।

नवम में चन्द्र—भाग्योदय, ऐश्वर्य व द्रव्यलाभ, अनुकूल परिस्थिति, सब प्रकार से सुख प्राप्ति ।

दशम में चन्द्र—व्यापार में लाभ, उत्कर्ष, नौकरी में अधिकार प्राप्ति, उद्योग में यश, राजकृपा, द्रव्य लाभ, माता पिता को सुख ।

एकादश में चन्द्र—द्रव्य, वाहन, आभूषण, स्त्री, पुत्र, द्रव्य संचय, सुख व लाभ, अनेक प्रकार से द्रव्य लाभ, मानसिक हेतु की पूर्ति ।

द्वादश में चन्द्र—द्रव्य हानि, संकट, अपयश, शत्रु भय, नुकसान, द्रव्य चिन्ता, आप्त वर्ग से विरोध ।

राशि फल

मेष राशि—ईश्वरभक्ति, देव ब्राह्मण के प्रति पूज्य बुद्धि, प्रवास, चंचल मन, उदार, दयालु, दिखाऊ काम का तिरस्कार ।

वृषभ राशि—संपत्ति व संतति सुख, भाग्योदय, राजसंमान, ऐश्वर्य व स्त्री सुख, कुटुम्ब व वाहन सुख, श्रीमान् व धर्मवान ।

मिथुन राशि—माता पिता भक्त, धार्मिक वृत्ति, सुख, प्रवास प्रियता ।

कर्क राशि—मकान, वाहन, जमीन जुमला प्राप्ति, नये कामका आरम्भ, धार्मिक व कीर्तिदायक कार्य, परोपकारी, गुप्त विकार ।

सिंह राशि—राजकीय उन्नति, मानमान्यता, अधिकार प्राप्ति, द्रव्यप्राप्ति, शरीर यातना व अस्वस्थता ।

कन्या राशि—स्त्री प्राप्ति व सुख, परदेश मगन, द्रव्यलाभ, उतावला, अविचारी बातें, पाप बुद्धि ।

तुला राशि—बुरे लोग की संगत व दोस्ती, द्रव्य की कमतरता व अड़चन, स्त्री सम्बन्धी विचार, वादविवाद, दारिद्रय, उत्साह भंग, विक्षिप्त आचरण ।

वृश्चिक राशि—उद्योग में अपयश, पराधीनता, स्वजन से शत्रुत्व, द्रव्यहानि, राजकीय संकट, दुष्टकार्य, उद्योग में हानि, व्याधि उपद्रव ।

धन राशि—पूर्वार्जित स्टेट में नुकसान व नाश, मानसिक व राजकीय स्थिति असमानकारक, पराक्रम से भाग्योदय।

मकर राशि—प्रवास, द्रव्यलाभ, संतति सुख, अस्थिरता, गुप्त चिन्ता।

कुम्भ राशि—ऋणग्रस्त स्थिति, द्रव्यहानि, क्लेश, पापकर्म, बुरे लोगों से संगत, नाना प्रकार के व्यसन।

मीन राशि—सत्कर्म में द्रव्य, अधिक खर्च, जलोत्पन्न पदार्थों की रुचि व प्राप्ति, स्त्री पुत्र सुख, शत्रुनाश।

मंगल महादशा

लग्न में मंगल—भ्रमित मस्तक, सन्ताप, उद्वेग, शरीर कष्ट, त्रास, दगदग, स्त्री को कष्ट, अधिकार भ्रष्ट, शत्रु से पराजय, उद्योग व नौकरी में संकट, देशान्तर, द्रव्यनाश।

द्वितीय में मंगल—चंचल द्रव्ययोग, नेत्र पीड़ा, धन की कमतरता, व्यर्थ खर्च, उष्ण विकार से बीमारी, संतति को दुःख।

तृतीय में मंगल—पराक्रम, शौर्य, धाड़सी, राजसन्मान व प्रतिष्ठा, नीच बुद्धि, सत्ता व अधिकार प्राप्ति, बन्धुवर्गको अनिष्ट।

चतुर्थ में मंगल—जमीन जुमला मकान सम्बन्धी चिन्ता, अपघात कायम, रोगभय, संतति को गंडान्तर।

पंचम में मंगल—विपरीत बुद्धि, हट्टी स्वभाव, अविचारी कृत्य, नेत्र रोग, भयंकर खर्च, संतति की चिन्ता, द्रव्यलाभ से हानि अधिक, द्रव्य की कमतरता।

षष्ट में मंगल—सम्पत्ति की उच्च व नीच स्थिति, भयंकर कष्ट व दगदग, भारी उलट पलट, शत्रु का पराभव, साहसी काम में यश।

सप्तम में मंगल—स्त्री को कष्ट व गंडान्तर, द्रव्यनाश, दूरदेश में प्रयाण, उद्योगधन्धा में बाधा, प्रवास।

अष्टम में मंगल—मृत्यु सम पीड़ा, शीतला वगैरह की बीमारी, रक्तदोष, व्याधि, द्रव्यनाश, अपमान, बेआब्रू, ज्वर व मस्तकशूल पीड़ा।

नवम में मंगल—भाग्य में विघ्न, गुरु व बड़ों को कष्ट, धर्म के प्रति उदासीनता, पापकर्म वृत्ति, दांभिक।

दशम में मंगल—उच्च नौकरी व अधिकार प्राप्ति, प्रधान मंडल के लोगों से मित्रता, मान सन्मान, व्यापार में लाभ, सर्व प्रकार से सुख, स्थावर स्टेट योग, कीर्ति व शत्रुनाश।

एकादश में मंगल—शत्रुनाश, स्त्री सुख, द्रव्यलाभ, जमीन जुमलाकी प्राप्ति, संतति का अनिष्ट।

द्वादश में मंगल—स्त्री को अनिष्ट, धननाश, औद्योगिक व प्रापंचिक विकट स्थिति, राजभय, अधिकारी का रोष, शत्रु पीड़ा, अपमान।

मंगल राशिफल

मेष राशि—शौर्य कार्य, युद्ध में विजय, राज्यप्राप्ति, अधिकार योग, राजा से मान-सन्मान, वस्त्र व आभूषण प्राप्ति, आचार कार्य किन्तु शरीर कष्ट।

वृषभ राशि—देव ब्राह्मण के प्रति आदर, सत्कर्म की ओर द्रव्य का व्यय, स्त्री को कष्ट।

मिथुन राशि—स्थानान्तर प्रवास, पिता से विरोध, अधिकारी वर्ग पर छाप, स्वजन विरोध, वाचाल, धूर्त, अनेक कला कौशल में निपुण, खर्चिक।

कर्क राशि—मकान, वाहन, नौकर चाकर, भूमि की प्राप्ति व सुख, मानसिक दुर्बलता, क्लेश, चिन्ता, स्त्री पुत्र व आप्त वर्ग से वियोग।

सिंह राशि—अनेक लोगों पर अधिकार रखने वाला, श्रेष्ठ नेता, निश्चयी, साहसी, सत्याग्रही, संकट में धैर्य रखने वाला, राजकार्य दरबार में प्रमुख, श्रीमान्, भाग्यवान स्त्री पुरुष से वियोग, अग्निपीड़ा।

कन्या राशि—सदाचार व सत्कर्मी, धनधान्यादि समृद्ध, स्त्री अभिलाषी, प्रापंचिक सुख, धनलाभ में देर।

तुला राशि—व्यापार व स्त्री पक्ष से लाभ।

वृश्चिक राशि—खेती से धनलाभ व यश, अनेकों का शत्रु परन्तु खुले आम कोई भी न कुछ कर सकेगा।

धन राशि—वादविवाद से दूर रहने वाला, धर्म की ओर चित्त व लक्ष्य।

मकर राशि—रण व युद्ध में यश, वाद विवाद में यश प्राप्ति, अधिकार प्राप्ति, ऐश्वर्य सम्पन्न स्थिति, सांपत्तिक स्थिति श्रेष्ठ, राज्याधिकारी, कीर्तिमान, नेता व सामाजिक कार्यकर्ता।

कुंभ राशि—धर्मभ्रष्ट, संतति से कष्ट, अनाचारी, भारी खर्चिक।

मीन राशि—मस्तक, आंख, कान को उष्ण विकार से त्रास, सब ओर से हानि, पुत्र चिन्ता, कर्जा, परदेश वास।

राहु महादशा भावफल

लग्न में राहु—मानसिक असन्तोष, शरीर कष्ट, रोग, विष व अग्नि से भय, लोगों से विरोध, शत्रुसे त्रास, नुकसान, इष्ट कार्य में विघ्न।

द्वितीय में राहु—द्रव्यनाश, नेत्रपीड़ा, पराधीनता, कौटुम्बिक कलह, स्त्री को कष्ट व अनिष्ट, राजकीय अपयश, उद्योग धन्धे की खराबी।

तृतीय में राहु—पराक्रम के कार्य में पूर्ण यश प्राप्ति, श्रेष्ठ जनों की मैत्री, कीर्ति उद्योग में सिद्धि, द्रव्य लाभ, प्रापंचिक सुख।

चतुर्थ में राहु—माता का वियोग, कष्ट व गण्डान्तर, जमीन जुमला गृह संवंधी आपत्ति वा नष्ट होने का प्रसंग, राज कोप, स्वजनसे शत्रुत्व, मित्रों से धोखा, सब प्रकार के दुःख।

पंचम में राहु—अस्थिर मन, विपरीत वातें, व्यग्रबुद्धि, अधिकार भंग, विद्या में अपयश, शत्रु से पराभव, ऋणग्रस्त स्थिति, धन की कमी, कलह, संतति से अनिष्ट।

षष्ट में राहु—शत्रुनाश, नौकर सुख, राजदरबार में यश, उत्तम व जोरदार सांपत्तिक स्थिति, चोर, अग्नि, विष वाधा, प्रमेह, पित्त, गुल्म रोग, शरीर कष्ट।

सप्तम में राहु—स्त्री को मृत्यु सम कष्ट, मृत्यु योग सम्भव, संकट, द्रव्यनाश, सर्पदंश भय, स्थानान्तर, भाग्यहीनता व प्रवास।

अष्टम में राहु—महासंकट, शारीरिक कष्ट, दुःखदायक प्रसंग, भयंकर रोग, मरण प्रायः दुःख, द्रव्य व कुटुम्बनाश, उद्योग में अपयश, भाग्यहानि, नीच स्थिति।

नवम में राहु—पिता व कुटुम्ब के ज्येष्ठ लोगों से दुख, अत्यन्त प्रेमी मनुष्य का नाश, बन्धु वियोग, स्थानान्तरण, समुद्र या तीर्थ यात्रा, गंगा स्नान, सत्कर्म की ओर चित्त।

दशम में राहु—तीर्थयात्रा, सत्कर्म, गगा स्नान, साधु सन्त दर्शन, उद्योग धन्धा में यश, धर्मग्रन्थों का अभ्यास, प्रापंचिक सुख।

एकादश में राहु—स्त्री संतति लाभ व सुख, द्रव्यलाभ, ऐश आराम प्राप्ति, कीर्ति।

द्वादश में राहु—स्त्री, पुत्रादि वियोग, धनधान्य स्थावर जमीन जुमला का नाश, राजकोप, खराव परिस्थिति, जोरदार शत्रु से हानि, अनहित प्रसंग।

राशि फल

मिथुन राशि—मान व प्रतिष्ठा की वृद्धि, सुख व उन्नति, मित्र, संतति व संपत्ति की प्राप्ति, राज्याधिकार उद्योग में यश व उत्कर्ष, धन धान्य वृद्धि व चिन्ता नष्ट।

धन राशि—दुःखदायक प्रसंग, प्रगति असम्भव, द्रव्यनाश, प्रापंचिक संकट, कीर्ति व आवरु को धोखा।

गुरु महादशा भाव फल

लग्न में गुरु—विद्या, बुद्धि, ऐश्वर्य संतति व शरीर सुख के लिये उत्तम, मान मान्यता, शान्त, सुविचार, भाग्योदय के लिये श्रेष्ठ।

द्वितीय में गुरु—श्रेष्ठ लोगों से मित्रता, राजसभा में प्रवेश, उच्चाधिकार प्राप्ति, प्रत्येक प्रयत्न में विजय, सत्कर्माचरण, द्रव्य प्राप्ति, ऐश्वर्य सुख, श्रीमान्।

तृतीय में गुरु—बन्धु वर्ग की उच्च स्थिति, उत्कर्ष व सुख, द्रव्यलाभ, उद्योग व पराक्रम में यश, कार्यसिद्धि।

चतुर्थ में गुरु—किसी बात की कमी नहीं, सर्व प्रकार से सुख अर्थात् प्रापंचिक, औद्योगिक, शारीरिक, राजकीय सुख।

पंचम में गुरु—मंत्र, वेदान्त, शास्त्रीय विद्या व ज्ञान प्राप्ति, विद्या में यश, पुत्र प्राप्ति व सुख, श्रेष्ठ अधिकार, राजमण्डल में प्रवेश।

षष्ट में गुरु—उद्योग में प्रगति, सांपत्तिक दृष्टि अनुकूल, स्त्री पुत्रादि सुख, दशा के अन्त में रोग से कष्ट, चोर से त्रास।

सप्तम में गुरु—स्त्री, संतति, धन प्राप्ति व सुख व्यापार में प्रगति, प्रवास, तीर्थ-यात्रा, पुण्य कर्म।

अष्टम में गुरु—स्त्री व स्वतः को शरीर कष्ट व नाना प्रकार की व्याधि, विरोध, प्रापंचिक कष्ट, मृत्यु सम पीड़ा, द्रव्यनाश, दूसरों से त्रास, परदेश वास, अन्त में राजसन्मान।

नवम में गुरु—अधिकार वृद्धि, पुत्रादि की उन्नति, वेदान्त विषय की रुचि, द्रव्यलाभ, धार्मिक प्रवृत्ति, वाहन सुख, स्त्री व प्रापंचिक सुख।

दशम में गुरु—नौकरी, अधिकार, उद्योग धन्धा में तरक्की, राजकृपा, स्त्री, पुत्र, धनसुख, सब पर छाप, लोक अनुकूलता।

एकादश में गुरु—सब प्रकार से उच्च स्थिति, श्रीमान् व अधिकार सम्पन्न लोगों की मैत्री, वाहन व नौकरी सुख, राजा से विरोध।

द्वादश में गुरु—शरीर कष्ट, आपत्ति, शत्रु पीड़ा, मानसिक चिन्ता, अधिकार में कमीपन, अनेक प्रकार के दुःख परन्तु भूमि जमीन जुमला स्थावर वस्तु, वाहनादि लाभ।

राशि फल

मेष राशि में गुरु—स्त्री पुत्र लाभ, समाज में मान्यता, सुख समाधान, वैभव प्राप्ति, भाग्यदायक व उत्कर्ष के लिये अनुकूल, समाजका नेता।

वृषभ राशि में गुरु—द्रव्य लाभ व संचय, साहस व जोखमी काम, शत्रुपीड़ा, शारीरिक व कौटुम्बिक त्रास, मानसिक अस्वस्थता।

मिथुन राशि में गुरु—बुद्धि व पराक्रम से सुख, धार्मिक पवित्र कार्य, स्त्री से या स्त्री से सम्बन्ध रखने वाली बातों से त्रास।

कर्क राशि में गुरु—राज्य प्राप्ति, अधिकार व राजदरबार में श्रेष्ठ मान, मंत्री पद प्राप्ति, वैभव व ऐश्वर्य प्राप्ति।

सिंह राशि में गुरु—धन लाभ, कीर्ति, श्रेष्ठ बुद्धि, विद्या में प्रगति, संतति सुख, राज-सन्मान, श्रीमान् व पराक्रमी।

कन्या राशि में गुरु—उद्योग धन्धा में यश, श्रीमान् लोगों से मित्रता व लाभ, अधिकार लाभ, स्त्री पुत्र कौटुम्बिक सुख, हीन जाति के लोगों से विरोध, अपमान व धन का व्यय।

तुला राशि में गुरु—चंचल वृत्ति, विपरीत बुद्धि, स्वजाति लोगों से वैर, उद्योग में अपयश, असन्तोष, स्त्री पुत्रादि से त्रास ।

वृश्चिक राशि में गुरु—विद्या व बुद्धि के काम में यश, कर्तबगारी के काम, जमीन जुमला घरदार, स्थावर स्टेट के माल की प्राप्ति ।

धन राशि में गुरु—ईश्वर निष्ठा, परोपकार के कार्य, यज्ञ, धार्मिक कर्म के आचरण, वेदान्त शास्त्र में रुचि ।

मकर राशि में गुरु—स्वजन वियोग, विरोध व शत्रुत्व, परदेश वास, गुह्य रोग, द्रव्य चिन्ता, दारिद्रय योग, स्त्री पुत्र को कष्ट, उदर पीड़ा, संकट काल ।

कुम्भ राशि में गुरु—भाग्योदय आरम्भ, राजकार्य में निमग्न व प्रतिष्ठा, द्रव्य लाभ, विद्या में यश, मानसन्मान, तीव्रबुद्धि, कलाकौशल में प्रवीण, स्त्री पुत्रादि सुख ।

मीन राशि में गुरु—प्रापंचिक औद्योगिक उन्नति, राजदरबार में यश प्राप्ति, अधिकार संम्पन्न, ऐश्वर्य भोगने वाला, स्वच्छन्दी, बेफिकर, सब प्रकार के सुख ।।

शनि महादशा भावफल

लग्नमें शनि—वातविकार, शरीर बाधा, रोगों की वृद्धि, भयंकर चिन्ताजनक स्थिति, चोरों से त्रास, राजद्वार से अपमान, नुकसानी के प्रसंग, मस्तक पीड़ा ।

द्वितीय में शनि—कुटुम्ब के बड़े लोगों को व स्त्री को कष्ट, कौटुम्बिक आपत्ति, बुखार, नेत्र पीड़ा, उष्ण विकार, स्वजन विरोध, द्रव्यनाश, राजभय, संकटकाल ।

तृतीय में शनि—बन्धु वर्ग को अनिष्ट, संकट, राजकोप से भय, मनोदौर्बल्य, पराक्रमी व साहसी कार्य, साधारण द्रव्यप्राप्ति, स्वजनों पर छाप ।

चतुर्थ में शनि—मातृपीड़ा, शत्रु से त्रास, राज्याधिकारी से संकट, अपमान, स्थावर नाश, वाहन से पीड़ा, अपघात का भय, गृह दाह, अग्नि व शस्त्र से पीड़ा ।

पंचम में शनि—बुद्धि को अनिष्ट, संतति कष्ट व नाश, स्त्री को बुखार, धन की कमतरता, राजकोप, विद्या में विघ्न, व्यवसाय सामान्य, साधारण द्रव्य प्राप्ति ।

षष्ट में शनि—शारीरिक व मानसिक संकट, दुर्धर योग, शत्रु से विरोध, नुकसान, दुष्ट लोगों की मैत्री, चोर व विष से पीड़ा, घर भूमि नष्ट, द्रव्यलाभ के लिये उत्तम ।

सप्तम में शनि—स्त्री को गंडांतर, शत्रु संकट, उत्कर्ष व भाग्योदय में आपत्ति, कई प्रकार से त्रास व चिन्ता, मातृकष्ट, स्थावर नाश ।

अष्टम में शनि—मृत्यु सम पीड़ा, भयानक रोग से त्रास, सांपत्तिक नाश, अपमान के प्रसंग, नीच लोगों की संगति, सर्व प्रकार से अनिष्ट ।

नवम में शनि—उद्योग व व्यवसाय में विघ्न, कुटुम्ब के ज्येष्ठ सदस्यों को मरण प्राय दुःख, दूर का प्रवास, द्रव्यलाभ पूर्ण, शत्रु नाश, रोग नाश ।

दशम में शनि—स्त्री पुत्र नौकर से हर प्रकार का त्रास, बारम्बार कलह, व्यवसाय में विघ्न, गैर समझ, द्रव्यनाश, कार्य नाश, पराधीनता, राज दरबार से विरोध।

एकादश में शनि—अधिकार सम्पन्न पुरुषों से मैत्री, धन प्राप्ति, धान्य समृद्धि, उत्कर्ष, राजसन्मान, नौकर सुख, गुह भूमि प्राप्ति, भाग्य का उदय।

द्वादश में शनि—द्रव्यनाश, अपयश, शरीर कष्ट, शत्रुनाश, चोर, अग्नि, शस्त्र, राजदण्ड से पीड़ा, दारिद्रय, ऋणग्रस्त स्थिति, संकट, दुःख।

राशिफल

मेष राशि में शनि—कृश शरीर, मस्तक को त्रास, खाज, गलवा, रक्तदोष, रोग वृद्धि, अपचन विकार, दुःखदायक प्रसंग।

वृष में शनि—तीव्रबुद्धि, साहसी व पराक्रमी, कार्य में यश, युद्ध व विवाद में जय, सांपत्तिक लाभ, स्त्रियों से मैत्री।

मिथुन में शनि—स्त्रियों से द्रव्य लाभ, फायदा, स्त्री सुख उत्तम, ऐश आराम में दंग, अनीतिमान लोगों से मैत्री, बुद्धि के दम पर लोगों पर छाप।

कर्क में शनि—शारीरिक दुर्बलता, अस्वस्थता, संकट, नेत्रपीड़ा, स्वार्थी साधु, सबसे मित्रता, अस्थिरता, स्त्रीपुत्रादि सुख सामान्य।

सिंह में शनि—स्त्री पुत्र से कलह, वाद विवाद, विरोध, वियोग, अपयश, मानसिक पीड़ा, अनेक प्रकार से त्रास।

कन्या में शनि—उद्योग धन्धा व व्यापार के लिये उत्तम धनलाभ, सांपत्तिक सुस्थिति, लोगों से मित्रता, प्रापंचिक सुख।

तुला में शनि—राजसन्मान, अश्व, सुवंण, रत्न प्राप्ति, स्थावर जमीन, भूमि, नौकर, वाहन आदि का सुख।

वृश्चिक में शनि—देशान्तर प्रवास, धाड़सी व महत्व के कार्य में यश, महत्वाकांक्षा के अनुसार कार्य में यश प्राप्ति तथापि नीच हीन लोगों की संगति व मित्रता।

धन में शनि—प्रतिपक्षी को हराने वाला, युद्ध व वाद विवाद में यश, धर्यवान् शत्रु का पराजय, अनुकूल प्रसंग व उन्नति का काल, खर्च बहुत।

मकर में शनि—बहुत कष्ट व अल्पलाभ, विश्वासघात से द्रव्यनाश, स्त्रियों से प्रीति, विषय सुखमें रममाण, द्रव्यकी कमतरता, नुकसान, आपत्ति।

कुम्भ में शनि—मान प्रतिष्ठा व श्रेष्ठ अधिकारकी प्राप्ति, प्रापंचिक सुख, मित्र प्रेम, विद्या में यश, द्रव्य प्राप्ति साधन उत्तम।

मीन में शनि—अनेक गावों का मालिक व अधिकारी, बुद्धि के बल से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति, किसी बात की कमी नहीं रहेगी।

बुध महादशा भाव फल

लग्न में बुध—शरीर सुख, समाधान वृत्ति, पूर्ण ऐश्वर्य, राजा से मान, जमीन जुमला खेती से लाभ, जग में कीर्ति, लोगों में प्रतिष्ठा, द्रव्य सुख।

धन में बुध—वक्तृत्व, विद्या में यश, महत्व के कार्य में यश, विपुल धन लाभ, कौटुम्बिक उत्कर्ष, भाग्योदय, मानसन्मान प्राप्ति।

तृतीय में बुध—शरीर पीड़ा, मानसिक त्रास, बन्धुओं को यश व सुख प्राप्ति, प्रवास, स्थानान्तरण, कर्ण रोग, मैत्री से लाभ।

चतुर्थ में बुध—जमीनजुमला, वाहन, नौकर के सुख का नाश, औद्योगिक संकट, बे वनाव, शिथिलता, अपयश मिलना सम्भव।

पंचम में बुध—शारीरिक व मानसिक कष्ट, कार्य में अल्पलाभ, अस्थिर बुद्धि व पराधीनता।

षष्ट में बुध—रोग की वृद्धि, अशक्ति, अपचन विकार, मन की दुर्बलता, हैकेखोर स्वभाव।

सप्तम में बुध—स्त्री सुख, संतति, पुत्र प्राप्ति, गृह सुख, सुख समाधान, राजमंत्री, द्रव्यलाभ, व्यापारमें यश।

अष्टम में बुध—राजकोप, द्रव्यनाश, मृत्यु सम पीड़ा, संकट काल, त्वचा रोग, वात पीड़ा, हाथ पाव में दर्द, अन्त में विजय।

नवम में बुध—देवधर्म में लक्ष्य, पुण्य कर्म, तीर्थ यात्रा व साधु संत का दर्शन, दूर का प्रवास, गंगास्नान, धर्माचरण, भाग्योदय व सर्व प्रकार से सुख।

दशम में बुध—राजद्वार में यश, महत्वकार्य में लाभ, श्रेष्ठ अधिकार प्राप्ति, व्यापार व उद्योग में यश, द्रव्य लाभ, राजमंत्री पद, मानसन्मान।

एकादश में बुध—अनेक प्रकार से द्रव्यलाभ, धनसंपन्न व श्रीमान् की स्थिति, वाहन सुख, सांपत्तिक ऐश्वर्य में उन्नति।

द्वादश में बुध—अति द्रव्य खर्च व संकट काल का निर्माण, शत्रु से त्रास, लोगों से पूरी सहायता प्राप्ति, अन्त में यश प्राप्त।

राशि फल

मेष राशि—दुष्ट जनो की संगत, बुरे जगह वास, व्यसनी लोगों से मित्रता, जुगार, चोरी का आक्षेप, दारिद्रय, संकट, चिन्ता।

वृषभ राशि—निष्कारण खर्च, ज्येष्ठ लोगों से त्रास, दुःख, सन्ताप, अर्थनाश, उद्योग में हानि, स्त्री पुत्रादि की चिन्ता।

मिथुन राशि—माता को कष्ट, विरोध, स्त्री पुत्रादि से सुख, कार्य में यश, विद्या में यश, लेखक व वक्तृत्व शक्ति के प्रभाव से सुख।

कर्क राशि—परदेश, हीन जगह वास, दु:ख, चिन्ता, काव्यकला व लेखन से द्रव्य लाभ, लोगों से मित्रता।

सिंह राशि—स्त्री पुत्रसे कष्ट, विपरीत बुद्धि, कार्य में बाधा, धैर्य, वैभव, मानसिक स्वस्थता कम।

कन्या राशि—सब प्रकार के सुख भोगने वाला, भाग्यवान, वैभवशाली, विद्वान, गुणी, सदाचारी, नीतिमान्, लेखक, कार्यकर्ता, शास्त्र में निपुण, शत्रुका पराजय, ईश्वर भक्त, द्रव्यवान्, उन्नतिका काल।

तुला राशि—अस्वस्थ शरीर, बुखार, क्षीणता, स्त्री सुख, कारीगरी का काम करने वाला, व्यापार में धन नाश।

वृश्चिक राशि—स्वजन से विरोध, कलह, अन्य जगह वास, आपत्ति, यातना, शरीर कष्ट, द्रव्य नाश, प्रापंचिक पराधीनता।

धन राशि—द्रव्य की अड़चन, किसी भी काम में प्रथम बाधा व विरोध, स्वजन से कलह, आपत्ति अनिश्चित समय, विरोध, त्रास।

मकर राशि—नीच व दुष्ट जनों से मैत्री, उच्च लोगों से फसवेंगिरी, झूठ भाषण, अधिक खर्च, असत्कृत्य में व्यय, कार्यनाश।

कुम्भ राशि—द्रव्यहानि, अधिक संकट, मित्रों से अपमान, कार्य में अस्थिरता प्रापंचिक व औद्यौगिक काम में पराधीनता।

मीन राशि—शरीर त्रास, बीमारी, दु:ख, साधारण धन लाभ, चंचल चित्त, कुबुद्धि।

केतु महादशा भाव फल

लग्नमें केतु—ज्वर, बुखार, शरीर बाधा, अतिसार, कालरा, अशक्तता, क्लेश, मानसिक रोग।

द्वितीय में केतु—वाग्दोष, धननाश, ऋण ग्रस्त स्थिति, पराधीनता, मानसिक दु:ख, सब प्रकार की चिन्ता, द्रव्य विषय की विशेष चिन्ता।

तृतीय में केतु—बन्धु विरोध, तंटे बखेड़े, स्वतंत्र वृत्ति, बानीवाला उद्योगके लिये अनुकूल, स्वपराक्रम से भाग्य का उदय, ऐश्वर्य लाभ, यश दायक।

चतुर्थ में केतु—अग्नि भय, स्थावर स्टेट का नाश, वाहन से भय, नुकसान, दु:ख दायक प्रसंग, लोकापवाद, दारिद्रय, स्त्री, पुत्र व कुटुम्बियों को क्लेश।

पंचम में केतु—बुद्धि भ्रंश, विपरीत बातें, संतति नाश, लोक से विरोध, कलंक, विद्या में अपयश, मित्रों से नुकसान, हीन स्थिति, राजकोप, उतावलापन।

षष्ट में केतु—कृश शरीर, रोग की वृद्धि, अत्यन्त कष्ट, मातुल नाश, उद्योग व पराक्रम में यश, स्वपराक्रम से यश, स्वपराक्रम से द्रव्य लाभ, शत्रु का पराजय, अधिकारी वर्ग से मित्रता।

सप्तम में केतु—स्त्री पुत्रादि की हानि, मनोभंग, सांपत्तिक व औद्योगिक आपत्ति, परदेश वास, मूत्रकृच्छ आदि रोगों से त्रास, अनिष्टकारक घटना।

अष्टम में केतु—पिता की मृत्यु, दुष्टजन की संगति, क्षय, दमा, खांसी, रोग, द्रव्य स्थिति प्रतिकूल, कंकाल स्थिति।

नवम में केतु—ईश्वरनिष्ठा, धार्मिक आचरण, परोपकार के कार्य, स्वजन त्रास, कार्य में वाधा, प्रापंचिक कष्ट।

दशम में केतु—व्यापार, नौकरी आदि में पहले वाधा, कष्ट, दगदग आपत्ति किन्तु दशा के अन्त में अनुकल परिस्थिति, द्रव्यलाभ साधारण, पिता का नाश।

एकादश में केतु—द्रव्य अनुकूल, अधिकारी वर्ग से मित्रता, उद्योग में यश, वैभव, ऐश्वर्य, पापंचिक सुख, जमीन, घरबार, वाहन प्राप्ति।

द्वादश में केतु—राजकीय व मानसिक कष्ट, लोगों से निन्दा व अपमान, द्रव्यनाश, नेत्र पीड़ा, स्थानान्तर प्रवास, शारीरिक व मानसिक कष्ट।

केतु यदि उच्च राशि का हो व शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ फल तथा नीच राशि का हो तो अशुभ फल मिलेगा। प्रमाण शुभाशुभ ग्रहों के दृष्टि पर अवलंबित है।

शुक्र महादशा

लग्न में शुक्र—शरीर व विलास सुख, श्रीमान् लोगों से मित्रता लाभ, सुखी व लोकमान्य, यशस्वी, ऐश आराम प्राप्त।

द्वितीय में शुक्र—प्रथम सत्कर्म के लिये धन व्यय, स्त्री को कष्ट, उत्कर्षके लिये अनुकूल, दशा के अन्त में भरपूर द्रव्यलाभ, सन्मान, उद्योग में यश व सिद्धि।

तृतीय में शुक्र—वन्धु से सुख समाधान व उनका उत्कर्ष, काव्य व संगीत की रुचि, स्थानान्तर, प्रवास, उत्साहकारक प्रसंग।

चतुर्थ में शुक्र—मानसन्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि, अधिकार में तरक्की, राजद्वार में विजय, खेती, जमीन वाहन से फायदा व सुख कीर्ति का कारण होना।

पंचम में शुक्र—उद्योग धन्धा, व्यापार विद्या में यश, संतति सुख प्राप्त, बुद्धि अनुकूल, पराक्रम सिद्धि, दैविक अनुकूलता।

षष्ट में शुक्र—शरीरक्लेश, कार्यनाश, द्रव्य के विषय में चिन्ता, रोग वृद्धि, स्त्री पुत्र को आजार, प्रापंचिक अस्वस्थता।

सप्तम में शुक्र—स्त्री को गंडांतर, दुःखदायक प्रसंग, सांसारिक आपत्ति, गुल्म रोग का भय, द्रव्य की चिन्ता, उद्योग धन्धा में अनिश्चित।

अष्टम में शुक्र—शारीरिक, मानसिक, सांपत्तिक, राजकीय, औद्योगिक सब प्रकार से हितकारी, कष्टप्रद परिस्थिति, नुकसान, द्रव्यनाश, कार्यनाश, कौटुम्बिक आपत्ति।

नवम में शुक्र—राजसन्मान, उच्च अधिकारप्राप्त ऐश्वर्य, नौकर, वाहन सुख, स्त्री सुख, धर्म व परोपकारी कार्य, दैव अनुकूल।

दशम में शुक्र—विद्या व भरपूर धनलाभ, राजकारणी, मन्त्रिमण्डल के मुत्सद्दी लोगों में मान-मान्यता, श्रेष्ठत्व, व्यापार में उन्नति।

एकादश में शुक्र—राजसन्मान, पुत्र प्राप्ति, पदवी प्राप्ति, सुख, व्यापार में लाभ, यश, संतति व अनेक प्रकार के लाभ।

द्वादश में शुक्र—द्रव्यनाश, मातृवियोग, प्रापंचिक व सांपत्तिक संकट, शरीर रोग, मानसिक व्याधि, ऋणग्रस्त स्थिति, अपमान के प्रसंग।

राशि फल

मेष का शुक्र—उद्योग धन्धे में यश, समाधान, प्रवास, स्थानान्तर, चञ्चलता, स्त्री सुख सन्तोष, अनेक प्रकार के सुख प्राप्ति।

वृष का शुक्र—जमीन-जुमला, जायदाद, मकान की वृद्धि व लाभ, पशु-वाहन सुख, दयालु, परोपकारी, कन्या संततिं, धर्माचरणी।

मिथुन का शुक्र—विद्वान लोगों से मित्रता, ग्रन्थकर्ता, उत्साही, प्रतिष्ठा, कला कौशल की रुचि व उससे लाभ।

कर्क का शुक्र—अनेक प्रकार के उद्योग करने वाला, कार्यकुशल, व्यवसाय में पूर्ण अनुभव, उद्योगी, स्वावलम्बी।

सिंह का शुक्र—साहसी काम में यश, स्त्रियों से द्रव्य लाभ, पुत्रादि संततिका अल्प सुख, वाहन से पीड़ा।

कन्या का शुक्र—अनेक प्रकार के कष्ट, अल्प द्रव्य लाभ, उद्योग में अपयश, गुप्त रोग, स्त्री चिन्ता, शारीरिक क्लेश।

तुला का शुक्र—खेती की ओर अधिक ध्यान व लाभ, व्यापार से द्रव्यलाभ, संपत्तिवान, स्त्री-पुत्रादि सुख प्राप्त करनेवाला, व्यवसाय में श्रेष्ठत्व, शत्रुनाश, लोगों का नेता

वृश्चिक का शुक्र—प्रवासी, वाद-विवाद निपुण, कलह, परकार्य में रत, अविचारी, ऋण मुक्त, साहसी, कार्य में निपुण, वेधड़क।

धन का शुक्र—राजसन्मान, अधिकार वृद्धि में बाधा, भाग्यचिन्ता, दशा के मध्यभाग में सब प्रकार के सुख व संपत्ति में वृद्धि।

मकर का शुक्र—स्त्री को बुखार, संतति के विषय व्यग्रता, कफरोग, कौटुम्बिक चिन्ता, शत्रु का पराभव, सत्ता व अधिकार प्राप्ति, अन्य देश में वास, प्रवास, वाहन से त्रास।

कुम्भ का शुक्र—प्रगल्भ बुद्धि, कला कौशल में प्रवीण, संतति सुख, द्रव्यलाभ, उत्तम विद्या में यश, उद्योग धन्धा व व्यवसाय में उत्कर्ष व धनलाभ।

मीन का शुक्र—राजसन्मान, वैभव व सुख ऐश्वर्य प्राप्ति, उच्चाधिकार, राजमण्डल का मुख्य प्रधान, मंत्रिपद, श्रीमान्, प्रापंचिक, वाहन व नौकर-चाकर सुख, संतोष।

ऊपर लिखे हुए सामान्यतः ग्रहों के महादशा के फल हैं परन्तु प्रत्येक मनुष्य को उक्त फल का लाभ या हानि होना सम्भव नहीं है क्योंकि फलित यह जन्म कुण्डली के ग्रह स्थिति, दृष्टि, युति, अंशादि योग वगैरह पर सर्वस्व निर्भर है। साथ ही ग्रहों के दशा व उनके अन्तर्दशा के ग्रहों के स्थिति पर अवलंबित है। अतः यह फल कम-अधिक प्रमाण पर मिलना सम्भव है व अनेक बातों का विचारकर फलित वर्तना चाहिये। प्रत्येक ग्रह किस भाव व राशि में स्थित हैं और उनका फल ऊपर लिखे अनुसार ध्यान में लाने के पश्चात्, वर्तमान समय किस ग्रह की महादशा में कौन से ग्रह की अन्तर्दशा चालू है और उसका फल किस तरह मिलना सम्भव है इन सब बातों को विचार कर फलित वर्तने से पाठकों को सन्तोष होगा। अतः इसे अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। रवि से शुक्र तक प्रत्येक ग्रह के महादशा में किस तरह अन्तर्दशा ग्रह का फल मिलेगा, यह नीचे लिखा है।

रवि महादशा में अन्तर्दशा फल

रवि में रवि—धैर्य, ऐश्वर्य, बन्धु सुख, साहसी कार्य, सरकार-दरबार व लोगों पर छाप, उच्चाधिकार, राजमंत्री पद।

रवि में चन्द्र—अधिकार लाभ, व्यापार में यश, परदेश भ्रमण, श्रीमान् लोगों से फायदा, उत्तम द्रव्य योग, प्रापंचिक सुख व विरोधी लोगों का नाश।

रवि में मंगल—सुवर्ण रत्नादि की प्राप्ति, बलिष्ट परिस्थिति, शत्रुनाश, राजदरबार में प्रतिष्ठा, कीर्ति व वैभव की वृद्धि।

रवि में राहु—संशयग्रस्त परिस्थिति, औद्यौगिक पराधीनता, शरीर व्याधि, द्रव्य नाश, प्रतिकूल कार्य।

रवि में गुरु—विद्या में सन्मान, राजकीय क्षेत्र में यश, द्रव्यलाभ, अधिकार प्राप्ति, सज्जनों से मित्रता, संकट का नाश।

रवि में शनि—व्यग्रबुद्धि, सन्ताप, कार्य में विघ्न, संकट, स्त्री व संतति को पीड़ा, गुप्त शत्रु, विद्या में अपयश।

रवि में बुध—कफ-वात-पित्त से शरीर पीड़ा, लोक अनुकूल, धननाश, पापाचरण, अस्थिर मन।

रवि में केतु—चिन्ताजनक स्थिति, राजकीय व औद्योगिक अपयश, शारीरिक संकट, रोग वृद्धि, देशत्याग, मनोभंग, संतति नाश।

रवि में शुक्र—अशक्तता, शूलदोष, बहुत प्रवास, परदेश में वास, अतिसार रोग, द्रव्य का व्यय, प्रापंचिक सुख के लिये प्रतिकूल।

चन्द्रमहादशा में अन्तर्दशा फल

चन्द्र में चन्द्र—स्त्रीलाभ, सुख, ऐश-आराम, संततिलाभ, स्वजन से सम्मान, सांपत्तिक उन्नति, वस्त्रादि की समृद्धि।

चन्द्र में मंगल—रक्त दोष, पित्तविकार, बन्धु से कलह, वैर, अग्नि पीड़ा, भूमि-लाभ, वाहन सुख प्राप्ति, उत्साह।

चन्द्र में राहु—अनेक दुःखदायक प्रसंग, मानसिक त्रास, निरुत्साह, रोग से जर्जर, शत्रु पीड़ा, मानहानि, धन्धा व द्रव्य की हीन स्थिति।

चन्द्र में गुरु—शरीर सुख, स्त्री पुत्र प्रापंचिक सुखलाभ, मानसिक इच्छा की पूर्ति, विद्या में यश, राजद्वार में मान, धनसंचय, द्रव्यलाभ।

चन्द्र में शनि—शत्रुत्व, स्वजन से कलह, त्रास, अपमान, शोक, भय, कार्य में विलम्ब व विघ्न, वातविकार, पीड़ा।

चन्द्र में बुध—अधिकार, व्यापार, उद्योग धन्धा में प्रगति, गाय, वाहन सुख, धन व स्त्री सुख, नौकर सुख, आरोग्य शरीर।

चन्द्र में केतु—बन्धुनाश, संकट, द्रव्यनाश, दारिद्रय, विपत्ग्रस्त स्थिति।

चन्द्र में शुक्र—स्त्री सुख के लिये श्रेष्ठ, स्त्रियों की प्राप्ति व उनसे लाभ, संतति सुख, कन्या योग, व्यापार आदि के लिये अनुकूल समय।

चन्द्रमें रवि—सुख समाधान, रिपुनाश, अधिकारी से मित्रता, द्रव्यलाभ, उत्तम ऐश्वर्य, उच्च स्थिति, वादविवाद में यश।

मंगल महादशा में अन्तर्दशा फल

मंगल में मंगल—शौर्य, साहसी व कर्तव्यगार के काम में यश, सत्ता व अधिकार-प्राप्ति, आत्मविश्वास, शत्रुनाश, स्वजन विरोध, परस्त्री या वेश्या संग।

मंगल में राहु—शरीर कष्ट, उष्ण विकार, शस्त्र व चोर से भय, शत्रु से त्रास, नुकसान, धननाश, परदेशवास, आपत्ति, दुर्धर प्रसंग।

मंगल में गुरु—देव-ब्राह्मण सत्कार, तीर्थयात्रा, पुण्यकर्म, द्रव्यलाभ, उद्योग में यश, संतति सुख, राजा व अधिकारी वर्ग से पीड़ा।

मंगल में शनि—द्रव्य की अड़चन, नुकसान, उद्योग, व्यापार नौकरी में नीच स्थिति, दुःख, प्रापंचिक त्रास, संतति को कष्ट, संकट।

मंगल में बुध—खुले व गुप्त शत्रु से त्रास, नीच मानसिक स्थिति, स्थावर विषय का नुकसान, स्वजन से अपमान, अग्निभय।

मंगल में केतु—मृत्युसम पीड़ा, गंडान्तर योग, स्त्री व संतति को कष्ट, विजली या शस्त्र से घात, उद्योग व द्रव्य की विपरीत स्थिति, वियोग, दुःख।

मंगल में शुक्र—देशान्तर प्रवास, द्रव्य का व्यय, स्त्री को घातक, नीच जन की संगत, व्यसन, निराधार स्थिति।

मंगल में रवि—वाद विवाद युद्ध, द्रव्यलाभ, वाहन सुख, राजा से वैमनस्य, अल्प राजदण्ड।

मंगल में चन्द्र—संकट का नाश, अनेक प्रकार से धनलाभ, पुत्रलाभ, धनसञ्चय, स्त्री सुख, मित्र प्रेम, विषयादि सुख, भाग्योदय।

राहु महादशा में अन्तर्दशा फल

राहु में राहु—कुटुम्ब के सदस्य बन्धु वगैरह को अनिष्ट, पीड़ा, स्वजन नाश, द्रव्य का क्षय, परदेश में भाग्योदय।

राहु में गुरु—तीर्थयात्रा, पुण्यकर्म, साधु-सन्त का दर्शन, धार्मिक आचरण, विद्या में यश, पुत्र प्राप्ति, द्रव्यलाभ, अधिकारी वर्ग से मित्रता।

राहु में शनि—वात-पित्त विकार, आप्त वर्ग से अपमान, संकट, आप्त वर्ग नाश, राजकोप, प्रापंचिक कष्ट।

राहु में बुध—बन्धु का उत्कर्ष व सुख, आरोग्य, चिन्तानाश, तीव्रबुद्धि, अल्प कष्ट, बहुत लाभ, मित्रों से मदद, प्रापंचिक सुस्थिति।

राहु में केतु—भयंकर शारीरिक कष्ट, अपघात, गंडांतर, अपमृत्यु, द्रव्यनाश, राजकोप, स्त्री व संतति को साधारण कष्ट, नीच स्थिति।

राहु में शुक्र—स्त्रीलाभ सुख व उनसे द्रव्यलाभ, परस्त्री संबंध, द्रव्यसंचय, आपस में विरोध, व्यापार में कष्टार्जित द्रव्यलाभ।

राहु में रवि—द्रव्यहानि, ऋण योग, संतति को दुःख, वेआबरू, राजकीय संकट, अग्नि व चोरभय, पीड़ा।

राहु में चन्द्र—शत्रु की बाढ़, मित्रों का विरोध, स्वजन से नुकसान, द्रव्यनाश, प्रापंचिक त्रास, चारों ओर से चिन्ताजनक स्थिति।

राहु में मंगल—भयंकर हानि, स्त्री व संतति को अरिष्ट, लोकापवाद, देशान्तर, शरीरकष्ट, घातपात, निरुत्साह।

गुरु महादशा में अन्तर्दशा फल

गुरु में गुरु—उत्कर्ष वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति व संतति सुख, विद्या में यश, लोगों में श्रेष्ठत्व प्राप्त, सब प्रकार से सुख।

गुरु में शनि—नीच व्यसनी, दुष्ट लोगों की संगति, परस्त्री संबंध या वेश्यागमन, द्रव्यहानि, दुःखदायक प्रसंग, उद्योग का नाश।

गुरु में बुध—सत्कर्म से यश, दैविक चमत्कार, विद्वानों से मान, पुत्र प्राप्ति, योग-ज्ञान, मित्र व स्वजन में श्रेष्ठत्व प्राप्त।

गुरु में केतु—लोकमत के विरुद्ध, आपस में मतभेद, विरोध, चंचल, अस्थिरता, प्रवास, पुत्रादि से वियोग, बिना कारण त्रास, द्रव्य प्राप्ति कम।

गुरु में शुक्र—स्त्रियों के सम्बन्ध से द्रव्यनाश, स्त्री को कष्ट, कलह, वैमनस्य, नुकसान, प्रापंचकि व औद्योगिक सुख सामान्य।

गुरु में रवि—संतति की उन्नति, पुत्र प्राप्ति, श्रीमान् लोगों से मैत्री, विद्या प्रयुक्त अधिकार लाभ, राजसम्मान, ऐश्वर्य व सुख।

गुरु में चन्द्र—राजा, राजमंत्री या अधिकारी से मैत्री व उच्च अधिकार लाभ, शत्रुनाश, बहुमान, विजय, जमीन, गृह, नौकर सुख।

गुरु में मंगल—बलाढ्य शत्रु का नाश व अनुकूलता, कीर्तिदायक कार्य, श्रेष्ठ लाभ, स्त्री-पुत्रादि से सुख समाधान, आरोग्य, द्रव्यलाभ, उत्तम ऐश्वर्य, कर्तव्यगारी के कार्य में यश।

गुरु में राहु—श्रेष्ठ लोगों से शत्रुत्व, स्थानान्तर, भाईयों से विरोध, द्रव्य की खराबी, मृत्यु सम पीड़ा, गंडांतर का भय, संतति को घातक।

बुध महादशा में अंतर्दशा

बुध में बुध—आप्त वर्ग, मित्र, कुटुम्ब के सदस्यों की भेंट, वस्त्र, सुवर्ण, विद्या लाभ व यश, पुत्र लाभ, प्रापंचिक सुख, कला कौशल की रुचि।

बुध में केतु—रोग की वृद्धि, शरीर कष्ट, सन्ताप, मनोभंग, निरुत्साह, द्रव्य नाश, विपरीत बुद्धि, शोक, उद्योग व पराक्रम के लिये अहित।

बुध में शुक्र—सत्कर्माचरण, ईश्वरभक्ति, श्रद्धा, दान धर्म, छत्र-चामर आदि की प्राप्ति, कर्त्तव्य बुद्धि, कार्य में यश, संतति सुख, विद्या से मान-सन्मान, द्रव्यलाभ।

बुध में रवि—सब प्रकार के सुख, धन-धान्य की समृद्धि, ऐश्वर्य, उन्नति, राजसभा में प्रतिष्ठा, वक्तृत्व की प्रशंसा उत्साहकारक।

बुध में चन्द्र—स्थावर स्टेट, जमीन-जुमला की वृद्धि, द्रव्यदृष्टि से विशेष सुख, परोपकार के कार्य, सत्कृत्य के लिये धन का व्यय, देवालय, धर्मशाला का निर्माण।

बुध में मंगल—मस्तक व कान का रोग, पित्त प्रकोप, राजकाम में वाधा, शस्त्र से घात, स्त्री व संतति को अनिष्ट, मानसिक स्थिति अत्यन्त खराव।

बुध में राहु—गुप्त शत्रु व विरोधियों से नुकसान, धननाश, आप्तजन से कलह, दुःख, पीड़ा, अकस्मात् संकट, असत्याचरण, बुद्धिभ्रंश।

बुध में गुरु—उद्योग, नौकरी, व्यापार में वहुत कष्ट व अल्पलाभ, मनोभंग, धार्मिक वृत्ति, शत्रुभय, व्याधिग्रस्त स्थिति।

बुध में शनि—कला कौशल से लाभ के प्रसंग, द्रव्य सुख, मित्र प्रेम, उत्साह, स्त्री-लंपट, कामी, गुप्त कृत्य, पापकर्म के ओर ध्यान, असन्मित्र।

केतु महादशा में अन्तर्दशा का फल

केतु में केतु—अत्यन्त प्रेमी मनुष्य का मृत्यु, महान संकट व कष्ट, पुत्र व बुद्धि-नाश, लोक व राजनिन्दा, स्त्री कलह, दारुण स्थिति।

केतु में शुक्र—स्त्री को रोग व सुखके लिये अनिष्ट, प्रिय मित्र व स्वकीय जन से शत्रुत्व, उष्ण विकार, पराधीनता, ज्वरवाधा, नीच स्थिति।

केतु में रवि—अधिकारी से वैर, उद्योग धन्धे में विघ्न, प्रवास में त्रास, परदेश-वास, शारीरिक संकट की फिक्र।

केतु में चन्द्र—दुर्बुद्धि, दुष्ट संगति से हानि, अपव्यय, वहुत प्रयत्न से अल्पलाभ, दुर्दशा, संकट।

केतु में मंगल—उष्ण विकार से शरीर व्याधि, संतति के लिये अनिष्ट, धन्धा में नुकसान, साहस काम में अपयश, दुष्ट संगति से हानि।

केतु में राहु—स्त्री को घातक, शरीर को भारी धोखा, मन को दुःख, हीन स्थिति, देशत्याग, शत्रु से सर्वनाश, सुख की कमतरता।

केतु में गुरु—ईश्वरनिष्ठा, दया, शान्त वृत्ति, उच्च द्रव्य स्थिति, कीर्ति-कारक कार्य, परोपकार, सत्याचरण, सुख समाधान पूर्ण।

केतु में शनि—दुष्ट कल्पना, आचार-विचार, क्षुद्र वृत्ति, दूसरों के उत्कर्ष से दुःख, द्रव्य चिंता, सब प्रकार से चिंता व मन व्यग्र।

केतु में बुध—धनलाभ किन्तु अपव्यय, उद्योग में विघ्न, चञ्चलबुद्धि, मानसिक दुःख, बान्धवादि से मुलाकात, बुद्धि में भ्रम, व्यापार में लाभ, यश, नौकरी में सामान्य लाभ।

शुक्र महादशा में अन्तर्दशा फल

शुक्र में शुक्र—सुन्दर स्त्रियों की प्राप्ति व उत्तम स्त्री सुख, धर्म बुद्धि, कीर्ति, कलाकौशल व गायन में रुचि, व्यापार में यश, विपुल धन प्राप्ति।

शुक्र में रवि—रोगग्रस्त शरीर व विपत्ति, कारागृह वास व बन्धन का भय, स्त्री को शरीर कष्ट, संतति का उत्कर्ष, विद्या में यश, भाग्यवृद्धि।

शुक्र में चन्द्र—स्त्री सुख, स्त्रियों के मैत्री से द्रव्यलाभ व सुख, व्यापार में पूरा लाभ, प्रापंचिक सुख साधारण, प्रतिकूल लोकमत।

शुक्र में मंगल—क्षीण प्रकृति, रक्तदोष व नाश, अशक्तता, स्त्री को मारक, स्त्रियों पर छाप, दुष्ट संगत, साहसी काम, द्रव्य का व्यय।

शुक्र में राहु—दुर्जन व नीच लोगों से त्रास, प्रत्येक क्षण अपमान, बेआबरू, द्रव्यनाश, कर्ज, दुःख व संकट।

शुक्र में गुरु—राजदरबार में प्रतिष्ठा, विद्या व अधिकार प्राप्ति, धनलाभ व संग्रह, स्थावर स्टेट योग, ऐशोआराम, कीर्ति, पुत्र, वाहन, नौकर, लाभ व सुख।

शुक्र में शनि—वृद्ध स्त्रियों से सम्बन्ध, अनीतिमान् बातें, पुत्र को त्रास, स्त्री को कष्ट, अपकीर्ति, व्यसनी लोगों की संगति, द्रव्यलाभ।

शुक्र में बुध—स्थिर बुद्धि, धनलाभ पूर्ण, मानसिक इच्छा की पूर्ति, स्त्री सुख, यश लाभ, धन, धान्य, समृद्धि, ऐश्वर्य प्राप्ति व सब प्रकार के सुख।

शुक्र में केतु—शरीर कष्ट, असमाधान चित्त, अनेक प्रकार का भय, शत्रु से संकट, राजकीय काम में अपयश, विपत्ति परन्तु द्रव्यलाभ साधारण।

शनि महादशा में अंतर्दशा का फल

शनि में शनि—शारीरिक कष्ट, वात विकार, दुःखदायक प्रसंग, मनोभंग, आलस्य, निरुत्साह, स्वजननाश, परदेशवास, उद्योग हानि, द्रव्य की कमतरता, ऋणग्रस्त स्थिति।

शनि में बुध—व्यापार व उद्योग में द्रव्यलाभ, नौकरी में विजय, उत्कर्ष, अधिकार लाभ, स्त्री पुत्रादि सुख, संतति योग, शत्रु पर विजय, वाहन सुख।

शनि में केतु—रक्त दोष, वातपित्त रोग, राजकीय बन्धन का भय, द्रव्य नाश, अपघात का प्रसंग, दुःखदायक प्रसंग, दुखदायक परिस्थिति।

शनि में शुक्र—आप्त मित्र, बन्धु वर्ग अनुकूल, स्त्री पुत्रादि सुख व धन प्राप्ति, समाधान, ऐशोआराम, शत्रुनाश, सब पर छाप।

शनि में रवि—स्त्री पुत्रादि कुटुम्बियों को घातक, धनहानि, लोकापवाद, मृत्यु सम्भव, अनिश्चित परिस्थिति, उद्वेगजनक घटना।

शनि में चन्द्र—स्त्री को गंडान्तर, रोग वृद्धि, दारुण यातना, गुह्यरोग, गुप्त शत्रु से नुकसान, संतति कष्ट, विरह, अन्य स्त्री सम्भव।

शनि में मंगल—बन्धु द्वेष, कलह, संतति के विषय में दुःख, मनोभंग, उद्योग में कष्ट व अल्पलाभ, प्रापंचिक सुख की चिन्ता।

शनि में राहु—बन्धु द्वेष, कलह, संतति के विषय में दुःख, मनोभंग, उद्योग में कष्ट व अल्पलाभ, प्रापंचिक सुख की चिन्ता।

शनि में गुरु—देव गुरु भक्ति, पूजन, सुख, संकटनाश, नये कार्य आरम्भ, स्त्री पुत्रादि सुख, द्रव्य, स्थान, नौकर लाभ व सुख।

अन्तर्दशा का काल जानने की रीति

किसी ग्रह के महादशा काल में अंतर्दशा का काल जानना हो तो महादशा का वर्ष काल ध्यान में लाकर उसी ग्रह के महादशा काल से गुण कर विंशोत्तरी महादशा के पूर्ण काल अर्थात् १२० वर्ष से भाग दो व शेष जो अंक आवे उसे महीने व दिन के अंक से गुणा कर १२० से भाग दो तो उत्तर अन्तर्दशा का समय सिद्ध होगा। जैसे राहु के महादशा में चन्द्र अन्तर्दशा का काल कितना होना चाहिये, यह जानना हो तो राहु महादशा का काल १८ वर्ष और चन्द्र महादशा का काल १० वर्ष है इसलिये १८ गुणे १०=१८०।

१२०) १८० (१
१२०
६०
१२
१२०) ७२० (६
७२०
×

एक वर्ष छः माह चन्द्र की अन्तर्दशा का काल आया। इसी तरह से दूसरे ग्रहों के अन्तर्दशा का काल जाना जा सकता है।

जन्म कुण्डली से यदि यह सिद्ध होता हो कि शनि का अशुभ फल मिलना निश्चित है तो शनि के अन्तर्दशा काल में कब मिलना सम्भव है यह सूक्ष्म विदशा काल से विचार करना योग्य होगा। इसी तरह किसी भी शुभ या अशुभ ग्रह के फल का निर्णय करने से योग्य फल का मिलना सम्भव है। अतः अन्तर्दशा में विदशाकाल का कोष्टक यहां सुज्ञ पाठकों के लाभार्थ प्रथम लिखना हम आवश्यक समझते हैं।

सूय विंशोत्तरी महादशांतर्गत–अन्तर्दशा में विदशा काल का कोष्टक

सूर्य में सूर्य अन्तर्दशा मध्ये विदशा

	सू.	चं.	मं.	रा	गु.	श.	वु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घटी	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य में चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घटी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य में मंगल अंतर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घटी	२१	५४	४८	५७	५१	१०	०	१८	३०

सूर्य में राहु अन्तर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घटी	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य में गुरु अन्तर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घटा	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य में शनि अंतर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घटी	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य में बुध अन्तर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घटी	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य में केतु अन्तर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घटी	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य में शुक्र अन्तर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

चन्द्र में चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	मं	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घटी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र में मंगल अन्तर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घटी	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र में राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घटी	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

चन्द्र में गुरु अंतर्दशा में विदशा

	गु.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र में शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घटी	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र में बुध अन्तर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घटी	१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र में केतु अन्तर्दशा में विदशा

	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घटी	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र में शुक्र अन्तर्दशा में विदशा

	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र में रवि अन्तर्दशा में विदशा

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घटी	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

मंगल महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

मंगल में मंगल अंतर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

मंगल में राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
माह	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घटी	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

मंगल में गुरु अंतर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.
माह	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

मंगल में शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु	के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	गु.
माह	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२६	२३
घटी	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

मंगल में बुध अन्तर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	गु.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घटी	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

मंगल में केतु अन्तर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	च.	मं.	रा.	गु.	श.	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०
घटी	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४६
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

मंगल में शुक्र अन्तर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

मंगल में रवि अंतर्दशा में विदशा

	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

मंगल में चन्द्र अन्तर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु	श.	बु.	के.	शु.	सू.
माह	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

राहु में राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
माह	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घटी	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु में गुरु अन्तर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	म.	रा.
माह	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घटी	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु में शनि अंतर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	गु.
माह	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घटी	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु में बुध अन्तर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घटी	३[illegible]	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु में केतु अंतर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
माह	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
घटी	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु में शुक्र अंतर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
माह	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु में सूर्य अन्तर्दशा में विदशा

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
माह	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घटी	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु में चन्द्र अन्तर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
माह	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घटी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

राहु में मंगल अंतर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	च.
माह	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घटी	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु महादशांतर्गत अन्तर्दशा में विदशा काल

गुरु महादशान्तर्गत गुरु अन्तर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.
माह	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु महादशान्तर्गत शनि अंतर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु
माह	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु महादशान्तर्गत बुध अंतर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
माह	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	६
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु महादशान्तर्गत केतु अन्तर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु
माह	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु महादशान्तर्गत शुक्र अंतर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	म	रा.	गु.	श.	बु.	के.
माह	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु महादशांतर्गत सूर्य अंतर्दशा में विदशा

	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
माह	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु महादशान्तर्गत चन्द्र अन्तर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
माह	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु महादशांतर्गत मंगल अंतर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
माह	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घटी	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु महादशान्तर्गत राहु अन्तर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
माह	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घटी	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

शनि महादशांतर्गत शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.
माह	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घटी	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शनि महादशांतर्गत बुध अंतर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	चं	मं.	रा.	गु.	श.
माह	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घटी	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनि महादशांतर्गत केतु अंतर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
माह	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घटी	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनि महादशांतर्गत शुक्र अंतर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
माह	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि महादशांतर्गत रवि अंतर्दशा में विदशा

	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
माह	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि महादशांतर्गत चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
माह	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि महादशांतर्गत मंगल अंतर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
माह	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनि महादशांतर्गत राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
माह	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि महादशांतर्गत गुरु अंतर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.
माह	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

बुध महादशांतर्गत बुध अंतर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	र.	च.	मं.	रा.	गु.	श.
माह	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	३९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

बुध महादशांतर्गत केतु अंतर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	गु.	श.	बु.
माह	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२६	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

बुध महादशांतर्गत शुक्र अंतर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
माह	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध महादशांतर्गत सूर्य अन्तर्दशा में विदशा

	र.	चं.	मं	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
माह	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध महादशांतर्गत चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	म.	रा.	गु.	श	बु.	के.	शु.	र.
माह	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध महादशांतर्गत मंगल अन्तर्दशा में विदशा

	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
माह	०	१	१	१	१	०	१	०	१
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

बुध महादशांतर्गत राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
माह	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध महादशांतर्गत गुरु अन्तर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.
माह	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
वटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध महादशांतर्गत शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	च.	म.	रा.	गु.
माह	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६
घटी	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतु महादशांतर्गत अंतर्दशा में विदशा काल

केतु महादशान्तर्गत केतु अंतर्दशा में विदशा

	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	गु.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतु महादशान्तर्गत शुक्र अन्तर्दशा में विदशा

	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु महादशान्तर्गत रवि अंतर्दशा में विदशा

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु महादशान्तर्गत चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु.	श	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु महादशान्तर्गत मंगल अन्तर्दशा में विदशा

	मं	रा.	गु.	श.	बु.	के	शु	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

केतु महादशान्तर्गत राहु अन्तर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घटी	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु महादशान्तर्गत गुरु अन्तर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घटी	१८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु महादशान्तर्गत शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घटी	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतु महादशान्तर्गत बुध अन्तर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घटी	३४	४	३०	११	४५	४९	३३	३६	३१
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र महादशांतर्गत अन्तर्दशा में विदशा काल

शुक्र महादशान्तर्गत शुक्र अन्तर्दशा में विदशा

	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशान्तर्गत सूर्य अंतर्दशा में विदशा

	र.	चं.	मं.	रा.	गु	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशान्तर्गत चन्द्र अंतर्दशा में विदशा

	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशान्तर्गत मंगल अन्तर्दशा में विदशा

	मं.	रा	गु.	श.	बु	के.	शु.	र.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घटी	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र महादशान्तर्गत राहु अंतर्दशा में विदशा

	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशांतर्गत गुरु अंतर्दशा में विदशा

	गु.	श.	बु.	रा.	के.	शु	र.	चं.	मं.
मास	४	५	४	४	१	५	१	२	१
दिन	८	२	१६	२४	२६	१०	१८	२०	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशान्तर्गत शनि अन्तर्दशा में विदशा

	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घटी	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र महादशांतर्गत बुध अंतर्दशा में विदशा

	बु.	के.	शु	र.	च.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घटी	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र महादशान्तर्गत केतु अन्तर्दशा में विदशा

	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घटी	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

ऊपर लिखे अनुसार ग्रहों के महादशा काल, अंतर्दशा काल और विदशा काल का वर्णन किया है। प्रत्येक मनुष्य के आयुष्य में ऐसा भला या बुरा समय आता है जिसका स्मरण उसे आजन्म तक रहना स्वाभाविक है। राजा से रंक तक प्रत्येक मनुष्य के जन्म कुण्डली में नवग्रह का प्रभाव ही दीखता है। परन्तु एक श्रीमान् दूसरा भिखारी, एक ऐश्वर्य के शिखर पर बैठा हुआ और दूसरा अन्न के दाने के लिये तरसता दिखाई देता है इसका मुख्य कारण पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का फल है, जो प्रारब्ध के रूप में अपने साथ लाते हुये ठीक उसी शुभ या अशुभ समय, नक्षत्र तिथि-वार, घटी, पल पर जन्म लेता है जिसके आधार पर किसी को आजन्म सुख, किसी को सुख व दुख व किसी को आजन्म दुःख ही मिला करता है। यह उसके पूर्वजन्म कृत पुण्य व पाप कर्मों का फल है। प्रारब्ध की प्राप्ति ईश्वर से नहीं अपने कर्मों से होती है। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये, विद्वानों ने इस सम्वन्ध में कहा है कि—

अपने ही पूर्व जन्म कर्मों के फल मनुज को आज मिल रहे।
संसार के सब दुःख सुख इन्हीं के वल आज सदा भोग रहे॥
मन मेरा दुःख से व्याकुल है प्रभु दिल कैसे तुम्हें वताऊँ मैं।
तुम तो अंतर्यामी हो प्रभु अव कैसे तुम्हें समझाऊँ मैं॥
मेरे कसूरों को माफ करो प्रभु यही हाथ जोड़ विनती मेरी है।
मुझ पर दया करो या न करो यह मर्जी अब तुम्हारी है॥
हे ब्रह्मा हे विष्णु हे शंकर जी भगवान।
रक्षा करो हमारी प्रभु तुम हो पूर्ण व दयानिधान॥
अमृत व विष दोनों सागर में रहते हैं एक साथ।
मंथन का अधिकार है सबको, पर फल है प्रभु तुम्हारे हाथ॥

नैसर्गिक-दशा

ऊपर लिखे हुए महादशा, अंतर्दशा व विदशा के अतिरिक्त वृहज्जातक ग्रन्थ में नैसर्गिकदशा का काल भिन्न रूप से लिखा गया है, जैसे—

१—जन्म दिन से १ वर्ष तक, चन्द्र दशा।
२—१ वर्ष से ३ वर्ष तक, मंगल दशा।
३—३ वर्ष से १२ वर्ष तक, बुध दशा।
४—१२ वर्ष से ३२ वर्ष तक शुक्र दशा।
५—३२ वर्ष से ५० वर्ष तक गुरु दशा।
६—५० वर्ष से ७० वर्ष तक सूर्य दशा।
७—७० वर्ष से १२० वर्ष तक शनि दशा।

विंशोत्तरी महादशा का काल १२० वर्ष हमारे त्रिकालज्ञ महर्षियों ने मान्य किया

है, परन्तु इस आयु का मनुष्य वर्तमान समय में क्वचित ही मिलेगा। अतः आयुष्य मर्यादा का विचार कर इसका उपयोग करना उत्तम होगा। जैसे—

१—नैसर्गिक दशा और विंशोत्तरी महादशा व अन्तर्दशा का फल उत्तम, मध्यम या अनिष्ट मिलना स्वाभाविक है।

२—फलित वर्तते समय ग्रहों के भाव, दृष्टि, परस्पर सम्बन्ध, योग आदि का पूर्व में विचार करना चाहिये।

जन्म कुण्डली में यदि गुरु बलवान व शुभ फल देने वाला हो अर्थात् किसी अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो नीचे लिखे अनुसार वयोवर्ष से शुभ फल मिलना आरम्भ होता है।

१—गुरु १६ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
२—रवि २२ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
३—चन्द्र २४ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
४—शुक्र २५ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
५—मंगल २८ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
६—बुध ३२ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
७—शनि ३६ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
८—राहु ४२ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।
९—केतु ४८ वर्ष की आयु से उत्तम फल मिलेगा।

दशाफल में यह काल उन्नति व भाग्योदय के लिये अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिये क्योंकि किसी दशा का पूर्ण प्रभाव पड़ना तो असम्भव है। यदि शुभ ग्रह की दशा हो तो अधिक श्रेष्ठ फल मिलना सम्भव है। १-६-८ भाव में पाप ग्रह हो अथवा पाप ग्रह की दृष्टि हो व जन्म लग्न स्वामी निर्बल हो तो शरीर को आरोग्य सुख मिलना कठिन है। रवि-मंगल की इन स्थानों में युति हो तो रक्त दोष, पित्त-प्रकोप, उष्णता के विकार, रक्तनाश होने का रोग होगा। मंगल हो तो आपरेशन का प्रसंग आवेगा। चन्द्र, बुध, शुक्र से अशुभ सम्बन्ध हो तो शीत-ज्वर विकार, शुक्र से शुक्रदोष व गुह्य पीड़ा, गुरु से कफ विकार, शनि, राहु, केतु से त्रिदोष विकार उत्पन्न होंगे व दशा समाप्त होते ही कष्ट निवारण होगा। जन्म कुण्डली में शनि यदि उच्च व शुभ फलदायी हो तो वह मनुष्य लोहे का व्यापार, हीन सेवा, छापाखाना का धन्धा या वकालत का पेशा अपना कर लाभ करके उन्नति करेगा। संपत्ति व द्रव्ययोग का विचार करते समय २-५-९-११ स्थान में शुभाशुभ ग्रहों के युति व दृष्टि का विचार अवश्य करना चाहिये। जन्म समय रवि व चन्द्र के द्वितीय स्थान में ग्रह हो तो वह धनयोगकारक कहलाता है। धन्धा या व्यवसाय सम्बन्धी विचार करना हो तो दशम स्थान के ग्रह,

दशमभाव का स्वामी व रवि के स्थिति का जन्म कुण्डली में विचार करना चाहिये। वे यदि शुभ ग्रह व जोरदार हों तो उनके दशा में व्यापार की स्थिति अति श्रेष्ठ रहेगी तथा द्रव्य लाभ पूर्ण होकर पैसे की कमतरता से मनुष्य मुक्त रहेगा। यदि वह पाप ग्रह व दशमाधिपति से अशुभ योग करता हो तो व्यापार में वड़ी विकट स्थिति निर्माण होगी व दशा के अन्त समय तक यह दुर्धर प्रसंग कायम रहेगा। संकट काल समाप्त होकर भाग्योदयकाल कब आरम्भ होगा इसका विचार करना हो तो लग्न पंचम, नवम व दशम भाव में स्थित ग्रह विशेष लाभदायक कहलाते हैं। अतः जन्म कुण्डली में इनकी स्थिति, युति, दृष्टि, शुभ या अशुभ ग्रह से है तथा दशा, अन्तर्दशा, व विदशा के स्वामी से ऊपर लिखे हुये चारों भाव से शुभाशुभ सम्बन्ध है अथवा नहीं इसका विचार करने से ही उचित फल मिलना सम्भव है।

अष्टोत्तरी दशा

अष्टोत्तरी दशा के अनुसार १०८ वर्ष का काल निर्णय (आयुष्य) माना गया है। इस दशा का क्रम व वर्षांक विंशोत्तरी दशा से भिन्न है। जैसे—

१—रवि ६ वर्ष, २—चन्द्र १५ वर्ष, ३—मंगल ८ वर्ष, ४—बुध १७ वर्ष, ५—शनि १० वर्ष, ६—गुरु १९ वर्ष, ७—राहु १२ वर्ष, ८—शुक्र २१ वर्ष, कुल योग १०८ वर्ष।

प्रत्येक महादशा में नक्षत्र, काल व अंतर्दशा कोष्टक

१—सूर्य महादशा—६ वर्ष, नक्षत्र—आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा। एक नक्षत्र की १॥ वर्ष की अन्तर्दशा।

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	१	०	१
माह	४	१०	५	११	६	०	८	२
दिन	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

२—चन्द्र महादशा—१५ वर्ष, नक्षत्र—मघा, पूर्वा, उतरा। एक नक्षत्र ५ वर्ष की अंतर्दशा।

ग्रह	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.
वर्ष	२	१	२	१	२	१	२	०
माह	१	१	४	४	७	८	११	१०
दिन	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

३—मंगल महादशा ८ वर्ष, नक्षत्र—हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा। प्रत्येक नक्षत्र की दो वर्ष अन्तर्दशा।

ग्रह	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.
माह	०	१	०	१	०	१	०	१
दिन	७	३	८	४	१०	६	५	१
घटी	३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०
पल	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

४—बुध महादशा—१७ वर्ष, नक्षत्र—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल। एक नक्षत्र की पांच वर्ष आठ महीना अन्तर्दशा।

ग्रह	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.
वर्ष	२	१	२	१	३	०	२	१
माह	८	६	११	१०	३	११	४	३
दिन	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
घटी	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०

५—शनि महादशा—१० वर्ष, नक्षत्र—पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण। एक नक्षत्र की २॥ वर्ष अन्तर्दशा।

ग्रह	श.	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.
वर्ष	०	१	१	१	०	१	०	१
माह	११	९	१	११	६	४	८	६
दिन	३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
घटी	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

६—गुरु महादशा—१९ वर्ष, नक्षत्र—धनिष्ठा, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा। एक नक्षत्र की ६ वर्ष ४ माह अंतर्दशा।

ग्रह	गु.	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.
वर्ष	३	२	३	१	२	१	२	१
माह	४	१	८	०	७	४	११	९
दिन	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
घटी	२०	०	०	०	०	४०	००	२०

७—राहु महादशा—१२ वर्ष, नक्षत्र—उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी। एक नक्षत्र की तीन वर्ष अन्तर्दशा।

ग्रह	रा.	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.
वर्ष	१	२	०	१	०	१	१	२
माह	४	४	८	८	१०	१०	१	१
दिन	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

८–शुक्र महादशा–२१ वर्ष, नक्षत्र–कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष। एक नक्षत्र की सात वर्ष अन्तर्दशा।

ग्रह	शु.	र.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.
वर्ष	४	१	२	१	३	१	३	२
माह	१	२	११	६	३	११	८	४
दिन	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

अष्टोतरी दशा में केतु ग्रह का काल माना नहीं जाता, यह ध्यान रहे। अतः नवग्रहों के अन्तर्दशा का काल यहाँ न लिखकर केवल आठ ग्रहों के अन्तर्दशा का वर्णन किया है। अष्टोत्तरी दशा के फलित का विचार, महादशा व अन्तर्दशा ग्रहों पर निर्भर है व विंशोत्तरी दशा में दिये हुये फलित के अनुसार जन्म कुण्डली के ग्रह, भाव, युति, दृष्टि, ग्रहों के शत्रुता, मित्रता सम्बन्ध आदि का पूर्ण विचार व महादशा, अन्तर्दशा व विदशा का भी विचार करना आवश्यक है।

योगिनी दशा

योगिनी आठ हैं। उनके नाम मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा व संकटा है। उनकी दशा जानने की रीति यह है कि जन्म समय जो भी नक्षत्र हो उसमें तीन का अंक मिलाने या जोड़ने से जो अंक आवे उसे आठ से भाग दो व शेष १ से ८ तक आने पर क्रम से मंगला से संकटा की दशा जानना। जैसे १ शेष रहा तो मंगला, २ रहे तो पिंगला इत्यादि। योगिनी दशा के एक फेरे में ३६ वर्ष होते हैं व पुनः क्रम से वही दशा जानना। उदाहरण—किसी का नक्षत्र विशाखा है तो १६ वें वर्ष समझना इसमें ३ मिलाने से १९ आया व आठ से भाग देने पर शेष तीन बचा। तीसरी दशा धान्या की जानना इसलिये जन्म समय धान्या की दशा है, यह समझना। इसकी अन्तर्दशा जानने की रीति, भुक्त व भोग्य वर्ष यह है कि जैसे—पिंगला के महादशा में धान्या की अन्तर्दशा जानने के लिये पिंगला के दो वर्ष, धान्या के ३ वर्ष व कुल दशा की संख्या ३६ है। इसे त्रैराशिक रीति से निकालो यानी ३६ में ३ वर्ष तो दो वर्ष में कितना आयेगा। ६ वर्ष के महिने बनाओ, ६ गुणे बारह बरावर ७२ महीने हुये इसे ३६ से भाग देने पर दो आया। यह पिंगला के महादशा में धान्या के अन्तर्दशा का काल जानना व इसका कोष्ठक पीछे दिया है। इस महादशा में मंगला, धान्या, भद्रिका व सिद्धा शुभफलदायी और पिंगला, भ्रामरी, उल्का व संकटा की दशा अशुभफलदायी है यह समझना।

योगिनी के महादशा व अन्तर्दशा का कोष्टक

१–मंगला दशा एक वर्ष–अन्तर्दशा

योगिनी	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

२–पिंगला दशा दो वर्ष, अन्तर्दशा

योगिनी	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	१	२	२	३	४	४	५	०
दिन	१०	२	२०	१०	१	२०	१०	२०

३–धान्या दशा तीन वर्ष, अन्तर्दशा

योगिनी	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	३	४	५	६	७	८	१	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

४–भ्रामरी दशा चार वर्ष, अन्तर्दशा

योगिनी	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	५	६	८	९	१०	१	२	४
दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

५–भद्रिका दशा पाँच वर्ष, अन्तर्दशा

योगिनी	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.
वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०
मास	८	१०	११	१	१	३	५	६
दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०

६–उल्का दशा छः वर्ष, अन्तर्दशा

यौगिनी	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०
मास	०	२	४	२	४	६	८	१०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

७–सिद्धा दशा सात वर्ष, अन्तर्दशा

यौगिनी	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१
मास	४	६	२	४	७	९	११	२
दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

८–संकटा दशा आठ वर्ष, अन्तर्दशा

यौगिनी	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१
माह	९	२	५	८	१०	१	४	६
दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

अशुभ ग्रहों के शान्ति का उपाय

अशुभ ग्रहों के अनिष्ट फल को घटाने या हटाने के लिये हमारे त्रिकालदर्शी महर्षियों ने शान्ति का विधान निश्चित किया है। अतः जन्म कुण्डली में जो ग्रह अशुभ व हानिप्रद हो उसका जप, अनुष्ठान, उपवास व दान करना आवश्यक है। यह जपादि करना श्रेष्ठ व शीघ्र फलदायी है परन्तु यदि कोई सज्जन न कर सकें तो उसे विद्वान व कर्मनिष्ठ ब्राह्मण द्वारा कराना उत्तम होगा। ग्रहों के शांति के लिये रत्न धारण करना, व्रत करना, मंत्र जपना व दान करना आदि के विषय निम्नलिखित हैं।

नव ग्रहों के दान, रत्न धारण व जपसंख्या

क्र०सं०	ग्रह	रत्न	शास्त्रोक्त मन्त्र	जपसंख्या	दानादि वस्तु
१	सूर्य	माणिक	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।	७०००	सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फल, लाल चन्दन, केशर, मूंगा, लाल गाय ।
२	चन्द्र	मोती	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सःचन्द्रमसे नमः ।	११०००	सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद फूल, सफेद चन्दन, कपूर, सफेद गाय या बैल ।
३	मंगल	मूंगा	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ।	१००००	सोना, ताम्बा, गुड़, घी, लालवस्त्र व फूल केशर, कस्तूरी ।
४	बुध	पन्ना	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।	९०००	सोना, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र कपूर, हाथीदांत, शस्त्र, फल ।
५	गुरु	पुखराज	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ।	१९०००	सोना, कांसा, घी हलदी, पीला फूल, चना की दाल, घोड़ा ।
६	शुक्र	हीरा	ॐ द्रां द्रीं द्रौं शुक्राय नमः ।	१६०००	सोना, चांदी, चावल, दूध, दही, सफेद फूल, वस्त्र, चन्दन, सफेद घोड़ा ।
७	शनि	नीलम	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः ।	२३०००	सोना, लोहा, उड़द, कुल्थी, तेल, काला-वस्त्र व फूल, भैंस, काली गाय, खड़ाऊँ ।
८	राहु	गोमेद	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।	१८०००	सोना, सीसा, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला कम्बल, काला फूल, सूप, काला घोड़ा
९	केतु	लहसुनियां	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः ।	१७०००	सोना, लोहा, तिल, तेल, अष्ट धातु, नारियल, कम्बल, बकरा, धूम्र रंग का कपड़ा व फूल ।

हमारे देश में रत्न धारण करने की प्रथा हजारों वर्ष पूर्व से चली आ रही है क्योंकि इनके धारण करने से ग्रहों की पीड़ा, दुष्टजनों की नजर तथा पाप व दुर्भाग्य से ग्रसित व्यक्ति को अवश्य शान्ति मिलती है। शुक्रनीति और भावप्रकाश ग्रन्थों के अनुसार रत्नों का असर ग्रहों पर पड़ता है और मनुष्य को शान्ति मिलती है।

१—माणिक का रंग लाल है। २—मोती निर्मल सफेद रंग का है। ३—मूंगा या प्रवाल पके कुन्दरू के रंग का लाल, गोल, चिकना, चमकदार फीका, असली मूंगा का रंग है। ४—पन्ना इसे हरितमीठा व मरकतमणि भी कहते हैं। ५—पोखराज इसे पीतमणि भी कहते हैं। रंग पीला, सोने के समान झुकने वाला, पीला रंग का असली होता है। ६—हीरा सफेद, लाल, पीला व काला, इसमें सफेद चमकदार हीरा श्रेष्ठ माना गया है। ७—नीलम इसे नीलमणि भी कहते हैं। इसका रंग नीला या आसमानी है व शुद्ध नीलम धारण करते ही अपना प्रभाव दिखाता है और यदि वह अशुभ फलदायी हो तो तुरन्त वापस कर दूसरा प्राप्त कर शनिवार को धारण करना चाहिये। तीन दिन के अन्दर ७२ घण्टे में यदि इस रत्न ने शुभ या अशुभ फल न दिखाया तो उसे धारण करना उचित नहीं है। प्रभावशाली रत्न धारण करना उचित है। ८—गोमेद का रंग गोमूत्र के समान लाल, पीला मिश्रित होता है। ९—लहसुनियां इसे वैदूर्यमणि भी कहते हैं। बिल्ली के आँखों के समान कांतियुक्त और इसमें कुछ लकीरें भी होती हैं।

ऊपर दिये हुए रत्नों में तुरन्त शुभ या अशुभ प्रभाव दिखाने वाला रत्न नीलम है जो धारण करते ही अधिक से अधिक ७२ घण्टे के भीतर अपना शुभ या अशुभ प्रभाव दिखाने का सामर्थ्य रखता है। इसलिये इस रत्न के शुद्धि के प्रति विशेष ध्यान देना नितांत आवश्यक है। यदि रत्न में लकीर या जाला हो तो वह अशुभ फल-दायी समझना चाहिये। इसे वापिस लेना और बदले में दूसरा देना इस शर्त पर ही इस रत्न का क्रय होता है।

ग्रह पीडा निवारणार्थ उपाय

मनुष्य के जीवन में हानि व लाभ यह सब ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति पर अवलंबित है। अतः प्रत्येक समंजस मनुष्य को चाहिये कि अशुभ ग्रहों की शान्ति के लिये उनके मन्त्रों का जप व दान कर उनके प्रतिकूल प्रभाव को अनुकूल करने का भरसक प्रयत्न करें। ग्रहों का जप स्वयं करने से प्राप्त संकट का निवारण होना निश्चित है। ग्रहों के शांति प्रीत्यर्थ जो सज्जन ब्राह्मण को दक्षिणा व भोजन देने के लिये असमर्थ हैं उन्हें स्वयं ग्रहों के मंत्रों का जप, स्तोत्र पाठ व ईश्वर को भक्तिपूर्वक नमस्कार निर्विकार रूप से करने से उन्हें ग्रह की पीड़ा न होगी इसमें सन्देह नहीं। जन्म कुण्डली में अनिष्ट स्थान में यदि ग्रह हो तो उसके रत्न धारण करने से भी पीड़ा कम होने का प्रभाव पाठकों को मिलेगा व प्रत्येक ग्रहों के रत्न का वर्णन नीचे अनुसार हैं। जैसे—

ग्रह	रत्न	ग्रह	रत्न	ग्रह	रत्न
सूर्य	माणिक	चन्द्र	मोती	मंगल	मूंगा
बुध	पन्ना	वृहस्पति	पुखराज		
शुक्र	हीरा	शनि	नीलम		
राहु	गोमेदक	केतु	लहसुनियां		

सुखसम्पन्न सज्जन यदि नव ग्रहों के रत्नों की अंगूठी धारण करना चाहते हों तो वह अंगूठी नीचे लिखे हुए क्रम से प्रत्येक रत्न की हर दिशा में स्थित रखकर सुमुहूर्त में तैयार करना उचित होगा। जैसे—अंगूठी के पूर्व दिशा में हीरा, आग्नेय में मोती, दक्षिण में मूंगा, नैऋत्य में गोमेदक, पश्चिम में नीलम, वायव्य में लहसुनियां, उत्तर में पुखराज, ईशान्य में पन्ना। इस तरह आठ दिशा में आठ रत्न विठा कर मध्य में माणिक रहना चाहिये। ऐसी सुमुहूर्त में बनाई गयी अंगूठी को दाहिने हाथ की उंगलियों में धारण करने से अन्य ग्रहों के अशुभ समय आने पर उनका शुभ फल प्राप्त होता है। इसके सिवाय नव-ग्रहों के दान का कोष्टक निम्नांकित है।

नव ग्रहों के दान, रत्न धारण व जप संख्या

ग्रह	धातु	उपधातु	रत्न	धान्य	पशु	रस	वस्त्र	पुष्प	जपसंख्या
रवि	सोना	तांबा	माणिक	गोधूम	लाल गाय	गुड़	कुसुंबी	लाल	७०००
चन्द्र	सोना	चांदी	मोती	चावल	सफेद गाय	घी	सफेद	सफेद	११०००
मंगल	सोना	तांबा	मूंगा	मसूर	रक्तवर्ण	गुड़	लाल	लाल	१००००
बुध	सोना	कांसा	पन्ना	मूंग	गज	घी	नीला	सर्व पुष्प	४०००
गुरु	सोना	चांदी	पुखराज	चना	अश्व	शक्कर	पीला	पीला	१९०००
शुक्र	सोना	चांदी	हीरा	चावल	श्वेत अश्व	घी	मिश्रित	शुभ्र	१६०००
शनि	सोना	लोहा	नीलम	उड़द	महिषी	तेल	काला	काला	२३०००
राहु	सोना	शीशा	गोमेद	तिल	मछला	तेल	नीला	काला	१८०००
केतु	सोना	फौलाद	लहसुनियां	तिल	मेढा	तेल	काला	धूम्र	१७०००

संकट निवारणार्थ आचार तज्ञ व ब्रह्म कर्म में निपुण ब्राह्मण द्वारा जप कराना व ब्राह्मणों को दान देना चाहिये इससे शीघ्र फल मिलेगा। परन्तु ऐसा करना सम्भव न हो सके तो प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वे नीचे लिखे हुए शास्त्रोक्त मंत्रों का जप, पूजा, दान स्वयं करें तभी उपरोक्त फल मिलना सम्भव होगा अन्यथा नहीं। जैसे:—

जन्म कुण्डली में रवि अशुभ हो तो ॐ रं रवये नमः।
जन्म कुण्डली में चंद्र अशुभ हो तो ॐ सौं सोमाय नमः।
जन्म कुण्डली में मंगल अशुभ हो तो ॐ भौं भौमाय नमः।
जन्म कुण्डली में बुध अशुभ हो तो ॐ बुं बुधाय नमः।

जन्म कुण्डली में गुरु अशुभ हो तो ॐ गुं गुरवे नमः।
जन्म कुण्डली में शुक्र अशुभ हो तो ॐ शुं शुक्राय नमः।
जन्म कुण्डली में शनि अशुभ हो तो ॐ शं शनैश्चराय नमः।
जन्म कुण्डली में राहु अशुभ हो तो ॐ रां राहवे नमः।
जन्म कुण्डली में केतु अशुभ हो तो ॐ कें केतवे नमः।

उपरोक्त वीजमन्त्र का प्रत्येक ग्रह के संख्यानुसार जप स्वयं करने से भी शरीर कष्ट, मानसिक व्यथा व हानि दूर होगी परन्तु स्वधर्माचरण से ही ग्रहों की पीड़ा क्रमशः सौम्य होना सम्भव है यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। इसके अतिरिक्त मंगल व शनि यह दो ग्रह अत्यन्त अशुभ व परस्पर रिपु होने के कारण जन्म समय यदि अनिष्ट फलदायी हों तो उनके शास्त्रोक्त स्तोत्र का पाठ करना आवश्यक है और वह नीचे लिखे अनुसार है:—

ऋण मोचक मंगल स्तोत्र

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः। स्थिरासनो महाकायो सर्वकर्मावरोधकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः। धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः। वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्। ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।
एकविंशतिनामानि पठित्वातु तदन्तिके। रूपवान् धनवांश्चेव जायते नात्र संशयः॥
एककालं द्विकालं च यः पठेत्सुसमाहितः। एवं कृते न संदेहो ऋणं हत्वा सुखी भवेत्॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

शनि स्तोत्र

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥

रोग नाशार्थं सूर्य आराधना—ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः इस मन्त्रका १०८ वार प्रतिदिन जप करने से रोग का नाश होना सम्भव है। मंगल व शनि जन्मकुण्डली में अनिष्ट हों तो मंगलवार व शनिवार के दिन उपवास (व्रत) करना। सूर्यास्त होने के पश्चात् भोजन करना चाहिये। यदि हो सके तो मंगलवारको रोज प्रातःकाल स्नान कर लाल गाय की पूजा, लाल फूल, लाल चन्दन से कर (गौ) को मसूर की दाल व गुड़ का नैवेद्य दिखाकर उसे खिलाना उत्तम है व स्वयं उस दिन विना लवण के भोजन करना उत्तम होगा। विशेषतः आटा व गुड़ खाने से विशेष लाभ होता है। शनि अनिष्ट हो तो शनिवार को उपवास कर सूर्यास्त होवे व्रत भंग करें किन्तु इसके पूर्व श्री हनुमानजी

के मूर्ति की पूजा सिन्दूर, तिल्ली के तेल, लाल फूल से करने के पश्चात् तिल्ली के तेल का दीपक भगवान के समक्ष रख कर नमस्कार करना जरूरी है। शक्ति के अनुसार अपंग को दान करना अति उत्तम है। ग्रह पीडा निवारणार्थ नवग्रह स्तोत्र का हर रोज पाठ करना चाहिये। प्रत्येक ग्रह का शास्त्रोक्त मन्त्र संक्षिप्त में नीचे लिखा है:—

सूर्य का मंत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्र का मंत्र

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम्॥

मंगल का मंत्र

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

बुध का मंत्र

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

गुरु का मंत्र

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

शुक्र का मंत्र

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणामाम्यहम्॥

शनि का मंत्र

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

राहु का मंत्र

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

केतु का मंत्र

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः। ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥

कुण्डली निर्णय विचार—

ज्योतिष शास्त्र का फलित या भविष्य कथन यह जन्म के समय आकाशस्थ ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर सर्वथा अवलंबित है जिनके प्रभाव से प्रत्येक मनुष्य को वर्तमान समय में शारीरिक कष्ट, मानसिक, आर्थिक व संसारिक सुख या दुःख अधिकांश प्रमाण पर जन्म से मरण समय तक भोगने का प्रसंग आता है। यथार्थ में देखा जाय तो जन्म कुण्डली अर्थात् ग्रह, राशि, भाव, योगादि मनुष्य के पूर्वजन्म में किये हुये शुभाशुभ कर्मों का एक नकशा है या उसे दूरदर्शी मित्र कह सकते हैं कि जिसके ज्ञान से मनुष्य को भविष्य में आने वाले विकास या विनाश परिस्थिति की पूर्ण कल्पना हो सकती है और इन्हीं दो तत्वों के रूपान्तर पर फलित ज्योतिषशास्त्र का महल खड़ा है। तात्पर्य प्राचीन महर्षियों ने अपने आत्म तत्व व तपोवल द्वारा इनका पूर्ण विचार कर राशि, ग्रह, नक्षत्र, योगादि के आधार पर उनका सूक्ष्म शुभाशुभ फलित लोगों के कल्याण हेतु अपने शास्त्रों में वर्णन किया है। ऐसा करने में उनका मुख्य उद्देश्य यह है कि पूर्व जन्म के किये हुए शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान इस शास्त्र द्वारा प्राप्त कर अशुभ ग्रहों के निवारणार्थ शास्त्रोक्त उपाय की योजना करना, वर्तमान संकटों का निवारण करना और भविष्य जन्म अधिक सुखवान होवे इस हेतु वर्तमान जन्म में शुभ करने का निग्रह मन में लाना है क्योंकि सुख या दुःख का मिलना यह प्रत्येक मनुष्य के शुभ या अशुभ कर्मों के परिणाम पर निर्भर हैं, यह सूज्ञ पाठकों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। इस उद्देश्य को ध्यान में लाते हुए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्रत्येक मानव प्राणी के लिये कितना अधिक उपयोगी है इसका विचार सूज्ञ पाठक गण स्वयं कर सकते हैं।

जन्मकुण्डली का फलित वर्तना यह एक जटिल प्रश्न है परन्तु फलित वर्तते समय नीचे लिखे हुए बातों पर विचार करना बहुत आवश्यक है। जैसे—१—कुण्डली के शुद्धाशुद्ध का विचार २—जन्म समय आकाशस्थ ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति ३—फलित वर्तते समय ग्रहों की गति व राशियों का भ्रमण ४—जन्म समय के वर्तमान ग्रह की दशा, अन्तर्दशा व विदशा का विचार आदि पाठकों को इसे अवगत करने में विशेष कष्ट उठाना न पड़े इस हेतु से उदाहरण के रूप में नीचे लिखे हुये कुण्डली का भविष्य कथन करना हम उचित समझते हैं—

सम्वत् १९९० शके १८५५ वैशाखमास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, रविवार ४१ घटी ९ पल, पुनर्वसू नक्षत्र ४० घटी १३ पल, जन्म इष्ट घटी ३६ पल ५०। जन्म तारीख २८–५–१९३३ ई०।

जन्म कुण्डली

सूर्योदय

५–२४ मिनट
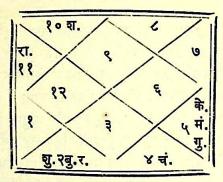
सूर्यास्त

६–२९ मिनट

प्रश्न—कुण्डली किस लग्न की है ?

उत्तर—प्रथम भाव में धनराशि का अंक ९ लिखा है। अतः कुण्डली धन लग्न की है।

प्रश्न—कुण्डली किस राशि की है ?

उत्तर—जन्म समय चन्द्र कर्क राशि में स्थित था अतः यह कुण्डली कर्क राशिकी है।

प्रश्न—द्वादश भाव के स्वामी की किन भावों में स्थिति है ?

उत्तर—लग्नेश व चतुर्थेश गुरु नवम भाव अर्थात् त्रिकोण भाव में स्थित है।

द्वितीयेश या धनेश तृतीयेश या पराक्रमेश द्वितीय भाव में अपने राशि में स्थित है।

पंचमेश और द्वादशेश मंगल नवम भाव त्रिकोण में गुरु से युक्त है।

षष्टेश व लाभेश–शुक्र अपने ही भाव छठवें स्थान में स्थित है।

सप्तमेश व दशमेश–बुध षष्ट भाव में रवि शुक्र से युक्त है किन्तु रवि से युक्त होने के कारण वह अस्त है ऐसा माना जाता है।

अष्टमेश—चन्द्र अपने ही भाव में स्थित है।

नवमेश—रवि षष्ठ भाव में स्थित हैं।

प्रश्न—केन्द्र व त्रिकोण में कौन कौन से ग्रह है ?

उत्तर—केन्द्र में कोई ग्रह नहीं किन्तु त्रिकोण में मंगल, गुरु व केतु स्थित है।

<u>ग्रहों की पूर्ण दृष्टि किन किन भावों पर है और उसका फल किस तरह मिलेगा</u> ?

उत्तर—शनि की पूर्ण अशुभ दृष्टि ३–७–१० अर्थात् मातृ भाव, मृत्युभाव व लाभ भाव प्रर पड़ती है। जिसका फल चतुर्थ भाव मातृसुख से वंचित, अष्टम भाव स्त्री धन प्राप्ति में बाधा, एकादश लाभ भाव–शनि की उच्च राशि तुला होने के कारण अशुभ फल न मिलते साधारण प्रमाण पर नित्य धन लाभ मिलता रहेगा।

२—मंगल की पूर्ण अशुभ दृष्टि ४–७–८ भाव अर्थात् व्यय, द्वादश भाव तथा बन्धु, भगिनी व पराक्रम, तृतीय भाव और माता, चतुर्थ भाव पर क्रमशः पड़ती है जिसका फल वृश्चिक राशि, स्वयं मंगल की होने के कारण चतुर्थ अशुभ दृष्टि होते हुये धन का व्यय अधिक प्रमाण पर न होगा। सप्तम दृष्टि तृतीय, पराक्रम स्थान पर पड़ने के कारण बन्धु भगिनी सुख साधारण प्रमाण पर मिलेगा क्यों कि अपने मित्र गुरु से युक्त है और गुरु की पूर्ण दृष्टि इसी स्थान पर होने के कारण शुभ फल मिलना निश्चित है व पराक्रम में साधारणतः यश मिलेगा। अष्टम दृष्टि चतुर्थ मातृ भाव पर पड़ती है अतः मातृ सुख की हानि जानना चाहिये।

३—गुरु की पूर्ण शुभ दृष्टि ५–७–९ अर्थात् प्रथम, तृतीय व पंचम भाव पर है अतः उत्तम शरीर, शान्त दिमाग, बन्धु भगिनी सुख, पराक्रम में यश और सन्तान सुख मिलना निश्चित है। उत्तम बुद्धि व विद्या की प्राप्ति होगी।

४—सूर्य, बुध शुक्र की पूर्ण सप्तम दृष्टि द्वादश स्थान पर है। सूर्य मंगल परस्पर मित्र है, मित्रग्रहों की दृष्टि है अतः धन का व्यय बुरी रीति से न होगा। सूर्य से युक्त होने के कारण बुध, शुक्र ग्रह अस्त है। इसलिये इनके दृष्टि का विशेष विचार करना अनावश्यक है। परन्तु बुध सप्तमेश पत्नी भाव का स्वामी हैं और शुक्र स्त्री ग्रह है इस लिये धन का व्यय स्त्री सम्बन्धी बातों में अधिक होना सम्भव है।

५—प्रश्न—जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति कैसी है ?

उत्तर—चन्द्र, शुक्र, शनि अपने स्वराशि व भाव में स्थित है।

६—प्रश्न—ग्रहों का उच्च अंश, नीचांश, बली, निर्बली, अवस्था आदि जानने के लिये ग्रह स्पष्ट किये गये हैं अथवा नहीं ?

७—ग्रह स्पष्ट किये गये हैं जैसे :—

ग्रह	रवि	चन्द्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	१	३	४	१	४	१	९	१०	४
अंश	१३	०	१६	२४	२३	२४	२०	१०	१०
कला	५२	४६	४	४७	५२	९	२	१२	१२
विकला	४२	३६	३२	५०	५६	५१	५१	२३	२३

८—जन्म नक्षत्र पर से किस ग्रह की महादशा में जन्म हुआ व चरणसे कितना भुक्त हो गया व भोगना बाकी है ?

उत्तर—पुर्नवसु नक्षत्र-गुरु महादशा १६ वर्ष की थी व १२ वर्ष ११ महिने १७ दिन भुक्त होकर शेष ३ वर्ष ० मास १३ दिन भोगना बाकी है ?।

९—लग्न व राशि से कौन कौन से ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में आते हैं ?

उत्तर—केन्द्र में लग्न से कोई ग्रह नहीं व मंगल, गुरु, केतु त्रिकोण में हैं और राशि कुण्डली में शनि केन्द्र में है, त्रिकोणमें कोई ग्रह नहीं।

१०—प्रश्न–धन व सप्तम अर्थात् मारक भाव के स्वामी कुण्डली में किस भाव में स्थित है ?

उत्तर—धनेश शनि धनभाव और सप्तमेश बुध षष्ट भाव में स्थित है।

११—प्रश्न–बालक का भविष्य-विद्या, भाग्य, आयुष्य आदि का योग कैसा है ?

उत्तर—विद्या का दाता गुरु ग्रह विद्या स्थान को पूर्ण नवम दृष्टि से देखता है और विद्या भाव का स्वामी मंगल गुरु से युक्त हो कुण्डली के नवम भाग में है। मंगल व गुरु दोनों परस्पर मित्र हैं। गुरु की पूर्ण दृष्टि ५-७-९ अर्थात् मस्तिष्क, पराक्रम व विद्या स्थान पर पड़ती है व अपने स्थान से नव पंचम योग करता है जो कि शुभ है। मंगल ग्रह रक्त, शस्त्र क्रिया, चीड़ फाड़ आदि से अधिक सम्बन्ध रखता है व गुरु विद्या का दाता है व अधिकतः वह डाक्टरी विद्या व वैद्यक विद्या में प्रवीण निकलेगा इसमें सन्देह नहीं।

बालक के भाग्य भाव का स्वामी रवि अशुभ (षष्ट) स्थान में शुभ ग्रह बुध शुक्र से युक्त स्थित है व गुरु से रवि दशम भाव में स्थित होनेके कारण केन्द्र योग करता है और किसी अशुभ ग्रहसे दृष्ट नहीं है। अतः भाग्य सदैव साथ देगा व उन्नति शील रहेगा।

आयुष्य—अष्टम भाव पर शनि की पूर्ण सप्तम दृष्टि है व अपने राशि का चन्द्र उस स्थान में स्थित है। चन्द्र स्त्री ग्रह है व मन का स्वामी है इसलिये मनको शान्ति मिलना स्वाभाविक है। आयुष्य दीर्घकाल तक रहना कठिन है।

१२—प्रश्न–कुण्डली में सबसे श्रेष्ठ ग्रह कौन है और वह शुभ फल देनेके लिये क्या समर्थ है ?

उत्तर—लग्नेश गुरु सुखेश भी होकर त्रिकोण (भाग्य) भाव में स्थित है अतः वह श्रेष्ठ है और भौम से युक्त है, इसलिये पराशर मुनि के मतानुसार भाग्ययोग करता है। अतः शुभ है।

१३—प्रश्न–कुण्डली में कौन से ग्रह अनुकूल व प्रतिकूल हैं और प्रतिकूल ग्रह के शान्ति के लिये किन उपायों की योजना करना आवश्यक है ?

उत्तर—धन लग्न के कुण्डली वालों को शनि व बुध द्वितीय व सप्तम भाव के स्वामी होनेसे मारक है। इसलिये इन ग्रहोंके महादशा व अन्तर्दशा में स्वयं को पीड़ा होना तथा पत्नी को शारीरिक कष्ट मिलना सम्भव है। अतः शनि व बुध ग्रहके रत्नों का नित्य धारण करने से लाभ होगा व साथ ही अन्य शास्त्रोंक्त उपायों का अवलम्बन करना भी आवश्यक है।

१४—प्रश्न–ग्रहांश के अनुसार कौन से ग्रह बलवान या निर्बली है और वे अपना शुभाशुभ फल कबतक व कबसे देंगे

१५—रवि सम राशि में १३ अंश का युवावस्था का ग्रह है परन्तु भाग्येश होकर अशुभ स्थान में स्थित है व गुरु से दृष्ट नहीं है। अतः इसका फल शुभ मिलना कठिन है।

२—चन्द्र शून्य अंश का है अतः राशि कुण्डली के अपेक्षा लग्न कुण्डली के लग्नसे ही विचार करना हितावह होगा।

३—मंगल विषम राशि में १३ अंश का अर्थात् युवावस्था का है अतः इसका शुभ फल मिलना निश्चित है।

४—बुध २६ अंश का अर्थात् उच्चांश में है किन्तु रवि से युक्त होने के कारण अस्त है और वह मारकेश ग्रह भी है। अतः अनिष्ट फल मिलना स्वाभाविक है।

५—गुरु २३ अंशका कुमार अवस्था का ग्रह है अतः शुभ फलदायी है।

६—शुक्र समराशि का वृद्धावस्था का २४ अंश का है, लग्न से षष्ट और राशि कुण्डली से एकादश भाव में है अतः शुभ फलदायी है।

७—शनि सम राशि में स्थित हो १० अंश का है अर्थात् नीचांश का है। अतः यह अशुभ ग्रह अशुभ फल देने के लिये समर्थ हैं।

ऊपर लिखे हुये प्रश्न व उत्तर पाठकों के ध्यान में सहज रीति से आना कठिन है अतः कुण्डली का फलित निर्णय दूसरे रीति से करना व उनके लाभार्थ यहां लिखना आवश्यक समझते हैं। जैसेः—

कुण्डली के द्वादश भावों का फलित उपर्युक्त कुण्डली से—

१—ऊपर दी हुई कुण्डली धन लग्न की है। लग्न का स्वामी गुरु त्रिकोण शुभ भाव में स्थित है और अपने भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। धन लग्न के लक्षण के अनुसार बालक मज़बूत शरीर, निरोगी, साधारण गोरा रंग, चौड़ा माथा, उठा हुआ ऊंचा नाक, उम्र में आने पर स्थूल देह, गम्भीर मन, दिल का हाल दूसरों को न मालूम करने वाला, शान्त चित्त, गहरे दिल वाला, उच्च विचार का विद्याव्यासंगी होना चाहिये।

२—धनेश–शनि अपने ही राशि व भाव में स्थित है। शनि जहां स्थित होता है उस भावका संरक्षण व जिस भाव पर अशुभ दृष्टि हो उसका नाश करता है। अतः इस ग्रह के दशा व अन्तर्दशा में धन का सचय होना सम्भव है। यह भाव पितृ कुटुम्ब भाव भी कहलाता है व कुटुम्बियों की संख्या साधारण होनी चाहिये। उसकी दृष्टि ३-७-१० मातृ, मृत्यु व लाभ स्थान पर है अतः मातृसुख से वंचित, शारीरिक पीड़ा होना, सम्भव है परन्तु लाभ भाव में अपने उच्च राशि तुला पर होने से साधारण लाभ होता रहेगा।

३—तृतीय भाव यह बन्धु, भगिनी, सुख व पराक्रम भाव है। इस भाव पर गुरु की पूर्ण सप्तम दृष्टि है इसलिये बन्धु, भगिनी सुख व कार्य में यश मिलना निश्चित है।

४—चतुर्थ भाव मातृ सुख व अनेक प्रकार के सुख का भाव है पर शनि की तृतीय अशुभ दृष्टि और मंगल की पूर्ण अष्टम दृष्टि है। शनि और मंगल परस्पर रिपु है अतः मातृ व अन्य सुख मिलना सम्भव नहीं। यह भाव वाहन व सेवक सुख का भी है व इस भाव पर दो अशुभ ग्रहों की दृष्टि होने के कारण इस भाव का सुख मिलना अशक्य है।

५—पंचम भाव सन्तान सुख, विद्या-बुद्धि का भाव है। इस भाव पर गुरु की पूर्ण नवम दृष्टि है और इस भाव का स्वामी मंगल गुरु से युक्त है अतः इस भाव का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

६—षष्ट भाव रोग, रिपु व मातुल पक्ष का है। इस भाव का स्वामा शुक्र रवि से युक्त है। रवि व शुक्र परस्पर रिपु है। इसलिये निर्बल शरीर, नाजुक प्रकृति रहेगी व गुरु की एक चतुर्थांश दृष्टि होने के कारण कुछ काल तक मामा का सुख भी मिलेगा।

७—सप्तम भाव का स्वामी बुध, सूर्य, शुक्र से युक्त षष्ट भाव में है और मारकेश है और यह भार्या भाव है। भाव स्वामी बुध, शुक्र, रवि से युक्त होने के कारण भार्या का स्वभाव व रूप रंग उत्तम होना चाहिये। संसार दक्ष भार्या होगी किन्तु शारीरिक प्रकृति निर्बल, देह पेट के भाग में दुःख रहना सम्भव है व साझेदारी के धन्धे में विशेष लाभ मिलना सम्भव नहीं है।

८—अष्टम भाव मृत्यु व पत्नी कुटुम्ब का भाव है। इस भाव में चन्द्र (मन) स्थित है इसलिये दिल में सदा बेचैनी रहना, शारीरिक प्रकृति ठीक न रहना, शरीर कृश होना स्वाभाविक है क्योंकि इस भाव पर अशुभ ग्रह शनि की पूर्ण सप्तम दृष्टि है। मिथुन राशि में शनि प्रवेश करते ही साढे साती आरम्भ होगी व शनि २० अंश का होने के कारण प्रवेश दिन से २० महीने के पश्चात् साढ़े साती का अशुभ फल मिलना आरम्भ होगा। मिथुन राशि में प्रवेश करने के २० मास पश्चात् शारीरिक कष्ट मिलना सम्भव है।

९—नवम भाग्य भाव—गुरु व मंगल अपने मित्र रवि के भाव में हैं अतः गुरु का फल १६ वर्ष से २२ वर्ष तक शुभ और मध्यकाल साधारण व्यतीत होने पर २८ से ३२ वर्षका काल हर प्रकार के सुख व भाग्योदय के लिये उत्तम रहेगा।

१०—कर्म भाव—इस भाव का स्वामी बुध है जो क्रय विक्रय का रोजगार, दूकानदारी आदि धन्धे में प्रवीण है। वह लाभेश शुक्र से युक्त होने के कारण व्यापार से उपजीविका का साधन होना सम्भव है।

११—लाभ भाव—इस भाव का स्वामी शुक्र है। वह शनि का मित्र है। शनि की उच्च राशि होने में स्वामी के गैर हाजिरी में उसका मित्र इस भाव का संरक्षण कर शुभ फल देगा इसमें सन्देह नहीं।

१२—द्वादश व्यय भाव—इस भाव का स्वामी मंगल गुरु से युक्त हो अपने भाव पर उसकी पूर्ण चतुर्थ दृष्टि है। इसलिये धन का अधिक व्यय होना सम्भव नहीं।

कुण्डली में मंगल और गुरु दो ग्रह ऊंचे हैं। अत: १६ से २२ तक विद्या लाभ, २३ से २४ तक साधारण, २५ से २८ तक सुख, २८ से ३२ तक शौर्य पराक्रम में यश व ३२ से ३६ तक व्यापार उद्योग में पूर्ण लाभ होना संभव है। इसके सिवाय चन्द्र के द्वितीय भाव भाग्यभाव में गुरु मंगल होने के कारण विशेष शुभ फल मिलना निश्चित है।

फलित वर्तने में सूज्ञ पाठकों को सहायता मिल सके इस हेतु से कुण्डली का निर्णय इस पद्धति से किया है व आशा है कि पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

मेरी कुण्डली कैसी है

यह जानने की अभिलाषा प्रत्येक मनुष्य को होना अत्यन्त स्वाभाविक है क्योंकि मनुष्य आशावादी प्राणी है और वर्तमान सुख या दुख के अपेक्षा भविष्य के सुख पर ही वह जीवित रहता है तथा इसी आशा से वह वर्तमान कष्टों को सहता है। परन्तु शान्त चित से विचार करने से उसे ज्ञात होगा कि इस जगत में अच्छे पुरुष, अच्छे मकान, अच्छी चीजे आदि बहुत थोड़े प्रमाण में है। उसी तरह अच्छी कुण्डलियों के प्रमाण भी बहुत थोड़े है। तथापि सर्वसाधारण मनुष्य को अपने कुण्डली का ज्ञान सहज प्राप्त करने में अधिक कष्ट न हो व कुण्डली कैसी है इसका ज्ञान वह स्वयं प्राप्त कर सके इस हेतु कुण्डली के मुख्य फलों के विषय में यहाँ दो शब्द लिखना हम आवश्यक समझते हैं—

१—लग्न का स्वामी चन्द्र कुण्डली में पाप ग्रहों से युक्त या दुष्ट न हो और यह ग्रह अशुभ भाव ६–८–१२ में न हो तो शारीरिक, मानसिक व आर्थिक दृष्टि से कुण्डली साधारण अच्छी है यह समझना चाहिये।

२—कुण्डली में रवि और मंगल लग्न से ३–६–१०–११ भाव में हो तो मनुष्य पराक्रमी, साहसी, महत्वाकांक्षी, स्वातंत्र्यप्रिय व आचार कार्य करनेवाला होगा।

३—अष्टम भाव में कर्क का चन्द्र किसी पापग्रह से दृष्ट न होवे, केवल गुरु से दृष्ट हो तो उसे विवाह समय स्त्री पक्ष से धनलाभ होगा।

४—गुरु व शुक्र ४–५–६ भावों में से किसी एक भाव में लग्नेश व चन्द्र से स्थित हो व पाप ग्रहों से दृष्ट न हो तो मनुष्य की आर्थिक स्थिति उत्तम समझना चाहिये।

५—लग्नेश यदि भाग्येश, दशमेश या लाभेश से युक्त केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो परन्तु पापग्रह से दृष्ट न हो तो नौकरी, व्यापार धन्धा में यश व लाभ प्राप्त कर आयुष्य सुख से व्यतीत करेगा।

६—शुक्र का सप्तमेश से शुभ योग होता हो तो स्त्री व प्रापंचिक सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

७—साढ़े साती के काल में चन्द्रके द्वादश व द्वितीय भाव में यदि गुरु, शुक्र स्थित हो तो धनलाभ के दृष्टि से कुण्डली उत्तम समझना।

८—जन्म लग्न या राशिसे ३–६–१०–११ भाव में यदि सौम्य ग्रह हो तो धन योग की कुण्डली समझना।

९—जन्म लग्न से धन भाव में गुरु व अष्टम में चन्द्र हो तो सट्टा, लाटरी से अकस्मात् धन लाभ होगा परन्तु पापग्रह से यदि दृष्ट न हो।

१०—यदि १–२–५–९–११ भाव के स्वामी अष्टम भाव के स्वामी से युक्त हो तो भी धन लाभ होगा किन्तु शुभ ग्रहों को पाप ग्रहों से अधिक वलिष्ट होना चाहिये।

तुम किस दिन पैदा हुये हो ?

जन्म दिवस से मनुष्य को उसके गुण व स्वभाव की कल्पना वहुत अंश से हो सकती है। जैसे—

१—रविवार को जन्म हुआ मनुष्य—प्रेमी, कामी, सांसारिक कार्य में कुशल, कार्य में सफल किन्तु खर्चीला होगा।

२—सोमवार को जन्म पाया हुआ मनुष्य—भाग्यशाली, सुखी, खेलकूद में प्रवीण, व्यवहार कुशल व सुशील पत्नी वाला होगा।

३—मंगलवार में जन्म पाया हुआ मनुष्य—गम्भीर मुद्रा, विचारशाली, सत्यभाषी, प्रिय व शीघ्र विजयी होगा।

४—बुधवार में जन्म पाया हुआ मनुष्य—धैर्यवान्, साहसी, आपत्तियों का सहर्ष सामना करनेवाला व दीर्घायुषी होगा।

५—गुरुवार को जन्म पानेवाला मनुष्य—उदार स्वभाव, शुद्ध हृदय, मिलनसार स्वभाव, मित्र व स्त्रीप्रिय, उत्तम कार्य करने की वृत्तिवाला होगा।

६—शुक्रवार को जन्म पाने वाला मनुष्य—उदार स्वभाव, शुद्ध हृदय, मिलनसार स्वभाव, मित्र व स्त्रीप्रिय, उत्तम कार्य करने की वृत्ति वाला होगा।

७—शनिवार को जन्म पाने वाला मनुष्य—इच्छित कार्य में दत्तचित, मेहनती, कार्य में यश प्राप्ति करनेवाला, खरचीला होगा।

चन्द्रचक्र व कार्यसिद्धि

शास्त्रकारों ने चन्द्र के विषय में कहा है कि किसी भी कार्य के लिये प्रयाण करते समय यदि वार, तिथि, नक्षत्रादि का मुहुर्त मिलना कठिन हो तो केवल चन्द्र भ्रमण दिशा का विचार कर प्रयाण करने से कार्य सिद्ध होता है। जैसे—

सन्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

अर्थात् प्रयाण करते समय यदि चन्द्र सम्मुख हो तो धनलाभ होगा, दक्षिण दिशा की ओर हो तो सुख, पीठ पीछे हो तो संकट या प्राण हानि और बायें दिशा की ओर

हो तो धन का नाश होगा। परन्तु किस राशि का चन्द्र भ्रमण करते समय किस दिशा में रहने से शुभ और अशुभ समझा गया है यह जानना भी आवश्यक है। अतः यहाँ नीचे लिखा है। जैसे—

१—मेष, सिंह, धन राशि में यदि चन्द्र हो तो पूर्व दिशा में शुभ फल दे।
२—वृष, कन्या, मकर राशि में ,, ,, ,, दक्षिण ,,
३—मिथुन, तुला, कुम्भ ,, ,, ,, ,, पश्चिम ,,
४—कर्क, वृश्चिक, मीन ,, ,, ,, ,, उत्तर ,,

प्रयाण करते समय किसी भी कार्यमें यश प्राप्त करने के हेतु चन्द्र अनुकूल है अथवा नहीं यह जानना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा कष्ट व धन का व्यय होना सम्भव है। शुभ मुहुर्त जानने के अनेक मार्ग है परन्तु सब से सरल मार्ग चन्द्रके दिशा व राशि का ज्ञान है जिसे कार्यरूप में लाने से मनुष्य को पश्चात्ताप करने का प्रसंग न आयेगा। यह सूज्ञ पाठकों को अवश्य ही ध्यान में रखने योग्य है।

भविष्य कथन

भविष्य फल वर्तने के लिये प्रत्येक मनुष्य को ज्योतिषशास्त्र का सम्पूर्ण ज्ञान होना अर्थात् ग्रहों की गति, स्थिति, युति आदि जानना अत्यन्त आवश्यक है व यह प्रत्येक व्यक्ति के बुद्धि व अनुभव पर निर्भर है। पाठकों को इस कठिनाई का सामना करने का प्रसंग न आवे इस हेतु से राशि, ग्रह, भावादि का विचार करते हुये कुछ महत्वपूर्ण विषयों का यहाँ अनुभव सिद्ध उल्लेख करना हम आवश्यक समझते हैं :—

१—शारीरिक सुख दुःख—लग्न का स्वामी शुभ ग्रह होकर शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो व शुभ स्थान में हो तो उत्तम प्रकार का शरीर सुख मिलना निश्चित है।

२—धन सुख दुःख—धनेश उपर लिखे हुये स्थिति में हो तो धन सुख अन्यथा दुःख मिलेगा। यह भाव वाचा का भी है। इसलिये इस भाव में यदि बुध पाप ग्रह से युक्त व दृष्ट न हो तो वह उत्तम वक्ता व वाद विवाद में यश प्राप्त करेगा। धनेश व्यय भाव में हो तो द्रव्य की चिन्ता हमेशा बनी रहेगी। यह कुटुम्ब भाव होने के कारण इस भाव में मंगल उच्च या शुभ राशि का हो तो मनुष्य को मौरूसी जमीन व मकान मिलना सम्भव है।

३—बन्धु भगिनी सुख दुःख—गुरु आदि शुभ ग्रह हो तो सुख व मंगल हो तो लघु-भ्राता का सुख, उसका जीवित रहना तथा सुख मिलना कठिन समझना।

४—मातृ सुख दुःख—इस भाव में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो सुख व २-७-१० भाव में शनि स्थित होकर दृष्टि करता हो तो मातृ नाश समझना। इस भाव में मंगल स्थित होकर चतुर्थ दृष्टि से भार्या भाव (सप्तम) को देखता हो तो प्रथम पत्नी का वियोग व द्वितीय विवाह का प्रसंग आना सम्भव है।

५—संतति सुख दुःख–गुरु ग्रह यदि लग्न, नवम, एकादश भाव में हो तो सुख व शनि, राहु, केतु, रवि आदि ग्रह हो तो दुःख या सन्तति नाश होगा।

६—रोग, रिपु व मातुल पक्ष सुख दुःख–इस भाव में शुभाशुभ ग्रह की स्थिति, दृष्टि व युति के अनुसार मनुष्य को सुख या दुःख मिलना निश्चित है।

७—भार्या सुख दुःख–कुण्डली के प्रथम भाव, चतुर्थ भाव सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल हो और शनि की दृष्टि इस भाव पर हो तो भार्या की मृत्यु व द्वितीय भार्या का योग जानना। पाप ग्रह की दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो विवाहित स्त्री का सुख नहीं मिलेगा। इस भाव में उच्च या स्वराशि का मंगल, शनि, राहु या स्त्रीके कुण्डली में यही सप्तम भाव में हो तो आज्ञाकारी पत्नी या पति का होना निश्चित है।

८—अष्टम भाव का सुख दुःख–इस भाव में शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति, दृष्टि व युति के अनुसार शुभाशुभ फल मिलना अर्थात् दीर्घायुषी या अल्पायुषी उस व्यक्ति का होना सम्भव है परन्तु इस भाव में २ या ४ राशि का चन्द्र हो अथवा २–७–१२ राशि का शुक्र हो तो विवाहानंतर स्त्री पक्ष से धन का लाभ, जमीन, गाँव या मकान का मिलना व स्त्री का अधिकार होना सम्भव है किन्तु यह ग्रहों के उच्च या नीच व अंश के प्रभाव से मिलेगा यह ध्यान में रखना चाहिये।

९—भाग्य और धर्मश्रद्धा सुख दुःख–इस भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य नास्तिकवादी और शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आस्तिकवादी होगा। इसी तरह शुभाशुभ ग्रहों द्वारा भाग्योदय या पतन का फल मिलेगा।

१०—व्यवसाय सुख दुःख–यह उपजीविका साधन का भाव है। इस भाव में वृषभ या कर्क राशि का चन्द्र, सिंह राशि का सूर्य, तुला राशिका शनि, मकर राशि का मंगल हो तो मनुष्य को उच्च अधिकार प्राप्त होगा। यदि बुध उच्च राशि व उच्च अंश का हो तो व्यापार वृद्धि व धन लाभ होगा।

११—धन लाभ, सुख दुःख–इस भाव में वृष का चन्द्र, मिथुन का बुध या राहु या पाँच शुभाशुभ ग्रह हो तो मनुष्य अत्यन्त गरीब कुल में जन्म पाने पर भी सन्तति व सम्पत्ति का अधिकारी व समाज में श्रेष्ठत्व प्राप्त करेगा व सदैव धन का लाभ होगा। पापग्रह की दृष्टि न हो तो विशेष लाभ हो।

१२—धन व्यय, सुख दुःख–इस भाव पर शुभाशुभ ग्रहों के स्थिति, युति व दृष्टि के अनुसार धन का व्यय सत् या असत में होना निश्चित है। नीच राशि का मंगल, शनि, राहु हो या दृष्टि हो तो राजदण्ड, कैद व धननाश होगा।

इस तरह किसी भी विषय का भविष्य कहते समय सर्वप्रथम कुण्डली के भाव स्वामी, उच्च नीच राशि व अंश, राशि स्वामी की दृष्टि व युति, योग आदि का शुभा-

शुभ ग्रहों के अनुसार फलित विचार से सन्तोष जनक फल मिलेगा यह ध्यान में रखना चाहिये।

ज्योतिष चमत्कार

ज्योतिषशास्त्र का सच्चा मर्म व रहस्य आकाश के नानाविधि चमत्कारों का ज्ञान प्राप्त कर आकाशस्थ ग्रहों के पृथ्वी के मानवी प्राणियों पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का निर्णयात्मक भविष्य कथन में है। यह विषय इतना चित्ताकर्षक व आश्चर्य जनक है कि प्रत्येक मनुष्य चाहे वह राजा हो या प्रजा, राव हो या रंक इसके विचित्रता को जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक रहता है। यथार्थ में फलित शास्त्र या भविष्य कथन में प्राविण्यता प्राप्त करने के लिए बुद्धिमत्ता, परिश्रम तथा वर्षों के अनुभव की भारी आवश्यकता है परन्तु कई सज्जन स्थूल मान से भविष्य कथन कर इस क्लिष्ट विद्या में निपुण होने का दावा करने लगते हैं व विश्वासु जनों का चित्त अपनी ओर आकर्षित कर श्रद्धालु लोगोंके मन में विश्वास उत्पन्न कर निर्वाह करने के कारण अर्थ प्राप्ति के चिन्ता में सदैव निमग्न रहते हैं। अतः प्रत्येक सूज्ञ मनुष्य को चाहिये कि वे इस क्लिष्ट विद्या के मूल सिद्धान्तों को समझे और उससे परिचित हो योग्य पुरुषों को ही उत्तेजना देने का निर्णय लेवें। कुछ लोग इस शास्त्र में पूर्णरूप से प्रवीण न होते हुये स्थूल मान से भविष्य कथन कर श्रद्धालुओं का विश्वास सम्पादन करते हैं। नीचे लिखे हुए उदाहरणों से स्थूल मान से जन्म कुण्डली का भविष्य कथन करना यह सूज्ञ पाठकों को सहज ज्ञात होगा। जैसे जन्म कुण्डली का अवलोकन कर जन्म समय, जन्म तिथि, पक्ष, मास, वर्ष आदि का स्थूल मान से वर्णन करना।

जन्म कुण्डली से जन्म समय का ज्ञान
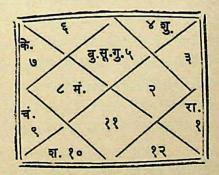
इस कुण्डली को देखते ही मनुष्य स्थूल मान से यह कह सकता है कि कुण्डली वाले मनुष्य का जन्म प्रातः काल सूर्योदय होते ही ६ बजे से आठ बजे के अन्दर होना निश्चित है क्योंकि सूर्य पूर्व दिशा से उदय हो प्रत्येक भाव का भ्रमण दो घण्टे के गति

से पूर्ण करता है । जन्म समय रवि प्रथम भाव पूर्व दिशा में स्थित है । अतः प्रातःकाल दो घण्टे के अन्दर जन्म होना निश्चय है । इस तरह द्वादश भाव में रवि हो तो जन्म समय ८ से १० वजे प्रातः हुआ व इस क्रम से कहना अत्यन्त सरल है ।

जन्म तिथि-ज्ञान

चन्द्र ग्रह प्रति राशि २।। दिन के गति से भ्रमण करते हुये वारह राशि का भ्रमण ३० दिन या एक मास में पूरा कर अमावास्या के दिन वह सूर्य से युक्त होता है । ऊपर लिखे हुए कुण्डली में चन्द्र धन राशि में स्थित पाया जाता है । अर्थात् वह अमावास्या के रोज से सिंह, कन्या, तुला व वृश्चिक राशि का भ्रमण २।। दिन के गति से पूराकर धन राशि में प्रवेश कर गया । इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि मनुष्य का जन्म दशमी को होना निश्चित है ।

जन्म पक्ष-ज्ञान

अमावास्या के दूसरे दिन से शुक्ल पक्ष आरम्भ होता है अर्थात् प्रतिपदा से यह पक्ष १५ दिन का होता है अर्थात् एक पक्ष में चन्द्र ६ राशि का भ्रमण पूरा करता है । जन्म कुण्डली में सिंह राशि से कुम्भ राशि स्थित सूर्य दीखता है तो जन्म शुक्ल पक्ष व मीन से सिंह तक हो तो कृष्ण पक्ष कहना चाहिये । कुण्डली में चन्द्र धन राशि में हैं । अतः जन्म शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि का होना चाहिये ।

जन्म मास-ज्ञान

यह भी स्थूल मान से मालूम होना कठिन नहीं है क्योंकि रवि प्रति अमान्त मास नीचे लिखे हुए राशियों में भ्रमण करता हुआ दूसरे मास में लगभग अंग्रेजी तारीख १४ को दूसरे राशि में प्रवेश करता है । जैसे :—

१—चैत्र मास —रवि—मेष राशि में	७—आश्विन मास —रवि—तुलाराशि में
२—वैशाख मास —रवि—वृषभ राशि में	८—कार्तिक मास —रवि—वृश्चिक राशि में
३—ज्येष्ठ मास —रवि—मिथुन राशि में	९—मार्गशीर्ष मास —रवि—धन राशि में
४—आषाढ़ मास —रवि—कर्क राशि में	१०—पौष मास —रवि—मकर राशि में
५—श्रावण मास —रवि—सिंह राशि में	११—माघ मास —रवि—कुम्भ राशि में
६—भाद्रपद मास—रवि—कन्या राशि में	१२—फाल्गुन मास —रवि—मीन राशि में

जन्म कुण्डली में रवि सिंह राशि में स्थित है अतः जन्म श्रावण मास होना चाहिये ।

अंग्रेजी तारीख से अंग्रेजी मास का ज्ञान

प्रायः सभी जानते हैं कि अंग्रेजी तारीख १४ जनवरी को प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति का त्योहार माना जाता है और यह जनवरी माह में ही होता है क्योंकि रवि मकर राशि में उसी दिन प्रायः प्रवेश करता है ।

जन्म वर्ष-ज्ञान

गुरु ग्रह का राश्यन्तर ध्यान में रखने से पाठकों को विदित होगा कि गुरु प्रत्येक राशि में १३ मास के पश्चात् अगले राशि में प्रवेश करता है। जन्म समय गुरु सिंह राशि में था व आज की तारीख को यदि वह मीन राशि में हो तो बालक की उम्र लगभग ८ वर्ष की होनी चाहिये। इस तरह कुण्डली देखते ही विला गणित किये कई बातें स्थूल मान से सहज मालूम हो सकती है और यह बातें अधिकांश सत्य ठहरती हैं। इस तरह फलित वर्तने से श्रद्धालु लोगों के हृदय में विश्वास उत्पन्न होना स्वाभाविक है। परन्तु महत्वपूर्ण विषयों का फलित इस तरह करने से सूक्ष्म फलित का करना या उससे जनता को लाभ होना शक्य नहीं यह सदैव ध्यान में रखना चाहिये।

वैवाहिक गणना विचार

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर प्रथमतः वधू और वर की कुंडली पर से परस्पर के गुणों का विचार किस तरह किया जाता है यह क्रमवद्ध नीचे लिखा है जैसे :—

१—वर्ण	१ गुण
२—वश्य	२ गुण
३—तारा	३ गुण
४—योनि	४ गुण
५—ग्रह मैत्री	५ गुण
६—गण	६ गुण
७—राशि कूट	७ गुण
८—नाड़ी	८ गुण—कुल ३६ गुण।

वर वधू के कुण्डली का परस्पर मिलान करने पर यदि ३६ गुण का पूर्ण अंक आता हो तो यह विवाह दोनों पक्ष के लिये अत्यन्त सुखावह माना गया है। परन्तु हर प्रसंग पर इस तरह से गुण के अंक मिलना सम्भव नहीं। अतः ऐसे प्रसंग पर कम से कम १८ गुण का मिलना आवश्यक समझा गया है व इससे कम अंक आता हो तो विवाह करना वर्जित है। नाड़ी का दोष अधिक माना गया है। वर वधू के कुण्डली में दोनों की नाड़ी यदि एक ही हो तो वे एक दूसरे को ऋतु बदलने पर या शारीरिक आपत्ति समान भोगने के कारण परस्पर सेवा करने में असमर्थ हो जावेगें अतः ऐसा विवाह करना वर्ज्य है क्योंकि शरीर की गति नाड़ी पर अवलंवित है। नाड़ी तीन प्रकार की है अर्थात् वात, पित्त व कफ तथा आद्य, मध्यम व अंत्य। यह सभी जानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के प्रकृति पर ऋतु व रोग का प्रभाव सम समान पड़ता है। इसी हेतु से वर बधू दोनों की यदि एक ही नाड़ी हो तो वे दोनों एक ही समय रोग से पीड़ित हो परस्पर को सहायक न हो सकेंगे यह संभव है अतएव ऐसा विवाह त्याज्य माना

गया है। इसी तरह गण के तीन प्रकार हैं जैसे देव गण, मनुष्य गण व राक्षस गण। वर वधू के गण एक ही हो तो किसी भी कारण से आपस में मतभेद कभी उत्पन्न हुआ तो उसका मिटना व आनन्द से आयुष्य क्रमण करना संभव हो जायगा। वैवाहिक जीवन सुखमय हो सके इस उद्देश्य से शास्त्रकारों ने देव व मनुष्य गण को श्रेष्ठ मान कर देव व राक्षस और मनुष्य व राक्षस गण को त्याज्य समझा है। धर्म विवाह निश्चित करते समय वर वधू के परस्पर प्रकृति, मैत्री व गुण आदि का सूक्ष्म विचार उनके जन्म कुण्डली द्वारा ज्योतिष शास्त्र के आधार पर निश्चित किया गया है। वह कितना श्रेष्ठ व लाभदायक सिद्ध होता है, इसका विचार सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

वैवाहिक जीवन क्रमण करने वाले स्त्री पुरुषों की आपत्तियां दूर करने के दृष्टि से त्रिकालज्ञ महर्षियोंने इन बन्धनों का पालन करने के लिये शास्त्र में यदि कहा है तो वह लोगों के लिये कितना लाभदायक है यह स्पष्ट सिद्ध होता है। किन्तु प्राचीन विवाह पद्धति अत्यन्त क्लिष्ट है इसलिये उसका त्याग कर अधर्म विवाह पद्धति को आलिंगन देना यह कुटुम्ब, समाज व देश के उन्नति के लिये कितना घातक है इसका विचार प्रत्येक सूज्ञ पुरुष कर सकता है। वर वधू के जन्मकुण्डली पर से दोनों की राशि व नक्षत्र का ज्ञान सहज मालूम कर पंचाङ्ग में दिये हुये विशुद्ध गुण मेलन कोष्टक से गुण संख्या सहज ज्ञात हो सकती है। प्राचीन विवाह पद्धति पर आंग्ल विद्या पण्डितों का विश्वास हो या न हो किन्तु वैवाहिक जीवन क्रमण करने वाले ऐसे पुरुषों को ज्योतिष शास्त्र आह्वान करता है कि उन्हें अपना जीवन सुखमय विताने के लिये इस शास्त्र के मुख्य तत्वों का अनुकरण अवश्य ही करना होगा। मनुष्य किसी भी धर्म का विश्वासी या नास्तिक हो किन्तु उसका पुरुषार्थ निष्फल ठहरने पर या दुर्भाग्य के चक्र में फँसने पर उससे मुक्त होने के हेतु इसी शास्त्र का आश्रय ले अपने भावी जीवन की दिशा वह निश्चित करता है। ऐसा एक नहीं हजारों पुरुषों के अनुभव से सिद्ध हो चुका है। मनुष्य का विश्वास आकाशस्थ ग्रहों के शुभाशुभ परिणामों पर हो अथवा न हो परन्तु ग्रहों के क्रिया व प्रतिक्रिया का कार्य सदैव के लिये चालू रहता है व उसका शुभाशुभ प्रभाव मानवी प्राणी पर पड़ता है इसमें सन्देह नहीं व इन्हीं ग्रहों के आधार पर वधू एवं वर के स्वास्थ्य, आयुष्य, संतति, संपति आदि सुख, दुख पर भी इनका प्रभाव पड़ता है यह किसी भी समंजस मनुष्य को मान्य करना पड़ता है। उदाहरणार्थ—यदि मंगल ग्रह वर या वधू के जन्म कुण्डली में से एक के कुण्डली में १–४–७–८–१२ स्थान में हो तो वर के कुण्डली का प्रभाव वधू के ऊपर व वधू के कुण्डली का प्रभाव वर पर पड़ना निश्चित है। अर्थात् दोनों में से एक का अरिष्ट होना इस ग्रह के दृष्टि व भाव पर निश्चित है क्योंकि मंगल ग्रह अत्यन्त वियोग प्रिय, क्रूर, बलिष्ट व अशुभ है। इसी कारण विवाह निश्चित करते समय यदि दोनों के

कुण्डली में मंगल का होना आवश्यक समझा गया है। एक के कुण्डली में हो तो दूसरे में न होने से विवाह का विचार करना अशुभ माना गया है।

नीचे लिखे हुये वर वधू के कुण्डली में मंगल के ४–७–८ पूर्ण दृष्टि से पाठकों के ध्यान में इसके अशुभ फल का ज्ञान सहज आ सकता है।

जन्म या लग्न कुण्डली (वर)
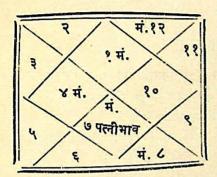
जन्म या लग्न कुण्डली (वधू)
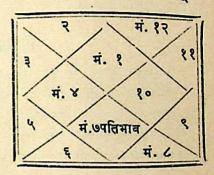
उपर दिये हुये वधू के जन्म कुण्डली में वर के स्थान पर १–४–१२ भाव से मंगल की ४–७–८ पूर्ण दृष्टि पड़ती है व वर के कुण्डली में वधू के भाव पर पड़ती है, यह स्पष्ट है। मंगल कुण्डली में जिस स्थान पर स्थित हो उस स्थान से ४–७–८ दृष्टि का विचार करना चाहिये।

ज्योतिषशास्त्रानुसार विवाह योग विचार

१—सप्तमेश शनि से युक्त हो, ६–८–१२ भाव में स्थित हो तो वर-वधू का विवाह कष्ट व देर से होना निश्चित है।

२—सप्तम भाव में पापग्रह हो, लग्नेश पापग्रह से युक्त हो, पापकर्तरी योग से या पापग्रह से पीड़ित हो व शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो विवाह देर से होना निश्चित है।

३—सप्तम भाव में राहु स्थित हो या मंगल की इस भाव पर दृष्टि हो तो विवाह देर से होगा।

४—लग्नेश, सप्तमेश या शुक्र वक्री हो और चन्द्र, मंगल या चन्द्र, शनि का योग हो तो विवाह देर से होना सम्भव है।

५—रवि और शुक्र बलवान हो और अन्य ग्रह अनुकूल न हो तो भी विवाह का जल्द होना समझा गया है।

६—चन्द्र व गुरु की दृष्टि ५–९ भाव पर पूर्ण हो और पापग्रह से दृष्ट न हो तो भी विवाह जल्द होगा।

७—लग्नेश व सप्तमेश शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, या गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह योग जल्द आता है।

८—लग्नेश व सप्तमेश चन्द्र या शुक्र हो या १–७ भाव में गुरु, चन्द्र व रवि चन्द्र शुक्र स्थित हो अथवा ४–५–९–१०–११ भाव में स्थित हो तो विवाह योग शीघ्र समझना।

९—चन्द्र या शुक्र उच्च राशि का ७–८–९ भाव में हो तो स्त्री पक्षसे धन के साथ विवाह शीघ्र ही होगा।

विवाह कब होगा

१—गोचर में ग्रह रवि, गुरु, शुक्र अनुकूल हों तो विवाह योग शीघ्र है समझना।

२—जन्म कुण्डली में रवि, शुक्र, लग्नेश व सप्तमेश से शुभ योग करते हों या चन्द्र, गुरु गोचर ग्रह से शुभ सम्बन्ध करते हो तो विवाह शीघ्र होता है।

३—कुण्डली में चन्द्र, गुरु, शुक्र १–२–४–५–७–९–१० भाव में हो और इन ग्रहों से शुभ ग्रह योग करते हो तो उसी वर्ष में विवाह होना निश्चित है।

वर-वधू के स्थानों का विचार

१—रवि, चन्द्र, शुक्र व सप्तमेश यदि जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव तक स्थित हों तो वर वधू का निवास स्थान दूर न होगा परन्तु ८ से १२ भाग तक ये ग्रह स्थित हो तो स्थान का दूर होना निश्चित है यह समझना।

२—रवि, चन्द्र, शुक्र व सप्तमेश लग्नसे चतुर्थ भाव तक स्थित हो तो उसी गाँव में वर-वधू का स्थान समझना।

३—उपर लिखे ग्रह यदि ५–८–९ भाव में हो तो वीस कोस के अन्दर निवास स्थान है यह समझना।

४—प्रथम या सप्तम भाव में हो तो नजदीक जिला में समझना चाहिये।

५—अष्टम या दशम भाव में हो तो नजदीक थोड़ी दूर के जिला में निवास स्थान समझना।

६—एकादश या द्वादश भाव में हो तो बहुत दूर है।

७—चन्द्र व गुरु ३–४ भाव में हो तो गाँव में विवाह स्थान समझना।

८—चन्द्र व गुरु एकादश भाव में हो तो मित्र के सहायता से विवाह जमेगा।

९—रवि, मंगल, शनि की दृष्टि सप्तम भाव पर हो व पंचम या सप्तम भाव में वे हो तो विजवर पति की प्राप्ति होना संभव है।

१०—वधू को गुरु व वर को रवि श्रेष्ठ हो तथा चन्द्र बलवान होने पर लग्न के लिए शुभ है समझना।

संपत्ति योग

१—गुरु व शुक्र पीड़ित न हो तो सांपत्तिक स्थिति उत्तम रहेगी।

२—पंचम एकादश में शुभ ग्रह हों व शनि से शुभ दृष्टि योग करते हों तो पितृधन किं वा अन्य पुरुष से पैसा मिलना सम्भव है।

३—गुरु व शनि का कुण्डली में शुभ योग हो तो धन योग से प्राप्ति होगी।

४—धन स्थान में पापग्रह रवि या चन्द्र से अशुभ योग करते हों तो जीवन कष्ट से व्यतीत होगा यह समझना।

द्विभार्या योग

१—लग्नेश द्वादश में हो व २–७ भाव में पाप ग्रह हो तो प्रथम स्त्री के मृत्यु के पश्चात् दूसरा विवाह का योग आना सम्भव है।

२—सप्तम व अष्टम भाव में पापग्रह होकर द्वादश भाव में मंगल हो व सप्तमेश की दृष्टि अपने स्थान पर न हो तो द्विभार्या योग जानना।

३—धन व सप्तम भाव में पापग्रह हो तो स्त्रियों की संख्या अधिक होगी।

४—चन्द्र व शुक्र मिथुन, धन, मीन राशि में हो अथवा कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में हो तो दो विवाह होंगें।

५—सप्तमेश अस्तंगत व नीच ग्रह होकर लग्न, तृतीय व सप्तम भाव में पापग्रह हो तो तीन स्त्रियों का होना संभव है।

प्रसूति समय स्त्रियों की संख्या

१—मेष व मीन राशि लग्न हो तो स्त्रियों की संख्या २ रहेगी।
२—मिथुन, सिंह, वृश्चिक, मकर राशि लग्न हो तो स्त्रियों की संख्या ३ रहेगी।
३—वृषभ, कुम्भ राशि लग्न हो तो स्त्रियों की संख्या ४ होगी।
४—कर्क व धन राशि लग्न हो तो स्त्रियों की संख्या ५ रहेगी।
५—कन्या व तुला राशि का लग्न हो तो स्त्रियों की संख्या ७ रहेगी।

भावों पर सप्त ग्रहों का दृष्टि योग

ग्रह दृष्टि	एकपाद	द्विपाद	त्रिपाद	पूर्णदृष्टि	विशेष दृष्टि
सू, चं०, बु०, शु	३–१०	५–९	४–८	७	
गुरु	३–१०	५–९	४–८	७	५–९
मंगल	३–१०	५–९	४–८	७	४–८
शनि	३–१०	५–९	४–८	७	३–१०

शुभ या अशुभ फल का मिलना यह उपर लिखे हुये अनुसार एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद, सम्पूर्ण, विशेष दृष्टि पर अवलंबित है यह ध्यान में रखना चाहिये।

मंगल के अशुभ दृष्टि का फल (वर कुण्डली)

१—यदि लग्न में मंगल हो तो ४-७-८ अशुभ दृष्टि मातृ स्थान, भार्या स्थान व भर्ता के कुटुम्ब स्थान या मृत्यु स्थान पर पड़ती है। अतः पत्नी सुख का नाश संभव है।

२—चतुर्थ में मंगल हो तो मंगल की ४-७-८ अशुभ दृष्टि पत्नी स्थान, पिता स्थान व लाभ स्थान वर पड़ती है। अतः अशुभ माना गया।

३—सप्तम में मंगल हो तो इसकी ४-७-८ अशुभ दृष्टि पितृ स्थान, स्वतः के लग्न स्थान व कुटुम्ब स्थान पर पड़ती है। अतः अशुभ माना गया।

४—अष्टम में मंगल हो तो इसकी ४-७-८ अशुभ दृष्टि-लाभस्थान, स्वतः के कुटुम्ब स्थान व बन्धु, भगिनी स्थान पर पड़ती है। अतः अशुभ माना गया।

५—द्वादश में मंगल हो तो इसकी ४-७-८ अशुभ दृष्टि बन्धु, भगिनी, व पराक्रम स्थान, रोग, रिपु स्थान, व भार्यास्थान पर पड़ती है। अतः अशुभ माना गया।

जिस स्थान पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ती हो उस भाव का फल अशुभ मिलना निश्चित है इसलिये विवाह संबंध होने के पूर्व इस ग्रह का विचार सर्वप्रथम किया जाता है।

वधू की कुण्डली में मंगल विचार

१—लग्न में मंगल हो तो ४-७-८ पूर्ण अशुभ दृष्टि वर के पितृ स्थान, पति स्थान व पितृपक्ष स्थान पर पड़ती है। अतः अशुभ माना गया।

२—चतुर्थ में मंगल में हो—तो पति स्थान, पति के मातृस्थान व सन्तान स्थान पर पड़ती हैं अतः अशुभ माना गया।

३—सप्तम में मंगल हो तो पति के मातृ स्थान, पति स्थान व पति के मृत्यु स्थान पर पड़ती है अतः अशुभ माना गया।

४—अष्टम में मंगल हो तो पति के भाग्य स्थान, पति के व्यय स्थान व पति के मृत्यु स्थान पर पड़ती है अतः अशुभ माना गया।

मंगल दोष व अपवाद

कन्या के जन्म कुण्डली में १-४-७-८-१२ स्थान में मंगल हो तो वह पति के लिये मृत्युप्रद समझा जाता है। वर के कुण्डली में इसी स्थानपर मंगल हो तो पत्नी को मृत्युप्रद कहना। यह साधारण नियम है। अतः दोनों के कुण्डली में मंगल यदि इसी स्थान में हो तो दोष का शमन होता है व विवाह करना उचित होगा।

भौम दोष का अपवाद—यदि लग्न में मेष का, चतुर्थ में वृश्चिक का, सप्तम में मकर का, अष्टम में कर्क का और द्वादश में धन का मंगल हो तो मंगल दोष का अपवाद मानना। वैसे ही अष्टम मंगल सूर्य के सान्निध्य से यदि अस्तंगत हो, कर्क राशि, मिथुन या कन्या राशि का हो तो भी दोष का परिहार होता है। वधू वर का एक गण, राशि मैत्री तथा गुण बहुत अधिक हों तो मंगल दोष से मुक्त समझना। कुण्डली में यदि १-४-७-८-१२ इस स्थान में शनि हो तो मंगल दोष को वारण करता है।

अनिष्ट जन्मनक्षत्र दोष

१—आश्लेषा नक्षत्र के आखिरी तीन चरण में जन्म लिये हुए वधू वर अपने सास के लिये घातक होते हैं।

२—मूल नक्षत्र के पहले तीन चरण अपने श्वसुर के लिये घातक है।

३—ज्येष्ठा नक्षत्र का चौथा चरण अपने ज्येष्ठ भ्राता के लिये घातक है।

४—विशाखा नक्षत्र का चौथा चरण अपने देवर के लिये घातक है।

५—जिन्हे घातक हों वे यदि जीवित न हों तो जन्म नक्षत्रका दोष नहीं समझना।

विवाह लग्न के शुभ ग्रह

विवाह कालीन लग्न कुण्डली में यदि रवि ३–६–८–११ स्थान में, चन्द्र २–३–११ स्थान में, मंगल ३–६–११ स्थान में, बुध व गुरु ७–८–१२ स्थान का वर्ज्य कर अन्य स्थान में, शुक्र १–२–४–५–९–१० स्थान में, शनि, राहु, केतु ३–६–८ स्थान में व कोई भी ग्रह एकादश भाव में हो तो विवाह शुभ फलदायक होगा ऐसा समझना चाहिये।

सारांश यह कि किसी भी दृष्टि से विचार करने से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वर या वधू के जन्म कुण्डली में मंगल यदि १–४–७–८–१२ भाव में स्थित हो तो वह विवाह होने के पश्चात् मंगल परस्पर वर वधू के लिये, उनके माता पिता, पितृ-पक्ष, सन्तान, लाभ, पराक्रम या बन्धु, भगिनी के लिये घातक है। अतः इसे त्याज्य कहा गया है। वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के लिये ऊपर लिखे हुए स्थानों का या कुटुम्ब के सदस्यों का नाश हुआ तो वह कभी भी सुखदायक नहीं सिद्ध होगा। इस दृष्टि से यदि शास्त्रकारों ने इनका मंगल अशुभ ठहराया हो तो इसमें कोई सन्देह नहीं।

ऊपर दिये हुये केवल एक ही ग्रह के उदाहरण से प्रत्येक संमजस मनुष्य के ध्यान में यह सहज आ सकता है कि वर वधू का वैवाहिक जीवन सुखमय होने के लिये या भावी संकटों से संरक्षण करने के हेतु उनके कुण्डली के ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति, व दृष्टि का विवाह करने के पूर्व विचार करना कितना आवश्यक है। आधुनिक आंग्ल-विद्या विभूषित पंडितों का इस शास्त्र पर विश्वास हो या न हो किन्तु उनके शुभाशुभ स्थिति का शुभाशुभ परिणाम मिलना निश्चित है। इसलिये विवाह निश्चित करते

समय यदि वर के कुण्डली में १–४–७–८–१२ में मंगल हो और वधू के कुण्डली में न हो तो पत्नी सुख न मिलना व उसी तरह बधू के कुण्डली में हो और वर के कुण्डली में न हो तो पति का सुख न मिलना निश्चित समझना चाहिये। परन्तु यदि मंगल के जगह इन स्थानों में शनि स्थित हो तो मंगल के दृष्टि का अशुभ परिणाम वर वधू को या उनके पक्षके सदस्यों पर पड़ना अशक्य है क्योंकि शनि और मंगल ये दोनों वलिष्ट अशुभ ग्रह होते हुये भी परस्पर एक दूसरे के रिपु हैं। रिपु के अशुभ दृष्टि का परिणाम उस भाव में रिपु के स्थित रहते पड़ना केवल असम्भव है क्योंकि मंगल का दोष शनि व शनि का दोष मंगल निवारण करने के लिये परस्पर समर्थ है। हमारे मत से मंगल के अशुभ दृष्टि का विचार करते समय उसके शुभाशुभ राशि, अंश, शुभ ग्रहों की दृष्टि व उसके निर्बली व बली दृष्टि का भी विचार अवश्य करना चाहिये जिससे सूज्ञ जन उचित निष्कर्ष पर पहुँच आगे निश्चय करने का सोच सके। साथ ही जन्म कुण्डली शुद्ध है या अशुद्ध इसका विचार किसी भी सूज्ञ ज्योतिषी से सर्व प्रथम करना अति आवश्यक है! शुद्ध जन्म कुण्डली के अभाव से ज्योतिष शास्त्र में दिये हुए मार्गों का अवलम्ब करने पर भी जो अकस्मात् दुखद प्रसंग आता है उसका मुख्य कारण विवाह पद्धति का अनुकरण न होकर शुद्ध जन्म कुण्डली का अभाव है। यह सूज्ञ पाठकों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

पति के कुण्डली से पत्नी सम्बन्धी ज्ञान
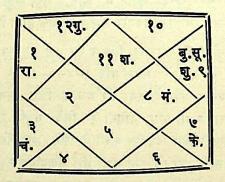
पति के कुण्डली का अवलोकन करने से किसी भी समंजस मनुष्य को पत्नी सम्बन्धी अनेक वातों का सहज ज्ञान प्राप्त हो सकता है। जैसे :—

१—उपर दिये हुये कुण्डली में लग्न भाव में शनि स्थित है। शनि ग्रह का रंग काला है। इसलिये पति के शरीर का रंग काला होना चाहिये। शनि की पूर्ण दृष्टि ३–७–१० भाव पर पड़ती है। अत: इस अशुभ ग्रह के दृष्टि के कारण इस मनुष्य के हृदय में बन्धु, भगिनी के प्रति अत्यन्त प्रेमपूर्वक सम्बन्ध होना सम्भव नहीं क्योंकि इस स्थान में शनि का मित्र राहु स्थित है। शनि की पूर्ण दष्टि भार्या स्थान पर

पूर्ण रूप से पड़ती है। इसलिये पत्नी के शरीर का रंग कुछ काला होना चाहिये। यह भाव पत्नीका लग्न भाव है अर्थात् शरीर व मस्तिष्क के सम्बन्ध से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि वह स्त्री कुछ क्रोधी स्वभाव की होना चाहिये व उसे अनेक समय क्रोध का झटका आना निश्चित है तथा पति पत्नी के विचार धारा में साम्यता होना सम्भव नहीं।

२—शनि की पूर्ण दृष्टि दशम भाव पर भी पड़ती है। यहां पर मंगल ग्रह स्थित है और वह शनि का रिपु है। यह भाव पिता का भाव और उनके उपजीविका का साधन स्थान है। मंगल ग्रह भी अशुभ है और वह हठ्ठी स्वभाव का ग्रह है। इसलिये पिता का स्वभाव क्रोधी व हठ्ठी होना चाहिये। शनि ग्रह दासत्व का द्योतक ग्रह है। अतः उनके उपजीविका का साधन नौकरी से होना निश्चित है परन्तु यह नौकरी डाक्टरी या वैद्यक महकमा में होना चाहिये क्योंकि मंगल ग्रह वैद्यक विद्या का स्वामी है। नौकरी के विषय में निश्चित रूप से फलित वर्तना हो तो शनि और मंगल दोनों ग्रहों में, जो अंश में अर्थात् ग्रह स्पष्ट करने पर जो अधिक बलवान सिद्ध होगा उसी खाता में नौकरी मिलना सम्भव है। इसके सिवाय मंगल भूमिपुत्र है इसलिये खेती महकमें भी नौकरी करना सम्भव है क्योंकि अपने ही राशि में वह इस भाव में स्थित है, साथही मंगल भूमिपुत्र होने तथा पिता के भाव में होने के कारण खेती के लिये कुछ जमीन, उपजीविका हेतु या स्वतः रहने के लिए मकान बांधना निश्चित है व उसके पश्चात् खेती या मकान का उनके वारिस को मिलना भी सम्भव है।

३—गुरु धन भाव में स्थित है और उस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। यह भाव पितृ धन भाव और कुटुम्ब के सदस्यों के स्वभाव का भाव है। इसलिये कुटुम्ब के सदस्यों का स्वभाव गुरु ग्रह के स्वभावानुसार विचारवान् व शान्तिप्रिय होना चाहिये। इस ग्रह की पूर्ण दृष्टि ५–७–९ षष्ठ भाव, मृत्यु भाव, और पितृ भाव पर पड़ती है। अतः कुण्डली वाले को कोई रिपु होना सम्भव नहीं व किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट होना भी सम्भव नहीं क्योंकि यह रिपु और रोग का भाव है और इस भाव पर गुरु की शुभ दृष्टि पूर्ण रूप से पड़ती है। सप्तम दृष्टि अष्टम मृत्यु भाव पर है तथा इस शुभ दृष्टि के कारण बालक आयुष्यवान् होगा। गुरु की नवम दृष्टि पूर्ण रूप से पितृभाव पर पड़ती है अतः समग्र समय पर पिता का स्वभाव कुछ क्रोधी व हट्टी होते हुये भी, गुरु के शुभ दृष्टि के कारण दूसरे ही क्षण में उनका स्वभाव विचारशीलता युक्त होना निश्चित है।

४—राहु यह उपग्रह तृतीय भाव से नवम भाग्य पर पूर्ण दृष्टि से देखता है और यहां उसका मित्र केतु भी स्थित है। अतः बालक साधारणतः भाग्यवान् रहेगा। पापग्रह राहु बन्धु, भगिनी और पराक्रम स्थान में स्थित है, व पाप ग्रह जिस भाव में स्थित रहता है

उस भाव की रक्षा और जिस भाव पर दृष्टि हो उस भाव का अशुभ फल देता है। साथ ही इस भाव पर शनि की अशुभ दृष्टि पड़ती है परन्तु शनि का मन्त्री राहु इस स्थान में स्थित होने के कारण बन्धु भगिनी के प्रति ऊँचे प्रमाण पर प्रेम का होना सम्भव नहीं व पराक्रम में भी साधारण प्रमाण पर यश मिलेगा।

५—चन्द्र ग्रह पंचम अर्थात् विद्या, बुद्धि, व सन्तान भाव में स्थित है और इस ग्रह पर रवि, बुध व शुक्र की पूर्ण सप्तम दृष्टि है। इसलिये उपर लिखे हुए तीनों बातों का शुभ फल मिलना सम्भव है।

६—केतु अशुभ ग्रह भाग्य को संरक्षण करने हेतु नवम भाव में स्थित है। वह राहु से दृश्य है अतः इस भाव का फल साधारण प्रमाण पर मिलता रहेगा, यह हम पहले लिख चुके हैं।

७—लाभ भाव में शुक्र, सूर्य एवं बुध तीन ग्रह स्थित हैं। सूर्य प्रतापी व अशुभ है। वह लाभ स्थान में स्थित होने के कारण उस भाव का पूर्ण रूप से रक्षण करेगा और मनुष्य को विना अधिक प्रयत्न किये अनायास लाभ का मिलना निश्चित है जो कि सर्वसाधारण मनुष्य के लिये इस रीति से लाभ का फल मिलना सम्भव नहीं।

८—सप्तम भाव पत्नी का लग्न भाव है और अष्टम भाव उससे पितृ या कुटुम्ब का भाव है। नवम भाव बन्धु भगिनी का, दशम भाव माता का, एकादश भाव सन्तान, विद्या, बुद्धि का, द्वादश भाव षष्ठ भाव रोग, रिपु का, सप्तम भाव पति का, अष्टम द्वितीय मृत्यु व आयु का, नवम तृतीय भाग्य का, दशम चतुर्थ पिता का व एकादश पंचम लाभ का और द्वादश षष्ट व्यय का भाव है। इसे ध्यान में रखते हुये ग्रहों के स्थित हुये भाव व उनके दृष्टि, युति आदि का विचार कर फलित का निर्णय करना उचित होगा।

१—सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि होने के कारण इसका फलित उपर्युक्त पति के लग्न फलित का वर्णन जो प्रथम धारा में लिखा है वैसा होगा। क्योंकि यह पत्नी का लग्न भाव है।

२—अष्टम धन भाव पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है। अतः कुटुम्ब के सदस्यों का स्वभाव दयालु, मायालु, शान्त चित्त, व वृत्ति सन्तोषी प्रेमयुक्त होना निश्चित है तथा द्रव्य दृष्टि से उत्तम रहना चाहिये। एवं द्रव्य संचय होना चाहिये।

३—नवम भाव—बन्धु भगिनी का स्वभाव कुछ नरम व गरम होना निश्चित है।

४—दशम भाव—माता का स्वभाव कुछ क्रोधी व हट्ठी होते हुये गुरु के शुभ दृष्टिके कारण स्थिर चित्तवृत्ति की होनी चाहिये। पिता का स्वभाव हट्ठी होना चाहिये।

५—एकादश भाव—सन्तान सुख से युक्त रहेगी। कन्या संतति से पुत्र संतति की संख्या अधिक रहनी निश्चित है।

६—द्वादश-षष्टभाव का स्वामी शनि है जो केन्द्र में अपने ही राशि में स्थित है। अतः रोग व रिपु की पीड़ा न होना स्वाभाविक है।

७—लग्न-(सप्तम) भाव में शनि है। पति का स्वभाव कुछ क्रोधी होना चाहिये।

८—द्वितीय (धन) मृत्यु अष्टम भाव में गुरु स्थित है, अतः आयु मर्यादा साधारणतः दीर्घ होना चाहिये।

९—तृतीय (नवम) भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि व राहु के स्थित होने के कारण भाग्य की स्थिति स्थिर रहना सम्भव नहीं तथापि सदैव सुख मिलेगा।

१०—चतुर्थ (दशम) भाव में वृषभ राशि है। उसका स्वामी पति के लाभ भाव में सूर्य बुध से युक्त है अतः श्वसुर को सदा लाभ होते रहना स्वाभाविक है परन्तु कुछ क्रोधी स्वभाव का होना प्रतीत होता है।

११—पंचम (एकादश) भाव में चन्द्र स्थित है। यह लाभ भाव होने के कारण व इस भाव में चन्द्र पर मंगल की दृष्टि होते हुए व मित्र के नाते सदा लाभ मिलता रहेगा क्योंकि रवि, बुध, शुक्र की पूर्ण दृष्टि है।

१२—षष्ठ (द्वादश) भाव का स्वामी लाभ भाव में स्थित है और इस भाव पर गुरु की पूर्ण शुभ दृष्टि है। अतः धन का व्यय सत्कर्म के लिये होना निश्चित है।

उपर लिखे अनुसार पति के कुण्डली का अवलोकन करने से पत्नी के रंग, रूप, गुण धर्म, स्वभाव व उसके पिता माता बन्धु, भगिनी, सन्तान, रोग, रिपु, पति से सुख दुःख की प्राप्ति व धनके व्यय सम्बन्ध का संक्षिप्त ज्ञान किसी भी समंजस मनुष्य को सहज आ सकता है और यह फलित वर्तते समय ध्यान में रखना आवश्यक है।

स्त्री जातक

इस जगत में ईश्वर की लीला जिस तरह अगाध, अगम्य, विचित्र और अपरम्पार है उसी तरह कनक, कान्ता और क़ाल की लीला भी बहुत ही विचित्र व अपरम्पार है जो कि पुरुष जाति के लिये उसे जानना केवल कठिन ही नहीं परन्तु अशक्य है और यह बात प्रत्येक समजंस व्यक्ति को बिना किसी शर्त से मान्य करना होगा। कारण यह है कि अनेक प्राचीन ग्रंथों में यह वर्णन है कि त्रिमूर्ति भगवान्-ब्रह्मा, विष्णु, महेश क्रमशः उत्पादक, रक्षक व संहारक हैं। इनमें से श्री विष्णु भगवान के मन में सृष्टि निर्माण करने की इच्छा जब उत्पन्न हुई तब उन्होंने श्री ब्रह्माजी को यह इच्छा विदित की। उनके इच्छानुसार श्रीब्रह्माजी ने सर्वप्रथम चन्द्र व सूर्य दो ग्रह और वायु, जल, अग्नि, आकाश, पाताल ऐसे पाँच तत्व निर्माण किये व मनुष्य जाति के रक्षणार्थ अनेक जाति के फल, पुष्प, जड़ी बूटी निर्माण कर मनुष्य जाति में प्रथम पुरुष वर्ग का निर्माण किया। परन्तु कुछ काल के पश्चात् पुरुष वर्ग को जब क़ामवासना त्रस्त

करने लगी तब सब पुरुष वर्ग श्रीविष्णु भगवान् के समक्ष उपस्थित हो अपना दुःख निवेदन करने लगे। यह सुनते ही श्रीविष्णु भगवान् ने श्रीमहेशजी को इस पुरुष जाति की सृष्टि भस्म करने की आज्ञा दी व पश्चात् ब्रह्माजी को पुरुष और स्त्री जाति के सह नई सृष्टि का निर्माण करने की आज्ञा की। परन्तु स्त्री जाति निर्माण करने की समस्या श्रीब्रह्माजी के लिये कठिन सी प्रतीत हुई क्योंकि पुरुष जाति के अन्दर के अवयवों के अपेक्षा स्त्री जाति के निर्माण करने की यह समस्या श्रीब्रह्माजी को कठिन सी अनुभव हुई। पुरुष जाति के अन्दर के अवयवों के अपेक्षा स्त्री जाति के अवयवों को जिसमें गर्भ का धारण होना, माता के अवयवों द्वारा उसका षोषण होना व नवम मास के पश्चात् बालक का बहिर्गमन होना विकटही समस्या थी। तथापि ब्रह्माजी ने प्रथम ऐसा दो भिन्न अवयवों का मनुष्य निर्माण किया जिसके दाहिने ओर पुरुष व बायें ओर स्त्री थी और उसे अर्द्धनारीनटेश्वर की संज्ञा दी। इसके पश्चात् स्त्री वर्ग का निर्माण होना आरम्भ हुआ व इसी कारण धर्मकार्य करते समय स्त्री जाति को अर्धांगिनी मान्य करते हुए उसे बायें ओर बिठाकर कार्य करने की प्रथा निर्माण हुई। परन्तु श्री ब्रह्माजी ने प्रथम पुरुष वर्ग निर्माण करते समय उसे रूप, रंग, गुण धर्म, स्वभाव, शौर्य, धैर्य आदि देने के कारण उनके पास स्त्री वर्ग को इन गुणों से आभूषित करने का कोई साधन नहीं रहा। अतः उन्हें स्वयं निर्माण किये हुए ग्रह, पंचतत्व, पशु, पक्षी आदि के रुप, रंग, गुण धर्म, स्वभाव आदि का उनके द्वारा प्रादुर्भाव स्त्री जाति में अधिक अंश में दिखाई देता है और वह नीचे लिखे अनुसार है। जैसे:—

१—सूर्य से–कार्य में सदा संलग्न रहने की प्रवृत्ति और शक्ति।

२—चन्द्र से–रूप, रंग, शरीर की कोमलता व मोहकता।

३—अग्नि से–शीघ्र ही उग्ररूप धारण करने की प्रवृत्ति।

४—वायु से–पुरुष वर्ग की नित्य सेवा बिना भेदभाव के करने व सुख देने की मनोवृत्ति।

५—धूम से–नेत्रों से शीघ्र अश्रुपात करने की प्रवृत्ति।

६—सिंह से–गर्जना करने व शौर्य दिखाने की शक्ति।

७—हरिण से–चंचलता, सदा डरने की प्रवृत्ति।

८—मयूर से–सुन्दर व सुडौल शरीर व नृत्यकला की इच्छा व चातुर्यता।

९—सर्प से–सदा फुफकारने व मन में भय व विष उत्पन्न करने की शक्ति।

१०—बतक से–नम्र रहते हुए अज्ञानतापूर्वक सदा आगे बढ़ते रहने की प्रवृत्ति।

११—घास से–नित्य कांपते व हिलते रहने की वृत्ति।

१२—लजालू से–नित्य लज्जित हुए दिखने की प्रवृत्ति।

१३—हिम से–दूसरों को नित्य शान्ति, समाधान व सुख मान कर चित्त को ठण्डा करने की प्रवृत्ति।

१४—मधु से–मधुर भाषण करने की वृत्ति।

१५—कोयल से–मधुर बोली से दूसरों का मन हरण करने की शक्ति।

१६—हीरे से–प्रसंग पर मन को कठोर करने की भारी शक्ति।

इस तरह अनेक गुणों का प्रादुर्भाव स्त्री जाति में अधिक अंश में होते हुये देखकर ब्रह्माजी को मान्य करना पड़ा कि स्त्री जाति पुरुष जाति की जोड़ होने के अपेक्षा बेजोड़ हो गयी। यह मान्य करते हुये भी ब्रह्माजी को दुर्लभ करते हुए स्त्री जाति को पुरुष वर्ग की अर्धाङ्गिनी बनने की मान्यता दी व ब्रह्माजी इस जाति को अधिक गुण कुछ अधिक अंश में प्रदान करने के कारण से उन्हें पुरुष वर्ग को सदा अपने वश में रखनेकी शक्ति प्राप्त हुई। दुर्लक्ष करने का हेतु यह दिखता है कि स्त्री जाति को इस संसार की प्रगति करते हुए उसे कायम रखने की भारी जवाबदारी सौंपी गयी अन्यथा स्त्री जाति के उत्पत्ति का कार्य ब्रह्माजी को नित्य करना पड़ता जैसे कि सर्वप्रथम उन्हें पुरुष वर्ग निर्माण करना पड़ा था। पुरुष जाति को इस संसार के प्रगति का कार्य करना असंभव होने के कारण, स्त्री जाति को उत्पादक की संज्ञा के साथ ही अमूल्य रत्न की संज्ञा ब्रह्माजी ने प्रदान की व इसी कारण स्त्री जाति में पुरुष जाति के अपेक्षा शौर्य, धैर्य, तर्क बुद्धि व सहनशीलता दृष्टिगोचर हो रही है और यह उनमें सदा कायम रहेगी।

प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से यह सिद्ध होता है कि स्त्री जाति की श्रेष्ठता स्वयं महेशजी को जब मान्य करना पड़ा तब यह जानते हुए संसार के साधारण पुरुषों की कथा व दशा के विषय में हम क्या कह सकते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में कहा है कि एक समय पार्वतीजी ने स्नानगृह में जाने के पूर्व दरवाजे पर श्रीगणेशजी की मोम-मूर्ति बैठाकर उसमें बोलने की शक्ति प्रदान कर कहा कि किसी को भी अन्दर आने के लिये मना करना। श्रीगणेशजी ने आज्ञा को शिरोधार्य किया परन्तु थोड़े समय के बाद वहां श्रीशंकरजी उपस्थित होकर पार्वतीजी से मिलने के हेतु अन्दर जाने लगे। यह देखते ही श्रीगणेशजी ने उन्हें मना किया व श्रीशंकरजीको क्रोध हो आया व उन्होने गणेश की मूर्ति को सिर से उड़ा दिया तथा वे स्नानगृह के भीतर गये। शंकरजी को देखते ही पार्वतीजी ने उन्हें गणेशजी के विषय में पूछा व शंकरजी ने सर्व वृतान्त विदित किया। यह सुनते ही पार्वतीजी को अति दुःख हुआ व प्रलाप करते श्री शंकरजी से प्रार्थना किया कि सर्व प्रथम गणेशजी को जीवदान दीजिये व पश्चात् अन्य वार्ता कीजिये। यह सुनकर शंकरजी के लिये एक भारी समस्या उत्पन्न हुई। गणेशजी का मस्तक स्वयं उन्होंने ही उड़ाया था। उस मस्तक को कहां से लाया जावे व किसी तरह जीवदान देना यह अपना धर्म है इस हेतु वे भरसक प्रयत्न करने के लिये उद्यत हुए और विवश हो गये। अन्त में एक स्थान में एक हस्तिनी को अपने बच्चे सहित पीठ की ओर उसे सोते देखकर उसका मस्तक उड़ा कर गणेशजी के धड़ में आकर लगाया व अपने शक्ति बल से उसे जीवित किया। यह वृतान्त पार्वतीजी

को बताने पर भी उन्हें कोई सन्तोष न हुआ व उन्होंने शंकरजी को कहा कि देवताओं की स्मरण पूजा करने के पूर्व श्रीगणेश का ध्यान, स्मरण व पूजा सर्वप्रथम होना चाहिये। सर्व ग्रन्थों में प्रथम श्रीगणेशजी का ध्यान, स्मरण, व पूजा करना सर्वमान्य किये जाने का वरदान पार्वतीजी ने शंकरजी से मांगा व उन्होंने सहर्ष अनुमति दिया। उसी समय से आज तक श्री गणेशजी की पूजा आरम्भ हो हिन्दू धर्मशास्त्रों व ग्रन्थों में "श्रीगणेशाय नमः" इन शब्दों का प्रचार आरम्भ हुआ। जगत में यह पहिला देवता है जो कि बिना माता के जन्म कर पृथ्वी में सर्व देवताओं में श्रेष्ठ माने गये। इसी कारण से श्रीगणेशजी को शंकरपुत्र नहीं किन्तु पार्वती पुत्र का बहुमान प्राप्त हुआ व आज तक यह प्रचार में कायम है। इस एक ही उदाहरण से स्त्री जाति की लीला कितनी अगाध व अनन्य है यह सिद्ध होता है। इस जगतमें स्त्री जाति को यदि जन्म न दिया जाता तो यह संसार उनके बिना शून्यवत् प्रतीत होता और सृष्टि की प्रगति होना असम्भव हो गया होता। अस्तु, ब्रह्माजी ने स्त्री जाति को ऊपर लिखे हुए अनेक गुण प्रदान करने पर भी नीचे लिखे हुए गुण धर्म आदि उनमें विशेष प्रमाण पर दिखाई देते हैं और वे यह हैं। जैसे :—

१—दिल-सोना, चान्दी, माणिक, मोती, सुन्दर वस्त्रादि को देखते ही मन में प्रबल भावना व मोह उत्पन्न होना व शरीर को आभूषित करने की इच्छा मन में सदा वास करते रहना।

२—उपयोग-स्वार्थलोलुपता, शक्ति, स्फूर्ति, धर्म की प्रबल भावना की वृत्ति मन में आना व रहना और संपत्ति विभाजन की प्रबल इच्छा मन में कायम रहना।

३—ईर्ष्या-अपने से अधिक रूपवान व धनवान स्त्रीको देख मन में स्पर्धा व ईर्ष्या उत्पन्न होना।

४—स्वतंत्रता-पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होते ही स्फोटक पदार्थ के समान पृथ्वी से शीघ्र ऊपर उड़कर नजर के बाहर होना।

इन गुणों से स्त्री जाति आभूषित किये जाने के कारण प्रत्येक पुरुष को चाहिये कि वे इस जाति से अत्यन्त प्रेमभाव व कुशलतापूर्वक नित्य व्यवहार करें। तभी उनसे सांसारिक जीवन का सच्चा सुख मिलना व सुख और शांति से आयुष्य क्रमण करना पुरुष जाति के लिये संभव होगा परन्तु जो व्यक्ति इनके ऊपर लिखे हुये गुणों व स्वभाव से अपरिचित हों उन्हें सांसारिक जीवन में सुख व शांति मिलना असम्भव होगा इसमें सन्देह नहीं। संसार के हर क्षेत्र में पुरुष जाति के अपेक्षा स्त्री जाति का अधिक चतुर व शक्तिशाली होते हुए इस वर्ग पर अन्धविश्वास करना, उन्हें सदा दासवत् समझना या उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देना पुरुष वर्ग के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हो चुका है क्योंकि यह बम की तरह उड़कर शीघ्र ही अदृश्य हो पुरुष का संसारिक जीवन एक क्षण में नष्ट

हो समाप्त हो जायेगा व बिना स्त्री के सांसारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय व असह्य दुःखदायक होगा। यह भी निर्विवाद है। ईश्वर ने पुरुष वर्ग को सुख प्राप्त हो इसी मुख्य उद्देश्य से स्त्री वर्ग को इस पृथ्वी पर जन्म दिया यह स्मरण रखते हुए प्रत्येक विचारशील व दूरदर्शी व्यक्ति को संकट काल का ज्ञान प्रथम प्राप्त कर प्रयत्नशील होना चाहिये। यही ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। काल की महिमा स्त्री जाति के महिमा से अधिक विचित्र व अगम्य है व परिवर्तनशील है। अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह अपने प्रयत्न में सदा सर्वदा संलग्न रहते हुए सृष्टिकर्ता परमेश्वर से नित्य प्रार्थना करता रहे कि हे भगवन् !

मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि बदल गया है जमाना।
पर मेरी आपसे यह विनंती है कि आप न बदल जाना॥
मुझे इसका जरा भी गम नहीं कि बदल गया है जमाना।
यह जिन्दगी आपके दम पर है मेरे कसूरों को आप माफ करना॥

संसार और मानवी जीवन

यह संसार और मानवी जीवन फूलों की सेज नहीं किन्तु नित्य युद्ध का एक क्षेत्र है। इस पर वही मनुष्य विजय प्राप्त कर सकेगा जो अपने आंतरिक शक्तियों पर निर्भर हो विकास करते हुए यश व अपयश की परवाह न कर योद्धा के समान जीवन संग्राम लड़ने के लिये सदैव तत्पर रहता है। संसार में संकट, आपत्ति, आंधी, तूफान, अग्नि, जल, भूकम्प आदि हर तरह के प्रसंग मनुष्य के साहस, धैर्य, शक्ति को नित्य आह्वान देते हैं और शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि कठिन परिस्थिति का सामना करने से ही यह मानवी जीवन संग्राम जीता जा सकता है। न कि सिर्फ ऐसा कहते रहने से कि मैं तो दुःख-सागर में फंसा हूँ क्या करूँ, कहां जाऊं, इस तरह के उद्‌गार निकालते हुए लाखों नहीं करोड़ो स्त्री-पुरुष हताश होकर अपना जीवन दुःख से व्यतीत करते हुए दिखायी देते हैं व सदा अपने भाग्य को धिक्कारते रहते हैं। उन्हें प्रयत्न में थोड़ा यश भी मिले तो उन्हें सन्तोष नहीं होता। इस तरह हताश हो अपने भाग्य को सदा कोसते रहते हैं। यह हमारे निर्बल मनोदशा का मुख्य कारण है व यही हमारे पराजय का भी कारण है। मनुष्य को चाहिये कि वह अपने प्रबल इच्छाशक्ति के बल से आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर अपनी जीवनयात्रा सुख से व्यतीत करें। यही ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य को चाहिये कि वह हर घड़ी कर्मयोगी (प्रयत्नवादी) बना रहे न कि प्रारब्धवादी। इस दुनिया में लाखों व करोड़ों में शायद ही एक-दो पुरु होंगे जो केवल प्रारब्ध पर ही निर्भर रहते हैं और बिना प्रयत्न के सुख प्राप्त कर सकते हों। किन्तु शेष लोगों को नित्य प्रयत्न के बल ही सुख की प्राप्ति होती है। आकाशस्थ नव ग्रहों में से केवल चार ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ और पांच ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहू, केतु, अशुभ हैं। शुभ ग्रहों के अपेक्षा अशुभ ग्रहों की संख्या अधिक होने के

को बताने पर भी उन्हें कोई सन्तोष न हुआ व उन्होंने शंकरजी को कहा कि देवताओं की स्मरण पूजा करने के पूर्व श्रीगणेश का ध्यान, स्मरण व पूजा सर्वप्रथम होना चाहिये। सर्व ग्रन्थों में प्रथम श्रीगणेशजी का ध्यान, स्मरण, व पूजा करना सर्वमान्य किये जाने का वरदान पार्वतीजी ने शंकरजी से मांगा व उन्होंने सहर्ष अनुमति दिया। उसी समय से आज तक श्री गणेशजी की पूजा आरम्भ हो हिन्दू धर्मशास्त्रों व ग्रन्थों में "श्रीगणेशाय नमः" इन शब्दों का प्रचार आरम्भ हुआ। जगत में यह पहिला देवता है जो कि बिना माता के जन्म कर पृथ्वी में सर्व देवताओं में श्रेष्ठ माने गये। इसी कारण से श्रीगणेशजी को शंकरपुत्र नहीं किन्तु पार्वती पुत्र का बहुमान प्राप्त हुआ व आज तक यह प्रचार में कायम है। इस एक ही उदाहरण से स्त्री जाति की लीला कितनी अगाध व अनन्त है यह सिद्ध होता है। इस जगतमें स्त्री जाति को यदि जन्म न दिया जाता तो यह संसार उनके बिना शून्यवत् प्रतीत होता और सृष्टि की प्रगति होना असम्भव हो गया होता। अस्तु, ब्रह्माजी ने स्त्री जाति को ऊपर लिखे हुए अनेक गुण प्रदान करने पर भी नीचे लिखे हुए गुण धर्म आदि उनमें विशेष प्रमाण पर दिखाई देते हैं और वे यह हैं। जैसे :—

१—दिल–सोना, चान्दी, माणिक, मोती, सुन्दर वस्त्रादि को देखते ही मन में प्रबल भावना व मोह उत्पन्न होना व शरीर को आभूषित करने की इच्छा मन में सदा वास करते रहना।

२—उपयोग–स्वार्थलोलुपता, शक्ति, स्फूर्ति, धर्म की प्रबल भावना की वृत्ति मन में आना व रहना और संपत्ति विभाजन की प्रबल इच्छा मन में कायम रहना।

३—ईर्ष्या–अपने से अधिक रूपवान व धनवान स्त्रीको देख मन में स्पर्धा व ईर्ष्या उत्पन्न होना।

४—स्वतंत्रता–पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होते ही स्फोटक पदार्थ के समान पृथ्वी से शीघ्र ऊपर उड़कर नजर के बाहर होना।

इन गुणों से स्त्री जाति आभूषित किये जाने के कारण प्रत्येक पुरुष को चाहिये कि वे इस जाति से अत्यन्त प्रेमभाव व कुशलतापूर्वक नित्य व्यवहार करें। तभी उनसे सांसारिक जीवन का सच्चा सुख मिलना व सुख और शांति से आयुष्य क्रमण करना पुरुष जाति के लिये संभव होगा परन्तु जो व्यक्ति इनके ऊपर लिखे हुये गुणों व स्वभाव से अपरिचित हों उन्हें सांसारिक जीवन में सुख व शांति मिलना असम्भव होगा इसमें सन्देह नहीं। संसार के हर क्षेत्र में पुरुष जाति के अपेक्षा स्त्री जाति का अधिक चतुर व शक्तिशाली होते हुए इस वर्ग पर अन्धविश्वास करना, उन्हें सदा दासवत् समझना या उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देना पुरुष वर्ग के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हो चुका है क्योंकि यह भ्रम की तरह उड़कर शीघ्र ही अदृश्य हो पुरुष का संसारिक जीवन एक क्षण में नष्ट

हो समाप्त हो जायेगा व विना स्त्री के सांसारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय व असह्य दुःखदायक होगा। यह भी निर्विवाद है। ईश्वर ने पुरुष वर्ग को सुख प्राप्त हो इसी मुख्य उद्देश्य से स्त्री वर्ग को इस पृथ्वी पर जन्म दिया यह स्मरण रखते हुए प्रत्येक विचारशील व दूरदर्शी व्यक्ति को संकट काल का ज्ञान प्रथम प्राप्त कर प्रयत्नशील होना चाहिये। यही ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। काल की महिमा स्त्री जाति के महिमा से अधिक विचित्र व अगम्य है व परिवर्तनशील है। अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह अपने प्रयत्न में सदा सर्वदा संलग्न रहते हुए सृष्टि-कर्ता परमेश्वर से नित्य प्रार्थना करता रहे कि हे भगवन् !

मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि बदल गया है जमाना।
पर मेरी आपसे यह विनंती है कि आप न बदल जाना॥
मुझे इसका जरा भी गम नहीं कि बदल गया है जमाना।
यह जिन्दगी आपके दम पर है मेरे कसूरों को आप माफ करना॥

संसार और मानवी जीवन

यह संसार और मानवी जीवन फूलों की सेज नहीं किन्तु नित्य युद्ध का एक क्षेत्र है। इस पर वही मनुष्य विजय प्राप्त कर सकेगा जो अपने आंतरिक शक्तियों पर निर्भर हो विकास करते हुए यश व अपयश की परवाह न कर योद्धा के समान जीवन संग्राम लड़ने के लिये सदैव तत्पर रहता है। संसार में संकट, आपत्ति, आंधी, तूफान, अग्नि, जल, भूकम्प आदि हर तरह के प्रसंग मनुष्य के साहस, धैर्य, शक्ति को नित्य आह्वान देते हैं और शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि कठिन परिस्थिति का सामना करने से ही यह मानवी जीवन संग्राम जीता जा सकता है। न कि सिर्फ ऐसा कहते रहने से कि मैं तो दुःख-सागर में फंसा हूँ क्या करूँ, कहां जाऊं, इस तरह के उद्‌गार निकालते हुए लाखों नहीं करोड़ो स्त्री-पुरुष हताश होकर अपना जीवन दुःख से व्यतीत करते हुए दिखायी देते हैं व सदा अपने भाग्य को धिक्कारते रहते हैं। उन्हें प्रयत्न में थोड़ा यश भी मिले तो उन्हें सन्तोष नहीं होता। इस तरह हताश हो अपने भाग्य को सदा कोसते रहते हैं। यह हमारे निर्बल मनोदशा का मुख्य कारण है व यही हमारे पराजय का भी कारण है। मनुष्य को चाहिये कि वह अपने प्रबल इच्छाशक्ति के बल से आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर अपनी जीवनयात्रा सुख से व्यतीत करें। यही ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य को चाहिये कि वह हर घड़ी कर्मयोगी (प्रयत्नवादी) बना रहे न कि प्रारब्धवादी। इस दुनिया में लाखों व करोड़ों में शायद ही एक-दो पुरु होंगे जो केवल प्रारब्ध पर ही निर्भर रहते हैं और विना प्रयत्न के सुख प्राप्त कर सकते हों। किन्तु शेष लोगों को नित्य प्रयत्न के बल ही सुख की प्राप्ति होती है। आकाशस्थ नव ग्रहों में से केवल चार ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ और पांच ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहू, केतु, अशुभ हैं। शुभ ग्रहों के अपेक्षा अशुभ ग्रहों की संख्या अधिक होने के

कारण यदि इस संसार में सुख के अपेक्षा दुःख मनुष्य को अधिक मिलता हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं व प्रयत्न के सिवाय अन्य कोई उपाय नहीं। अतः मनुष्य को नित्य प्रयत्न करते रहना चाहिये यही ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान का उद्देश्य है।

स्त्री जातक विचार

पूर्व जन्म के कर्म व योगानुसार स्त्री जाति का जातक फल स्वतंत्र है परन्तु इनका उपयोग विवाह होने के पूर्व किया जाता है व विवाह के पश्चात् उसके पति के कुण्डली का अवलोकन कर यह फलित सप्तम भाव से अधिकतः किया जाता है परन्तु वर्तमान समय में ऐसी हजारों स्त्रियाँ हैं जो विद्या में प्रवीण और नौकरी में रत व स्वतंत्र हैं। ऐसी स्त्रियों को स्त्री जातक फलित से लाभ होना सम्भव है। इसलिये यहां इस विषय पर लिखना हम आवश्यक समझते हैं ताकि इसका लाभ अविवाहित व विवाहित दोनों वर्गों की स्त्री जाति के प्रसंग पर मिल सके। स्त्री जाति के जातक का फल शौनक व नारद आदि तपस्वी महर्षियों ने अपने ग्रन्थों में श्लोक रूप में वर्णित किये हैं व इनमें से महत्वपूर्ण योग व प्रसंगों का वर्णन हमने संक्षिप्त में यहाँ किया है।

१—लग्न व चन्द्र से शरीर, रूप, रंग आदि—पंचम भाव से संतान आदि, लग्न व चन्द्र दोनों के सप्तम स्थान से सौभाग्य आदि व अष्टमस्थान से वैधव्य आदि का विचार करना चाहिये। यहां ध्यान में रखना चाहिये कि स्त्री जाति के अनेक प्रकार के फल विवाहादि के पूर्व, विवाह काल, वैधव्यकाल या अविवाहित काल में मिलना यह सब लग्न व चन्द्र के स्थिति, गति, शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि व योगादि पर अवलंबित है क्योंकि लग्न शरीर व चन्द्र मन पर ही मनुष्य का सुख-दुःख निर्भर है। इस कारण से यदि शास्त्रकारों ने जन्म लग्न व जन्म राशि को अधिक महत्व दिया तो आश्चर्य नहीं।

२—कुण्डली के १-४-५-७-९-१० भाव में यदि बलवान शुभ ग्रह स्थित होवें तो शुभ फलदायी समझना परन्तु भावेश के सिवाय अन्य पापग्रहों का इन भावों में न होना आवश्यक है अन्यथा अनिष्ट फल मिलेगा।

३—जन्म यदि तिथि के अन्तिम घड़ी में हो तो वह रूपहीन होगी, वार के हो तो बचपन में पुरुष का आश्रय लेगी, नक्षत्र के हो तो वैधव्य प्राप्त होगा और भद्रा करण में जन्म हो तो पति-पत्नी दोनों को कष्ट होगा।

द्वादश राशि फल

१—मेष राशि में जन्म हो तो—स्त्री सुन्दर शरीर वाली, पति को प्रिय व गुरु की सेवा करने वाली होगी।

२—वृषभ राशि में जन्म हो तो—सुशीला, धनवती, पतिप्रिय, पुत्र-पौत्रवती, विद्यासम्पन्न, विचार शील, तंत्रशास्त्र में विश्वास रखने वाली होगी।

३—मिथुन राशि में जन्म हो तो—रूपवती, गुणवती, परोपकारी, सुशील स्वभाव, धन-धान्य युक्त, सुन्दर नेत्र व शरीर वाली होगी।

४—कर्क राशि में जन्म हो तो—ब्राह्मण-देव भक्त, आप्तजनों में पूज्य, शत्रुरहित, मानवती होगी।

५—सिंह राशि में जन्म हो तो—क्रूरकर्मयुक्त, मांसाहारी, रूपवती स्त्रियों की नेता, आभूषण-वस्त्र युक्त होगी।

६—कन्या राशि में जन्म हो तो—शुद्ध आचरण वाली, पतिप्रिया, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाली, संपत्ति, धन व पशुयुक्त, क्षमाशील होगी।

७—तुला राशि में जन्म हो तो—बन्धु वर्ग पर प्रेम करने वाली, व्रतसम्पन्न, पति-व्रता, पुत्रवती, सुन्दर रूपवाली होगी।

८—वृश्चिक राशि में जन्म हो तो—कार्यकुशल, ज्येष्ठ सदस्यों की प्रिय, निरभि-मानी, धनवती होगी।

९—धन राशि में जन्म हो तो—व्रतसम्पन्न, दानी, प्रेम करने वाली, विनयशील, गतिप्रिय व कन्या संतति वाली होगी।

१०—मकर राशि में जन्म हो तो—गम्भीर, सुन्दर, विद्यावती, सत्यप्रिया, नियमित स्वभाव वाली, नीति युक्त, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाली होगी।

११—कुम्भ राशि में जन्म हो तो—चन्द्र के समान रूपवती शरीरवाली, दानशीला, संतति, संपत्ति युक्त, सत्कर्मी व अभिमानी होगी।

१२—मीन राशि में जन्म हो तो—सर्व कला में निपुण, लज्जायुक्त, मानी, सुस्वरूप वाली, सुशील स्वभाव, धर्म पर श्रद्धावाली व पुत्रवती होगी।

द्वादश लग्न फल विचार

१—मेष लग्न—इस लग्न की स्त्री निष्ठुर व मिथ्याभाषी, घातक, क्रोधी, बन्धु वर्ग से विरक्त, कफयुक्त होगी।

२—वृषभ लग्न—पति को प्रिय, आज्ञाकारी, विनयशील, सत्यभाषणप्रिय, सुन्दर, सर्वकला में निपुण होगी।

३—मिथुन लग्न—कठोरभाषी, कामासक्त, गुणहीन, बहुखरची, क्रूरकर्मी, कफ-वात युत होगी।

४—कर्क लग्न—सुस्वरूपा, कांति युक्त, नीतिप्रिय, साधुवृत्ति, सब सुखों से युक्त व बन्धुप्रिया होगी।

५—सिंह लग्न—दूषित शरीर, कलहप्रिय, कठोर स्वभाव, परोपकारी, कफयुक्त होगी।

६—कन्या लग्न—सौभाग्य, सुख व सुवर्ण युक्त, हितकारी, जितेन्द्रिया, सर्वकला में निपुण, धर्म करने वाली होगी।

७—तुला लग्न—मन्दमति, प्रीतिहीन, गर्विष्ठ, क्षमारहित, परनीति युक्त होगी।

८—वृश्चिक—सुन्दर, रूपवान, गुणवान, सत्यवादिनी, पुण्यशीला, पतिव्रता होगी।

९—धन लग्न—प्रीति से वश होने वाली, उत्तम बुद्धि, स्नेह व प्रीतिहीन, कठोर-कर्मी होगी।

१०—मकर लग्न—शत्रु को पराभूत करने वाली, सत्यभाषी, गुणवती, पुत्रवती, रूपवती, अच्छे कर्म करने वाली व समाज में प्रख्यात होगी।

११—कुंभ लग्न—रक्त दोष व मद से युक्त, पुरुषासक्त, कृतज्ञता रहित, विशेष खर्चीली होगी।

१२—मीन लग्न—पतिव्रता, देव-द्विजभक्त, पुत्रवती, नयशील, बन्धुप्रिय, गुरु की आज्ञाधारी होगी।

रवि ग्रहगत द्वादश भाव-फल

१—तनु भाव में रवि हो तो—क्रूर स्वभाव, कृश शरीर, कृतघ्न, दुष्टवृत्ति, रोग युक्त, कांतिहीन, परान्नप्रिय होगी।

२—धन भाव में रवि हो तो—कठोरभाषी, कलहप्रिय, धनधान्यहीन, पराक्रमहीन, द्वेषी व स्नेहहीन होगी।

३—सहज भाव में रवि हो तो—सुन्दर देह व मुखवाली, रोग से पीड़ित परन्तु हमेशा आनन्दी दीखने वाली, विशाल स्तन वाली व नम्र स्वभाव की होगी।

४—सुहृत् भाव में रवि हो तो—सुखहीन, रोग युक्त, बड़े दन्त वाली, लोगों से तिरस्कृत, प्रभाव हीन होगी।

५—सुत भाव में रवि हो तो—स्त्रियों में श्रेष्ठ, अल्प पुत्रवती, व्रताचरणी, मातृ-पितृ भक्त, प्रियभाषी, देव-ब्राह्मणों को मान्य होगी।

६—रिपु भाव में रवि हो तो—शत्रुओं को जीतने वाली, दक्ष, प्रौढ़, शान्त स्वभाव, धर्म कर्म प्रिय, सुस्वरुप, सौभाग्य युक्त होगी।

७—जाया भाव में रवि हो तो—पति से त्यागी हुई, सुखहीन, कफयुक्त, कुरूपा, पापिनी, लज्जाहीन होगी।

८—मृत्यु भाव में रवि हो तो—कुधर्माचरणी, दारिद्रय दुख से युक्त, रक्त दोष से पीड़ित, उत्साहहीन होगी।

९—धर्म भाव में रवि हो तो—भाग्य व ऐश्वर्य से हीन, बहुशत्रु से युक्त, क्रोधी, साहस कर्मप्रिय होगी।

१०---कर्म भाव में रवि हो तो-पीड़ित, कुकर्मी, निस्तेज, अपने कृत्यों के प्रति दुर्लक्ष करने वाली होगी।

११---लाभ भाव में रवि में हो तो-पुत्र-पौत्र युक्त, जितेंद्रिया, लाभयुक्त, सर्वकला-निपुण, वन्धु वर्ग को मान्य होने वाली होगी।

१२---व्ययभाव में रवि हो तो-पातकी, बहुखर्ची, क्रूरकर्म करने वाली, सर्व-गामिनी, शुचितारहित, उद्धत स्वभाव व वृत्ति वाली होगी।

बुध फल

१—लग्न में बुध हो तो-रूपवती, पतिमान्य, धर्म व नीति युक्त, धनधान्य सम्पन्न, सत्य भाषी, सबको प्रिय होगी।

२—द्वितीय में बुध हो तो-लक्ष्मी व गुणयुक्त, यज्ञादि पर प्रीति, रूपवती, शुद्ध आचरणवाली, ब्राह्मण-सेवा तत्पर व धनसम्पन्न होगी।

३—तृतीय भाव में बुध हो तो-पुत्र व मान से युक्त, देव-द्विजभक्त, समर्थ लोग अनुकूल, धनवान होगी।

४—चतुर्थ भाव में बुध हो तो-धर्मरत, अच्छे नौकर व सज्जनों से युक्त, प्रख्यात कुल में जन्म पायी हुई होगी।

५—पंचम भाव में बुध हो तो-कलहप्रिय, अधिक भटकने वाली, बुरे कर्म करने वाली, दरिद्री, साधु-संत को त्याग करने वाली होगी।

६—षष्ट भाव में बुध हो तो-शत्रुओं को दबाने वाली, दयालु, अल्पायुषी, परोपकारी होगी।

७—सप्तम भाव में बुध हो तो-नम्र, चतुर, उत्तम आचरण वाली, शास्त्रप्रिय होगी।

८—अष्टम में बुध हो तो-धर्म व अभिमानहीन, दुःखी, कृतघ्न, भीतियुक्त होगी।

९—नवम भाव में बुध हो तो-धर्मबन्धन युक्त, विनयशील, भाग्य व कीर्ति से युक्त, कुशल, शान्त, मधुरभाषी होगी।

१०—दशम भाव में बुध हो तो-बहुधन्धी, सत्कर्मी, पति को मान्य, विवेकी व नीतिवान् होगी।

११—एकादश भाव में बुध हो तो-धन का लेनदेन वाली लाभयुक्त, पतिव्रता, बन्धुजनमान्य होगी।

१२—द्वादश भाव में बुध हो तो-निर्गुणी, व्याकुल, लड़ाकू, तिरस्कृत औरत होगी।

गुरु फल

१—लग्न में गुरु हो तो—रूपवती, सत्यपक्षपाती, गंभीर व सत्य बोलने वाली, सब सुखों से युक्त, स्त्रियों में श्रेष्ठ होगी।

२—द्वितीय भाव में गुरु हो तो—सुन्दर, धर्मशील, धनयुक्त, सौभाग्य युक्त, नीतिवान्, श्रेष्ठ, हानिरहित होगी।

३—तृतीय भाव में गुरु हो तो—बहुत दोषी, पराक्रमहीन, कृश शरीर, गौरव-रहित होगी।

४—चतुर्थ भाव में गुरु हो तो—सब सुखों से व धनधान्य से युक्त, सुन्दर, रूपवान्, विद्यावान्, प्रख्यात व गौरव से युक्त होगी।

५—पंचम भाव में गुरु हो तो—पति को हमेशा अनुकूल, सात पुत्रों वाली, निष्पापी, व्रत धर्म में दक्ष, सत्यपथ वाली, समाज में मान प्राप्त करने वाली होगी।

६—षष्ठ भाव में गुरु हो तो—अनेक आपत्तियों से ग्रसित, नीति युक्त, श्रेष्ठ कर्म करने वाली, शरीर कष्ट व उपचार करने वाली होगी।

७—सप्तम भाव में गुरु हो तो—पुण्यशीला, ज्ञानी, अनेक शास्त्रों में अवगत, पतिप्रिया, कीर्ति से युक्त होगी।

८—अष्टम भाव में गुरु हो तो—विशाल देही, पति के मन से त्याग की हुई, व्यसनी, रोगी होगी।

९—नवम में गुरु हो तो—देव-ब्राह्मणभक्त, श्रीमान् संतति वाली, कृतज्ञ, सत्यभाषी होगी।

१०—दशम भाव में गुरु हो तो—सत्कर्म में प्रख्यात, गुणी, गुणज्ञ, अनेक दास-दासी युक्त, पुण्यशीला होगी।

११—एकादश भाव में गुरु हो तो—जितेन्द्रिय, कीर्तिवान्, संपत्ति व शिल्पकला युक्त, सत्यभाषी।

१२—द्वादश भाव में गुरु हो तो—दुष्ट कर्म में धन व्यय करने वाली, रोगी, लाभ-रहित, दुष्ट स्वभाव वाली, परधर्म में आचरण करने वाली होगी।

शुक्र फल

१—लग्न में शुक्र हो तो—सुशीला, कुशल, सुन्दर, गौरवर्णा, श्रीमती, उत्तम स्वभाव व स्वास्थ्य तथा सौभाग्यवती होगी।

२—द्वितीय स्थान में शुक्र हो तो—सत्कर्मी, भाग्यवती, प्रख्यात व मृदुभाषी होगी।

३—तृतीय भाव में शुक्र हो तो—दरिद्री, बन्धुओं से त्याज्य, पति से त्याज्य, दुष्ट स्वभाव की होगी।

४—चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो—सुख व सौभाग्य युक्त, धर्म कर्म में दक्ष, जितेन्द्रिया व वंश की भूषण होगी।

५—पंचम भाव में शुक्र हो तो—धनसम्पन्न, कन्या संतति अधिक, सत्संगी, कुल में श्रेष्ठ गिनी जाने वाली होगी।

६—षष्ट भाव में शुक्र हो तो—क्रोधी, ईर्ष्यायुक्त, तीव्रस्वभाव, कलह पति-पुत्र से की हुई होगी।

७—सप्तम भाव में शुक्र हो तो—पतिप्रिया, शास्त्ररत, द्रव्य व प्रभाव युक्त, सर्वमान्य होगी।

८—अष्टम भाव में शुक्र हो तो—दरिद्री, दुःखी, परजनों से निंदित, उद्धत स्वभाव वाली होगी।

९—नवम भाव में शुक्र हो तो—धन, वस्त्र, अन्न आदि युक्त, धर्मपरायण, लोगों की नेता होगी।

१०—दशम भाव में शुक्र हो तो—श्रेष्ठ कर्म से मान्य, धनसम्पन्न, बुद्धिमान, निरोगी, सत्यभाषी, यश प्राप्त करने वाली होगी।

११—एकादश भाव में शुक्र हो तो—अनेक शास्त्रों में तज्ञ, लाभवती, निर्दोषी, अनेक प्रकार से आश्रय युक्त होगी।

१२—द्वादश भाव में शुक्र हो तो—कपटी, रोगी, दुर्बुद्धि, कटुभाषी औरत होगी।

चन्द्र फल

१—लग्न स्थान में चन्द्र हो तो—जिसके लग्न में शुक्ल पक्ष का चन्द्र हो वह स्त्री गौर वर्ण वाली व सुस्वरूपा होगी किन्तु कृष्ण पक्ष का चंद्र हो तो रोगी, विवादप्रिय, कृशांगी व कुवस्त्र धारण करने वाली होगी।

२—द्वितीय स्थान में चन्द्र हो तो—धनसम्पन्न, नम्र स्वभाव, पतिकार्य में दक्ष, धर्मशीला, नीति युक्त, ब्राह्मणों का आदर करने वाली होगी।

३—तृतीय भाव में चन्द्र हो तो—कठोरभाषी, कफ-वात-पित्त से युक्त, दुष्ट स्वभाव, नीतिरहित, कुसंगति वाली, कृपण, कृतघ्न होगी।

४—चतुर्थ स्थान में चन्द्र हो तो—सुख युक्त, आभूषण युक्त, स्थिर स्वभाव, धर्माचरण करनेवाली, गुरुदेव भक्ति वाली होगी।

५—पंचम स्थान में चन्द्र हो तो—सुपुत्रवाली, गुणवती, गौरव युक्त, पुत्र-नौकर सुख से युक्त, रूपवती, पति की आज्ञा का पालन करने वाली होगी।

६—षष्ठ भाव में चन्द्र हो तो–दीर्घद्वेषी, विनयहीन, चंचल, रोगग्रस्त, कृश, अल्पधनवती होगी।

७--सप्तम स्थान में चन्द्र हो तो–चतुर, पतिप्रिया, मधुरभाषी, धर्म व विवेक से युक्त, तेजस्वी, ऐश्वर्यसम्पन्न होगी।

८—अष्टम भाव में चन्द्र हो तो–विद्रूप अवयव, घातकी, कुरूपा, क्रोध से युक्त, निंदित होगी।

९—नवम भाव में चन्द्र हो तो–बारीक कटि, सुन्दर सेवक व पुत्र युक्त, सर्वसुख युक्त व समर्थ होगी।

१०—दशम भाव में चन्द्र हो तो–धनसुख एवं सुवर्ण युक्त, संतुष्ट, उभय कुल श्रेष्ठ, दानी, पुण्यशीला, सत्यभाषणप्रिया होगी।

११—एकादश भाव में चन्द्र हो तो–इन्द्रिय निग्रही, सन्तुष्ट चित्त, नम्र, दानी, निरोगी होगी।

१२—द्वादश भाव में चन्द्र हो तो–पाप प्रकृति की, खर्चालु, दीन, अन्यायी, क्षमाहीन, दरिद्री होगी।

मंगल फल

१—लग्न में मंगल हो तो–रक्त दोष पीड़ित, गर्वयुक्त, भाग्यहीन, पराक्रमहीन, पति से तिरस्कृत होगी।

२—द्वितीय भाव में मंगल हो तो–कामातुर, रोगी, कई पुरुषों की आश्रित, दरिद्री, कुत्सित बुद्धि वाली होगी।

३—तृतीय स्थान में मंगल हो तो–सौभाग्यवती, साधु-सन्तों को प्रिय व सर्वजनों को प्रिय होगी।

४—चतुर्थ स्थान में मंगल हो तो–सदा कोपी, सुखहीन, द्रव्यहीन, तिरस्कृत होगी।

५—पंचम भाव में मंगल हो तो–लज्जाहीन, पापकर्म में दक्ष, कुपुत्रवती, बन्धु सुख-विहीन होगी।

६—षष्ठ भाव में मंगल हो तो–पतियुक्त, शत्रुरहित, धनवती, निरोगी होगी।

७—सप्तम भाव में मंगल हो तो–बाल विधवा, कुरूप, दुष्ट स्वभाव, ऐश्वर्य व गुणहीन होगी।

८—अष्टम भाव में मंगल हो तो–कृश, विधवा, दरिद्र, दुखी, रोगी, हिंसाप्रिय, कांतिहीन होगी।

९—नवम भाव में मंगल हो तो–धर्म व भाग्यहीन, सुन्दर, रोगी, सज्जन से त्यागी हुई, तामसी आहार करने वाली होगी।

१०—दशम भाव में मंगल हो तो—अधर्मी, लज्जाहीन, शीलहीन, रतिप्रिय होगी।

११—एकादश भाव में मंगल हो तो—उत्तम स्वभाव, पति पर प्रीति करने वाली, निरीच्छ, धर्मासक्त होगी।

१२—द्वादश भाव में मंगल हो तो—आतुर, निर्बली, घातकी, गुणहीन, मद्यपानप्रिय होगी।

शनि फल

१—लग्न में शनि हो तो—कुरूप व काले शरीरवाली, क्रोधी, व बन्धु-भगिनी सुख रहित होगी।

२—द्वितीय स्थान में शनि हो तो—दरिद्री, अपयशी, सुखरहित, रोगी, घातकी, लोगों के विरुद्ध बोलने वाली होगी।

३—तृतीय स्थान में शनि हो तो—श्रेष्ठ, दक्ष, धनधान्य-सम्पन्न, साधु-सन्तों से प्रशंसित, शरणागत लोगों का रक्षण करने वाली होगी।

४—चतुर्थ स्थान में शनि हो तो—मतिमन्द, चञ्चल, दरिद्री, नीच संगति, दुष्ट स्वभाव की होगी।

५—पंचम भाव में शनि हो तो—निर्दयी, निपुत्री, गर्विष्ट, साधु-समागम से रहित वेश्या समान दीखने वाली होगी।

६—षष्ट भाव में शनि हो तो—वस्त्रालंकार से युक्त, मंदमति, पुत्रवती, गुण की ग्राहक, पुत्रों को प्रिय होगी।

७—सप्तम भाव में शनि हो तो—मर्द से त्याज्य या विधवा, रोगी, कपटी, द्वेषी, मद्यपान की शौकीन होगी।

८—अष्टम भाव में शनि हो तो—दुष्ट स्वभाव, अधर्मी, पापिनी, लोगों को धोखा देने वाली होगी।

९—नवम भाव में शनि हो तो—ज्ञान व नम्रताहीन, अति खर्चिक, दुष्ट व नीच लोगों से मित्रता व संगति करेगी।

१०—दशम भाव में शनि हो तो—कुकर्मी, बुरे व्यसन युक्त, दुष्ट लोगों की संगति, दरिद्री होगी।

११—एकादश भाव में शनि हो तो—धनवती व पुत्रवती, निर्भय, सुन्दर शरीर वाली, लाभ से युक्त।

१२—द्वादश भाव में शनि हो तो—अविचारी, रक्त-वात-कफदोषी, व्यसनी, तिरस्कृत ऐसे स्वभाव कर्म की औरत होगी।

इस तरह के फल स्त्री जाति के लिये लिखे गये हैं परन्तु ग्रहों के भाव, स्थिति,

दृष्टि व युति आदि के अनुसार फल वर्तना योग्य समझा जायगा; परन्तु राजयोग पुरुष जाति के समान ही मानना उचित होगा।

शुभ योग

१—जिस स्त्री का लग्न कर्क हो व चन्द्र लग्न में हो अथवा शुक्र, बुध व गुरु सप्तम स्थान में हों वह स्त्री रूप, गुण व धनसंपन्न होगी।

२—सप्तम भाव में सम राशि हो, शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वह स्त्री पुण्यवान व राजपूज्य होगी।

३—लग्न में चन्द्र, शुक्र हो तो धनवती, सुखासक्त, बुध अथवा गुरु हो या शुक्र हो तो गुणवती व कलानिपुण होगी।

४—लग्न में कर्कराशि का चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वलिष्ट हो तो वह अनेक शास्त्र में निपुण होगी।

५—लग्न में चन्द्र, बुध, शुक्र अथवा बुध, गुरु, शुक्र हो तो वह स्त्री अनेक प्रकार के गुण, सुख, अलंकार व दासीजनों से युक्त होगी।

६—लग्न में भाग्येश व गुरु दोनों ग्रह हों अथवा केन्द्र १–४–७–१० या त्रिकोण ५–९ भाव में हो तो वह शतायु व धनवान होगी।

७—लग्न या चन्द्र सम राशि में हों व शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो वह स्त्री रूपवती, पतिप्रिय, गुणी व अलंकार युक्त होगी।

८—लग्न में चन्द्र या शुक्र हो तो रूपवती, मंगल हो तो अहंकारी, बुध हो तो कुटिल व गुरु हो तो शुद्धाचरणी व शनि हो तो दैवहीन होगी।

९—लग्न में चन्द्र, शुक्र हो तो ईर्ष्यायुक्त व सुखासक्त, चन्द्र-बुध हो तो कला निपुण, सुखी, गुणी व बुध, शुक्र हों तो रूपवती, सौभाग्यवती, कलाकुशल व चन्द्र-बुध हों तो अनेक गुण व सुख युक्त होगी।

१०—सप्तम स्थान में वृषभ राशि का चन्द्र हो तो उत्तम वस्त्र-अलंकार धारण करने वाली, शृंगार की शोभा दीखेगी।

११—सप्तम भाव में उच्च राशि का व अंश का गुरु हो तो वह स्त्री अनेक गुण-सम्पन्न, धर्मज्ञ, पति सेवा में तत्पर, सुवर्ण-रत्नादि माला धारण करने वाली व अत्यन्त रूपवती होगी।

१२—सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो उसका पति सुन्दर, कामशास्त्र निपुण, शूर, धनुर्धारी होगी। वह स्वयं सुन्दर नेत्र, गायनकला-निपुण, उत्तम वस्त्र व अलंकार से युक्त होगी।

१३—सप्तम में उच्च का शनि हो तो उसका पति प्रख्यात, गुणवान और स्वयं वह धनवान होगी।

१४—सप्तम या अष्टम भाव में शुभ ग्रह की दृष्टि या शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह स्त्री

शीलवती, आचार-सम्पन्न, पतिव्रता, व पति की आज्ञाकारिणी व दीर्घायु होगी।

१५—सप्तम व अष्टम भाव में पापग्रह हों किन्तु भाग्य भाव शुभग्रहों से युक्त हो तो वह स्त्री पति-पुत्र से युक्त व सुखी रहेगी।

अशुभ योग

१—सप्तम भाव में पापग्रह बलिष्ट हो, पापग्रह की दृष्टि हो तो उसे पति का सुख कभी न मिले और इस भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र हो तो वह पति के आज्ञा से व्यभिचारिणी होगी।

२—लग्न १-८-१०-११ राशि में चन्द्र, शुक्र से युक्त हो व पापग्रह की दृष्टि हो तो वह व्यभिचारिणी होगी।

३—लग्न या चन्द्र के द्वितीय व द्वादश स्थान में पापग्रह हो व शुभ ग्रह से दृष्ट न हो, पापग्रह से दृष्ट हो तो वह अपने पिता व श्वसुर कुल को कलंकित करेगी।

४—सप्तम भाव में शुक्र हो व पापग्रहों से दृष्ट हो या कर्क राशि का मंगल हो तो वह स्वेच्छा से घर छोड़कर जार कर्म करेगी।

५—सप्तम भाव में पापग्रह हो या पापग्रहों से दृष्ट हो तो वह चञ्चलनयना होगी। दो पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह नीच और तीन पापग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो वह पति को मारकर अन्य पुरुष के घर में रहेगी।

६—सप्तम भाव में रवि हो तो वह पति का त्याग करेगी, पापदृष्ट मंगल हो तो वैधव्य प्राप्त होगा। शनि हो व पापग्रह से दृष्ट हो तो वह मृगनयनी पति की विरोधिनी होगी।

७—सप्तम भाव में कर्क का मंगल या सिंह राशि का मंगल शनि से युक्त हो तो वह विधवा हो या कपट से पति का त्याग कर उत्तम कुल के होते हुये वेश्या होगी।

८—अष्टम में मंगल हो तो व्यभिचारिणी, राहु हो तो पर पुरुष से रत व धर्मरहित होगी।

९—अष्टम में गुरु या शुक्र हो तो उसके गर्भ का नाश हो या संतति जीने में बाधा रहेगी। अष्टम में क्रूर ग्रह हो तो उसे वैधव्य प्राप्त होगा।

१०—लग्न में शनि, पंचम में रवि, नवम में मंगल ग्रह हो तो विषकन्या योग जानना। विषकन्या योग की स्त्री शोक से सन्तप्त, हतभाग्य, व वस्त्रालंकार रहित होती है।

११—शनिवार के दिन द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, मंगलवार को शततारका नक्षत्र, सप्तमी तिथि, रविवार को द्वादशी तिथि, विशाखा नक्षत्र पर जन्म ली हुई कन्या विषकन्या योग वाली जानना।

१२—द्वादशी, शततारका नक्षत्र, रविवार; द्वितीया, आश्लेषा नक्षत्र, मंगलवार; शनिवार, सप्तमी, कृतिका नक्षत्र में जन्म पाने वाली विषकन्या योग वाली होगी।

१३—लग्न से ७–८ भाव में रवि, मंगल, शनि, राहु हो या चन्द्र से सातवें भाव में रवि, मंगल, शनि, राहु हो तो वैधव्य देनेवाले ग्रह कहलाते हैं।

१४—जिसके ८–१२ भाव में मेष या वृश्चिक राशि का राहु हो वह विधवा होगी।

१५—जिसके लग्न में पापग्रह युक्त राहु हो व अष्टम में मंगल हो वह बाल-विधवा होगी।

१६—लग्न व सप्तम में पापग्रह हो व षष्ठ या अष्टम में चन्द्र हो तो विवाह के आठवें वर्ष वैधव्य प्राप्त होगा।

१७—लग्न में रवि, मंगल, राहु हो तो वह विधवा होगी व इन्हीं ग्रहों से द्वितीय भाव में शुक्र हो तो वह दूसरा पति करेगी।

वन्ध्या योग

१—जिसके लग्न में १–८–१०–११ राशि हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वन्ध्या होगी।

२—जिसके पंचम में पापग्रह की राशि होकर पापग्रह से युक्त व दृष्टि हो तो वह वंध्या होगी।

सुवासिनी मृत्यु योग

जिसके लग्न में शुभ ग्रह हो और द्वितीय, द्वादश में भी शुभ ग्रह हो तो वह पति के पूर्ण मरण पावेगी।

संतति योग

१—पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह बहुपुत्रवती होगी।

२—पंचम भाव में बलिष्ट गुरु हो तो पाँच पुत्र, चन्द्र या शुक्र हो तो कन्या संतति होगी।

३—पंचम भाव में चन्द्र हो तो दो कन्या, बुध हो तो चार और शुक्र हो तो उसे पाँच कन्या होगी।

४—नवम में शुक्र हो तो ६ कन्या व सप्तम में राहु हो तो पुत्र संतति का लाभ होगा।

५—पंचम भाव में सब शुभ ग्रह हों या उनकी दृष्टि हो तो अधिक संतति होगी।

राजयोग

१—सप्तम भाव में शुक्र व अन्य शुभ ग्रह हों तो उसे ऐश्वर्य प्राप्त होगा।

२—लग्न में कर्क राशि का गुरु या मीन का शुक्र हो, कन्या राशि में बुध, सप्तम में उच्च का मंगल हो तो उसे भी वड़ा सुख मिलेगा।

३—कन्या लग्न होकर बुध, शुक्र हों व वृषभ राशि का चन्द्र हो या कर्क, मीनराशि का गुरु हो तो उसे राजकन्या समान सुख मिलेगा।

४—केन्द्र में से कोई राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो और सप्तम भाव में १–३–६–११ राशि युक्त पाप ग्रह हो तो उसे विशेष सुख प्राप्त होगा।

५—लग्न में उच्च का बुध और लाभ भाव में गुरु हो वह राजपत्नी समान सुखी होगी।

६—कर्क लग्न सप्तम में हो, रवि व गुरु की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो उसे पुत्र-पौत्रों से युक्त सर्व तरह का सुख मिलेगा।

७—एकादश भाव में चन्द्र, सप्तम भाव में बुध व शुक्र हो, गुरु की दृष्टि हो तो उसकी समाज में प्रसिद्धि प्राप्त होकर लोग उसकी स्तुति करेंगे।

८—लग्न में गुरु, सप्तम में चन्द्र व दशम में शुक्र हो तो नीच कुल की होते हुये भी रानी का सुख प्राप्त होगा।

९—सप्तम में ३–५–६–७–११ राशि का चन्द्र हो और १–४–१० भाव में पाप ग्रह न हो वह स्त्री पतिमान्य हो शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाली व राजपत्नी समान ऐश्वर्य व सुख प्राप्त करेगी।

१०—चतुर्थ में उच्च का चन्द्र हो व गुरु से दृष्ट हो तो वह स्त्री देवता समान श्रेष्ठ होगी।

११—लग्न में चन्द्र, दशम में बुध, एकादश में रवि हो तो वह स्त्री बहुपुत्रपौत्रवती होगी।

१२—लग्न में उच्च का बुध, धनभाव में शुक्र, व दशम में चन्द्र व एकादश में गुरु हों तो वह स्त्री राजपत्नी समाज में होगी।

१३—जन्म कुण्डली में १–३–५–९ स्थान में से किसी भी भाव में राहु को छोड़कर चार शुभ ग्रह स्थित हो तो उसे या किसी स्त्री को राजा के समान ऐश्वर्य व सुख प्राप्त होगा।

ज्योतिषशास्त्र के जातकभाग के दो विभाग हैं अर्थात् पुरुष जातक व स्त्री जातक। इन भिन्न-भिन्न जातकों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि पुरुष व स्त्री जाति के कुण्डली का फलित वर्तने की रीति भिन्न है। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वज्जन तथा ज्योतिषज्ञों का मत यह है कि स्त्री के सुख-दुःखादि का विचार स्त्री के विवाहोपरान्त उसके पति के कुण्डली पर सर्वस्व निर्भर है। उनका यह सिद्धान्त सत्य है इसमें सन्देह नहीं परन्तु युग में परिवर्तन हो गया और वर्तमान युग में फलित का निर्णय करते समय देश, काल,

राजा का भी विचार करना हमारे अल्प मत से अत्यन्त आवश्यक है। कारण, मान लो कि यदि स्त्रियों ने अविवाहित रहने का निश्चय किया अथवा विवाह होने पर पति के पतित्व को त्याग पत्र द्वारा नष्ट किया तो उनके कुण्डली का भविष्य फल किस आधार पर वर्तना चाहिये ? यह एक जटिल समस्या उपस्थित होती है। इस दृष्टि से विचार करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि देश में स्वतंत्रता प्राप्त करने के पूर्व स्त्री जाति का स्वतंत्रता का बिगुल बज चुका था व पुरुष जाति का अकेला बिगुल स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये असमर्थ पाया गया। अतः स्त्री वर्ग ने भी अपनी बांसुरी बजाई और अपने प्रयत्न की बांसुरी उन्होंने इतने जोरों से बजाना आरम्भ किया कि थोड़े ही समय के अन्दर देश की अनेक राजनैतिक संस्थाओं में अपना प्रतिनिधित्व कायम किया जिसका परिणाम देशवासियों को आज प्रत्यक्ष रूप में मिल रहा है। इतना ही नहीं किन्तु देश के पाश्चात्य संस्कृति के अभिमानी हिन्दू पुजारियों की सहायता से धारासभाओं द्वारा हिन्दू धर्म पद्धति विवाह रद्द करार देने का कानून (डायवोर्स बिल), विजातीय विवाह को स्वजातीय विवाह मान्य किये जाने का कानून, इण्टरमैरेज बिल, अदालती पुजारियों द्वारा जाति आदि भेद भाव न रखते हुये विवाह को धर्मविवाह करार देने का कानून (रजिस्टर्ड मैरेज बिल) आदि कई प्रकार के हिन्दूधर्म व संस्कृति को जलसमाधि देने वाले बिलों को पास करा कर प्रचार में लाया गया। इन सब बिलों का मुख्य उद्देश्य यह दीखता है कि स्त्री जाति को धर्मविवाह के बन्धनों से मुक्त होने के लिये अधिक प्रमाण पर स्वतंत्रता प्राप्त होकर पुरुषों को विवाह बन्धन से शीघ्र मुक्त कर सके। इस तरह पुरुष व स्त्री दोनों वर्ग पूर्ण स्वतंत्र हो देश की स्वतंत्रता को कायम रख सके यही उद्देश्य इन आन्दोलन के कर्णधार या पुजारियों का होना सम्भव है। उद्देश्य दिखाई पड़ने में तो ठीक दिखाई पड़ता है जैसे न रहेगा बन्धन न रहेगी परतंत्रता और इसके अनुयायी इस मार्ग का समर्थन करते हुये आज भी दिखाई देते हैं। किन्तु कुटुम्ब-समाज को सुरक्षित रखने तथा देश को सुख प्राप्ति के ओर ले जाने के लिये स्वजाति, स्वधर्म, स्वसंस्कृति व स्वधर्म विवाह पद्धति को नष्ट-भ्रष्ट व भस्म कर, देश की स्वतंत्रता किस तरह कायम रह सकेगी इसका विचार विद्वज्जन व सूज्ञ पाठकगण स्वयं करें यही हमारा उनसे निवेदन है। अस्तु, पाश्चात्य देश में स्त्री विवाह लौकिक स्वार्थ के लिये ही किया जाता है परन्तु भारतवर्ष में अनादि काल पूर्व से जीवन का यह सबसे बड़ा धार्मिक संस्कार लौकिक और पारलौकिक इन दोनों हेतु से करने का निश्चय किया गया है क्योंकि शास्त्रों में "अपुत्रस्य गृहं शून्यम् तथा अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" ऐसा कहा गया है। धर्म विवाह से ही त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति कही गयी है "भार्या त्रिवर्गकरणं शुभं शीलयुक्ता"। मनुष्य को धर्म के आधार पर ही तीनों चीजों की सिद्धि होती है तथा इससे आगे चलकर मोक्षप्राप्ति की अभिलाषा उसके मन में उत्पन्न होती है यह स्पष्ट है।

हिन्दू जाति में धर्म विवाह होने पर पुरुष अपना तन, मन, धन, स्त्री को अर्पित कर ग्रह सम्बन्धी चिन्ता से वह क्रमशः निवृत्त होता है। इतना ही नहीं किन्तु अपने माता-पिता, भाई-बहिन आदि का भार अपने पत्नी पर पूर्ण रूप से सौंप कर वह दत्तचित्त हो अर्थप्राप्ति के लिये संलग्न हो जाता है। शरीर सम्बन्ध या धर्म विवाह का महत्त्व इस तरह ऊंचा होने के कारण कुल-शील, जाति-धर्म आदि का विचार कर ज्योतिषशास्त्र के आधार पर विवाह निश्चित करने की पद्धति इस देश में अनादि काल पूर्व से कायम की गयी है। इस देश की प्राचीन पद्धति को नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयत्न करना व रूप-रंग एवं प्रेम के मोहजाल में फँसकर विषय-वासना तृप्त करने के हेतु से आसुरी विवाह पद्धति का अनुकरण करना, कुटुम्ब, समाज एवं देश के हित की दृष्टि से भविष्य कितना घातक सिद्ध होगा इसका विचार सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं। आधुनिक विवाह पद्धति का अनुभव कई नवयुवकों को किस बुरी तरह से मिल रहा है यह प्रत्येक समंजस मनुष्य को विदित है। सारांश आयुष्य के एक महत्वपूर्ण भागीदार से शरीर सम्बन्ध जोड़ने तथा भविष्य में संतति व सम्पत्ति से अपना जीवन सुखमय बनाने के लिये ज्योतिष-शास्त्र में दिये हुये शुभाशुभ ग्रहों का सूक्ष्म विचार करना वर-वधू के दृष्टि से परम आवश्यक माना गया है क्योंकि अशुभ ग्रहों की स्थिति व दृष्टि पर ही भविष्य का सुख व आयु निर्भर है। यह जानते हुये आधारयुक्त नियमों का उल्लंघन करने से कुटुम्ब, समाज व देश की उन्नति के अपेक्षा अवनति होना निश्चित है। आधुनिक पद्धति के अनुसार यदि विवाह का बन्धन होने के बाद दोनों में से एक का मृत्यु हो जावे तो वह कितना दुखदायी होगा इसका विचार सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं जिसे लिखना व्यर्थ है।

ग्रह योग–फलित विचार

मनुष्य के जीवन में यदि किसी उत्तम पुरुष की मुलाकात होने पर दोनों का समय जिस तरह आनन्द से व्यतीत हुआ करता है तथा मध्यम और नीच पुरुषों से साधारण व दुःख से व्यतीत होता है उसी तरह जन्म समय के कुण्डली में दो या अधिक शुभ ग्रह, शुभाशुभ ग्रह और अशुभ ग्रहों का योग हुआ हो तो ग्रहों के गुण धर्म स्वभावानुसार मनुष्य को पूर्ण सुख, साधारण सुख व दुःख मिलना स्वाभाविक है। इसी तत्त्व के आधार पर मनुष्य को जिस भाव, स्थान या घर में दो या अधिक ग्रहों का योग हो उसे उनके योग व स्थान का फलित आजन्म मिलना निश्चित है और इनके योग के कारण इस काल में प्रत्येक व्यक्ति को सुख या दुःख मिला करता है। इसका प्रभाव उनके परस्पर मित्रता व शत्रुता होने पर निर्भर है। जैसेः—

१—मंगल यदि चन्द्र से युक्त होकर १-२-४-५-९-१०-११ में हो तो उसे धन की प्राप्ति होगी।

२—लग्नेश गुरु यदि १-४-५-७-९-१० भाव में हो तो मनुष्य को धन व सुख की प्राप्ति होगी।

३—मंगल व शनि यदि कुण्डली में १-४-५-९-१२ राशि में हो तो उसे सुखकारक योग समझना।

४—यदि सब ग्रह १-२-१२ राशि में स्थित हों तो उसे सुखप्रद योग समझना।

५—चतुर्थेश यदि १-४-५-७-९-१०-११ भाव में स्थित हो तो धन प्राप्त होगा।

६—दशमेश यदि १-४-५-७-९-१० भाव में स्थित हो तो धनप्राप्ति योग जानना।

७—कुण्डली में सूर्य से ३-५-११ भाव में यदि ग्रह हों तो राजा समान सुख मिलेगा।

८—बुध से दृष्ट शनि यदि १-२-४-७-१०-११ भाव में हो तो धन सुख मिलेगा।

९—गुरु, शुक्र १-४-७-१० भाव में हो तो हर प्रकार का सुख मिलेगा।

१०—सब ग्रह यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो संतति-संपत्ति सुख प्राप्त होगा।

११—गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तो वह श्रीमान् होगा।

१२—चन्द्र से युक्त गुरु पर शुक्र की दृष्टि हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

१३—चन्द्र से चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो तो द्रव्य सुख मिलना निश्चित है।

१४—चन्द्र १-२-४ राशि में हो, गुरु की दृष्टि हो तो धन सुख मिलेगा।

१५—चन्द्र यदि ४-७-१० भाव में स्थित हो तो संतति-सम्पत्ति सुख प्राप्त होगा।

१६—मिथुन राशि का राहु १-४-७-१०-५-९ भाव में हो तो द्रव्य सुख मिलेगा।

१७—सब ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव पर हो तो द्रव्य सुख, दीर्घायु सुख मिलेगा।

१८—केन्द्र में उच्चराशि का ग्रह हो तो द्रव्य सुख मिलेगा।

१९—मेष, वृषभ राशि का शुक्र व बुध वृश्चिक का हो तो मनुष्य को द्रव्य व बुद्धि सुख मिलना निश्चित है।

२०—१-२-७-१२ भाव में सब ग्रह हो तो नाना प्रकार के सुख की प्राप्ति होगी।

२१—लग्नेश, द्वितीयेश, एकादशेश, यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो तो सब प्रकार का सुख मिलेगा।

२२—दशम या नवम भाव में शुभ ग्रह हों तो द्रव्य व सुख की प्राप्ति होगी।

२३—तृतीय में चन्द्र, पंचम में गुरु, नवम में सूर्य हो तो वह श्रीमान् होगा।

२४—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र यदि केन्द्र भाव में स्थित हों तो उसे राजसुखी समझना।

२५—तृतीय भाव में गुरु और एकादश में चन्द्र हों तो वह श्रेष्ठ कहलाते हैं और सर्व प्रकार का सुख प्राप्त कराते हैं।

२६—लग्न, सप्तम व दशम भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभकारक समझना।

२७—लग्नेश व नवमेश शुभ व मित्रग्रह से युक्त या दृष्ट हों व उच्च राशि या अंश के हों तो भाग्य के उदय के साथ-साथ द्रव्य प्राप्ति होना निश्चित है।

२८—सूर्य से दूसरे स्थान में शुभग्रह व केन्द्र में शुभग्रह होते लग्नेश अपने नवमांश में हों तो मनुष्य श्रीमान् व सुखी होगा।

२९—लग्नेश द्वितीय भाव में व द्वितीयेश चन्द्र से युक्त द्वितीय भाव में शुक्र से दृष्ट हो तो वह सुखी व श्रीमान् होगा यह समझना।

३०—एकादशेश उच्च का हो व गुरु से दृष्ट या युक्त हो वा शुक्र से युक्त द्वितीय भाव में हो तो श्रीमान् वन्धन योग समझना।

३१—एकादशेश शुक्र या गुरु से युक्त लग्न या द्वितीय भाव में हो व उसके स्वामी की दृष्टि हो तो धनयोगी समझना।

३२—मंगल से युक्त प्रथम या एकादश में उच्च का सूर्य हो व द्वितीय में चन्द्र, तृतीय में राहु, चतुर्थ में गुरु या शुक्र हो तो राजा समान सुखी होगा।

३३—लग्न में कर्क का गुरु, दशम में सूर्य, एकादश में चन्द्र-बुध-शुक्र हों तो राजा समान सुख प्राप्त करेगा।

३४—लग्न में वृषभ का चन्द्र, द्वितीय में गुरु, षष्ट भाव में शनि व अन्य ग्रह एकादश भाव में हों तो राजा समान सुख प्राप्त होगा।

३५—लग्न में कन्याराशि का बुध, पंचम में मंगल या शनि, सप्तम में चन्द्र व गुरु, दशम में शुक्र हो तो राजा समान अधिकार व सुख प्राप्त हो।

३६—लग्न में मकर का शनि, तृतीय में चन्द्र, षष्ठ भाव में मंगल, नवम में बुध व द्वादश भाव में गुरु हो तो श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा।

३७—लग्न में मेष का सूर्य, सप्तम में शनि चन्द्र से युक्त व नवम भाव में गुरु हो तो श्रेष्ठ दर्जे का सुख प्राप्त होगा।

३८—चन्द्र, बुध, गुरु उच्च स्थान में हों, मीन राशि में केतु हो तो श्रेष्ठ सुख मिलता है।

३९—सिंह राशि का राहु, तुला राशि का शुक्र, धन राशि का गुरु, कुम्भ राशि का शनि कुण्डली में हो तो श्रीमान् व द्रव्य योग जानना चाहिये।

४०— ३-६-११ राशि में राहु, धन राशि में शनि व मकर में मंगल हो तो श्रेष्ठ धनयोग समझना।

४१—सिंह राशि में सूर्य, मेष या वृश्चिक राशि में मंगल व धन राशि में केतु हो तो राजा समान सुख प्राप्त होगा।

४२—तृतीय भाव में मंगल, पंचम में शुक्र और चन्द्र व गुरु उच्च स्थान में हो तो राजयोग का सुख प्राप्त हो।

४३—लग्नेश की दृष्टि लग्न भाव पर, पंचम में शुक्र और चन्द्र, शनि उच्च भाव में हो तो श्रेष्ठ सुख की प्राप्ति होगी ।

४४—शनि उच्च राशि या भाव में हो, नवम में शुक्र व दशम में मंगल या बुध हो तो राजयोग समझना ।

४५—द्वितीय में वृषभ राशि का शुक्र, षष्ठ में राहु और दशम में गुरु हो तो राजा समान सुख मिलेगा ।

४६—गुरु-चन्द्र से युक्त लग्न में, बुध या शुक्र से युक्त नवमेश नवम भाव में हो तो भाग्य का उदय होकर श्रेष्ठ काल प्राप्त होगा ।

४७—द्वितीय भाव में चन्द्र, पंचम में शुक्र और नवम में गुरु हो तो भाग्य का उदय होकर सर्व सुख प्राप्त होगा ।

दारिद्र्य योग

४८— ३–६–११ भाव में बलहीन शुभ ग्रह व केन्द्र में पापग्रह हो तो वह मनुष्य दरिद्री होगा ।

४९—यदि चतुर्थेश, लग्नेश व दशमेश शनि और सूर्य हो तथा ६–८–१२ भाव में हो तो सदैव दरिद्री व दुःखी होगा ।

५०—द्वितीयेश सह गुरु यदि ६–८–१२ भाव में हो तो सदैव दरिद्री रहेगा ।

५१—लग्नेश व सप्तमेश षष्ट भाव में, बलवान पापग्रह पंचम में हो तो आजन्म दरिद्री रहेगा ।

५२—जन्म समय गुरु व शुक्र अस्त हों तो दुःखी रहेगा ।

५३—पापग्रह से दृष्ट लग्नेश यदि ६–८ भाव में हो व षष्ठेश बलवान हो तो सदा दरिद्री समझना ।

५४—द्वितीयेश द्वादश भाव में, अस्त हुआ दशमेश षष्ठ भाव में और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो दारिद्र्य काल जल्द ही प्राप्त होगा ।

५५—लग्नेश बारहवें भाव में, द्वितीयेश गुरु या शुक्र अस्त हो व ६–११ भाव में शुभ ग्रह हो दारिद्र्य योग समझना ।

वाहन योग

५६—चतुर्थेश गुरु से युक्त व शुक्र से दृष्ट या युक्त हो तथा चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो अनेक प्रकार के वाहन सुख प्राप्त होंगे ।

५७—चतुर्थेश उच्च का हो, लग्न पर गुरु की दृष्टि हो, चतुर्थेश बुध-शुक्र से युक्त हो तो गाड़ी, घोड़ा, वाहन का सुख मिलेगा ।

५८—चतुर्थेश उच्च का हो, गुरु से युक्त या दृष्ट हो या लग्नेश से युक्त हो और चतुर्थेश शुभ ग्रह से युक्त रहते शुक्र से दृष्ट हो तो गृहप्राप्ति का योग होगा ।

५९—चतुर्थेश उच्च का हो व चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र चतुर्थ भाव में हों तो वाहन सुख प्राप्त होगा।

६०—चतुर्थेश गुरु से युक्त व शुभग्रह से दृष्ट हो तो गृहप्राप्ति का योग जानना।

६१—चतुर्थेश चतुर्थ में व शुभग्रह से दृष्ट मंगल उच्च का हो तो यही फल मिलेगा।

६२—सप्तमेश पर गुरु-चन्द्र की दृष्टि हो व लग्न भाव में हो तो सुशील स्वभाव की भार्या की प्राप्ति समझना।

६३—शुभ ग्रह से दृष्ट सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो तो यही फल जानना।

६४—सप्तमेश शुक्र के सह केन्द्र में हो और चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो तो उत्तम स्वभाव की पत्नी का लाभ समझना।

६५—लग्नेश गुरु से दृष्ट हो, सप्तम भाव में हो तो उत्तम स्वभाव की पत्नी का का लाभ समझना।

सन्तान योग

६६—लग्नेश उच्च का हो और पंचमेश गुरु से युक्त हो तो मनुष्य को गुणवान पुत्र की प्राप्ति होना निश्चित है।

६७—पंचमेश गुरु से दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण भाव में हो तो संतति योग जानना।

६८—पंचमेश पंचम में हो, गुरु से दृष्ट हो तो गुणवान संतति का लाभ होगा।

६९—कुम्भ राशि का शनि पंचम भाव में हो तो पांच पुत्रों का लाभ होगा।

७०—मकर राशि से पंचम भाव में शनि हो तो एक पुत्र का लाभ होवे।

७१—मकर का मंगल पंचम भाव में हो तो तीन पुत्रों का लाभ होगा।

७२—धन या मीन राशि का गुरु पंचम भाव में हो तो पुत्रों का लाभ होगा।

७३—मकर राशि का शनि पंचम भाव में हो तो तीन कन्या की प्राप्ति होगी।

७४—चन्द्र, बुध, शुक्र में से कोई एक ग्रह पंचम भाव में हो तो कन्या संतति का योग समझना।

संततिहीन योग

७५—गुरु से पंचमेश ६-८-१२ भाव में हो, पंचमेश अष्टम में हो व नवमेश षष्ठ भाव में, लग्नेश द्वादश भाव में हो तो संतति प्राप्त होना अशक्य होगा।

७६—सूर्य व शनि सप्तम भाव में व गुरु से दृष्टिरहित चन्द्र दशम स्थान में हो तो संतति लाभ न होगा।

७७—षष्ठ भाव में षष्ठेश शनि वा सूर्य हो और बुध से दृष्ट चन्द्र सप्तम भाव में हो तो संतति होना कठिन समझना।

७८—विषम राशि का लग्न चन्द्र, सूर्य, गुरु, पुरुष जाति को जन्म देते हैं और समराशि के यह ग्रह स्त्री जाति को जन्म देते हैं—यह ज्योतिषज्ञों का मत है।

दीर्घायु योग

७९—केन्द्र भाव के शुभ ग्रहों से दृष्ट लग्न स्वामी यदि बलवान हो तो गुण-द्रव्य युक्त मनुष्य दीर्घायु होगा।

८०—लग्न में कर्क राशि का चन्द्र या गुरु हो, केन्द्र में बुध व शुक्र हो और अन्य ग्रह ३-६-११ भाव में हो तो पूर्ण आयुष्य प्राप्त करेगा।

८१—लग्नेश बलवान होकर उच्च भाव में गुरु और मूल त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तो दीर्घायु योग समझना।

८२—लग्न में कर्क का गुरु व पंचम व नवम भाव में शुभ ग्रह हो तो मनुष्य दीर्घायु होगा।

८३—लग्न या नवम भाव में शनि, केन्द्र में शुक्र, ९-११ भाव में चन्द्र हो तो दीर्घायु योग समझना।

८४—लग्न में पूर्ण चन्द्र, अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो और गुरु-शुक्र बली हों तो दीर्घायु योग समझना।

८५—लग्न में मीन का शुक्र, केन्द्र में गुरु, शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्र अष्टम भाव में हो तो दीर्घायु होगा अथवा केन्द्र में गुरु व शुक्र, एकादश भाव में चन्द्र हो तो मनुष्य दीर्घायु हो सकता है।

मध्यायु योग

८६—केन्द्र में शुभ ग्रह व ८-१२ भाव में पाप ग्रह, नीच राशि का लग्न स्वामी हो तो मनुष्य का मध्यम आयु समझना।

८७—गुरु २-९-११ भाव में, लग्नेश पापग्रह से दृष्ट अष्टम भाव में हो तो मध्यायु योग समझना।

८८—लग्न में गुरु व लग्नेश नीच राशि का हो तो मनुष्य मध्यायु प्राप्त करेगा।

अल्पायु योग

८९—लग्नेश बलहीन हो, लग्न पाप ग्रह से युक्त हो व केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो मनुष्य अल्पायु होगा।

९०—सूर्य, चन्द्र, राहु लग्न में मंगल से दृष्ट हों व अष्टमेश मंगल या शनि से युक्त हो उसे अल्पायु समझना।

९१—केन्द्र में राहु और पापग्रहों से युक्त चन्द्र १-८-१२ भाव में हो तो अल्पायु जानना।

९२—सूर्य, मंगल, शनि अष्टम भाव में चन्द्र से युक्त हों तो अल्पायु होगा।

९३—राहु सूर्य से युक्त लग्न में हो, पापग्रह युक्त चन्द्र, मंगल, शनि हो तो अल्पायु समझना चाहिये ।

९४—सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि केन्द्र या त्रिकोण में और अष्टम भाव में राहु हो तो अल्पायु होगा ।

९५—लग्न में सूर्य-राहु हों, अष्टम में शनि-मंगल हों व पापग्रह युक्त चन्द्र हो तो अल्पायु होगा ।

९६—सूर्य लग्न में, मंगल शनि अष्टम में व राहु केन्द्र भाव में हो तो अल्पायु होगा ।

९७—पापग्रहों से युक्त चन्द्र ६-८ भाव में हो तो मनुष्य अल्पकाल जीवित रहेगा ।

९८—पापग्रह से दृष्ट या युक्त चन्द्र सप्तम भाव में हो, राहु मंगल से युक्त हो तो जल्दी मृत्यु होगी ।

९९—लग्न में क्षीण चन्द्र, द्वादश में गुरु और राहु, अष्टम में बुध मंगल से युक्त हो तो मृत्यु जल्द होगी ।

अपमृत्यु योग

१००—सूर्य-मंगल युक्त राहु व शनि से दृष्ट यदि दशम भाव में हो अथवा चन्द्र-राहु अष्टम भाव में हों तो अपघात से मृत्यु होगी ।

१०१—मंगल शनि से दृष्ट, राहु-चन्द्र द्वादश भाव या अष्टम भाव में हो अथवा सूर्य चन्द्र से दृष्ट शनि मंगल युक्त व राहु अष्टम भाव में हो तो अपस्मार से मृत्यु होगी ।

१०२—लग्न में सूर्य, पंचम में मंगल, अष्टम में शनि, नवम में चन्द्र हो तो विजली के गिरने वा करेंट लगने से मृत्यु होगी या पर्वत से गिरकर मृत्यु होवे ।

१०३—सप्तम में मंगल व दशम में सूर्य पापदृष्ट हो तो गाड़ी से गिर कर अपघात होगा ।

१०४—सप्तमेश नीच राशि का हो व सप्तम में चन्द्र हो तो शेर या चोर से अपघात हो प्राण की हानि होगी ।

१०५—मंगल से दृष्ट व सूर्य राहु से युक्त शनि अष्टम भाव में हो तो लोहा से मृत्यु होगी ।

१०६—मंगल चतुर्थ में, सूर्य सप्तम में व शनि दशम में हो तो अग्नि से जल कर मृत्यु होवे ।

१०७—मंगल से दृष्ट या युक्त राहु लग्नेश से युक्त होकर सप्तम में हो तो सर्पदंश से मृत्यु होवे ।

१०८—सूर्य राशि में शनि व शनि राशि में सूर्य व केन्द्र में राहु हो तो फाँसी से मरण होना संभव है ।

१०९—द्वादशेश अष्टम में और अष्टमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो शस्त्राघात या वृक्ष पर से गिरने से मृत्यु होगी ।

११०—शनि चतुर्थ में, चन्द्र सप्तम में और मंगल दशम में हो तो मनुष्य की जल में गिरकर या डूबकर मृत्यु होगी ।

१११—सूर्य या मंगल चतुर्थ में व शनि दशम में हो तो शूल की बीमारी उत्पन्न होकर मृत्यु होवे ।

११२—तृतीय भाव में मंगल युक्त राहु हो, अष्टमेश अष्टम में हो तो घोड़े की सवारी करते हुए मृत्यु होगी ।

११३—लग्नेश अष्टमेश से युक्त नीच स्थान में हो तो अकस्मात् अपवाद से मृत्यु होगी ।

११४—चंद्र, राहु व अष्टमेश लग्न में हों तो अपघात से मृत्यु होगी ।

परस्त्रीरत योग

११५—सप्तमेश एकादश भाव में वा सप्तम में बुध से युक्त हो अथवा सप्तम भाव पर चन्द्र-शनि की दृष्टि या उसी भाव में शनि-चन्द्र हो तो मनुष्य परस्त्रीरत होगा ।

११६—मंगल की दृष्टि लग्न पर व गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो वह परस्त्री रति से पराङ्मुख होगा ।

११७—रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र से दृष्ट या युक्त सप्तम भाव में हो तो परस्त्री सुख पराङ्मुख होगा ।

११८—चन्द्र से दृष्ट लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हों तो मनुष्य परस्त्री का उपभोग करेगा ।

११९—सप्तमेश उच्च स्थान में और अंश में हो व पापग्रह से दृष्ट न हो तो मनुष्य भोग-विलास में निमग्न हो सुन्दर स्त्रियों का उपभोग करेगा ।

१२०—चन्द्र यदि मंगल-शुक्र से युक्त हो नीच अंश या राशि का हो अथवा शनि, मंगल, चन्द्र यह ग्रह नीच अंश या राशि में हों तो मनुष्य नीच जाति व विधवा स्त्री का उपभोग करेगा ।

१२१—राहु शनि के अंश में व शुक्र मकर-कुम्भ राशि का हो अथवा नीचांश गुरु व नीच राशि का चन्द्र हो तो वह नीच जाति की स्त्री का उपभोग करेगा ।

१२२—दो पापग्रहों से युक्त राहु सप्तम भाव में हो ता मनुष्य को स्त्रीलाभ नहीं होता यदि हुआ भी तो स्त्री का नाश होगा ।

संन्यास योग

१२३—चन्द्र से दशम भाव में बुध, गुरु, शुक्र शनिग्रह हों तो संन्यास योग समझना ।

१२४—रवि, मंगल, गुरु, शनि ५–९–१०–१२ भाव में हों तो आत्मा परब्रह्म में निमग्न होगा।

१२५—बुध से दृष्ट शनि दशम में, दशमेश से युक्त शनि दशम में, शनि, बुध, चन्द्र दशम भाव में हों तो परमेश्वर की प्राप्ति के लिये संन्यास लेगा।

१२६—छः ग्रह एक ही भाव में हों तो मनुष्य वन में वास करेगा।

१२७—गुरु युक्त चन्द्र नवम में हो या गुरु से दृष्ट नवमेश दशम में हो तो मनुष्य तीर्थयात्रा करेगा।

१२८—चतुर्थेश चन्द्र से युक्त व नवमेश गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य कुँआ, तालाब खुदवाकर परोपकार करेगा।

१२९—शनि से युक्त व नवमेश से दृष्ट दशमेश दशम में हो तो यज्ञ करने का योग होता है।

१३०—कर्क राशि का चन्द्र-गुरु द्वादश भाव में हो तो मृत्यु होने पर कैलास-लोक में मनुष्य गमन करता है।

हीन योग

१३१—लाभेश यदि अस्तंगत व बलहीन होकर केन्द्र में न हो तो मनुष्य हीन समझना।

१३२—मंगल, बुध, गुरु, शनि यदि ५–६–११–१२ भाव में नीच या अस्तंगत हों तो मनुष्य को हीन समझना।

१३३—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि क्रम से ५–६–८–१०–१२ भाव में हो व द्वादशेश लग्नेश से अधिक वलवान होकर नीच व अस्तंगत हो तो मनुष्य को हीन जानना।

१३४—चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र नीच राशि या अंश के हों व १–५–७–९–१०–११ भाव में हो तो हीन योग समझना।

१३५—पापग्रह नीच भाव व राशि के हों तो मनुष्य खुलेआम पापकर्म करने वाला होगा और यदि शुभ ग्रह हो तो गुप्त रीति से करेगा।

१३६—शुक्र दशम में नीच का हो व मंगल पंचम में हो तो पापकर्मी होगा।

रोग योग

१३७—लग्न से २ रे भाव में रवि, ७ वें में मंगल, १० वें में चन्द्र हो तो मनुष्य के अंग में व्यंग होगा।

१३८—कर्क का चन्द्र लग्न में शनि या मंगल से दृष्ट हो तो वह कुबड़ा होगा।

१३९—मीन लग्न पर चन्द्र, मंगल, शनि की दृष्टि हो तो वह कुबड़ा होगा।

१४०—षष्ठ भाव में अधिक पापग्रह हों तो बांयीं आँख और अष्टम में हों तो दाहिनी आँख नष्ट होगी।

१४१—द्वितीय में मंगल, षष्ट में चन्द्र, अष्टम में रवि, द्वादश में शनि हो तो अन्ध योग होता है।

१४२—दूसरे में मंगल, ६ ठे में चन्द्र और ८ वें में रवि और १२ वें में शनि हो तो यही फल समझना।

१४३—लग्नेश-धनेश ६-८-१२ भाव में हों तो नेत्र का नाश होगा।

१४४—लग्न या सप्तम भाव में रवि यदि शनि से युक्त या दृष्ट हो तो दाहिनी आँख और मंगल या शनि से युक्त हों तो बाँईं आँख का नाश समझना।

१४५—लग्नेश व षष्ठेश राहु-केतु से युक्त हों तो सर्प या चौर से पीड़ा और यदि केन्द्र या त्रिकोण में हों तो कैद होगी।

१४६—लग्नेश व षष्ठेश यदि शनि से युक्त होकर केन्द्र में हों तो कैद होगी।

१४७—रवि व चन्द्र कर्क या सिंह राशि में हों तो क्षय रोग होगा।

सिद्धि योग

१४८—मंगलवार के दिन तीज, अष्टमी या तेरस हो।

१४९—बुधवार के दिन द्वितीया सप्तमी या द्वादशी हो।

१५०—गुरुवार के दिन पंचमी, दशमी, पूर्णिमा हो।

१५१—शुक्रवार को परिवा, छठ, एकादशी हो।

१५२—शनिवार के दिन चौथ, नवमी या चतुर्दशी हो तो इस सभी दिनों को सिद्धि योग समझना जो कि प्रत्येक कार्य के लिये शुभ माना गया है।

गोलक योग

१५३—यह प्रत्येक कार्य आरम्भ करने के लिये शुभ माना गया है। जैसे रविवार को सप्तमी, सोमवार को अष्टमी, मंगलवार को पंचमी, बुधवार को चतुर्थी, गुरुवार को तीज, शुक्रवार को द्वादशी, शनिवार को परिवा।

मृत्यु योग

१५४—रविवार, मंगलवार, शनिवार को षष्ठी, द्वादशी या चतुर्थी हो व नक्षत्रों में आश्लेषा, भरणी, मूल, स्वाती, पूर्वाभाद्रपद व विशाखा हो तो ऐसे कुयोग में कोई भी कार्य करना हानिकारक समझना चाहिये।

दैनिक शुभाशुभ फल विचार

१५५—यात्रा मुहूर्त विचार के लिये दिशाशूल, नक्षत्रशूल, समयशूल, भद्रा, योगिनी, चन्द्रमा, तिथि, नक्षत्र आदि का विचार प्रथम करना चाहिये। जैसे—

१—शुभ तिथि—शुक्ल पक्ष में २–३–५–७–१०–११–१३ तिथि व कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, तृतीया, पञ्चमी।

२—शुभ नक्षत्र—अ., मृ., पुन., पु., ह., अनु., श्र., ध., रेवती।

३—मध्यम—रो., तीनों उत्तरा., पूर्वा., ज्येष्ठा, मूल., शत.।

४—दिशाशूल—सोम शनि पूरब नहिं चालू, मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय, हानि होय पथ नहीं सुख पाय॥
बीफे दक्खिन करे पयाना, फिर नहिं समझे ताको आना।

१५६—शरीर में तिल होने के शुभ व अशुभ लक्षण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिये। जैसे :—

शरीर भाग	फल
१—माथे पर	धनवान हो।
२—माथे के दायें तरफ	प्रतिष्ठा बढ़े।
३—माथे के बायें तरफ	कष्ट से आयु बीते।
४—ठुढ्ढी में	स्त्री से मेल न रहे।
५—दोनों भवंई पर	यात्रा बढ़े।
६—दाहिनी आँख पर	स्त्री से प्रेम रहे।
७—बांयी आँख पर	परेशानी बनी रहे।
८—दाहिने गाल पर	धनवान हो।
९—बायें गाल पर	सदा गरीब रहे।
१०—होंठ पर	ऐयाश होवे।
११—होठ के बीच	गरीबी बनी रहे।
१२—कान पर	अल्पायु हो।
१३—गर्दन पर	आराम मिले।
१४—दाहिनी भुजा पर	इज्जत मिले।
१५—बाईं भुजा पर	झगड़ालू हो।
१६—नाक पर	यात्रा होती रहे।
१७—दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे।
१८—बाईं छाती पर	स्त्री से कलह रहे।
१९—कमर पर	चिंता में आयु बीते।
२०—बगल में	दूसरों को हानि पहुँचे।
२१—छातियों के मध्य में	आराम से समय बीते।
२२—दिल पर	बुद्धिमान हो।
२३—पसली पर	डरपोक रहे।

२४—पेट पर	उत्तम भोजनप्रिय हो।
२५—पेट के बीच	डरपोक होवे।
२६—पीठ पर	सफर करता रहे।
२७—दाहिने हथेली पर	धनवान हो।
२८—बायें हथेली पर	फजूल खरच करे।
२९—दाहिने हाथ पर	खजाचीं हो।
३०—बायें हाथ पर	फजूल खर्च करे।
३१—बाईं ओर पीठ पर	खर्च कम करे।
३२—दाहिने ओर पीठ पर	बुद्धिमान हो।
३३—पांव की गदेली पर	सफर अधिक हो।
३४—दाहिने पैर में	बड़ा बुद्धिमान हो।
३५—बायें पैर में	खर्चा ज्यादा करे।

अंग फड़कने का शुभाशुभ फल

अंग	फल
१—सिर फड़के	आशायें पूर्ण हों।
२—शिर पीछे फड़के	यात्रा होगा।
३—दाहिना माथा	सफर व तकलीफ।
४—बायाँ माथा	खुशी प्राप्त हो।
५—बीच भौंह	प्रेमी मिले।
६—दाहिनी आंख	शुभ खुशी हो।
७—बायीं आंख	स्त्री से रंज व जुदाई।
८—दाहिनी पलक	खुशी प्राप्त हो।
९—बायीं पलक	रंज व कष्ट हो।
१०—दाहिनी आंख के नीचे	इज्जत हो।
११—बाईं आंख के नीचे	धन का खर्च हो।
१२—दाहिना गाल	लाभ हो।
१३—बायां गाल	खर्च व हानि।
१४—दाहिनी भौंह	धन मिले।
१५—बायी भौंह	खुशी व पुत्र सुख।
१६—दाहिना कान	दर्जा बढ़े।
१७—बायाँ कान	परेशानी हो।
१८—गर्दन फड़के	लाभ वा स्त्री मिले।

१९—जीभ फड़के	झगड़ा हो ।
२०—ऊपर का ओठ फड़के	रुतवा बढ़े ।
२१—आंख के नीचे की पलक	प्रेमी मिले ।
२२—दाहिना कन्धा	फिक्र हो ।
२३—वायाँ कन्धा	शत्रु पर विजय मिले ।
२४—दाहिना वाजू	शुभ लाभ हो ।
२५—वायाँ वाजू	रंज हो ।
२६—दाहिनी वगल	खुशी हो ।
२७—वाईं वगल	रुतवा बढ़े ।
२८—नाक	खुशी हो ।
२९—पीठ फड़के	अशुभ खबर ।
३०—पेट फड़के	खुशी मिले ।
३१—कमर फड़के	सफर होगा ।
३२—दाहिना हाथ	प्रतिष्ठा प्राप्त हो ।
३३—वायाँ हाथ	वियोग हो ।
३४—दाहिनी हथेली	लाभ हो ।
३५—वाईं हथेली	नुकसान हो ।
३६—दाहिना अंगूठा	खुश खवर मिले ।
३७—वायाँ अंगूठा	रंज हो ।
३८—पिण्डुली	शत्रु से भय ।
३९—पैर का अंगूठा	लाभ हो ।
४०—दाहिना पैर	रंज का निवारण हो ।
४१—वायाँ पैर	दूर का सफर हो ।
४२—अण्डकोश फड़के	खुशी हो ।
४३—दाहिना बाजू	अकस्मात् रंज ।
४४—बायाँ घुटना	प्रेमी मिले ।
४५—दांत का ऊपरी भाग	खुशी ।
४६—दांत का निचला भाग	शर्मिन्दगी प्राप्त हो ।

जन्मपत्रिका लिखने का नमूना

॥ श्रीः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीसरस्वत्यै नमः ।

श्रीगुरुभ्यो नमः ।

श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः ।

श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥
आदित्यादिग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ।
सर्वान्कामान्प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥

अथ स्वस्ति श्रीमन्नृपतिविक्रमार्कसमयातीतसंवत्.................तथा च श्रीमन्नृप शालिवाहनशके.....................नाम संवत्सरे.........अयने..................ऋतौ ....मासे..............पक्षे....... ....तिथौ.................. वासरे घटी............पल.........जन्म नक्षत्रे.......................घ...............प. ....योगे.....घटी.........पल..........तात्कालिके..................करणे राशि स्थिते चन्द्रे.............दिनमान......घ.......प...रात्रिमान......घ.......प....... अंग्रेजी तारीख...........दिन.............मास............सन्.......एवं पंचागशुद्धा-वत्र दिने श्रीमन्मार्तण्डमंडलोदयात् गत इष्ट......घ.......प.......तत्समये........... लग्ने...........राशि स्थित सूर्ये...............राशि स्थित चन्द्रे...............वर्ण जाति...............बालकस्य पितामहस्य एवं पितुः नाम..............गृहे धर्मपत्नी उभयकुलानन्ददायिनी कुक्षौ...............रत्नं प्रासूत । अवकहड़चक्रानुसारेण बालकस्य जन्म नाम........................तथाच व्यावहारिकनाम..........................इति प्रतिष्ठितम् । अस्य बालकस्य जन्म नक्षत्रस्य...................चरणे................... घटी............पल.........भुक्त घटी...........पल.......भोग्य घटी............ पल.............. नाड़ी.........गण.........राशिचरणाक्षर.....स्वामी राश्याधिपति ....वर्ण...............महादशा..............भुक्त वर्ष................ मास...............दिन.....................घातराशिचक्रानुसारेण...................... मास...........तिथि................वासरे.......................नक्षत्र................ लग्न....................................घात चन्द्र.........................इति राजद्वार यात्रायुद्धामयादौ चिन्त्यम् । शुभं भवतु श्रीरस्तु ।

जन्म कुण्डली

राशि कुण्डली
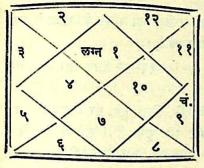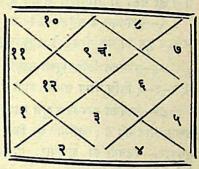
सूर्यः.......................... लग्नम्......................

वंशो विस्तरतां यातु वृद्धिर्यातु महद्यशः । आयुर्विपुलतां यातु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥

॥ श्रीरस्तु शुभं भवतु ॥

भाग दूसरा षोडश संस्कार प्रकरण : मुहूर्त विचार

१—वेदों के अधिपति—ऋग्वेद का अधिपति गुरु, यजुर्वेद का शुक्र, सामवेद का मंगल और अथर्ववेद का बुध माना गया है ।

२—वर्णों का अधिपति—ब्राह्मण का अधिपति गुरु व शुक्र, क्षत्रिय का मंगल व रवि, वैश्य का चन्द्र और शूद्र का बुध व अंत्यज का शनि माना गया है ।

३—अक्षरारंभ मुहूर्त—बालक को पाँचवें वर्ष उत्तरायण में सूर्य रहते अक्षर का आरम्भ कराना चाहिये, किन्तु १–४–६–८–६–१४ यह तिथियां वर्जित समझना चाहिये । उसी तरह मंगलवार और शनिवार अशुभ समझना और यदि सूर्य कुम्भ राशि में उस दिन हो तो उसे वर्ज्य दिन मानना चाहिये । इस कार्य के लिये नक्षत्रों में से शुभ नक्षत्र हस्त, पुनर्वसु, स्वाती, अनुराधा, आर्द्रा, रेवती, अश्विनी, चित्रा और श्रवण शुभ समझे गये हैं । गुरु, माता, पिता व ज्येष्ठ वन्धु, भगिनी, ब्राह्मणों को तीन बार प्रदक्षिणा करने के पश्चात् नमस्कार कर सर्वप्रथम अक्षरारम्भ करना उचित है ।

४—विद्यारंभ मुहुर्त—गुरु व शुक्र अस्त न हो तथा गुरु सिंह का न हो । रविवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार के दिन आरम्भ करना चाहिये । विद्यारंभ के लिये अश्विनी, मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अनुराधा शुभ माने गये हैं । चातुर्मास्य के सिवाय बाकी के महिने शुभ समझना चाहिये ।

५—उपनयन (मौंजी) योग्य वर्षकाल:—जन्मकाल से आठवां वर्ष ब्राह्मण जाति के लिये उत्तम, जन्म काल से ग्यारहवां वर्ष क्षत्रिय जाति के लिये उत्तम, जन्मकाल से

बारहवाँ वर्ष वैश्य जाति के लिये उत्तम है। यदि इस काल में उपनयन किसी भी कारण से न हो सका तो प्रायश्चित्त लगता है।

६—उपनयन में ग्रहवल—उपनयन निश्चित करते समय बालक के राशि से सूर्य, चन्द्र व गुरु का बल गोचर के अनुसार होना आवश्यक है।

७—उपनयन तिथि—शुक्ल पक्ष में २–३–५–१०–११–१२ तिथि और कृष्ण पक्ष में २–३–५ तिथि योग्य समझी जाती है।

८—उपनयन वार—इस शुभ कार्य के लिये रवि, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार यह उत्तम माने गये हैं। क्षत्रिय के लिये मंगलवार भी शुभ है। ऋग्वेदी के लिये गुरुवार, यजुर्वेदी को शुक्रवार, सामवेदी को मंगलवार और अथर्ववेदी को बुधवार विशेष शुभ है।

९—उपनयन योग्य नक्षत्र—ऋग्वेदी को मृग, आर्द्रा, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पूर्वाफाल्गुनी, मूल, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा शुभ माने गये हैं। यजुर्वेदी को मृग, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। सामवेदी को आर्द्रा, पुष्य, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, अश्विनी, श्रवण, घनिष्ठा शुभ हैं। अथर्ववेदी को मृग, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, पुष्य, अश्विनी, घनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा व रेवती प्रशस्त हैं।

१०—करण—वव, बालव, कौलव, तैतिल, गर व वणिज यह छ करण शुभ समझे गये हैं।

११—विवाह योग्य तिथि—अमावस्या व रिक्ता ४–९–१४ को छोड़कर शेष तिथि विवाह के लिए योग्य समझे गये हैं।

१२—विवाह योग्य वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार यह वार उत्तम समझे जाते हैं।

१३—विवाह योग्य नक्षत्र—मृग, मघा, स्वाती, रोहिणी, अनुराधा, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, मूल, रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं।

१४—विवाह योग लग्न व ग्रह—कोई भी ग्रह ग्यारहवें भाव में, शुक्र १–२–४–५–९–१० भाव में रवि, शनि, राहु, केतु ६–३–८ भाव में शुभ कहलाते हैं।

१५—विवाह योग्य नक्षत्र व राशि—वर और वधू की राशि एक होकर जन्म नक्षत्र भिन्न हो या जन्म नक्षत्र एक होते हुये चरण भिन्न हो तो फलदायक समझना।

१६—विवाह में नक्षत्र दोष—वधू के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो अशुभ होता है।

१७—अन्नप्राशन मुहुर्त—छठवें, आठवें महीना में पुत्र को व ५ या ७ वें महीने में कन्या को अन्नप्राशन कराना चाहिये परन्तु जन्म नक्षत्र वर्ज्य करना और शुभ वार होना चाहिये।

१८—उपजीविका परीक्षा—अन्नप्राशन के समय कुछ कला कौशल के वस्तु रखने चाहिये। बालक को वहाँ जाने की परवानगी देना व जिस वस्तु को वह स्पर्श करे वही उसके उपजीविका का साधन समझना।

१९—विवाह गुण मिलन—पंचाग में यह गुण मिलन दिया रहता है। ३६ गुण में कम से कम १८ गुण से अधिक मिलने पर ही विवाह निश्चित करना चाहिये परन्तु वर-वधू की नाड़ी एक हो तो अशुभ समझना।

२०—विवाह ग्रह दोष—वर-वधू की कुण्डली में से किसी एक के जन्म कुण्डली में ७–१–४–८–१२ भाव में मंगल हो और दूसरे में न हो तो त्याज्य समझना किन्तु इन स्थानों में शनि हो तो ग्राह्य समझना।

२१—विवाह योग्य महीने—वैशाख, ज्येष्ठ, माघ व फाल्गुन महीने विशेष शुभ फल-दायक हैं। मार्गशीर्ष गौण है।

२२—शुभ कार्य में मान्य तिथि—१–६–११ तिथि शुक्रवार को, २–७–१२ बुधवार को, ३–८–१३ मंगलवार को, ४–९–१४ शनिवार को और ५–१०–१५ गुरुवार को शुभकार्य के लिये मान्य समझना चाहिये।

२३—तिथि नक्षत्र दोष—प्रतिपदा, उत्तराषाढ़ा; सप्तमी, हस्त व मूल; द्वितीया, अनुराधा; अष्टमी, पूर्वाभाद्रपदा; तृतीया, उत्तराफाल्गुनी; नवमी, कृत्तिका; पंचमी, मघा; एकादशी, रोहिणी; षष्ठी, रोहिणी; द्वादशी, आश्लेषा एवं त्रयोदशी को चित्रा व स्वाती नक्षत्र सम्बन्ध अशुभ माने गये है। अतः वर्ज्य करना।

२४—प्रयाण करने के शुभ नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अभिजित, श्रवण, अनुराधा, रेवती शुभ समझना।

२५—प्रयाण करने के वार—सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार शुभ परन्तु दिशाशूल और राशि घातचक्र के अनुसार जो वार हो उसे वर्ज्य करना।

२६—प्रयाण करने की तिथि—१–२–३–५–७–१०–११–१३ तिथि शुभ मानीं जाती हैं।

२७—जन्म व नाम राशि—ग्राम, देश, गृह, ज्वर, द्यूत, दान, व्यवहार, राजसेवा, दीक्षा, युद्ध के लिये नाम राशि और प्रत्येक मंगलकार्य के लिये जन्मराशि का उपयोग करना चाहिये।

२८—ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ वर, ज्येष्ठ कन्या व ज्येष्ठ मास त्रिज्येष्ठ योग होने के कारण त्याज्य माने जाते हैं।

२९—प्रयाण मुहुर्त दिशा—पूर्व दिशा जाना हो तो चन्द्र १–५–९ राशि का होना आवश्यक है। दक्षिण जाना हो तो २–६–१० राशि का चन्द्र होना आवश्यक है। पश्चिम जाना हो तो चन्द्र ३–७–११ राशि का होना आवश्यक है। उत्तर जाना हो तो ४–८–१२ राशि का चन्द्र होना आवश्यक है।

१—सामने का चन्द्र हो तो सुख तथा धनलाभ होता है।
२—दाहिने का चन्द्र हो तो सुख, आनन्द व अर्थलाभ होता है।
३—पृष्ठभाग में चन्द्र हो तो नेष्ट समझना।
४—वायें दिशा में चन्द्र हो तो धन का क्षय समझना। जिस दिशा में जाना हो उस दिशा में चन्द्र होने से सन्मुख चन्द्र कहलाता है। सम्मुख चन्द्र होते हुए प्रयाण करने पर अशुभ ग्रह, तिथि, वार, नक्षत्र, करण आदि का दोष कम हो जाता है।

३०—काल राहु दिवस—रवि व गुरुवार को पूर्व दिशा में, सोम व शुक्रवार को दक्षिण दिशा में, मंगल को पश्चिम दिशा में और बुधवार व शनिवार को उत्तर दिशा में काल राहु रहता है।

१—सन्मुख या दाहिने हाथ की दिशा में कार्य की हानि।
२—वायें व पृष्ठ भाग की दिशा में कार्य सिद्धि।

३१—प्रयाण के लिये लग्न—१—४—७—१० चर लग्न व ३—६—९—१२ द्विस्वभाव लग्न प्रयाण के लिये उत्तम माने गये हैं। २—५—८—११ स्थिर लग्न होने के कारण गौण है।

३२—विजयादशमी मुहुर्त—आश्विन महीना, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि प्रत्येक नये कार्य के आरम्भ के लिये मान्य समझना परन्तु उस दिन श्रवण नक्षत्र का होना या कार्य के आरम्भ करते समय होना आवश्यक है। इससे कार्य में यश मिलना निश्चित है तथापि राशि—घातचक्र के अनुसार घातवार आता हो तो दूरदेश का गमन न करना उचित होगा।

३३—प्रयाण के समय योग, अधियोग, योगाधियोग—प्रयाण के समय इष्ट लग्न से १—४—५—७—९—१० इन भावों में से किसी भी भाव में बुध, गुरु, शुक्र हो तो उसे योग, केन्द्र में बुध, गुरु, शुक्र इन तीन में से दो ग्रह हो तो अधियोग व तीनों एक ही भाव में हो तो योगाधियोग कहते हैं। इन योगों पर प्रयाण करने से सुखरूप वापस आना, अधियोग में जय व कल्याण प्राप्त करना और योगाधियोग में धन व यश मिलना निश्चित समझना चाहिये।

३४—राशिगत घातवार कोष्टक—राशिगत, घातवार कोष्टक पंचाग में दिये हुये रहते हैं। घातवार, चन्द्र, तिथि व नक्षत्र के दिन किसी गाँव को जाना अशुभ माना गया है और नवीन गहने व आभूषण धारण करना उचित नहीं है किन्तु उपनयन, विवाह, अन्नप्राशन, मंगल कार्य करने के लिये घात वारादि का दोष मानना नहीं चाहिये।

३५—शुभ शकुन—घर से गमन करते समय एक से अधिक ब्राह्मण, हाथी, घोड़ा, कमल, शुभ्रवस्त्र, वेश्या, मोर पक्षी, सवत्सा गौ, फूल, भरा हुआ घड़ा, कन्या, रत्न, पक्वान्न, दही, ऐनी का जल, पुत्रवती सोहागिन, म्याना, पालकी इत्यादि देखना शुभ समझना।

३६—अशुभ शकुन—बिल्ली की लड़ाई, छींक, भगवा वस्त्र धारण किया मनुष्य, विधवा स्त्री, कुवड़ा मनुष्य, दाहिने ओर से गधे चिल्लाने की आवाज, अन्धा, वहिरा, रजस्वला स्त्री, काला वस्त्र से फसे पाँव वाला, गुड़, मठा, कीचड़, रक्त, भूखा मनुष्य, घास, रोगी मनुष्य, नग्न मनुष्य, स्वतः का शत्रु इत्यादि देखना अशुभ समझना।

३७—अपशकुन का परिहार—यदि ऊपर लिखे अनुसार प्रयाण करते समय अपशकुन हो तो "वाराणस्यां दक्षिणे भागे कुक्कुटो नाम वानरः। तस्य स्मरणमात्रेण भवेद् दुःशकुनं शुभम्" ॥ इस मन्त्र का जप करते या विष्णु भगवान का स्मरण करते हुए आगे जाने से दोष का निवारण होगा।

३८—नवम वार निषेध—प्रयाण के दिन से पुनः वापिस लौटना हो तो नवम वार, नक्षत्र व तिथि नहीं होना चाहिये।

३९—घातवार, चन्द्र, नक्षत्र—किसी भी गाँव को जाना हो तो घात राशि चक्र के अनुसार घातवार, चन्द्र, नक्षत्र को प्रयाण करना उचित नहीं। सदा अमावास्या वर्ज्य करना चाहिये।

४०—गृहारम्भ के लिये निषिद्ध काल-दिन—रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र यह चार ग्रह निर्बली हो तो अनिष्ट समझना क्योंकि रवि यदि नीच का हो तो निर्बली, चन्द्र यदि अस्तंगत हो तो पत्नी को अनिष्ट, गुरु निर्बली हो तो घर में सुख न मिले, शुक्र निर्बली हो तो द्रव्यनाश होगा।

४१—गृहारंभ के लिये शुभ व अशुभ योग—शुभ-अश्विनी, रोहिणा, हस्त, उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र पर गृह आरम्भ करने से विपुल धन-धान्य की प्राप्ति होगी परन्तु यह नक्षत्र बुधवार को हो अथवा बुध का इन नक्षत्रों में होना उचित समझना चाहिये।

मृग, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, यह नक्षत्र गुरुवार को हों या गुरु इन नक्षत्रों में हो तो धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि होगी।

अश्विनी, आर्द्रा, चित्रा, विशाखा, धनिष्ठा, शततारका यह नक्षत्र शुक्रवार को हो या इन नक्षत्रों में शुक्र हो तो संपत्ति से युक्त होगा।

अशुभ—मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, कृत्तिका, मूल, हस्त, रेवती नक्षत्र मंगल के दिन हो या मंगल इन नक्षत्रों में हो तो घर को अग्नि से भय समझना।

गृहारंभ के इष्ट लग्न से सप्तम या दशम भाव में कोई भी ग्रह शत्रु राशि या नीचांश का हो तो घर दूसरे के स्वाधीन जायगा।

भरणी, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, शनिवार को हो या शनि इन नक्षत्रों में हो तो घर में भूत-पिशाच की बाधा होगी।

४२—गृहारंभ के लिये मास, तिथि, नक्षत्र—नक्षत्र-रोहिणी, मृग, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, शततारका, रेवती यह नक्षत्र इसके लिये शुभ होता है।

तिथि—चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या यह तिथि वर्ज्यं कर अन्य कोई तिथि को तथा रवि व मंगल को वर्ज्य कर गृहारम्भ करना।

मास—वैशाख, श्रावण, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, ज्येष्ठ, कार्तिक यह महीने शुभ माने गये हैं।

४३—गृह कूप दिशा—ईशान्य, पूर्व, पश्चिम व उत्तर यह चार दिशा शुभ समझना।

४४—कूप आरम्भ नक्षत्र, लग्न व मास—अश्विनी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, शततारका, रेवती, मूल नक्षत्र को मकर, कुम्भ व मीन लग्न में कूँआ की खुदाई आरम्भ करना शुभ है। माघ मास से पाँच महीने या मार्गशीर्ष महीने में इसे आरम्भ करना शुभ है।

४५—मठ बनाने का मुहूर्त—गृहारंम्भ के सब नक्षत्र और अश्विनी नक्षत्र शुभ मुहूर्त है।

४६—देवालय बनाने का कार्य—गृहारंभ के नक्षत्र और पुनर्वसु व श्रवण नक्षत्र में आरम्भ करना चाहिये।

४७—नये वस्त्रालंकार धारण के नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, पुर्नवसु, रोहिणी नक्षत्र में शुभ तिथि व बुध, गुरु शुक्रवार को धारण करना चाहिये।

४८—गायन विद्या आरम्भ मुहुर्त—मृग, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती शततारका इस नक्षत्र में गायन विद्या का आरम्भ शुभ समझना।

४९—पशु क्रय-विक्रय—अश्विनी, पुर्नवसु, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, विशाखा, धनिष्ठा, शततारका इस नक्षत्र में क्रय-विक्रय करना चाहिये।

५०—घर भूमि बेचना व खरीदना, वार, तिथि, नक्षत्र—गुरु व शुक्रवार १-५-६-१०-११-१५ तिथि, मृग, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, अनुराधा, पुनर्वसु, मघा, मूल, विशाखा, रेवती शुभ माने गये हैं।

१५—व्यापार व दूकान आरम्भ मुहूर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृग, हस्त, चित्रा, पुष्य, अनुराधा, उत्तरा, रेवती नक्षत्र में वाणिज्य-दूकान आरम्भ करना शुभ है।

५२—खेती, भूमि जोतना—अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, शततारका तथा शुभ तिथि व वृष, मिथुन, धन, मीन लग्न में भूमि में हल चलाना शुभ है।

५३—धान बोने के नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृग, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, मघा, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, नक्षत्र एवं शुभ वार व तिथि में सब प्रकार के बीज बोना शुभ माना गया है। यही नक्षत्र वृक्ष लगाने के लिये भी शुभ है।

५४—धान काटने के नक्षत्र—भरणी, मृग, कृत्तिका, पुष्य, आर्द्रा, मघा, तीनों पूर्वा व उत्तरा, ज्येष्ठ व मूल, हस्त, चित्रा, स्वाती इन नक्षत्रों एवं शुभ तिथि व वार में आरम्भ करना चाहिये।

५५—धान्य कोठार में संग्रह करने का मुहूर्त—अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, रेवती व रवि, गुरु, शुक्र के दिन शुभ है।

५६—धान मलने के लिये मुहूर्त—रोहिणी, मघा, पूर्वभाद्रपदा, उत्तरा, ज्येष्ठा, श्रवण, मूल, रेवती शुभ समझे गये हैं।

५७—बगीचा लगाने के लिये मुहूर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, विशाखा, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, रेवती नक्षत्र में व मंगल, शनि, अमावस्या, रिक्ता तिथि छोड़कर वाटिका लगाना शुभ है।

५८—यंत्र, तेल, साटा आदि—अश्विनी, पूर्वाषाढ़ा, पुनर्वसु व धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती व शुभ वार में यंत्र से तेल, रस निकालना शुभ है।

५९—छापाखाना यंत्र—अश्विनी, मृगशिरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, शततारका, ३–५–८–१०–१३–१५ तिथि, सोम व शनिवार छोड़ कर अन्य वार में आरम्भ करना शुभ है।

६०—नौकरी करना या नौकर लगाने के लिये मुहूर्त—शुभ तिथि, रवि, गुरु, शुक्रवार, व अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तरा नक्षत्र में शनिवार को शुभ है।

६१—वैद्यक विद्यारंभ—अश्विनी, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, शततारका, रेवती, पुष्य, ज्येष्ठा इस नक्षत्र में रवि, सोम, मंगलवार शुभ समझे गये हैं।

६२—सर्वकार्य शुभ मुहूर्त—शुभ वार, चन्द्र, गुरु, शुक्र। शुभ तिथि १–२–३–५–७–१०–१२–१३ एवं शुक्ल प्रतिपदा व कृष्ण १३–१४–३० अशुभ। नक्षत्र अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित, रेवती शुभ है।

६३—सर्वकार्य लग्न शुद्धि—लग्न से ८–१२ में कोई ग्रह न हो, ३–६–१०–११ भाव में शुभ ग्रह हो। लग्न से चन्द्र केन्द्र व त्रिकोण में हो और किसी पापग्रह की दृष्टि न हो तो कार्यसिद्ध होवे।

६४—साढ़े तीन श्रेष्ठ मुहूर्त—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजया दशमी, ३ मुहूर्त व कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा १।२ मुहूर्त ये स्वयंसिद्ध मुहूर्त हैं। इस दिन कोई कार्य करने के लिये पंचांग शुद्धि मुहूर्त देखने की विशेष आवश्यकता नहीं होती है।

६५—शिल्पविद्यारंभ मुहुर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृग, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, शततारका, रेवती, अनुराधा नक्षत्र में शुभ वार को शिल्प विद्यारंभ करने से लाभ होगा।

६६—देवदर्शन मुहूर्त—नये जन्म पाये बालक को तीसरे या चौथे महीना में उसकी माता यदि देवदर्शन को ले जाना चाहे तो शुभवार व तिथि को रोहिणी, मृग, पुष्य, पुनर्वसु तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती, हस्त नक्षत्र में देव-दर्शन कराना शुभ है।

६७—दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त—अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, इस नक्षत्र में रवि, मंगल, गुरु, शुक्र दिन को ४–९–३०–१४ तिथि छोड़कर बाकी तिथि को वृश्चिक्, कुम्भ, वृष या सिंह लग्न में दत्तक पुत्र लेना शुभ माना है।

प्रश्न विचार

६८—पृच्छक को नीचे दिये हुए नवग्रहात्मक कोष्टक में हाथ रखने को कहना। उँगली रखा हुआ अंक ३ या ७ हो तो कार्य सिद्ध, ४–६ अंक हो तो जल्द ही सिद्ध होगा, १–५–९ अंक हो तो कुछ विलम्ब से होगा व २ या ८ हो तो कार्य होना कठिन है।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

२—पृच्छक को नव में से एक का नाम लेने को कहना व किसी फल का नाम लेने को कहना, अंक को दुगुना कर फल के नाम की संख्या जोड़ देना, वाद १३ की संख्या और जोड़ना। जोड़ कर ९ से भाग देना। यदि शेष सम संख्या आवे तो कार्य नाश परन्तु विषम संख्या शेष रहे तो कार्य सिद्ध होगा यह समझना।

६९—विवाह प्रश्न—प्रश्न कुण्डली तैयार करने पर सप्तम में स्त्री ग्रह और स्त्री के प्रश्न कुण्डली में पुरुष ग्रह या उसकी पूर्णदृष्टि हो तो विवाह जल्द होगा, सौम्य ग्रह इस स्थान में हो तो भी जल्द होगा परन्तु यह न हो या पापग्रह की दृष्टि हो तो देर से विवाह होगा।

७०—ऋण प्रश्न—प्रश्न कुण्डली के लग्न, सप्तम व एकादश में शुभ ग्रह हो तो ऋण मिलेगा। लग्नेश चन्द्र से युक्त हो वा षष्ठ स्थान पर दृष्टि हो तो खात्री से जल्द मिलेगा। प्रश्न लग्न से २–८–१२ भाव में पापग्रह हो तो ऋण अवश्य मिलेगा किन्तु

जल्दी पटेगा नहीं परन्तु मंगल शुभ स्थान या केन्द्र में हो तो ऋण की अदाई जल्द होगी। ऋण का लेन-देन मंगलवार तथा बुधवार व अमावस्या के दिन नहीं करना चाहिये।

७१—लाभ प्रश्न—प्रश्न कुण्डली में चन्द्र यदि लग्नेश या धनेश से युक्त या दृष्ट हो तो धन लाभ होगा। लग्नेश या नवमेश लग्न व नवम भाव में हो तब भी लाभ होगा।

२—लाभ भाव पर शुभ ग्रह या लाभेश की दृष्टि हो तो भी लाभ होगा।

३—लाभ भाव पर सब ग्रहों की दृष्टि हो तो भी लाभ होगा।

४—लाभ भाव में चन्द्र, गुरु, शुक्र हो तो भी लाभ होगा।

५—धन या भाग्य भाव में चन्द्र हो तो भी लाभ होगा।

६—नवमेश लग्न में व लग्नेश की नवम भाव में दृष्टि हो तो भी लाभ होगा।

७—नवमेश पर लग्नेश या चन्द्र की दृष्टि हो तो भी लाभ होगा।

८—धनेश धन भाव में या लग्न में हो तो अधिक लाभ होगा।

९—धन भाव में चन्द्र, गुरु, शुक्र या धनेश स्थित हो तो लाभ होगा।

१०—लग्नेश धन भाव में और धनेश चन्द्र युक्त लग्न में हो तो लाभ होगा।

७२—विवाह प्रश्न—प्रश्न कुण्डली में ३–५–६–७–११ भाव में से किसी भी भाव में चन्द्र हो व रवि, बुध, गुरु की दृष्टि हो तो विवाह योग आवेगा।

७३—नष्ट वस्तु प्रश्न—१—अन्ध नक्षत्र में गयी हुई वस्तु शीघ्र मिलेगी।

२—मन्द नक्षत्र में गयी हुई वस्तु प्रयत्न से तीन दिन में मिलेगी।

३—मध्य नक्षत्र में गयी हुई वस्तु ६४ दिन में मिलेगी।

४—सुलोचन नक्षत्र में गयी हुई वस्तु मिलना कठिन जानना।

ऊपर दिये हुए क्रमशः नक्षत्रों के अनुसार १—पूर्व दिशा, दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा व उत्तर दिशा में मिलना सम्भव है।

७४—नष्ट वस्तु स्थान—प्रश्नकर्ता का प्रथम शब्द अ, फ, म, प, से आरम्भ हो तो घर में है। प्रश्नकर्ता का प्रथम अक्षर स, ग, क से आरम्भ हो तो रसोई घर में है। प्रश्नकर्ता का प्रथम अक्षर ड, न, ट, से आरम्भ हो तो दूसरे के घर में वा पत्थर या बरतन में है। प्रश्नकर्ता का प्रथम अक्षर च, ज, श, र, व, य, से आरम्भ होता है तो बगीचा में है।

७५—नष्ट वस्तु धातु प्रश्न—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में अर्थात् लग्न में चन्द्र हो तो वह वस्तु चाँदी की है।

२—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में बुध हो या बुध की दृष्टि हो तो वह वस्तु सोने की है।

३—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में गुरु या गुरु की दृष्टि हो तो वह वस्तु रत्न-जटित सोने की है।

४—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो तो वह वस्तु जस्ता की है।

५—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में सूर्य हो या सूर्य की दृष्टि हो तो वह वस्तु मोती के साथ सोने की है।

६—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में शनि हो या शनि की दृष्टि हो तो वह वस्तु लोहा पत्थर की है।

७—प्रश्न कुण्डली के प्रथम भाव में शुक्र हो या शुक्र की दृष्टि हो तो वह वस्तु चाँदी व रत्न जटित है।

७६—नष्ट वस्तु पुरुष या स्त्री के स्वाधीन—प्रश्न कुण्डली के लग्न में रवि, मंगल, गुरु, राहु हो तो पुरुष के स्वाधीन हैं।

२—प्रश्न कुण्डली के लग्न में चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि हो तो स्त्री के आधीन है। इन ग्रहों के दृष्टि का भी यही फल समझना।

७७—चोर की जाति—प्रश्न कुण्डली के लग्न में गुरु या शुक्र हो या उनकी दृष्टि हो तो वह ब्राह्मण जाति का, सूर्य, मंगल, हो, तो उसकी जाति क्षत्रिय समझना, चन्द्र या बुध हो या उनकी दृष्टि हो तो वैश्य समझना और शनि, राहु, केतु हो या उनकी दृष्टि हो तो शूद्र जाति का समझना।

७८—प्रश्न शब्द से जाति—१—यदि प्रश्न अ, ई, औ, क से शुरु हो तो ब्राह्मण समझना।

२—यदि प्रश्न झ, च, से शुरू हो तो क्षत्रिय समझना।

३—यदि प्रश्न ट, ड, त, द, न से शुरु हो तो वैश्य समझना।

४—यदि प्रश्न ब, फ, म, प से शुरू हो तो शूद्र समझना।

५—यदि प्रश्न ल, र, व, य श, से शुरू हो तो काम करनेवाली औरत समझना।

७९—चोर की उम्र—प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव में बुध हो तो १५ वर्ष की उम्र है।

२—प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव में मंगल हो तो जवान है।

३—प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव में चन्द्र या शुक्र हो तो चालिस वर्ष के लगभग उमर है।

४—प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ भाव में सूर्य, गुरु शनि, राहु, केतु हो तो वृद्ध उम्र समझना।

५—गयी हुई वस्तु का विचार लग्न व चतुर्थ भाव से और चन्द्र राशि से करना चाहिये।

८०—नष्ट वस्तु मिलने का नक्षत्र व समय—प्रश्न समय यदि नक्षत्र रोहिणी, पुष्य, उत्तरा, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती हो तो शीघ्र मिलेगी।

२—प्रश्न समय अश्वि, मृ, आश्लेषा, ह, अनु, उत्तराषाढ़ा, शततारका हो तो तीन दिन में मिलेगी।

३—प्रश्न समय भद्रा, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद हो तो साठ दिन में मिलेगी।

४—ऊपर लिखे हुए नक्षत्रों के सिवाय दूसरे नक्षत्र हों तो कदापि न मिलेगी।

इस सम्बन्ध में श्रीतुलसीदासजी ने कहा है कि :—

१—ऊ गुन, पू गुन, वि, अज, कृ, म, आ, भ, अ, मू साथ।
हरौ, धरौ, गाडौ, दियौ धन फिर चढ़इ न हाथ॥

अर्थ—उत्तरा तीनों, पूर्वा तीनों, विशाखा, रोहिणी, कृत्तिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा और मूल नक्षत्र में चोरी गया, धरोहर रक्खा हुआ, गाड़ा हुआ तथा उधार दिया हुआ धन फिर लौटकर हाथ नहीं आता।

८१—गर्भिणी प्रश्न—प्रश्न कुण्डली के ३–५–९ स्थान में रवि, मंगल, गुरु हो तो पुत्र जन्म हो व अन्य ग्रह हों तो कन्या का जन्म होगा।

८२—रोग बाधा सम्बन्धी प्रश्न—प्रश्न समय के तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न अंक व प्रहर को जोड़कर उसे ८ से भाग दो। शेष १–५ आवे तो शरीरबाधा, २–८ हो तो पितृबाधा, ३–७ हो तो देवबाधा, ४–६ हो तो पिशाचबाधा समझना।

८३—रोग निवारण प्रश्न—प्रश्न समय आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती नक्षत्र, १–४–६–९–११–१४–३० तिथि व रवि, मंगल, शनिवार के कुयोग, व्यतीपात, वैधृति में प्रथम ज्वर उत्पन्न हो तो रोग दूर होने के लिये १॥ महिना का समय लगेगा।

२—उत्तराषाढ़ा या मृगशिरा नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो तो रोग दूर होने में १ महिना लगेगा।

३—मघा नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो तो दूर होने में २० दिन लगेगा।

४—हस्त नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो तो दूर होने में १५ दिन लगेगा।

५—अश्विनी, कृत्तिका, विशाखा, मूल, धनिष्ठा नक्षत्र में रोग उत्पन्न हो तो दूर होने में ९ दिन लगेगा।

६—भरणी, चित्रा, श्रवण, शततारका नक्षत्रों में रोग उत्पन्न हो तो दूर होने में ७ दिन लगेगा।

८४—रोग निवारण—रोग यदि सोम या बुधवार को शुरू हुआ हो तो १२ दिन के लगभग अच्छा होगा। रोग यदि शुक्रवार को शुरू हुआ हो तो २३ दिन के करीब अच्छा होगा। रोग यदि गुरुवार को शुरू हुआ हो तो १० दिन के आसपास अच्छा होगा।

८५—असाध्य रोग नक्षत्र, तिथि, वार—भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, मघा, विशाखा, शततारका नक्षत्र एवं १–२–४–८–९–१२–१४–३० तिथि एवं रवि, मंगल, शनि उक्त योगों पर रोग की उत्पत्ति हो तो भयंकर कष्ट होगा व शान्ति के लिये शंकर जी को अभिषेक, मृत्युञ्जय का जप, सप्तशती का पाठ कर्मनिष्ठ ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिये।

८६—विष नक्षत्र दंश–विष नक्षत्र–कृत्तिका, आर्द्रा, मघा, आश्लेषा, विशाखा मूल, रेवती, में सर्पादि विषधारी प्राणी का दंश हो तो अच्छा होना संशयास्पद समझना।

८७—पशु गुम होने का प्रश्न–सूर्य नक्षत्र से उस दिन का नक्षत्र यदि नव दिन के अन्दर आता हो तो पशु चरांगन में है। नव व पन्द्रह दिन के भीतर का अंक हो तो राह में है। सोलह से बाईस के भीतर अंक हो तो घर आ रहा है व २२ से २४ तक का अंक हो तो कष्ट से मिलेगा व सताईस का अंक हो तो पशु संकट में है ऐसा समझना परन्तु गुम हुआ पशु का मिलना कठिन है। तथापि प्राचीन ग्रन्थों में नीचे लिखे हुये श्लोक का १०८ वार सदीप त्रिकाल जप करने से उसे शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है जैसे :—

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्त्रवान्।
तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते॥

८८—दुष्ट दृष्टि का उपाय–बालक को दृष्टि बाधा हो तो शुचि मूर्ति होकर विभूति को अभिमंत्रित करने के बाद उसे लगाने से बाधा दूर होगी। ऐसा धर्मसिन्धु ग्रन्थ में कहा है। जैसे :—

"वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः।
रक्षतु त्वरितो बालं मुंच मुंच कुमारकम्॥१॥
कृष्ण रक्ष शिशुं शंखमधुकैटभमर्दन।
प्रातः संगवमध्याह्नसायाह्नेषु च सन्ध्ययोः॥२॥
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिपूदन।
यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि॥३॥
बालग्रहान् विशेषेण छिंधि छिंधि महाभयान्।
त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्" ॥४॥

इति शुभम्

★

* श्रीगुरुः शरणम् *

सम्पादकीय परिशिष्ट

कुछ विशिष्ट पुरुषों की जन्मकुण्डलियाँ

तथा

उन्हें प्रकाशित करने का प्रयोजन

ज्योतिष शास्त्र में अभिरुचि रखने वाले सज्जनों के लिये अनेक ग्रन्थों का अनुशीलन व अध्ययन करके शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करना बहुत कठिन नहीं है, परन्तु बिना उसे अनुभव में घटाये, उनका उक्त ज्ञान कोरा पोथी का ज्ञान कहा जाता है। इसलिये कुछ ऐतिहासिक महापुरुष, राजनैतिक नेता, धर्माचार्य तथा प्रख्यात पण्डित जिनका जीवन-चरित्र प्रसिद्ध है, उनकी प्रामाणिक जन्मकुण्डलियाँ प्रकाशित की जा रही हैं। यथाप्राप्य जन्म-मृत्यु समय भी दिया गया है जिसके आधार पर "विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, कालचक्र आदि वृहत्पाराशरी व जैमिनी में वर्णित अनेक महादशाओं में से किस दशा का फल अधिकांश घटित होता है तथा आयुर्दाय किस विशिष्ट प्रकार से सोलह आने सही मिलता है" इसके लिये अनुसन्धान-प्रिय ज्योतिष के विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ-साथ फलादेश को घटावें तो उनका शास्त्रीय पाण्डित्य अनुभव की कसौटी पर खरा उतरेगा और उसके पुस्तकाकार प्रकाशन से बड़ा उपकार होगा।

आजकल भृगुसंहिता के द्वारा केवल जन्मकुण्डली के आधार पर फलादेश जानने का प्रकार प्रचलित है। दिग्दर्शन के लिये स्वर्गीय धर्मप्राण म० म० पं० श्रीलक्ष्मण शास्त्रीजी द्राविड़ की कुण्डली व उसका भृगुसंहितोक्त फलादेश पाठक आगे देखें। यह फलादेश पूज्यपाद श्रीशास्त्रीजी के स्वर्गवास होने के बाद भृगुसंहिता के द्वारा प्राप्त किया गया है। अतएव फलादेश के अन्त में लिखा है "इति भृगुसंहितायां भृगुशुक्रसंवादे कुण्डल्यध्यायो मृतजन्तोस्तुलालग्नफलं समाप्तम्।" यह विशेष बात है। अस्तु, भृगुसंहिता के द्वारा केवल जन्मलग्नकुण्डली के आधार पर फलादेश कथन के सम्बन्ध में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व ज्योतिष-विभागाध्यक्ष स्वर्गीय पं० श्री रामयत्न ओझा ने अपनी पुस्तक में लिखा है "भृगुसंहिता नाम की पुस्तक किसी ऋषि की बनाई अब तक नहीं है, यह गणित के सिद्धान्त से निश्चित है, परन्तु किसी धूर्त ने इस नाम को ऐसे शुभ अवसर पर रक्खा है कि भारत के सभी मनुष्यों का यह विश्वास हो गया है कि भृगुसंहिता नामक कोई

पुस्तक अवश्य है जिसमें संसार भर के मनुष्यों की कुण्डलियों का ठीक ठीक फल लिखा है। आजकल भृगुसंहिता कहने वाले वहुत ठग भारत में तथा काशी में भी हो गये हैं। ये भोले-भाले देशवासियों को ठग कर ज्योतिषशास्त्र को वदनाम करते हैं, यजमान के जाने पर कुण्डली देखकर मनमाना फल कहते हैं। यदि यजमान ने कुछ अरुचि प्रकट की तो कहते हैं कि लग्न अशुद्ध है। जव लग्न शुद्ध करने को उसने कहा तो किसी लग्न को ठीक बताकर बताये हुये फलों के उलटे फलों को कहकर मनमाना पैसा पैदा कर लेते हैं।" 'ज्योतिष रत्नाकर ग्रंथ' के विद्वान लेखक ने भी अपने ग्रंथ में लगभग ऐसा ही जोरदार आक्षेप किया है। जयपुर महाराजाश्रित महामहोपाध्याय पं० श्रीदुर्गाप्रसाद जी द्विवेदी ने अपने ग्रंथ में एक जगह भृगुसंहिता के संवंध में प्रश्नोत्तर लिखा है जो इस प्रकार है—

"कुण्डल्यो यावत्यः प्रोक्ता भृगुसंहितायां ताः।
एकैकस्मिन् लग्ने विद्वन्! स्युः किंमिता ब्रूहि॥

अस्य भङ्गः—

"रविचन्द्रभौमगुरवः शनिराहू चेति षट् खेटाः।
तेषां द्वादशराशिषु रविषड्घातप्रमा भेदाः॥
सूर्यादग्रे पृष्ठे राशिद्वितयं हि शुक्रसंचारः।
पश्चातस्तद्भेदा एवं ज्ञोऽर्कात् पुरः पृष्ठे॥
यात्येकैकं राशिं तद्भेदाः स्युस्त्रयश्चातः।
राहुसमत्वं केतोरतो नवानां ग्रहाणां स्युः॥
द्वादशराशिषु भेदा रविषड्घातघ्नतिथिसंख्याः।
खाङ्गागाङ्काष्टाद्रचब्ध्यब्धिमिता संख्यका तेषाम्॥"

यथा—१२×१२×१२×१२×१२×१२ ='रविषड्घातप्रमा भेदाः',
इसके साथ पञ्चगुणित
१२×१२×१२×१२×१२×१२×५ =शुक्र की भेद संख्या
१२×१२×१२×१२×१२×१२×५×३=रवि शुक्र के साथ बुध
र० चं० मं० गु० श० रा० शु० बु० की भेद संख्या=
"खाङ्गागाङ्काष्टाद्रयब्धब्धिमिता संख्या=४४७८९७६०

म० म० श्री दुर्गाप्रसाद जी ने जो संख्या दी है वह सूर्य और बुध का इनान्तर तीन मानकर दी है जो प्रत्यक्षोपलब्ध है।

सुप्रसिद्ध गणितज्ञ महामहोपाध्याय पं० श्री सुधाकरद्विवेदीजी ने अपने ग्रंथ में भृगुसंहिता के संवंध में जो प्रश्नोत्तर लिखा है वह निम्नलिखित है—

प्रश्न :—"महर्षिणा या भृगुणोदिता त्वं स्वसंहिता तत्र वदेहि संख्याम् ।
विचार्य वुद्धया यदि कुण्डलीनां तदाऽस्य सम्यक् पठनेऽसि योग्यः ॥"

अस्य भङ्गः—"खखरसनववेदत्वंब्धिशैलैः (७४६४९६००) समानाः
सकलगणकमान्याः सन्ति हे ताः समानाः ।
तनुमुखगतखेटैः कुण्डलीनां सदैव
मुहुरपि वहुयुक्त्या संख्यका मार्गमाणाः ॥"

म० म० पं० श्री सुधाकर द्विवेदी की जो संख्या आती है उसका कारण यह है कि उन्होंने सूर्य और बुध का इनान्तर पाँच माना है जो कि प्राचीन गणनानुसार है अतः उनके मत से १२×१२×१२×१२×१२×१२×५×५=७४६४९६०० संख्या है।
र० चं० मं० गु० श० रा० शु० बु०

उक्त प्रश्नोत्तर के अनुसार भिन्न भिन्न लग्नों और भिन्न भिन्न स्थानस्थित ग्रहों के भेदानुसार ७४६४९६०० कुण्डलियां होती हैं। प्रत्येक कुण्डली का फल यदि केवल दस श्लोकों में लिखा गया हो तो लगभग पचहत्तर करोड़ श्लोक होने चाहिये। इतना वड़ा ग्रंथ होना असंभव है। महर्षि प्रणीत होने के कारण वस्तुतः यदि यह ग्रंथ प्राचीन काल में कहीं पर भी उपलब्ध होता तो श्रीवराहमिहिर सदृश आचार्य और भट्टोत्पल सदृश वहुश्रुत टीकाकार ने अपने ग्रंथों में कहीं न कहीं भृगुसंहिता का उल्लेख नाममात्र के लिये भी जरूर किया होता।

अस्तु, जो भी हो, "भृगुसंहिता" को जो चुनौती स्वर्गीय पंडितप्रवर श्रीराम यत्न ओझा ने 'फलितविकास' में दी है उसका वैज्ञानिक स्तर पर समाधान भृगुसंहिता व्यवसायियों और उसके अभिमानी विद्वानों को देना उचित है जिससे उस ग्रंथ की प्रामाणिकता सिद्ध हो।

सुप्रसिद्ध विद्वान श्री शंकर वालकृष्ण दीक्षित ने लिखा है कि "काश्मीर में जम्बू के सरकारी पुस्तकालय में भृगुसंहिता है। उस पुस्तकालय का सूचीपत्र छपा है। उससे ज्ञात होता है कि वहाँ की भृगुसंहिता में लग्नों का क्रम है और उसकी पृष्ठ संख्या लगभग १६०००० है।" यदि हम विचार करें कि प्रत्येक कुण्डली का फल यदि ३५ श्लोकों में लिखा होगा तो ४६०० पत्रिकायें होंगी। यदि उक्त ग्रन्थ शीघ्र मुद्रित हो जाय तो उसके आधार पर वहुत कुछ भृगुसंहिता की प्रामाणिकता व फलादेशपद्धति पर विद्वानों को प्रकाश मिलेगा। आशा है कि सरकार और पुस्तकव्यवसायी गण इस ओर शीघ्र ध्यान देंगे।

फलित ज्योतिष पर आक्षेप करने वालों का एक प्रवल तर्क यह है कि "पृथ्वी पर एक ही समय में अनेक मनुष्य जन्मते हैं पर उन सभी की वृत्ति एक सी कभी नहीं होती। इसका स्पष्ट एक उदाहरण यह है कि जो दो युगल (जुड़वा) जन्मते हैं उनके

जन्मलग्न में प्रायः भेद नहीं होता। इसलिये उनकी जन्मपत्री एक ही सी बनती है; किन्तु उनकी जीवन की वृत्ति देखी जाय तो भिन्न २ प्रकार की होती है। यह उस जन्मकुण्डली से किसी प्रकार से ज्ञात नहीं हो सकता। तब फलित शास्त्र किस काम का होगा ?" स्वर्गीय म० म० पं० बापूदेवशास्त्रीजी ने भी अपनी पुस्तक में उक्त आशय का विचार लिखा है।

इसके परीक्षण के लिये हमने अपने सुपरिचित कुछ यमल जातक का संग्रह प्रारम्भ किया है। ग्रन्थ प्रकाशन की शीघ्रता के कारण उन सभी पत्रिकाओं को संग्रह कर हम यहाँ नहीं दे सके तथापि दो उदाहरण एतद्विषयक दिया है। मेरे विचार से एक ही लग्न में प्रसूत जुड़वा संतान की उत्पत्ति में भी नवमांश का भेद किंवा षष्ठ्यंश का भेद अवश्य होता है। अतः तदनुसार सूक्ष्म फलादेश का अन्तर होता ही है किन्तु उनके विवाह के बाद जीवनधारा में अधिक अन्तर दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन परंपरा के ज्योतिषी लोग यमल की जन्मपत्रिका का विचार करने के समय उनकी विवाह-कुण्डली को भी देखते थे। मैंने जिन एकत्तीस वर्ष के बन्धुद्वय की पत्रिका प्रस्तुत की है वे अभी समान प्रवृत्ति में हैं, किन्तु विवाह के बाद हमें देखना है कि उनकी जीवन धारा में उनकी पत्नी की पत्रिका के प्रभाव से कितने अंश में फल वैषम्य उपस्थित होता है।

प्रस्तुत कुण्डली संग्रह में एक अग्रवाल सद्गृहस्थ महिला की कुण्डली का भी हमने समावेश किया है जिसकी हत्या उसके गले में धोती बाँधकर दुष्टों ने की और सारी संपत्ति हरण कर चले गये। इस महिला की जन्म पत्रिका को विद्वान दैवज्ञों ने जीवितकाल में देखा था परन्तु किसी ने ऐसी शोचनीय मृत्यु की कल्पना भी नहीं की थी। अस्तु, इस प्रकार की निर्मम हत्या द्वारा मृत्यु के उदाहरण की प्रामाणिक पत्रिका बहुत कठिनाई से प्राप्त होती है। अतः मैंने यह उचित समझा कि अनुसंधान और विचार की दृष्टि से इसे प्रकाशित कर दिया जाय।

फलित ज्योतिष के संबन्ध में चिरकाल से "ग्रहाणां फलकर्तृत्वमस्ति नो वेति संशयः" ऐसा विद्वान लोग पूर्वपक्ष उठाते हैं। इस संबंध में अपने समय के महान् प्रख्यात सिद्धान्त ज्योतिषवेत्ता स्वर्गीय म० म० पंडित श्री बापूदेव जी शास्त्री सी० आई० ई० ने श्रीमान् भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आनरेरी मजिस्ट्रेट वाराणसी की आज्ञा से "फलित का विचार" नाम का निबन्ध सन् १८९२ में प्रकाशित किया था जिसे विद्वानों के अनुशीलन के लिये हम अविकल इसी परिशिष्ट में दे रहे हैं।

फलित का विचार

१ फलित उसको कहते हैं जिसमें इष्ट काल के ग्रहों की स्थिति पर से भूत, भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों काल के शुभ फल जानने के प्रकार रहते हैं। यह दो प्रकार का है एक संहिता और एक होरा।

संहिता उसे कहते हैं जिसमें उस २ काल के ग्रहों की स्थिति से सुभिक्ष, सुवृष्टि, अग्निभय वा राजकीय उपद्रव इत्यादि सर्व साधारण शुभ वा अशुभ फल जानने के प्रकार हैं और जिस में किसी काम का आरम्भ करने के लिये ऐसा काल ठहराने के प्रकार रहते हैं कि जिस काल में उस कार्य का आरम्भ करने से वह काम सफल हो जावे, ऐसे (ठहराए हुए) काल को संस्कृत में मुहूर्त और भाषा में साइत कहते हैं।

होरा अथवा जातक उसे कहते हैं जिस में हर एक प्राणी के जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति से उसके समग्र जीवन का वृत्तान्त समझने की विधि रहती है। इस होरा शास्त्र का और भी एक भेद है जिसको ताजिक कहते हैं। इसमें प्राणी के जन्मकाल से हर एक वर्ष, मास आदि के आरम्भ काल के ग्रहों की स्थिति से उस २ वर्ष, मास आदि का वृत्तान्त समझने के प्रकार रहते हैं।

यह फलित शास्त्र इस देश में अति प्राचीन काल से प्रचलित है। इसमें जातक के ग्रन्थों में कितने एक शब्द केवल यवन अर्थात् ग्रीक भाषा के हैं इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि जातक शास्त्र के कुछ विषय यहांके ज्योतिष के ग्रन्थकारों ने ग्रीक लोगों से लिये हैं और ताजिक के तो सब विषय अरबों से लिये हैं क्योंकि उसके सब सांकेतिक शब्द अरबी भाषा के हैं।

हिन्दू लोग इस फलित शास्त्र को सत्य समझते हैं और प्रायः इसमें जो लिखा है उसके अनुसार आचरण करते हैं। मुहूर्त के विषय में तो किसी काम का आरम्भ अच्छी साइत देखे बिना नहीं करते। जो किसी को कुछ रोग होवे तो उस पर साइत देखके औषध लेते हैं, परंतु शीतरस और सर्पदंश इत्यादि रोगों पर औषध देने के लिये मुहूर्त की अपेक्षा नहीं करते। इस प्रकार से और भी आवश्यक कार्यों के आरम्भ में मुहूर्त नहीं देखते। इस पर ऐसी एक कहावत है कि

'घड़ी में घर जले और नव घड़ा भद्रा'।

इसका अभिप्राय यह है कि किसी घर में आग लगने पर अभी कुछ काल तक भद्रा नामक एक बुरा मुहूर्त है तब तक आग मत बुताओ यों समझ के वहां अच्छे मुहूर्त की राह देखनी न चाहिए, तुरन्त आग बुताने का आरम्भ करना उचित है। इसलिये आवश्यक कार्यों में मुहूर्त की अपेक्षा नहीं करते।

होराशास्त्र के विषय में ऐसा लिखा है कि—

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय मुनिर्मलादर्शतलं किलेदम्।
शास्त्रं विपद्वारिनिधि प्रततुं तरिस्तथैवार्थकृतेऽपि मित्रम्॥

अर्थात् यह शास्त्र अपना भाग्य देखने के लिये साक्षात् निर्मल दर्पण है और विपत्तिरूप समुद्र में तैरने के लिये नौका है और द्रव्य संपादन के लिये मित्र है।

इस लिये हिन्दुओं में हर एक मनुष्य की जन्मपत्री वनती है उसका प्रयोजन होरा शास्त्र में यों लिखा है कि

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भावि फलं समग्रम् ।
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥

अर्थात् जैसा घर में घड़ा वस्त्र इत्यादि सर्व पदार्थ रात्रि के समय में दीये से स्पष्ट होते हैं वैसा जन्मपत्री रूप उत्तम दीप से समग्र भावि फल स्पष्ट होता है ।

और भी लिखा है कि

सा जन्मपत्री शुभदा न यस्य तज्जीवितं संततमन्धकं स्यात् ।

अर्थात् वह कल्याणकारक जन्मपत्री जिसको नहीं है उसका जीवित सर्वदा अन्धकार में रहता है ।

इस लिये यद्यपि प्रायः सभोंकी जन्मपत्री सामान्यतः वनती है तथापि जो किसी-को कुछ विपत्ति प्राप्त हो तो वह दूर होने के लिये ज्योतिष से उस काल की ग्रहों की स्थिति पर कुछ अधिक विचार करवा के वह ज्योतिषी जो २ ग्रह अनिष्टकारक कहेगा उसके लिये ब्राह्मणों को दान देता है और उन से जप, होम इत्यादि करवाता है । ऐसी चाल हिन्दू लोकों में है ।

फल जानने के लिये गणित का ज्ञान अवश्य चाहिये यही गणित का मुख्य उपयोग हिन्दू लोक समझते हैं । सिद्धान्त में भी यों लिखा है कि—

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते
नूनं लग्नवलाश्रितः पुनरयं तत् स्पष्टखेटाश्रयम् ।
ते गोलाश्रयिणोऽन्तरेण गणितं गोलोऽपि न ज्ञायते
तस्माद्यो गणितं न वेत्ति स कथं गोलादिकं ज्ञास्यति ॥

अर्थात् प्राचीन ज्योतिषी लोक कहते हैं कि आदेश अर्थात् भूत, भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों काल के शुभ वा अशुभ का जो कहना है सो ज्योतिःशास्त्र का प्रयोजन है । फिर यह आदेश लग्न के वल के आश्रय से है और यह लग्न स्पष्ट ग्रह से और स्पष्ट ग्रह गोल से ज्ञात होता है और विना गणित के गोल समझ में नहीं आता । इस लिये जो गणित नहीं जानता वह गोल आदि कैसे जानेगा ?

इसी लिये वराहमिहिर ने अपनी संहिता में गर्ग का वचन लिखा है कि—

तन्त्रे सुपरिज्ञाते लग्ने छायाम्वुयन्त्रसंविदिते ।
होरार्थे च सुरूढे नादेष्टुर्भारती वन्ध्या ॥

अर्थात् जो गणित और सिद्धान्त को उत्तम प्रकार से जानता हो और शंकु की छाया और घटी यन्त्र से लग्न जानता हो और जातक शास्त्र का सब अर्थ ठीक किये हुआ हो उसका कहा हुआ फल कभी व्यर्थ न होगा ॥

इसी लिये यहां के बहुत लोग यों समझते हैं कि ये अंग्रेज़ लोग जो गणित और सिद्धान्त में बहुत प्रवीण होते हैं और जो बड़े २ यन्त्रों से सूक्ष्म वेघ करके ग्रहों की स्थिति उत्तम प्रकार से जानते हैं वे फलित में अवश्य बहुत अच्छे होंगे और इसलिये वे अच्छे साइत पर युद्ध करते होंगे तभी उनका सर्वत्र जय होता है।

जो कोई उनसे कहे कि अंग्रेज लोग फलित को नहीं मानते तो वे यह कहना झूठ समझते हैं और जो किसी को इस कहने पर विश्वास हो जावे तो उसको बड़ा ही आश्चर्य होता है कि जो अंग्रेज लोग फलित नहीं मानते तो वे गणित में ग्रहों की स्थिति जानने में इतना व्यर्थ परिश्रम क्यों करते हैं।

परन्तु पहिले विलायत में भी सिद्धान्त विद्या का प्रचार फलित ही के लिये था। अनुमान पौने दो सौ बरस पहिले जर्मनी देश में केप्लर नामक एक बड़ा ज्योतिषी हुआ उसने एक ग्रन्थ में यों लिखा है कि—

"सिद्धान्तविद्या रूप एक विद्वान माता की फलित विद्यारूप एक मूर्ख बेटी है और माता का जीवन केवल उसी मूर्ख बेटी के आश्रय सें है।"

परन्तु हिन्दुस्तान में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि फलित विद्या का प्रचार बहुत है और सिद्धान्त विद्या जो फलित को बहुत आवश्यक है वह बहुत क्षीण हुई है, उसका थोड़ा सा अंश प्रसिद्ध है। यहां जिसकी ज्योतिषी होने की इच्छा होती है वह केवल पत्रा बनाने का एक सारणी ग्रन्थ पढ़ के और दो चार फलित के ग्रंथ पढ़ लेता है। इतना पढ़ के ज्योतिषी बन के लोगों को जन्मपत्री और वर्षफल लिख के अपना निर्वाह करता है और जो जन्मपत्री व वर्षफल में फल लिखा रहता है वह भी कहीं नहीं मिलता। वह फल न मिलने का दोष अपने ऊपर न आवे इसलिये ज्योतिषी लोग जन्मपत्री के आदि में प्रायः यह श्लोक लिखते हैं।

जनुषः समये धृतं न यन्त्रं न मया तत्र निवेशिता च नाड़ी।
अपरैरुपदिष्टजन्मकालाज्जनिपत्रीह विलिख्यते मयैषा ॥

अर्थात् (जन्मपत्री लिखने वाला ज्योतिषी कहता है कि) मैंने जन्मकाल ठीक जानने के लिये उस समय में कोई तुरीय आदि यन्त्र लगाया नहीं था, न कोई घड़ी ही वहां स्थापित की थी। दूसरे ने जो जन्मकाल कहा उस पर मैं यह जन्मपत्री लिखता हूं।

इसलिये विश्वगुणादर्श में ज्योतिषी का वृत्त लिखा है कि—

विलिखति सदसद्वा जन्मपत्रं जनानां फलति यदि तदानीं दर्शयत्यात्मदाक्ष्यम्।
न फलति यदि लग्नद्रष्टुरेवाह मोहं हरति धनमिहैवं हन्त दैवज्ञपाशः ॥

अर्थात् ज्योतिषी अच्छा वा बुरा किसी प्रकार का एक जन्मपत्र लोगों को लिख देता है। जो उस में लिखा हुआ फल मिल जावे तो सभोंको अपना सामर्थ्य

दिखलाता है और जो न मिले तो कहता है कि जन्मकाल देखनेहारा चूका है। खेद की बात है कि इस प्रकार से कुत्सित ज्योतिषी लोगों से द्रव्यहरण करता है।

ऐसी हिन्दुओं में फलित की और ज्योतिषी की अवस्था है।

मुसलमान लोग भी कहते हैं कि फलित विद्या सच्ची है। उन में शीया लोग तो हिन्दुओं की नाईं इसको मानते हैं। लखनऊ में कितने एक ब्राह्मणों ने फलित-विद्या पर मुसलमानों से लाखों रुपये पाये हैं। सुन्नी लोग विद्या को सच्ची समझते हैं परन्तु प्रायः अपनी जन्मपत्री और वर्षफल बनवाकर शुभाशुभ फल नहीं देखते।

अब पहिले लिखा है कि फल कहीं मिलता है और कहीं नहीं मिलता उस पर फलित के आचार्य कहते हैं कि जो फल नहीं मिलता वह फलित शास्त्र का दोष नहीं है परन्तु वह फल लिखनेहारे ज्योतिषी का अज्ञान है। उसने जो ग्रहों का गणित किया होगा उसमें चूका होगा वा फलित के विचार में कहीं भूलता होगा इसमें कुछ संशय नहीं है। यों ज्योतिषी की भूल से फलित शास्त्र झूठ नहीं हो सकता क्योंकि इस शास्त्र के बनानेहारे जो आचार्य हो गये हैं उन लोगों ने उस २ काल के ग्रहों की स्थिति पर वह २ फल निश्चय से होता है तो वारवार परीक्षा करके फलित के सिद्धान्त लिखे हैं वह झूठ क्योंकर होंगे ? जैसे अमुक रोग पर औषध देने से वह रोग दूर होता है यों वैद्यक के ग्रन्थकारों ने बार २ परीक्षा से ठहरा के वह औषध उस रोग का नाशक है यों ग्रन्थ में लिख दिया है। फिर वैद्य लोग रोगियों को औषध देते हैं उसमें कितने एक रोगियों का रोग दूर होता है और कितने एक का नहीं होता उसमें वैद्यशास्त्र का दोष नहीं है। उस रोग के दूर न होने में कारण यही है कि उस रोग की परीक्षा अच्छी भांति न हुई होगी वा औषध की कृति अच्छी न बनी होगी, परन्तु इससे वैद्यशास्त्र झूठ नहीं हो सकता इसी प्रकार से फलित भी झूठ नहीं है।

जो कोई यों कहे कि आकाश में ग्रह और नक्षत्र भूमि पर से उस स्थान में दृष्ट हो तो वह २ फल होता है यह जो समग्र फलित में लिखा है इस में परस्पर दूरस्थित जो ग्रह और नक्षत्र हैं इनमें क्या संबन्ध है और उनसे वह फल क्योंकर होगा ? इसमें कोई युक्ति देख नहीं पड़ती इसलिये यह फलित शास्त्र युक्तिशून्य है, यह सत्य नहीं हो सकता। इस पर फलित जाननेहारे यह उत्तर देते हैं कि यद्यपि आकाश में परस्पर दूरस्थ ग्रह और नक्षत्रों के उस २ स्थान पर आने में और पृथ्वी पर उस २ फल के होने में क्या संबन्ध है और वह फल होने में क्या कारण है यह हमारे ध्यान में नहीं आता तथापि उस २ ग्रह स्थिति के अनुसार वह २ फल स्पष्ट देख पड़ता है तब उसको झूठ नहीं कह सकते। जैसा अमावस्या, पूर्णिमा और दो अष्टमी इन चार तिथियों में सूर्य और चन्द्र आकाश में कुछ नियत अन्तर पर रहते हैं और जो बहुत रोगी होते हैं उनका रोग इन तिथियों में बढ़ता है और जो रोगी मरणासन्न हो तो प्रायः उनके लगभग काल में मर जाता है और जो कदाचित् ये तिथि बीत जावें तो रोग शान्त

हो जाता है। यह बार २ परीक्षा करके देखा है। यों सूर्य और चन्द्र के दृष्ट नियत अन्तर से भूमि पर रोग की वृद्धि और ह्रास होता है इसका कारण यद्यपि ध्यान में नहीं आता तथापि फल स्पष्ट देख पड़ता है वह झूठ नहीं हो सकता। इसी प्रकार से और भी ग्रह आकाश में उस २ स्थान में देख पड़ने से वह २ फल होता है यह परीक्षा करके फलग्रंथ बनाए हैं। इनमें जो फल की उपलब्धि होती है सो ही युक्त है दूसरी नहीं है यों ज्योतिषी लोग स्पष्ट कहते हैं और भी कहते हैं कि जैसे हलदी पीली होती है और चूना शुभ्र होता है पर जो ये दोनों पानी में इकट्ठा किये जावें तो उस मिश्रण द्रव्य का रङ्ग लाल होता है। यह रङ्ग होने में क्या कारण है यह यद्यपि मन में नहीं आता तो भी लाल रंग को झूठ नहीं कह सकते। इसी प्रकार से ग्रहों की स्थिति के अनुसार जो फल होता है उसे झूठ नहीं कह सकते।

इस पर फलित को न मानने वाले कहते हैं कि फलिती लोग ऐसी २ चाहे जितनी फलित की उपपत्ति दिखलावें परन्तु फलित शास्त्र किसी प्रकार से काम में लाने के योग्य नहीं है। यह शास्त्र सब परस्पर विरुद्ध उक्तियों से भरा है। जैसा कि भाव साधन अनेक प्रकार का लिखा है उससे भावी घटना भिन्न २ प्रकार की ज्ञात होगी, उसमें कौन सी सत्य कहनी चाहिये? इसी प्रकार से आयुर्दाय का गणित अनेक प्रकार का है तब कौन से गणित से मनुष्य के आयुष्य का निश्चय होगा? यों ही ग्रन्थों में ग्रहों की दशा बहुत प्रकार की लिखी है तब यह दशा का फल किसी प्रकार से (निश्चयात्मक) नहीं ठहराया जा सकता। ऐसी२ अनेक विरुद्ध उक्ति इसमें हैं तो फल का निर्णय क्योंकर होगा? और भी पृथ्वी पर एक ही समय में अनेक मनुष्य जन्मते हैं, पर उन सभोंकी वृत्ति एक सी कभी नहीं होती और एक इसका स्पष्ट उदाहरण यह है कि जो दो युगल जन्मते हैं उनके जन्मलग्न में तो क्या पर नवांश में भी प्रायः भेद नहीं होता। इसलिये उनका जन्मपत्री एक ही सी बनती है पर जो उनकी जीवन की वृत्ति देखो तो दोनों की भिन्न प्रकार से होती है। यह जन्म कुण्डली से किसी प्रकार ज्ञात नहीं हो सकता, तब फलित शास्त्र किस काम का होगा!

और भी फलित को न माननेवाले कहते हैं कि यह भावी फल पहिले कह देना केवल व्यर्थ है, इतना ही नहीं है प्रायः बाधक भी होता है। जैसा कोई मनुष्य किसी ज्योतिषी से पूछे कि जो मैं व्यापार करता हूं इसमें लाभ होगा वा हानि होगी? तब जो ज्योतिषी कह देवे कि इसमें तुमको हानि होगी तो यह सुनते ही वह मनुष्य खिन्न हो के उस व्यापार के काम में ढीला हो जावेगा और जो उस व्यापार में लाभ भी होने वाला हो तो भी उसकी ढिलाई से हानि ही होगी। इस लिये यह भावी फल का कथन उद्योगी मनुष्य को ढीला कर देता है।

इसी लिये फल के न मानने वाले स्पष्ट कहते हैं कि फलित शास्त्र का भरोसा न

करके केवल ईश्वर के भरोसे पर सब काम प्रयत्न से करो इसीमें सब सिद्धि और वृद्धि है[1]।

जन्मकुण्डलियाँ

(१) भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र

यद्यपि भगवान् श्रीकृष्ण का आविर्भाव द्वापर युग में हुआ था तथापि उनकी जन्म-पत्रिका एवं फलादेश का वर्णन प्रभु का अन्तःसाक्षात्कार करने वाले भक्तशिरोमणि सूरदास जी ने इस कलिकाल में किया है, जिसके आधार पर निम्नलिखित जन्मपत्रिका हम प्रस्तुत कर रहे हैं। तदनुसार श्रीमद्वल्लभाचार्य के द्वारा प्रवर्तित पुष्टिमार्ग में उक्त पत्रिका समादृत है।

स्वस्तिश्रीमन्नृपतिपाण्डुराज्ये द्वापरशेषवर्ष १६३ ईश्वरनामसंवत्सरे भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ बुधवासरे घ. ४६ प. २० कृत्तिकाभे घ. २४ प. २३ तदुपरि रोहिणीनक्षत्रे हर्षणयोगे कौलवकरणे एवं पञ्चाङ्गे श्रीसूर्योदयादिष्टम् घ. ४४ प. ४८ तत्समये वृषोदये श्रीनन्दनन्दनावतारोऽभवत् ॥ सूर्यः ४।२०, दिनमान घ. ३१ प. १२, रात्रिमान घ. २८ प. ४८

श्रीकृष्ण-जन्माङ्गम्
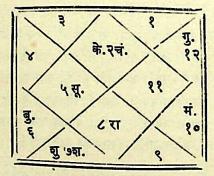
श्रीमद्भागवत की "अन्वितार्थप्रकाशिका" टीका में "खमाणिक्य" ज्योतिष-ग्रंथ के आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डली के संबंध में जो श्लोक लिखा है उसके अनुसार उपर्युक्त ग्रहस्थिति बराबर मिलती है—

---

१. इस फलित विचार में श्री६युत गुरुवर ज्योतिषाचार्य बापूदेवशास्त्रीजी ने फलित का खण्डन वा मण्डन कुछ नहीं किया है किन्तु फलित के मानने और न मानने वाले जैसा २ कहते हैं और उसमें जो जो युक्ति बतलाते हैं उसका संग्रह किया है। इस पर अपने अभिमत अर्थ का निर्णय लोग कर लेवें।

''उच्चस्थाः शशिभौमचान्द्रिशनयो लग्नं वृषो लाभगो
जीवः सिंहतुलालिपु क्रमवशात्पूषोशनोराहवः ।
नैशीथः समयोऽष्टमी बुधदिनं ब्रह्मर्क्षमत्र क्षणे
श्रीकृष्णाभिधमम्बुजेक्षणमभूदाविः परं ब्रह्म तत् ॥

कुण्डली के आधारभूत प्राचीन पद्य—

''स्वस्तिश्रीमन्नृपतिवर चक्रवर्ति महाराज ।
पाण्डुराज के राज्य में युग द्वापर मुख साज ॥
आठ लाख त्रेसठ सहस वसु सत अरु सैंतीस ।
युग द्वापर बीते बरस पाण्डुराज अवनीस ॥
छयालिस दंड पलान वीस नख कृत्तिका माँहि ।
चौवीस तेईस जानिये रोहिणी परसत मांहि ॥
हर्षण योग सर्हापियों कौलव करण समर्थ ।
सूर दक्षिण दिन रह्यो इकतीस वारह अर्थ ॥
रातमान अठाईस अरु अड़तालीस पल जान ।
सिंह सूर लखु बीस अरु भोग याहि परमान ॥
चौवालीस अड़तालीस पर सूर्योदय को इष्ट ।
अर्द्धनिशा शशि उगत हि प्रगटे जग के इष्ट ॥

नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो, मैं सुनि मथुरा ते आयो;
लगन सोधि ज्योतिषको गिनि करि, चाहत तुम्हहि सुनायो।
संवत्सर 'ईश्वर' को भादों, नाम जु कृष्ण धर्‍यो है;
रोहिणि, बुध, आठैं अँधियारी, 'हर्षन' जोग पर्‍यो है ।
वृष है लग्न, उच्चके 'उडुपति' तन को अति सुखकारी;
दल चतुरंग चलै सँग इनकै, ह्वैहैं रसिकविहारी ।
चोथी रासि सिंहके दिनमनि, महिमण्डल को जीतैं;
करिहैं नास कंस मातुल को, निहचै कछु दिन वीतैं ।
पञ्चम बुध कन्या के सोभित, पुत्र बढ़ैंगे सोई;
छठएँ सुक्र तुलाके सनिजुत, सत्रु बचै नहिं कोई ।
नीच-ऊँच जुवती बहु भोगैं, सप्तम राहु पर्‍यो है;
केतु 'मुरति' में स्याम बरन, चोरी में चित्त धर्‍यो है ।
भाग्य भवन में मकरमहीसुत, अति ऐश्वर्य बढ़ैगो;
द्विज गुरुजन को भक्त होइकै, कामिनि-चित्त हरैगो ।
नव-निधि जाके नाभि वसत है, मीन बृहस्पति केरी;

पृथ्वी भार उतारैं निहचै यह मानो तुम मेरी।
तब ही नन्द-महर आनन्दे, गर्ग-पूजि पहरायो;
असन, बसन, गज, वाजि, धेनु, धन, भूरि भंडार लुटायो।
वंदीजन द्वारै जस गावै जो जाँच्यो सो पायो;
व्रज में कृष्ण-जन्म को उत्सव, 'सूर' विमल जस गायो।"

स्वधामगमन—व्याध द्वारा चरण में शरप्रहार के कारण कलियुगारंभ क्षण के पूर्व।

"यस्मिन् कृष्णो दिवं यातस्तस्मिन्नेव तदाहनि।
प्रतिपन्नं कलियुगमिति प्राहुः पुराविदः॥" (भाग० १२-३-३३)

(२) शुद्धाद्वैत संप्रदाय के प्रवर्तक जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्यजी

प्रादुर्भाव—संवत् १५३५ वैशाख कृष्ण एकादशी, रविवार, पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रे, जन्मेष्टम् घ. ३८ प. २८, जन्मस्थान-चम्पारण्य।

जन्माङ्गम्
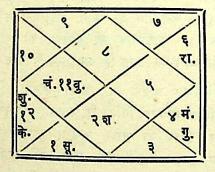
तिरोभाव—संवत् १५८७ आषाढ़ शुक्ल द्वितीया मध्याह्न काल, स्थान हनुमानघाट-काशी।

(३) गोस्वामी श्री १०८ श्रीविट्ठलनाथजी महाराज

जिनके अनुरोध को स्वीकार करके अकबर बादशाह ने गोवधबन्दी का फरमान जारी किया और जिनकी चरणरज को पाकर अष्टछाप के भगवद्भक्त महाकवि सूरदासजी, परमानंदासजी, कुम्भनदासजी, नंददासजी आदि अपने को कृतार्थ समझते थे।

"चक्षुमुनितत्त्वविधु (१५७२) असितनिधियामगुणसमय प्रकट वल्लभतनुज। धन्य चरणाट धन्य धन्य दैवी भाग्य सकलसौभाग्य विराजत गोपीश अनुज। लग्न वृष मिथुन गुरु सहजगतिराहु चन्द्रपञ्चमसुतस्थान राजे। भौमकविमंददधिभानुबुधयुक्तवसु धर्मगृहकेतु संकेत छाजे। हस्त शोभन योग करण तैतिल धरणवरणनीरदअंगरूप सोहें। द्वारकेशाधिपति श्रीविट्ठलाधीश प्रभु प्रीति और को है।"

प्राकट्य—शाके १४३७ पौषकृष्ण नवमी शुक्रवार, हस्तनक्षत्र, जन्मेष्टम् घ. १८ प्राकट्यस्थान चुनार (जिला मिर्जापुर)

जन्माङ्गम्

३ गु.	२ लग्नम्	१	१२
रा. ४	श्रीविठ्ठलेश प्रभुचरण पौष कृष्ण नवमी शुक्रे जन्म संवत् १५७२		११
५			१० के०
चं. ६	७.	८ श० शु० मं०	९ सू० बु०

लीलाप्रवेश—संवत् १६४२ माघकृष्ण षष्ठी मध्याह्नकाल, स्थान गिरिराज कन्दरा—गोवर्धन

(४) श्रीमद्भागवत के "बालबोधिनी टीका" के निर्माता व शुद्धाद्वैतमार्तण्डग्रन्थकर्ता षष्ठपीठाधीश्वर गोस्वामी श्री १०८ गिरिधरजी महाराज (काशी)

जिन्होंने श्रीमुकुन्दप्रभु को श्रीनाथद्वारा से गुरुदक्षिणा में प्राप्त करके काशी के गोपाल-मंदिर में पधराया तथा शास्त्रार्थ में प्रतिपक्षी रामानुज संप्रदायवादी को वहाँ निरुत्तर किया।

प्राकट्य—शाके १७११ पौष कृष्ण तृतीया गुरौ, पुनर्वसु ४ चरणे, जन्मेष्टम् घ. १६ प. २०, जन्मस्थान—वाराणसी

जन्माङ्गम्
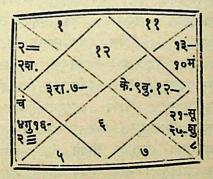
(५) सांगवेदविद्यालय–काशी के संस्थापक धर्मप्राण त्यक्तमहामहोपाध्याय पं० श्रीलक्ष्मणशास्त्री द्राविड़

जन्म-संवत्–१९३३ चैत्र शुक्ल द्वादशी तुलालग्ने

मृत्यु-संवत्–१९८८ आषाढ कृष्ण चतुर्थी प्रातः ९। बजे पाण्डुरोग द्वारा

जन्माङ्गम्
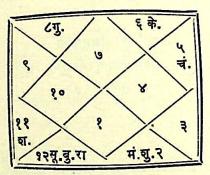
(भृगुसंहिता के अनुसार फलादेश)

शुक्र उवाच—

भवेदेतादृशी पत्री यज्जीवस्य महामते ! ।
तत्किं फलमवाप्नोति विस्तराद्वद वे प्रभो ! ॥

भृगुरुवाच—

तुलालग्नोदये जन्म तदीशो निधनभावगः ।
भूमिपुत्रोऽपि तत्रैव द्वितीये तु गुरुस्तथा ॥
पञ्चमे तु शनिश्चैव तमो वै शत्रुभावगः ।
दिवानाथेन संयुक्तश्चन्द्रपुत्रोपि तत्र च ॥
निशानाथो लाभगेहे शिखी वै व्ययगेहगः ।
एतत्खेटानुसारेण विप्रवंशे तु बालकः ॥
सर्वसौख्येन संयुक्तः सर्वशास्त्रविशारदः ।
विद्याहर्षो विशेषेण धनधान्यसुखान्वितः ॥
निजजीवने महाप्राज्ञ ! ख्यातियुक्तो विशेषतः ।
सम्मानयुक्तो विशेषेण ख्यातिस्तस्य दिगन्तरे ॥
पुत्रकन्यासुखं वाच्यं भृगुमन्त्राद्विशेषतः ।
अन्यथा मुनिशार्दूल ! चिन्तायुक्तोऽपि वै सुतः ॥
वेदभ्रातृकः प्रजायते जीवने हि महामते ।
एक भ्रातृमृतिः सत्यं जीवने यौवने भवेत् ॥

विंशवर्षेऽथवा योगिन् ! भ्रातृशोकोऽपि जीवने ।
मातापितृसुखे चापि विघ्नबाधा भविष्यति ॥
तीव्रबुद्धिः सुशीलश्च परदुःखेन दुःखितः ।
पूर्णविद्योऽपि जायेत विद्या तस्य प्रकाशदा ॥
कुशाग्रबुद्धिर्भवेत्सत्यं धर्मकृत्ये रुचिर्बहुः ।
सभायां विजयी चैव वरदा तु सरस्वती ॥
सम्मानवृद्धिर्धनवृद्धिर्विद्यया जीवने भवेत् ।
एकपुत्रसुखं वाच्यं पुत्रोऽपि ख्यातिमान् भवेत् ॥
सरस्वत्या महाप्राज्ञ ! वरदपुत्रोऽपि तत्सुतः ।
पूर्वपापप्रभावेण पुत्रचिन्तायुतो भवेत् ॥
पुत्रवध्वाः सुखे चापि विघ्नबाधा वहूत्तरा ।
परिवारसौख्ये विघ्नबाधा जीवने हि त्वमन्त्रतः ॥
यावज्जीवति भूभागे परिवारचिन्तायुतो भवेत् ।
चन्द्रदारमृतिर्वाच्या तत्सुतस्य च यौवने ॥
चन्द्रभार्यया महाप्राज्ञ ! पुत्रसौख्यं न जायते ।
नेत्रभार्या तथा तात ! पुत्रोऽपि दुःखितो बहु ॥
परिवारे कलहश्चैव सर्वसौख्ययुतेऽपि वै ।
पुत्रवधूर्भवेत्तस्य क्रोधयुक्ता विशेषतः ॥
चञ्चला प्रकृतिश्चैव पुत्रवध्वा महामुने ।
भृगुमन्त्रे कृते योगिन् ! पौत्रसौख्यं सुनिश्चितम् ॥
शत्रुतो रोगतश्चैव परिवारचिन्तायुतः सुतः ।
आयुर्मध्ये भयं वाच्यं पराभिचार-प्रभावतः ॥
वेदबाणं ५४ समारभ्य बाणबाण ५५ तरावधि ।
दशा श्रेयस्करी नैव देहकष्टी भविष्यति ॥
मनसि चिन्तायुतो वाच्यः शत्रुचिन्तापि जायते ।
शनैः शनै रोगवृद्धिः गुप्तरूपेण वै कवे ! ॥
विष्णुभक्तिप्रभावेण मारकेशोऽपि खण्डितः ।
रसबाणं समारभ्य नगबाणतरावधि ॥
अकस्माद्देहकष्टी च वङ्गदेशे भविष्यति ।
वङ्गदेशे रोगवृद्धिः सत्यं वै मुनिपुङ्गव ! ॥
औषधिर्विरसा चैव रोगवृद्धिर्विशेषतः ।
"श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।"
इति मन्त्रप्रभावेण तीर्थमृत्युर्भविष्यति ।
यात्रायां रोगवृद्धिः सम्भविष्यति त्वमन्त्रतः ॥

समायाते तीर्थभूमौ जीवने संशयो महान् ।
किञ्चित्कालान्तरे तात ! तीर्थभूमौ मृतिर्भवेत् ॥
मृत्युकाले महाप्राज्ञ ! पुत्रस्नेहेन वै कवे !
पूर्णशान्तिर्नतु तस्य चित्ते वै मुनिपुङ्गव ! ॥
तद्दोषस्य प्रभावेण नात्मा शान्तिं लभेत च ।
नगवाणे तीर्थमृत्युः सत्यं वै मुनिपुङ्गव ! ॥
दीर्घायुश्च न जायेत जीवने पूर्वपापतः ।
पूर्वजन्मकृतात्पापात्पूर्णायुर्नैव जायते ॥
मृत्योः पश्चान्महाप्राज्ञ ! तत्पुत्रो दुःखितो वहु ।

शुक्र उवाच—

पूर्वजन्मनि किं कर्म कृतं तद्घोररूपकम् ।
तन्मे वद महायोगिन् ! सर्वज्ञोऽसि यतः प्रभो ! ॥

भृगुरुवाच—

पूर्वजन्मनि बालोऽयं विप्रवंशे धनी महान् ।
न्यायाधीशोऽपि वै योगिन् ! नृपतुल्यसुखी तथा ॥
एकदा समये योगिन् ! धनलोभप्रभावतः ।
विश्वासघातं कृतवान् मित्रेण सह वै कवे ! ॥
तेन पापप्रभावेण धनचिन्ता स्वगेहके ।
पुत्रवध्वादिके सौख्ये विघ्नवाधा भविष्यति ॥
नगवाणे तीर्थमृत्युर्मोक्षप्राप्तौ च बाधकम् ।
मृत्योः पश्चात्तथा तात ! पूर्णशान्तिर्गृहे न तु ॥
दारहेतोः सुताहेतोस्तत्पुत्रो दुःखितो वहु ।
मृतपितुस्तथा तात ! श्रवणं तु करिष्यति ॥
भृगुशास्त्रस्य श्रवणं जीवने मुनिपुङ्गव !
चित्ते शान्तिस्तथा नैव दम्पत्योः स्नेहबाधकम् ॥
पौत्रसौख्ये विलम्बश्च पौत्रसौख्यं तु मन्त्रतः ।
सुताविवाहे विघ्नबाधा विरक्तोऽपि सुतो भवेत् ॥
परसाहाय्यं सम्प्राप्य कन्योद्वाहो भविष्यति ।
कन्याहेतोस्तथा तात ! सम्मानबाधापि सम्भवेत् ॥
मृतपत्रिका महाप्राज्ञ ! तस्माद्यत्नो न जायते ।
तत्पुत्रोऽपि महायोगिन् ! गृहतश्च पृथग्भवेत् ॥
विरक्तबुद्धिप्रभावेण सुतो वै धार्मिको बहु ।
परमां शान्ति तथा तात ! नाप्नोति पितृदोषतः ॥

कुलदोषेण वै योगिन् ! चित्ते शान्तिर्न जायते ।
तद्दोषपरिहारार्थं तीर्थभूमौ महामते !
श्रीमद्भागवतस्य विधिवच्छ्रवणं चरेत् ।
परादेव्या हि सूक्तस्य पाठं तात ! तथा चरेत् ॥
इति यत्ने कृते योगिन् ! चित्ते शान्तिः सुतस्य च ।
परिवारे सौख्यवृद्धिश्च पुत्रपौत्रभयं न तु ॥
अकस्माद्धनवृद्धिश्च पुत्रभाग्योदयो बहुः ।
कापि चिन्ता न जायेत परिवारे सौख्यदा दशा ॥
धनधान्यसुखं पूर्णं चात्मशान्तिर्भविष्यति ।
आयुर्मध्ये भयं नैव पुत्रस्य मुनिपुङ्गव ! ॥
वायुजन्यविकारेण पुत्रकष्टी न जीवने ।
दीर्घायुष्यं लभेत्सत्यं तत्पुत्रोऽपि महामते ! ॥
शक्तिमन्त्रजपेनापि श्रवणेन भागवतस्य च ।
पुत्रोऽपि सौख्यसम्पन्नः परां शान्ति पितुर्लभेत् ॥
मृतोऽपि मोक्षमाप्नोति तुलालग्नफलंत्विदम् ॥

इति श्रीभृगुसंहितायां भृगुशुक्रसंवादे कुण्डल्यध्याये मृतजन्तोस्तुलालग्नफलं समाप्तम् ।

———

काशीनिवासी म० म० पं० गंगाधरशास्त्री तैलंग सी. आई. ई., म० म० पं० शिवकुमारशास्त्री, म० म० पं० दामोदरशास्त्री, म० म० पं० तात्याशास्त्री पटवर्धन प्रभृति अनेकानेक दिग्विजयी पंडितों के विद्यागुरु प्रातःस्मरणीय सोमयाजी—

पण्डितप्रवर श्रीबालशास्त्रीजी (बालसरस्वती)

जन्म—संवत् १८९६ पौष कृष्ण दशमी सोमवार मिथुनलग्ने ।

जन्माङ्गम्
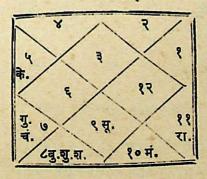
"तर्केऽतर्क्यप्रभावः कुशलमतिरलं पाणिनिः शब्दशास्त्र
मीमांसाप्राणदाता कपिलवरगिरामेक एव प्रवक्ता।
योगे वेदान्तशास्त्रेऽप्यतिनिशितमतिः काव्यसाहित्यशास्त्रे
तन्त्रेऽन्यत्राऽपि नित्यं प्रचुरतरगतिः सर्वविद्येश्वरो यः ॥"

आपने दत्तक पुत्र ग्रहण किया था क्योंकि आपको पुत्रसन्तान नहीं थी। आपकी तृतीय धर्मपत्नी का स्वर्गवास ज्येष्ठ शुक्ल २ संवत् १९३९ को भया। आपकी माता आपके निधन होने के बाद विद्यमान थी। शास्त्रीजी को अर्श की व्याधि थी।

मृत्यु—श्रावण कृष्ण त्रयोदशी संवत् १९३९ को काशीधाम में हुई।

म० म० डाक्टर गंगानाथ झा, म० म० पं० जयदेवमिश्र, म० म० पं० हाराणचन्द्र भट्टाचार्य, विद्यावाचस्पति पं० मधुसूदन ओझा प्रभृति विद्वानों के विद्यागुरु—

भारत प्रसिद्ध विद्वान् म० म० पं० शिवकुमार मिश्र

जन्म—संवत् १९०४ फाल्गुन कृष्ण ११ बुधे जन्मेष्टम् घ० ४ प० ३०

जन्माङ्गम्
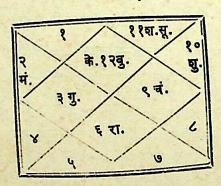
मृत्यु—संवत् १९७४ अधिक भाद्रपद शुक्ल १ शनिवार को प्रातः ७ बजे लकवे की बीमारी से आपका काशी में शिवसायुज्य हुआ।

संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् महामहोपाध्याय पंडित गंगाधरशास्त्री सी. आई. ई. के शिष्य "वाङ्मयार्णव" (संस्कृत पद्यबद्ध विश्वकोष) तथा अनेक ग्रन्थों के रचयिता—

म० म० पं० रामावतार शर्मा

जन्म—संवत् १९३१ सूर्य राशि १० अंश १९ को वृषलग्न में भया।

जन्माङ्गम्
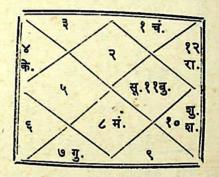
विंशोत्तरी महादशा

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	श०
०	२०	६	१०	७	१८
५	०	०	०	०	०
२६	०	०	०	०	०
१९३१	१९३२	५२	५८	६८	७५
१०	४	४	४	४	४
१९	१५	१५	१५	१५	१५

मृत्यु—संवत् १९८५ चैत्र कृष्ण नवमी बुधवार को दिन में तीन बजे पटना में हुई।

देश-विदेश में ख्याति प्राप्त प्राच्य-पाश्चात्य गणित-ज्यौतिष-वेत्ता, सम्मानित सभ्य रायेल एशियाटिक सोसाईटी ग्रेटब्रिटेन व आयर्लैण्ड, सम्मानित सदस्य एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, ज्यौतिष-प्राध्यापक-वाराणसेय संस्कृत कालेज तथा प्रख्यात दृक्सिद्ध पंचांग निर्माता—

म० म० पं० श्रीबापूदेव शास्त्री सी. आई. ई.,

जन्म—संवत् १८७६ कार्तिक शुक्ल षष्ठी रविवार पूर्वाषाढा २ चरणे जन्मेष्टम् घट्यः ४४ पलानि ५, भयातम् २८।३०, भभोगः ५६।२५, सूर्यः ६।७ ।

जन्माङ्गम्
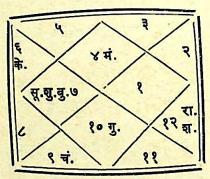
काश्मीर, दरभंगा, मंडी, वाराणसी आदि स्थानों के महाराज तथा विदेश और भारत के प्रख्यात विद्वान् गणितज्ञ आपका अत्यंत सम्मान करते थे। आपके चार विवाह हुये थे। पहिली तीन स्त्रियों से कोई संतान नहीं बची। चतुर्थ पत्नी से दो पुत्र तथा एक कन्या बची। जिनमें से अब उनके कनिष्ठ पुत्र सिद्धान्तवागीश पंडितप्रवर श्रीगणपति-देवशास्त्रीजी मात्र विद्यमान हैं। इन्होंने स्व० श्रीबापूदेवशास्त्रीजी के दृक्सिद्ध पंचांग को उत्तरप्रदेश राज्य सरकार को अविच्छिन्न प्रकाशनार्थ राज्य विधान के अनुसार रजिस्ट्री कराकर, प्रदान किया है। सरकार अब इसको वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है। यह पंचांग पिछले ९४ वर्षों से स्व. श्री बापूदेव-शास्त्रीजी की कीर्ति-पताका को फहरा रहा है। म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी, म० म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, ज्योतिषमार्तण्ड पं० अमृतरामशास्त्री, पं० विनायक शास्त्री वेताल, पं० चन्द्रदेवजी पण्डया, पं० महादेवशास्त्री घाटे, पं० गौतमजी ज्यौतिषी आदि सैकड़ों नामाङ्कित ज्यौतिषी विद्वान् आपके शिष्य थे। आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी शुक्रवार संवत् १९४७ को सन्निपात व्याधि से आपका परलोक-गमन अर्द्धरात्रि के समय हुआ।

फलित ज्यौतिष के प्रवक्ता तथा श्रीरामचन्द्रजी के परम उपासक

महामहोपाध्याय पं० अयोध्यानाथ ज्योतिषी

जन्म—संवत् १९२१ आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा भौमे, जन्मेष्टम् घ० ५० प० ३० ।

जन्माङ्गम्
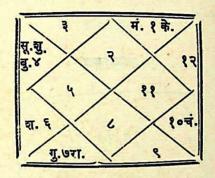
विंशोत्तरी महादशा

चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०
७	७	१८	१६	१९	१७
११					
८					
१४					
३४					
१९२१	२९	३६	५४	७०	८९
३	२	२			
५	१३	१३			
१३	२८	२८			
१९	५३	५३			

परलोक—संवत् १९८३ माघ पूर्णिमा । अंत समय में इनको लकवा हो गया था ।

सनातनधर्म की विराट् संस्था "भारत धर्म महामण्डल—काशी" के संस्थापक तथा अनेकानेक राजा महाराजाओं द्वारा संमानित एवं एक सौ पाँच वर्षकी पूर्णायु वाले पूज्यपाद महात्मा श्री १०८ ज्ञानानन्दजी (श्री यज्ञेश्वर मुखर्जी)

मेरठ में जन्म—संवत् १९०२ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी सोमवार अर्द्धरात्रि के समय रोहिणी तृतीय चरण में, जन्मेष्टम् घ० ४५ प० ५७, भेतम् ५२।११, भभोग: ६५।२ ।

जन्माङ्गम्

विंशोत्तरी महादशा

चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०
१	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	६
११								
२२								
१९०२	४	११	२९	४५	६४	८१	८८	२००८
४	४	४						
१०	२	२						
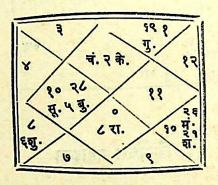
निर्याण—मूत्रावरोध की व्याधि के कारण संवत् २००७ माघ कृष्ण चतुर्थी को रात्रि में पाँच बजे के करीब काशीलाभ ।

काशी-हिन्दूविश्वविद्यालय के संस्थापक श्रीमान् पं० मदनमोहन मालवीयजी

जन्म—संवत् १९१८ पौष कृष्ण ८ बुधवार हस्तनक्षत्र, जन्मेष्टकाल घ० ३० प० १७ (२५-१२-१८६१)

जन्माङ्गम्
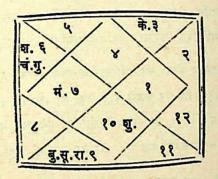
विंशोत्तरी महादशा

चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०
०	७	१८	१६	१९	१७
७					
१९					
१९१८	१९	२६	४४	६०	७९
८	४	४			
१२	१	१			

मृत्यु—संवत् २००३ मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी (१२-११-१९४६)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् और गुणीजनों के पारखी

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

जन्म—संवत् १९०७, भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी, वाराणसी ।

मृत्यु—संवत् १९४१

म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी द्वारा विरचित जन्मपत्रिका

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥

सन् १८५० सितम्बर मास की नवीं तारीख सोमवार के आधी रात के अनन्तर ४ घंटा ३० मिनिट ११ सेकेंड पर काशी में (जहाँ का अक्षांश (२५°।१७) श्रीमान् बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ । उस समय में ग्रीन्विच यन्त्रालय में दोपहर के अनन्तर १४ घंटा ५ मिनिट ३० सेकेण्ड बजे थे । दोपहर दिन में ग्रहों का ज्ञान कर जन्म समय का ग्रह जानने के लिये लाघव का समीकरण $\frac{\text{गति}}{२} - \frac{\text{गति}}{२०} + \frac{\text{गति}}{८०} = \frac{\text{गति}}{२८८०}$ इसे लाघव से $\frac{\text{गति}}{२}\left(१ - \frac{१}{१०} + \frac{१}{४०} - \frac{१}{१४४०}\right)$ ऐसा भी लिख सकते हैं ।

इत्यादि............

स्पष्ट ग्रहों का चक्र संस्कृत के अनुसार

र.	चं.	बु.	शु.	मं.	वे.	जू.	प.	सो.	गु.	श.	यू.	ग्र.	उ.	
५	७	६	७	६	५	६	१०	०	५	०	०	०	५	८
१६	६	१३	१	११	२०	२८	२५	५	२९	१९	२९	अ'	१७	५१
५७	३८	१२	१५	२४	२७	५८	२१	८	४८	४७	५६	क	२७	३५
४७	१०	४५	४५	१	०	०	०	०	५३	५७	३३	कि		

अँग्रेजी के अनुसार

Gyocentric=भूकेन्द्राभिप्राय से

सायन **निरयन**
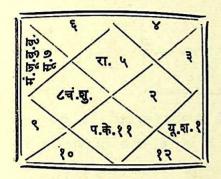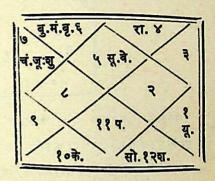
श्रीभारतेन्दु-कविवर्य-वणिग्वरस्य
विद्वज्जनैकशरणस्य महोदयस्य ।
जन्मेष्टकालवशतो हरिचन्द्रनाम्नः
पत्री मया विरचितेह सुधाकरेण ॥

महाप्रतापी अकबर बादशाह

जन्म—शालिवाहन शाके १४६४ कार्तिक शुक्ल ६ शनिवार जन्मेष्टकाल घ. ४९ प. ९

स्पष्ट ग्रह

सूर्य	चन्द्र	मं०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा०	लग्न
६	९	८	६	५	५	६	१०	४
१३	१	२४	९	२८	९	२४	११	१५
५४	७	४३	४२	५४	३४	२०	१०	३५

जन्माङ्गम्
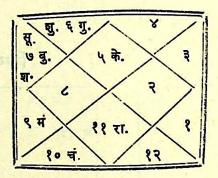
उपर्युक्त जन्मेष्टकाल आदि "हिल्लाज" की चूड़ामणि टीका शाके १५३० में निर्मित से हमने उद्धृत किया है तथा अकबर बादशाह के भाव कुण्डली में गुरु तृतीय भाव में चला गया है। उनकी मृत्यु संग्रहणी के रोग से तारीख १६—१०—१६०५ को हुई।

द्वितीय विश्वयुद्ध विधायक वीर हिटलर

जन्म—संवत् १९४६ शांके १८११ तारीख २०-४-१८८९, वैशाख कृष्ण-५ शनिवार, मूल ४ चरण, जन्मेष्टम् घ. ३३ प. ४८।

मृत्यु—सन् १९४५ ई.

स्पष्ट ग्रह

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा०	लग्न
०	८	०	०	८	०	३	२	६
८	१२	२३	८	१७	१९	२३	२५	२
४३	२१	१६	५०	५३	५८	२३	४०	०
५	४३	४४	४८	७	२५	१६	३६	५५

जन्माङ्गम्

विंशोत्तरी महादशा

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०
०	२०	६	१०	७	१८	१६	१९
६							
३							
३२							
४७							
१९४६	४६	६६	७२	८२	८९	२००७	२०२३
०	६	६					
८	१२	१२					
४३	१५	१५					
५	५२	५२					

महान् देशभक्त तथा सुप्रसिद्ध विद्वान् लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

जन्म—तारीख २३–७–१८५६ प्रातः जन्मेष्टम् घ० २ प० ५ ।

मृत्यु—तारीख १ अगस्त १९२०

जन्माङ्गम्
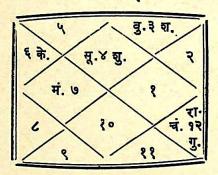
स्वातन्त्र्य-सेनानी श्रीसुभाषचन्द्र वसु (नेताजी)

जन्म—तारीख २३–१–१८९७, उषःकाल में घं० ४ मि० २० पर जन्म, सूर्योदय से शनिवार चालू होता है । जन्मस्थान—कटक ।

मृत्यु—१८–८–४५ को हवाई जहाज की दुर्घटना में हुई ।

जन्माङ्गम्
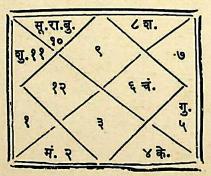
नोट—मतान्तर से इनका जन्म समय ता० २३–१–१८९७ को मध्याह्न में घंटा ११ मिनट २४ अर्थात् मेष लग्न में है तथा मृत्यु ता० २२–८–४५ को हुई है ।

आद्या महाविद्या की परम उपासक विद्यमान माँ आनन्दमयी देवी (काशी)

जन्म—तारीख ३० एप्रिल १८९६ ई०, वैशाख १९ सौर सं० १९५३ वि०, रात्रि में घं० ३ के समय में जन्म, दूसरे दिन गुरुवार था। जन्मस्थान–त्रिपुरा जिला (बंगाल)

जन्माङ्गम्
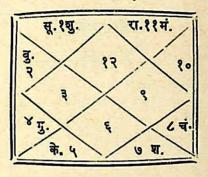
स्वतंत्र भारत के पूर्वतन प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू

प्रयाग में जन्म—संवत् १९४६ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ गुरुवार तारीख १४–११-१८८९ रात्रि में घंटा ११ मि० ३०, दिन में घटी १४ प० ३ पर वृश्चिकेऽर्कः

जन्माङ्गम्

मृत्यु—तारीख २७–५–१९६४।
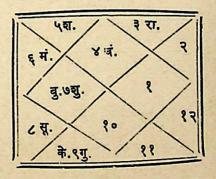
अखण्ड भारत का विभाजन स्वीकार करके भारतीयों को स्वातन्त्र्य दिलाने वाले

विश्वविख्यात कर्मवीर श्रीमान् मोहनदास कर्मचन्द गान्धीजी—

पोरबन्दर (सौराष्ट्र) में जन्म—संवत् १९२६ आश्विन कृष्ण १३ रविवार पूर्वा-फाल्गुनी १ चरणे जन्मेष्टम् घ० ३ प० १५, जन्म तारीख २–१०–१८६९ प्रातःकाल।

जन्माङ्गम्
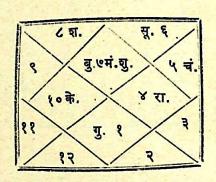
(मतान्तर से गुरु ३०° २५′ भी है)।

विंशोत्तरी महादशा

शु.	सू.	चं.	मं	रा.	गु.	श.	बु.
१८	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
५							
२९							
१५							
१९२६	४४	५०	६०	६७	१९८५	२००१	२०
५	११						
१६	१५						
३९	५४						
१०	१०						

दिल्ली में मृत्यु—तारीख ३०–१–१९४८ को सायंकाल व्यक्तिविशेष के द्वारा गोलीप्रहार से हत्या।

श्रीमती इन्दिरागान्धी, वर्तमान प्रधानमन्त्री, भारत सरकार

प्रयाग में जन्म—सं० १९७४ शके १८३९ कार्तिक शुक्ल ५ सोमवार (जन्मकालीन तिथि ६) तारीख १९-११-१९१७ को रात्रि में घंटा ११ मिनट ११ स्टैंडर्डटाईम, जन्मेष्टम् घ. ४२ प. २, उत्तराषाढ़ा ३ चरणे, दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग के अनुसार भयात् ३९।३३ भभोग ५७।५९, लग्नम् ३।२८, सूर्यः ७।४।

जन्माङ्गम्
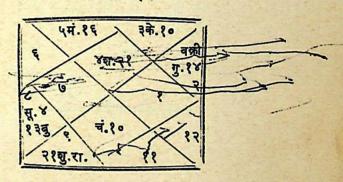
विंशोत्तरी महादशा

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु०
१	१०	७	१८	१६	१९	१७
१०						
२७						
१९७४	७६	८६	१९९३	२०११	२०२७	२०४६
७	६	६	६	६	६	
४	१	१	१	१	१	

विवाह—तारीख २६ मार्च १९४२ को श्री फिरोज गांधी (पारसी) के साथ हुआ।

पतिवियोग—सन् १९६० में।

संतति—दो पुत्र।

भारत के प्रधानमन्त्री पद पर आसीन—तारीख १९-१-१९६६।

भारत के स्वराज्याधिकार-प्राप्ति-काल की कुण्डली

समय—तारीख १५ अगस्त १९४७ को निशार्द्ध के समय वृषलग्न मे ।

स्वराज्याङ्गम्

३ मं. | १ | १२
नं. सू. शु. श बु. ४ | २रा. | ११
५ | ८ के. | १०
६ | ७ गु | ९

इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ के राज्याभिषेक-काल की कुण्डली

ज्येष्ठकृष्ण ५ भौमे श्रवण नक्षत्र में तारीख २ जून १९५३ को सायंकाल घंटा ५ मि० २० पर (भारतीय-समय) ।

राज्याभिषेकाङ्गम्
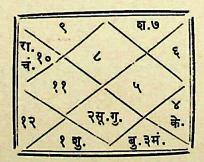
[यमल भ्राताओं की पत्रिका। ये दोनों व्यक्ति समानप्राय आकृति के व एक ही विद्या को साथ-साथ काशी में पढ़े और रहें हैं तथा संप्रति ये दोनों भाई इंजीनियर के पद पर काशी से बाहर पृथक् पृथक् कार्य कर रहें हैं। अभी तक ये दोनों अविवाहित भी हैं।]

प्रथम यमल भ्राता की पत्रिका (चि० सुरेश शाह)

श्रीसंवत् १९९५ शके १७६१ ज्येष्ठ कृष्ण २ रवौ पूर्वाषाढ़ा ३ चरणे, जन्मेष्टम् घ० ४५ प० ७, कुंभलग्ने जन्म, जन्मस्थान मैसूर। सूर्यः १।२०।

जन्माङ्गम्

———
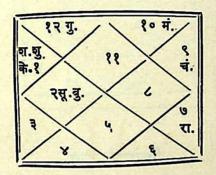
द्वितीय यमल भ्राता की पत्रिका (चि० रमेश शाह)

श्रीसंवत् १९९५ शके १८६१ ज्येष्ठ कृष्ण २ रवौ पूर्वाषाढ़ा ३ चरणे, जन्मेष्टम् घ० ४५ प० ४५, कुंभलग्ने जन्म, जन्मस्थान मैसूर। सूर्यः १।२०।

जन्माङ्गम्

———
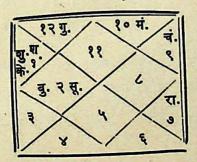
[एक सद्गृहस्थ निःसंतान महिला जिसके गले में धोती बांधकर दुष्टों ने हत्या की]

जन्म—श्रीसंवत् १९८३ शके १८४८ भाद्र शुक्ल षष्ठी चन्द्रे अनुराधा ३ चरणे, जन्मेष्टम् घ० ५० प० ४, लग्नम् ३।४।१८।३९
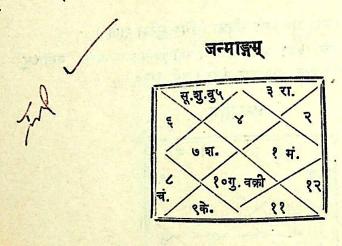
जन्माङ्गम्

विंशोत्तरी दशा

श०	बु०	के०	शु०	सू०
४	१७	७	२०	६
९				
२७				
१९८३	८८	२००५	१२	२०३२
४	२	२	२	२
२७	२४	२४	२४	२४

मृत्यु—फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार संवत् २०२२ तारीख १६-२-१९६६ को रात्रि में आततायियों द्वारा हत्या ।

[घटना का विवरण दैनिक "आज" तारीख १८-२-१९६६ के काशी समाचार में पढ़े]

[यमल भ्राताओं की पत्रिका। काशी निवासी ये दोनों भ्राता समान प्राय आकृति के व भागवतादि पुराण-विद्या को साथ साथ पढ़े व रहें हैं। व्यवसाय भी दोनों का समान हैं। आँत का आपरेशन भी दोनों को थोड़े समय के अंतर से हुआ है। पत्नी, पुत्रादि भी दोनों को हैं। विवाह के वाद से जीवनचर्या में थोड़ी-थोड़ी भिन्नता आई है। अब दोनों का निवास-भवन पृथक्-पृथक् है। संप्रति कनिष्ठ यमल भ्राता ने सन्यास ग्रहण किया है तथा ज्येष्ठ यमल भ्राता कुछ काल बाद आश्रमान्तर ग्रहण करने का ऊहापोह कर रहें हैं।]

ज्येष्ठ यमल भ्राता की पत्रिका (पण्डितप्रवर श्रीरामजी व्यास)

जन्म—संवत् १९६१ शके १८२६ आश्विन कृष्ण १ रवौ उत्तराभाद्रपदा चतुर्थ चरणे, जन्मेष्टम् घ० १५ प० २०, लग्नम् ८।०।३२।४०, सूर्यः ५।९।२४।३३, भयातम् ५९।५१, भभोगः ६७।२५।

जन्माङ्गम्
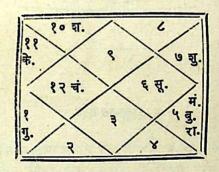
विंशोत्तरी महादशा

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०
.२	१७	७	२०	६	१०	.७	१८
१							
१८							
१९६१	६३	८०	८७	२००७	१३	२३	२०३०
५	६	६					
९	२७	२७					

———

कनिष्ठ यमल भ्राता की पत्रिका (पण्डितप्रवर श्रीलक्ष्मणजी व्यास)

जन्म—संवत् १९६१ शके १८२६ आश्विन कृष्ण १ रवौ उत्तराभाद्रपदा ४ चरणे, जन्मेष्टम् घ० १६ प० ३० । भयातम् ६१।१, भभोगः ६७।२५, सूर्यः ५।१९।२५।४२।

जन्माङ्गम्
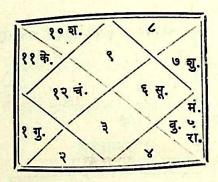
पञ्चाङ्ग-विचार

भारतवर्ष में अनेक प्रकार के सिद्धान्त ग्रन्थ और करण-ग्रंथों की गणना से पञ्चांगों का निर्माण व्यवसायी लोग पंडितों के द्वारा कराते हैं जिससे उनका व्यापार चलता है। विभिन्न प्रकार के पञ्चांगों में समानता न होने से उनके आधार पर जन्मपत्र-वर्षपत्र के निर्माण, वैवाहिक गणना-विचार, मुहूर्त और तेवहारों के निर्णय आदि कार्यों में मतभेद होता रहता है जिससे वड़ी गड़बड़ी होती है।

लगभग सौ वर्ष पूर्व काशी के मूर्धन्य धर्मशास्त्री और ज्योतिषशास्त्र के प्रकाण्ड पंडितों ने वाराणसी के अधिकार संपन्न ख्यातनामा रईस श्रीमान् बाबू गुरुदास मित्र के भवन में आमन्त्रित होकर सभा में विचार विमर्श किया। विचार विमर्श के बाद उस सभा में एक व्यवस्था सप्रमाण लिखकर उन्होंने अपना निर्णय दिया।

उस व्यवस्थापत्र पर म० म० पं० गंगाधर शास्त्री तैलंग सी० आई० ई०, म० म० पं० दामोदर शास्त्री भारद्वाज, म० म० पं० शिवकुमार शास्त्रीजी जैसे धुरंधर विद्वानों के विद्यागुरु प्रातःस्मरणीय पं० श्री बालशास्त्रीजी (जिनकी जन्मपत्रिका इस पुस्तक में मुद्रित है) तथा निर्णयसिन्धुकार पं० कमलाकर भट्ट के वंशज पं० श्री सखाराम भट्ट

जैसे धर्मशास्त्रियों और म० म० पं० अयोध्यानाथजी ज्यौतिषी के पितृचरण पं० श्री श्यामाचरणजी ज्यौतिषी, म० म० पं० सुधाकरजी द्विवेदी, म० म० पं० श्रीबापूदेव शास्त्री सी० आई० ई० जैसे धुरंधर ज्यौतिषी विद्वानों के हस्ताक्षर हैं।

व्यवस्थापत्र संस्कृत में है जिसका आशय है कि जिस प्रकार की गणना से दृग्गणितैक्य होता हो उसी प्रकार से साधित पञ्चाङ्ग के द्वारा धर्मनिर्णयादि करना चाहिये और वही पञ्चाङ्ग माननीय है।

पाठकों के जानकारी के लिये उक्त व्यवस्थापत्र आगे अविकल प्रकाशित किया जाता है। हमने इसको स्वर्गीय श्रीमन्महाराजाधिराज द्विजराज श्रीकाशीनरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह वहादुर जी० सी० आई० ई० की आज्ञा से संवत् १९३३ में मुद्रित "संवत् १९३३ के वर्ष के नये पञ्चांग के विषय में पण्डित श्रीबापूदेव शास्त्री का उपपादन और इसी विषय में श्रीयुत वावू गुरुदास मित्र के यहाँ जो सभा हुई उसका वर्णन" पुस्तक से सादर उद्धृत किया है।

व्यवस्था।

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥
संसाध्य स्पष्टतरं बीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ ॥

इति ब्रह्मवसिष्ठप्रभृतिवचनेभ्यो दृग्गणितैक्यं येन प्रकारेण स्यात् तेन प्रकारेण सिद्धैस्तिथ्यादिभिरेव धर्मनिर्णयादिकं कर्तव्यमित्येव सकलसिद्धान्तकारमुन्यादिसंमतम्। तथाच तेन प्रकारेण साधितं तिथिपत्रमेव माननीयमिति।

भट्टसखारामशर्मणः।
सम्मतिरत्र लक्ष्मणज्योतिर्विदः
सम्मतिरत्र रामदीनशर्मणः।
भवानीप्रसादशर्मणः।
सिद्धेश्वरशर्मणः
सम्मतिरत्र ज्योतिर्विद्रामशंक-
रात्मजविष्णुशंकरशर्मणः।
सुधाकरशर्मणः
भवानीदत्तशर्मणः।
सम्मतिरत्रार्थे अनन्तरामशर्मणः।

कृतसम्मतिकोऽत्र द्विवेदपण्डित-
बस्तीरामशर्म्मा।
श्यामाचरणशर्मणः।
राजाजीशर्म्मणः।
पण्डित वेणीशंकरशर्मणः।
सम्मतिरत्र नारायणदेवशास्त्रिणः।
द्वारिकादत्तशर्मणः।
रानडोपाख्यबालशास्त्रिणः।
बापूदेवशास्त्रिणः।
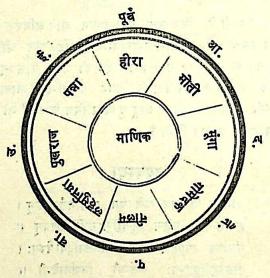
महिपुत्र तेज निधान सो, दखिनेस मूँग लगा न सो।
बुध रत्न रूप निधान सो, धर पन्न कोनीसान सो॥
गुरु बुद्धि दायकमान जे, पुखराज उत्तर जानजे।
भृगु रत्न कला अनूप है, दिस पूर्व हीरा भूप है॥
शनि ज्ञान दृष्टि महान जे, पछिमेस सुभ नीलाम जे।
छलि राहु वीर महान सो, नैऋत्य मेदक मानसो॥
बलि केतु करम निधान सो, वैदूर्य वायव लानसो।
इमि रत्न सुभ जड़ पैनता, सुत सम्पती सब चैनता॥
मुद्रिका नवरत्न सुभ, धार समय सुभ देख।
देव पित्र ग्रह खुस प्रजा, सिद्धि काज मन लेख॥"

नोट—यदि मुद्रिका का पूर्ण गुण चाहते हो तो सभी रत्नों का निर्दोष होना आवश्यक है। यदि सभी निर्दोष रत्नों को लगाना संभव न हो तो माणिक अवश्य वेऐब लगावें अन्यथा नवरत्न-मुद्रिका धारण करना विफल है। प्राचीन समय में राजा महाराजा नवरत्न का कंठा पहिर कर दर्बार में वैठते थे, रानियां नवरत्न की टीक धारण करती थी। रईस, उमराव नवरत्न की चौकी भुजवंद धारण करते थे और इतर शिष्टजन नवरत्न की अँगूठी पहन लेते थे। परंतु देश की आजादी के बाद से भारत-वसुंधरा के विदेशी कर्ज से वेतरह लद जाने के कारण अब उसके लाल और ललनाओं के शरीर पर विशुद्ध स्वर्णभूषण धारण करना ही कठिन हो गया है तो नवरत्न के वेशकीमती उपर्युक्त अलंकार धारण करना अब भारतीयों के लिये बड़े भाग्य की बात है।

सूर्यादिग्रहों के अनिष्टनिवारक यंत्र

(यंत्रचिन्तामणौ)

रसेन्दुनागानगबाणरामा युग्माङ्कवेदानवकोष्ठमध्ये।
भानोः कृतारिष्टनिवारणाय धार्यं मनुष्यै रवियन्त्रमीरितम्॥

६	१	८
७	५	३
२	९	४

नगद्विनन्दागजषट्समुद्राः शिवाक्षदिग्बाणविलिख्यकोष्ठे ।
चंद्रकृतारिष्टविनाशनाय धार्यं मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम् ॥

चन्द्रयन्त्रम्

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

गजाग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणाः पातालरुद्रारससंविलेख्याः ।
भौमस्य यंत्रं क्रमतो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदंति गर्गाः ॥

भौमयन्त्रम्

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

नवाब्धिरुद्रादिङ्नागषट्कात्राणार्कसप्तानवकोष्ठयंत्रे ।
विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः ॥

बुधयन्त्रम्

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

दिग्बाणसूर्याःशिवनन्दसप्ताःषड्विश्वनागाःक्रमतोंककोष्ठे ।
विलिख्य धार्यं गुरुयंत्रमीरितं रुजोविनाशाय वदंति तद्बुधाः ॥

गुरोर्यन्त्रम्

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

रुद्रांगविश्वारविदिग्गजाख्या नगामनुश्चांकक्रमाद्विलेख्याः ।
भृगोः कृतारिष्टनिवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तितम् ॥

शुक्रयन्त्रम्

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

अर्काद्रिमनवःस्मररुद्रअंका नागाख्यतिथ्यादशमन्दयंत्रम् ।
विलिख्य भूर्जोपरिधार्यमेतच्छनेःकृतारिष्टनिवारणाय ॥

शनियन्त्रम्

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

विश्वाष्टतिथ्यामनुसूर्यदिश्या खगामहींद्रैकदशांककोष्ठे ।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं राहोः कृतारिष्टनिवारणाय ॥

राहुयन्त्रम्

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

शक्राङ्कभूपातिथिविश्वरुद्रा दिग्युक्तसप्तार्कमितांककोष्ठे ।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं केतोः कृतारिष्टनिवारणाय ॥

केतोर्यन्त्रम्

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

नवग्रह-मङ्गलम्

भास्वान् काश्यपगोत्रजोऽर्कजसमित्सिंहाधिनाथोऽरुणो
भौमेज्येन्दुसुहृद्गणायसहजस्थानस्थितश्शोभनः ।
आयुर्जन्मकलत्रगोऽशुभफलः कालिङ्गनाथो महान्
मध्ये वर्तुलमण्डलस्थितियुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ १ ॥

चन्द्रः कर्कटकप्रभुस्सितनिभश्चात्रेयगोत्रोद्भव-
श्चाग्नेये चतुरस्रवारणमुखश्चापे उमाधीश्वरः ।
षट्सप्ताग्निदशैकशोभनफलो नोरिर्बुधार्कप्रियः
स्वामी यामुनदेशपर्णसमिधः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ २ ॥

भौमो दक्षिणदिक्त्रिकोणयमदिग्विन्ध्येश्वरः खादिरः
स्वामी वृश्चिकमेषयोस्सुरगुरुश्चार्कश्शशी सौहृदः ।
ज्ञोऽरिष्षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद्दैवते
भारद्वाजकुलोद्वहोऽरुणरुचिः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ३ ॥

सौम्यः पीत उदङ्मुखस्समिदपामार्गोत्रिगोत्रोद्भवः
बाणेशानदिशस्सुहृद्रविसुतश्शेषास्समाश्शीतगोः ।
कन्यायुग्मपतिर्दशाष्टचतुरष्षण्णेत्रगश्शोभनः
विष्णुर्देव्यधिदेवते मगधपः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ४ ॥

जीवश्चाङ्गिरगोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तराशास्थितः
पीतोऽश्वत्थसमिच्च सिन्धुजनितश्चापोऽथ मीनाधिपः ।
सूर्येन्दुक्षितिजप्रियो बुधसितौ शत्रू समाश्चापरे
सप्त द्वे नव पञ्चमे शुभकरः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ५ ॥

शुक्रो भार्गवगोत्रजस्सितनिभः पूर्वामुखः पूर्वदिक्
पाञ्चालस्थवृषस्तुलाधिपमहाराष्ट्राधिपौदुम्बरः ।
इन्द्राग्नी मघवा बुधश्च रविजो मित्रोऽर्कचन्द्रावरी
षष्ठत्रिर्दशवर्जिते भृगुसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ६ ॥

मन्दः कृष्णनिभः सपश्चिममुखः सौराष्ट्रपः काश्यपः
स्वामी नक्रसुकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे कुजेन्दू द्विषौ ।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापतियमौ देवौ धनुष्यासनौ
षट्त्रिस्थश्शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ७ ॥

राहुस्सिंहलदेशपो निरृतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो
यः पैठीनसगोत्रसम्भवसमिद्दूर्वामुखो दक्षिणः ।

यस्सर्पः पशुदैवतो निऋऋतिप्रत्याधिदेवस्सदा
षट्त्रिस्थश्शुभकृच्च सिंहगसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ८ ॥

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमिद्वायव्यकोणे स्थितः
चित्राङ्कध्वजलाञ्छनो हि भगवान्यो दक्षिणाशामुखः ।
ब्रह्मा चैव तु चित्रगुप्तपतिमान्प्रीत्याधिदेवस्सदा
षट्त्रिस्थश्शुभकृच्च वर्वरपतिः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥ ९ ॥

॥ शुभम् ॥

कृतं मया भूरिपरिश्रमेण सम्पादनं चास्य हि पुस्तकस्य ।
ये राष्ट्रभाषाविबुधाजनास्ते लाभान्विताः स्युः सततं त्वनेन ॥ १ ॥

नमस्करोमि विबुधान् प्रार्थयामि च तानहम् ।
यद्यत्राशुद्धिसंवेशः शोधयन्तु हि ते मुदा ॥ २ ॥

संपादकः
श्रीरामनाथ ज्यौतिषाचार्यः

सम्पादकीय–परिशिष्ट–विषय–सूची

॥ शुभम् ॥

संशोधनीय–पृष्ठ ३२३ के चौवीसवीं पंक्ति के अंतिम शब्द "पृष्ठ" के स्थान पर "ग्रंथ" पढ़ें।

सम्मति-सार

हिन्दी भाषा में 'सुलभ ज्यौतिष ज्ञान' नामक यह ग्रन्थ अपने ढंग का निराला है। फलित ज्यौतिष की ओर मनोयोग देने एवं उससे लाभ उठाने वाले हिन्दी भाषियों के लिये भी बड़े काम का ग्रन्थ है। ज्यौतिषियों के लिये तो राष्ट्रभाषा में इसको फलित का वरदान ही कहना चाहिये। (प्रथम संस्करण में अधोलिखित विद्वानों की सम्मतियाँ मिल चुकी हैं। स्थानाभाव के कारण अविकल यहाँ नहीं छप सकीं)।

(१) पं० सिद्धनाथ शुक्ल ज्यौतिषालंकार
मन्त्री : ज्यौतिर्विद-मण्डल, खण्डवा, (मध्य प्रदेश)

(२) पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य
सम्पादक : 'श्री स्वाध्याय' शिमलाहिल्स, (पंजाब)

(३) पं० वचानप्रसाद त्रिपाठी रमलाचार्य
प्रणेता : चिन्ताहरण यन्त्री, सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

(४) पं० छगनलाल रतनचन्द ज्यौतिषाचार्य
भविष्य प्रकाश कार्यालय, जालौर (मारवाड़)

(५) पं० रामव्यास शास्त्री ज्यौतिषाचार्य
ज्यौतिषविभागाध्यक्ष : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(६) आचार्य सीताराम चतुर्वेदी एम· ए.
प्राध्यापक : टीचर्स ट्रेनिङ्ग कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

(७) पं० बलदेव मिश्र ज्यौतिषाचार्य
गवेषक : सरस्वती भवन पुस्तकालय, काशी।

(८) पं· गेनालाल चौधरी ज्यौतिष-सिद्धान्त-भास्कर
प्राध्यापक : टीकमाणी संस्कृत कालेज, काशी।

(९) पं० अनूप मिश्र ज्यौतिषाचार्य
प्राध्यापक : गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशी।

(१०) पं० सीताराम झा ज्यौतिषाचार्य
प्राध्यापक : संन्यासी संस्कृत कालेज, अपारनाथमठ, काशी ।

(११) पं० रामनिहोर द्विवेदी ज्यौतिषाचार्य
प्रधानाचार्य : मारवाड़ी संस्कृत कालेज, काशी ।

(१२) पं० विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ज्यौतिषाचार्य
प्राध्यापक : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ।

(१३) पं० बलदेव पाठक ज्यौतिषाचार्य
प्राध्यापक : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ।

(१४) पं० रामानन्द मिश्र ज्यौतिषाचार्य
अध्यापक : रणवीर संस्कृत पाठशाला, काशी ।

(१५) पं० पुरुषोत्तम बालकृष्ण साठे मीमांसाभूषण
डाइरेक्टर : एल० एल० एम० स्टडीज, नागपुर युनिवर्सिटी ।

(१६) वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री आयुर्वेदाचार्य
प्राध्यापक : आयुर्वेदिक कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ।

(१७) श्रीमान् बी. ए. मण्डलोई
शिक्षामन्त्री : (मध्य प्रदेश) ।

(१८) श्रीमान् रुद्रशरण प्रतापसिंह एम. एल. ए.,
विलासपुर ।

(१९) डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र एम. ए., एल. एल. बी., डी. लिट.
वरिष्ठ अधिकारी : नागपुर युनिवर्सिटी ।

(२०) डॉ० रामकुमार वर्मा एम. ए., पी-एच. डी.
हिन्दी प्राध्यापक : इलाहाबाद युनिवर्सिटी ।

(२१) डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री एम. ए., डी. फिल्.
प्रिंसिपल : गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशी ।

(२२) डॉ० कैलासनाथ भटनागर एम. ए., पी-एच. डी.
प्राध्यापक : सनातनधर्म कालेज, लाहौर ।

(२३) एम. बी. देशपुजारी एम. ए., एल. एल. बी.
सेक्रेटरी : भोंसला मिलिटरी स्कूल, रामभूमि, नासिक ।

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

…लभ-ज्यौतिष-ज्ञान

…खम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

सुलभ-ज्यौतिष-ज्ञान ❋ वासुदेव सदाशिव खानखोजे